आगला अढी खंडमां महारा दृष्टिदोषथी कोइ कोइ ठेकाणे चूको रही गइ हशे, माटे आ पुस्तकमां जे कांइ चूलो रही गयेली ते विषे वांचनार सज्जन जनो मने तेवी वातोथी अज्ञ जाणीने पोतेज मेले सुधारी वांचशे, एवी मने संपूर्ण आशा छे.ते सज्जनो जो के ग्रंथ करवानी निपुणतामां मने अशक्त जाणशे तोपण महारा प्रारंजेला ज्ञानवृद्धिरूप शुन्न कार्यने उत्तेजन अपाववाना उत्साही होवाथी अन्य गुणिजनोने पण आ काममां आश्रय आपवा माटे अत्युत्साहित करशे.

ते उत्तमोत्तम गुणने धारण करनारा सज्जनो एवुं समजशे के कोइ रीते एकवार कोइ ग्रंथ छपावी प्रसिद्ध थइ जशे तो ते ग्रंथ साधु परंपरा वांचवाना काममां आवशे अने तेथी ते ग्रंथ घणा जनोने रुचतो थाशे. ते वारे अवश्य तेनो खप वधवाथी पुनः पुनः छपातो रहेशे, तेमां कोइ वखत कोइ विद्वानने हाथे छपाशे तो ते वखत पोतानी मेले ते ग्रंथ शुद्ध थइ जाशे.

चतुर्विध श्रीसंघने हुं सविनय प्रार्थना करुं छुं के धर्मवृद्धि करवानुं मूल कारण ते धर्म संबंधी पुस्तकोज छे, माटे तमे तमारा न्यायोपार्जित द्रव्यने सुकृतमां खरचवानी चाहना राखता हो तो उजाणीयो अने जमणवार करवामां जेवा उत्साहथी द्रव्य खरचवाने उजमाल थार्ड छो तेवीज होंशथी प्रथम पोताना धर्म संबंधी पुस्तकोनो संग्रह करवा माटे जेने जेटलुं द्रव्य खरचवानुं सामर्थ्य होय तेटलुं द्रव्य खरचीने घणा ग्रंथोना नंमारा करावो अने ते पछी ते पुस्तकोने नणवा वांचवा अने सांनलवा उपर अनेक जनोने अजिरुचि उत्पन्न करावो, तेमज तेना उपर तमाराथी जेटलुं द्रव्य खरचाय तेटलुं द्रव्य महोटा उत्साहथी खरचो. ते द्रव्य खरेखरुं परमार्थथी धर्मार्थे तमे खरच्युं एम समजो. ए वे प्रकारे द्रव्य खरचाया पछी बीजां जे जे धर्मनां कार्य सीदातां होय तेमां तमे द्रव्य खरचवाने उजमाल थाजो, परंतु गाडरिया प्रवाहनी पेठे एक बीजानी देखादेखीथी जे धर्म संबंधी कार्यनी कांइ पण ते समयमां न्यूनता देखाती न होय तोपण ते कार्यमां द्रव्य खरचीने फोकट फूलवुं व्यर्थ छे. शुन्नमस्तु.

श्रावक नीमसिंह माणक.

बीजी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

आ सृष्टिमां सर्वे भिन्न भिन्न पदार्थो कालना प्रभावे करी भिन्न भिन्न रीते न्यूनाधिकतापणे प्रवर्ते छे, एवुं श्री सर्वज्ञ कथनथी अने विद्वानोना अनुभवथी सिद्ध थाय छे. एनुं उदाहरण जोतां पुरातन जैन पंडितोनुं पांडित्य अने आधुनिक जैन पंडितोनुं पांडित्य स्पष्ट दर्शावी दीए छे. जेम पुरातन जैन पंडितोए रचेला ग्रंथोनी उपर लक्ष देतां हरेक सुज्ञ जननुं मन आनंदने पामे छे तेम हालना समयमां तेवा पंडितोनो अत्यंत अभाव जोइने तेओनुं मन शोक पण पामे छे, केमके तेवा ग्रंथोनी हाल रचना थवी तो एक बाजुए रही, पण तेओनो यथार्थ मर्म समजवो पण हालना समयमां दुर्घट थइ पड्यो छे. ते पूर्वाचार्य रचित अनेक ग्रंथोना विषयो तेमज आ श्रीनेमिनाथनो रास जोवाथी स्पष्ट जणाइ आवे छे.

आ श्री नेमिनाथनो रास मुनि श्री पद्मविजयजीनो रचेल छे. तेओनी कवित्वशक्ति घणीज सारी हती. तेओए पोतानी अद्भुत कवित्वशक्तिथी अनेक ग्रंथो रचेला छे. तेओमांथी श्रीसमरादित्य केवलीनो रास (वैराग्य-दर्शक ग्रंथ) तथा श्री जयानंद केवलीनो रास ए बन्ने ग्रंथ अमारा तरफथी प्रसिद्ध थयेला छे. तेओए सम्यक्त्व कौमुदीनो रास वगेरे एवा बीजा घणा ग्रंथो रचेला छे. तेओ श्री १९मा सैकामां विद्यमान हता.

आ ग्रंथमां श्रीनेमिनाथना रास सिवाय अंतर्गत श्री पांडवोनुं चरित्र पण आवी जाय छे, तेथी "पांडव रास" पण कहीए तो चाले तेम छे. जेम पांडव चरित्रमां श्री नेमीश्वर भगवान् बलभद्र, वासुदेव जे श्रीकृष्ण, प्रतिविष्णु जे जरासंध, पांडव, कौरव वगेरे अनेक वीर पुरुषोनां चरित्रो-

---

१ श्री समरादित्य केवलीनो रास–जेमां श्री समरादित्य केवलीनुं सत्तर भवनुं वैराग्य दर्शावनारुं रसिक पद्यरूपे चरित्र छे, तेनी प्रस्तावना आ ग्रंथमां आपवामां आवेल छे. किमत रु. ३–०–०

२ श्रीजयानंद केवलीनो रास प्रथमावृत्ति शीलक नथी, बीजी आवृत्ति अमुक वखत पछी छपाशे.

३ श्री पांडव चरित्र ग्रंथ शुद्ध गुजराती भाषांतर अने अनेक सुंदर मनोरंजक रंगीन चित्रो साथे रसिक वांचवा लायक ग्रंथ, आवृत्ति बीजी. किमत रु. ५–०–०

शांति चरित्र ग्रंथ.

शांति चरित्र ग्रंथ.

[illegible]

बीजी आवृत्ति बहार पडी छे.

आत्मानंददायक, मनोहर अने वैराग्यकारक अनेक कथाओ सहित सोळमा भगवान् श्री शांतिनाथनुं पवित्र चरित्र आवेल छे.

आ ग्रंथना बहु मोटा बे खंडो छे. तेमां श्री शांतिनाथ भगवानना बार भवनी कथाओ विस्तारथी आवेल छे. तेनी साथे तेमना मुख्य गणधर जे श्री चक्रायुध तेमना पण सर्व भवनी कथाओ आवेल छे. आ ग्रंथ घणो ज रमणीय छे के जेनी सर्व वातो सरस पद्धति रचे करी संकलित छे अने तेमां स्थळे स्थळे वैराग्यकारक उपदेशो आवेला छे.

वळी आ ग्रंथमां बीजी पण चित्तचमत्कृतिकारक मंगळकलश कुमार, सुमित्रदेवादिक तथा पुण्यसार वगेरेनी कथाओ आवेली छे. ते उपरांत प्रसंगोपात पृथक् पृथक् कविओ कृत श्लोको, दोहा, सिद्धांतनी गाथाओ आपेली छे, तेथी वांचनार जनोने घणोज प्रिय लागे छे अने छोडवानुं मन थतुं नथी.

किंमत रु. ३-०-०

अमारे त्यां तमाम जातनां जैनपुस्तको तथा जैनतीर्थोना-रंग वेरंगी सुशोभित नकशाओ मळे छे. अरधा आनानी टीकीटो मोकली मोटुं चोप-डाण चार फर्माउवाळुं सूचीपत्र मंगावो.

मळवानुं ठेकाणुं
माणक.

अस्य पुस्तकस्य संक्षिप्तानुक्रमणिका.

तत्र प्रथम खंडस्यानुक्रमणिका.

द्वितीय खंडस्यानुक्रमणिका.

तृतीय खंडस्यानुक्रमणिका

चतुर्थ खंडस्यानुक्रमणिका.

॥ प्रस्तावना ॥

आ "समरादित्य केवलीनो" रास बुद्धिनो विकास करनार सुबोधक ग्रंथ छे. तेमां वैराग्य भावनाने प्रधानता आपवामां आवी छे. बुद्धिना सर्व अंशुओ वैराग्य उपर महान् प्रकाश पामी शके एवी चमत्कारी योजनाओनोज आ रासमां संग्रह करेल छे. मनुष्यनी जींदगीरूप नौका अनेक संसाररूपी समुद्रनां तोफानोमांथी जीपलावी क्यां पहोंचे छे अने कर्मरूपी पवन ते नौकाने क्यां लइ जाय छे तेनां असरकारक दृष्टांतोनो संग्रह आ ग्रंथमां दाखल करेल छे. हृदयनी वृत्तिओ बहु प्रबल अने वेगवाली छे, तेने न्यायमार्गे दोरवानां अने तेनो विस्मयकारक संयम करवानां अनेक उदाहरणो आ ग्रंथमां आपवामां आव्यां छे.

कर्मोने वश थयेला आत्माओनां हृदय उपर केवा कठोर प्रहार पडे छे ! आटलुं छतां आत्माओ तेने सहन करी केवी स्थितिमां आवे छे ! एवां चमत्कारी चरित्रोथी आ ग्रंथ घणो अलंकृत करेल छे.

आ ग्रंथमां श्री समरादित्य केवली केवा प्रकारना जीवनमांथी केवी जातना उच्च जीवनने प्राप्त थया अने दरमीयान तेना आगलना भवोमां कइ कइ जातना फेरफारो थया तेनुं चरित्र एटलुं वधुं रसमय बनाववामां आव्युं छे के ते वांचवाथीज वांचकोने खात्री थशे. आ रासना नव खंड करवामां आव्या छे अने ते दरेक खंडमां महात्मा समरादित्यना एक एक भवनुं वर्णन करवामां आवेल छे.

प्रथम खंडमां शरुआतथी बे नायकोनां चरित्र आलेखवामां आवेल छे. तेमां एकनुं नाम गुणसेन छे अने बीजानुं नाम अग्निशर्मा छे. आ उभय आत्माओ दरेक भवमां सहचारीरूपे चाल्या आवे छे. ज्यारे गुणसेनना आत्मानुं चरित्र निर्मल छे तेथी करी उच्च श्रेणीए चढतो जाय छे त्यारे बीजा आत्मानुं चरित्र मलिन अने दूषित छे तेथी नीच श्रेणीए उतरतो जाय छे.

बीजा खंडमां गुणसेन अने अग्निशर्माना जीव अनुक्रमे सिंह अने आनंद नामे पिता अने पुत्र थाय छे.

त्रीजा खंडमां तेओ बंने अनुक्रमे शिखिकुमार अने जालिणी नामे पुत्र अने माता थाय छे.

चोथा खंडमां तेओ धन अने धनश्री नामे पति पत्नी थाय छे.
पांचमा खंडमां तेओ जय अने विजय नामे जाइ थाय छे.
छठ्ठा खंडमां तेओ धरण अने लक्ष्मी नामे पति पत्नी थाय छे.
सातमा खंडमां तेओ सेन अने विषेण नामे पितराइ जाइ थाय छे.
आठमा खंडमां तेओ गुणचंद्र अने वाणमंतर विद्याधर थाय छे.
नवमा खंडमां तेओ बंने अनुक्रमे समरादित्य अने गिरिसेन थाय छे.

आ रासना नवे खंडमां समरादित्यनो जीव जुदा जुदा मुनिओना समागममां आवे छे. दरेक प्रसंगनां मुनिओनां वृत्तांत घणां रसिक अने वैराग्यमय जावनावाळां होवाथी समरादित्य महात्मानो जीव वैराग्यनी उच्च जावनाने प्राप्त थतो जाय छे. समरादित्यना नवमां बाल्यवयथीज तेने वैराग्य आवे छे. समरादित्यना पिता तेने संसारनो स्वाद चखाडवा घणो प्रयत्न करे छे, पण ते महात्मा पोतानी वैराग्यमय जावनामां अडग रहे छे. विवाहित थयेला महात्मा समरादित्ये पोतानी बे नव वधूओने विषय रागमांथी मुक्त करी पोतानी अनुरागिणी बनावी ए प्रसंग उत्तम उपदेशरसथी जरपूर छे.

ते पछी महात्मा समरादित्य प्रजासाचार्य गुरुना हाथथी चारित्र ग्रहण करे छे. महात्मा समरादित्यनी प्रशंसा सांजळीने गिरिसेन ईर्षालु थाय छे. ते महात्मा हवे विहार करता करता अयोध्या नगरीमां आवे छे. त्यांथी रेकवाहपुरमां आवीने अशोक वनमां काउस्सग्गध्याने रह्या छे. त्यां जवपरंपरानो वैरी गिरिसेन आवी चडे छे. ते महात्माने जोइने कोपथी प्रज्वलित थाय छे. पछी ते दुष्ट महात्माना शरीर पर लुगडां वींटाळीने तेना पर तेल रेडीने अग्नि लगाडे छे. ध्यानमां लीन थयेला आ महात्मानुं आ समयनुं चिंतवन एवुं उंचा प्रकारनुं थतुं जाय छे के ते क्षपकश्रेणी पर आरूढ थइ पोताना आत्माने निर्मल करी तेने योगमां स्थापन करे छे के तरतज तेने "केवलज्ञान" थाय छे अने तेथी करी "आ महात्मा समरादित्य केवली" कहेवाय छे. ते महात्माना महिमाथी वेलंधर- आसन चलायमान थाय छे, तेथी ते अवधिज्ञानथी जोइने

कुसुम वगेरे लइने अनेक देव सहित त्यां आवे छे अने महात्माना शरीर उपरथी वींटालेलां लुगडां काढी नाखे छे. ते जोइने गिरिसेन क्रोध पामे छे. आ अवसरे मुनिचंद राजा पोतानी राणीओ सहित त्यां आवे छे अने वेलंधर देवने पूछवाथी आ सघली हकीकत कहे छे. आ वखते केवलज्ञानना महिमा माटे सोहमइन्द्र पण देव सहित आवे छे अने केवलीनी स्तवना करे छे. लोको पण आ हकीकत सांभली वंदनार्थे त्यां आवे छे. गिरिसेनना मनमां अकार्य कर्यानुं चिंतवन थाय छे अने कुशल पक्षनुं बीज रोपाय छे अने ते घर भणी जाय छे. त्यारबाद महात्मा समरादित्य केवली धर्मदेशना आपे छे. त्यारबाद इंद्र पोताने स्थानके जाय छे. पछी मुनिचंद राजा समरादित्य केवलीने गिरिसेने करेला उपसर्गनो संबंध पूछे छे, तेथी ते गुणसेन अने अग्निशर्माना भवथी मांडीने सघली हकीकत कहे छे. ते सांभलीने राजा, सामंत, वेलंधर देव वगेरेने संवेग आवी जाय छे. वेलंधर गिरिसेनने आनुं परिणाम शुं आवशे ते केवलीने पूछे छे, तेथी केवली कहे छे के ते नारकीमां जशे अने त्यां तीव्र वेदना भोगवशे अने त्यांथी अनंतो संसार रझलशे. ते वखते मुनिचंद राजानी राणी नर्मदा नारकीनी वेदनानुं वर्णन, सुलसमंजरी देवतानां विमानोनुं वर्णन, अने बीजी राणी सुलोचना सिद्धनां सुखनुं वर्णन पूछे छे. आ वर्णन अद्भुत अने रसिक वाणीथी कहीने केवली श्रोताओनां हृदयने आर्द्र बनावी दे छे, त्यारबाद वेलंधरे केवलीने सिद्धनुं स्वरूप पूछवाथी तेनुं वर्णन पण एक उत्तम दृष्टांतथी आपे छे.

आ बधी हकीकत सांभलीने राजा राणी वगेरे परम आनंद पामे छे, अने केवलीनी पासे चारित्र ग्रहण करवा अभिलाषा देखाडे छे अने तेमना शिष्य शीलदेवनी पासे व्रत ग्रहण करे छे.

आ समये वेलंधर देव केवली महाराजने पूछे छे के जे गिरिसेने आपने उपसर्ग करेल छे ते भव्य छे के अभव्य छे, ते बीज पाम्यो के नथी पाम्यो अने ते पामशे के नहीं. तेना उत्तरमां केवली महाराज कहे छे के ते भव्य छे पण हजी बीज पाम्यो नथी. असंख्य पुद्गलपरावर्त थया पछी ते शार्दूलसेन राजानो अश्व थशे त्यारे बीज (समकित) पामशे. त्यार-

जाहेरखबर.

वैराग्य कल्पलता पूर्वार्ध. (श्री यशोविजयजी उपाध्याय कृत.)—आ ग्रंथ एटलो तो रसिक तथा जैनवर्गना श्रावको अने साधु साध्वीउने माटे उपयोगी छे के ते सर्वेने आदिथी ते अंत सुधी वांचवा नलामण करीए छीए.

आ ग्रंथनी रचना काव्यरूपे गुंथेली छे अने तेमां जीवने संसारभ्रमणथी केवी केवी विटंबनाउ नोगववी पडे छे तेनो कथाउ द्वाराए आबेहुब चितार आप्यो छे. तेम आ ग्रंथ रसिक बनाववा माटे साहित्यनो सार लइ तेमां रसालंकारोने पण घणीज उत्तम रीतथी प्रदर्शित करेला छे. आ ग्रंथ नणवाथी काव्योनो बोध थवा साथे जैन दर्शननां तत्त्वोनो घणोज बोध थाय छे एटलुंज नहीं, पण आ ग्रंथना अज्यासथी अमारा स्वधर्मी बंधुउने नवनाटकनुं स्वरूप केवुं छे तेनो खरेखर ख्याल थाय छे. वली आ ग्रंथ मुनिराजो आदिकने व्याख्यानमां उपयोगी थइ पडे तेवो छे, माटे दरेक जैन बंधु आ ग्रंथनो लान लेशे. (पानांआकारे.) किमत रु० ३–०–०

जैन कुमारसंनव महाकाव्य. (श्री जयशेखरसूरि कृत.)—आ नामनुं अति अद्भुत तथा काव्यचमत्कृतिवालुं अने साहित्यना सारथी नरेलुं रमणिक काव्य अमोए तेना गुजराती अर्थ सहित छपावी प्रसिद्ध कीधुं छे.

आ ग्रंथनां काव्यनी रचना एटली तो मधुर अने विद्वत्ता नरेली छे के ते वांचवाथी दरेक विद्वानना मनने आश्चर्य थया विना रहेतुं नथी. आ काव्यमां श्री ऋषनदेव प्रजुनुं नरतकुमारना जन्म पर्यंत वर्णन आपेलुं छे अने तेम करीने आ काव्यनुं नाम "जैन कुमारसंनव" एवुं नाम सफल कर्युं छे. वली आज दिन सुधीमां जैन नाइउने तथा मुनिराजो वगेरेने संस्कृत नाषानुं व्याकरण नणी अन्यदर्शनीउनां जे काव्यो नणवानी जरुर पमती हती, ते अमोए गुजराती अर्थ साथे छपावी प्रसिद्ध करेला आ काव्यग्रंथथी दूर थइ छे. वली आ काव्यग्रंथ बीजा काव्यग्रंथो करतां कवित्वशक्तिमां चमीआतो होवाथी जैन बंधुउने उपयोगी छे.

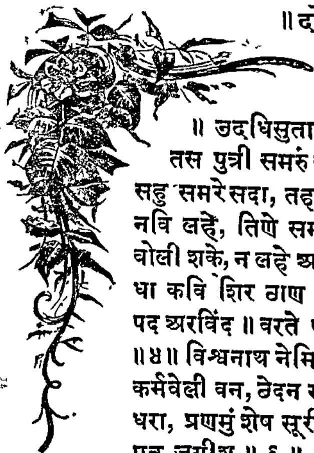
किमत

अथ

॥ पंन्ति श्रीपद्मविजयजी विरचित श्रीनेमीश्वर भगवाननो रास प्रारंभः ॥

तत्र प्रथम खंडः

॥ दोहा ॥



॥ उदधिसुता सुत तुन करे, ते वाहन होय जास ॥ तस पुत्री समरुं सदा, पूरो मुज मुखवास ॥ १ ॥ तुजने सहु समरे सदा, तहारा गुण विख्यात ॥ तुज विण शिवपद नवि लहे, तिणे समरुं तुज मात ॥ २ ॥ तुज विण नवि वोली शके, न लहे आदरमान ॥ वृद्धवादी सरिखा जुवो, कीधा कवि शिर ठाण ॥ ३ ॥ चरम जिणंद चोवीशमो, प्रणमुं पद अरविंद ॥ वरते पंचम कालमां, शासन जस सुखकंद ॥ ४ ॥ विश्वनाथ नेमि प्रते, जन्म थकी ब्रह्मचार ॥ नमीये कर्मवेली वन, छेदन रथचक्रधार ॥ ५ ॥ गौतम प्रमुख जे गणधरा, प्रणमुं शेष सूरीश ॥ जस अनुक्रमथी आवीयो, आगम एह जगीश ॥ ६ ॥ श्रीगुरुपदपंकज नमुं, जे भवसमुद्र जिहाज ॥ कृत्याकृत्यविचारणा, जिणथी लहीये आज ॥ ७ ॥ राजुल कन्या परहरी, लीधो संयमभार ॥ तस प्रणमीने तेहनुं, कहेशुं चरित्र उदार ॥ ८ ॥ कृष्ण वासुदेव जाणीये, वलभद्र तेहना बंधु ॥ तेह प्रसंगथी आवशे, त्रीजा जे जरासिंधु ॥ ९ ॥ अंबिलवाणी अति बुरी, नहीं मुज वचन सवाद ॥ पण प्रभुचरित्र सुधारशे, लेहशो अति आह्लाद ॥ १० ॥ जस नामाक्षर ग्रहणथी, थाये जन्म कयछ ॥ शुं कहीये पण तेहनुं, गुणवर्णन होय जछ ॥ ११ ॥ बीजा पण जिनवर तणां, चरित्र अछे सुखकार ॥ वली विशेषथी सुखकरु, जिनवर नेमिकुमार ॥ १२ ॥ आंवनां फल सहेजे हुवे, सरसां केवल तेह ॥ कहेवुं शुं सरसाइनुं, साकर भेळ्यां जेह ॥ १३ ॥ केवल नेमि जिन चरित, सरस अछे गुणगेह ॥ कहेतां राजुल सह वली, आपे अधिको नेह ॥ १४ ॥

सनी दानना, लोक वसे धनवंत ॥ ल० ॥ महोटा आवासे कोरणी, कोरणी नहीं जसवंत ॥ ल० ॥ जं० ॥ ६ ॥ मूंगा पारका दोषने, कहेवा लेखा अजाण ॥ ल० ॥ अंध जे परस्त्री देखवा, इणी परे नयर मंमाण ॥ ल० ॥ जं० ॥ ७ ॥ जनाकीर्ण ते नयरमां, बंधन कुसुमने होय ॥ ल० ॥ निर्दयतापणुं खड्गमां, ए जनने नहीं कोय ॥ ल० ॥ जं० ॥ ८ ॥ प्रासादशृंगनी उपरे, दंरू देखीजे त्यांहि ॥ ल० ॥ नाकारो को नवि कहे, वात देवानी ज्यांहि ॥ ल० ॥ जं० ॥ ए ॥ यडुक्तं ॥ यत्र निःस्तृंशता खड्गे, बंधनं कुसुमेषु च ॥ दंरूः प्रासादशृंगेषु, जनेषु न कदाचन ॥ २ ॥ विक्रमधन तिहां राजीयो, जे धर्मे आसक्त ॥ ल० ॥ विक्रम धन ठे जेहने, नाम यथार्थ ठे युक्त ॥ ल० ॥ जं० ॥ १० ॥ शत्रुने त्रास पमामतो, यम उपम घटमान ॥ ल० ॥ मित्रनेत्रने शशी समो, आणंद देवा ठाण ॥ ल० ॥ जं० ॥ ११ ॥ कल्पवृक्ष सम लोकने, वैरीने वज्रदंरू ॥ ल० ॥ न्यायमार्गे तिम चालतो, दीपे तेज प्रचंरू ॥ ल० ॥ जं० ॥ १२ ॥ दश दिशथी आवे संपदा, जिम नई समुड्मां सार ॥ ल० ॥ कीर्ति प्रगट जिम गिरि थकी, निऊरणां निरधार ॥ ॥ ल० ॥ जं० ॥ १३ ॥ जीम कांत गुण जेहना, शत्रु मित्रने ठाम ॥ ल० ॥ अंबिध रत्न मत्स्यादिके, जिम तिम नृप गुणधाम ॥ ल० ॥ जं० ॥ १४ ॥ यडुक्तं ॥ जीमकांतनृपगुणैः, स बजूवोपजीविनाम् ॥ अधृष्यश्चाजिगम्यश्च, यादो रत्नैरिवार्णवः ॥ ३ ॥ धर्मचारिणी तस धारणी, धरणी परे थिर जेह ॥ ल० ॥ राणी निर्मल गुणधरा, शीलाजरणी देह ॥ ल० ॥ जं० ॥ १५ ॥ सर्व अंग रूप शोजतुं, पुण्य लावण्यनुं गेह ॥ ल० ॥ मूर्त्तिवंत मानुं संपदा, नृपतिने अति नेह ॥ ल० ॥ जं० ॥ १६ ॥ वाणी वाणी सारिखी, तस वाहन गति खास ॥ ल० ॥ अधिकी इंड्राणी थकी, नहीं उपमा जग जास ॥ ल० ॥ जं० ॥ १७ ॥ राय राणी सुख जोगवे, बीजी ढाल रसाल ॥ ल० ॥ पद्म कहे श्रोतावरे, होजो मंगलमाल ॥ ल० ॥ जं० ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥ ५३ ॥ सर्व श्लोक तथा गाथा मली ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन राणी स्वपनमां, देखे अंब अजिराम ॥ कोयलमी टहुका करे, फलीयो गुणनो धाम ॥ १ ॥ कोइ पुरुष ते आम्रने, वावे अंगण मऊ ॥ तस अवदात उंचे स्वरे, सांजलजे कहुं तुऊ ॥ २ ॥ काल केतोइ-

क जायशे, वपशे नवले ठाण ॥ इम नव वार ववायशे, फल अधिकेरुं जाण ॥ ३ ॥ इणी परे स्वप्न सोहामणुं, लही जागी परजात ॥ आवी कहे जरतारने, स्वप्ननी सघली वात ॥ ४ ॥ स्वामी आज में स्वप्नमें, दीठो चूत उदार ॥ फल जाखो मुक तेहनुं, शुं होशे जयकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ राजा निमित्तधर पूठीने रे, जाखे तेहने एम ॥ सुत होशे शुज लक्षणो रे, वली होशे सुख खेम रे ॥ राणी सुण सुपनानी वात, एहथी लेहशो अधिक सुखशात रे ॥ रा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आम्रनुं फल एणी परे कह्युं रे, पण न लहुं वली एह ॥ नव नव थाने ववायशे रे, जाणे केवली तेह रे ॥ रा० ॥ २ ॥ वचन सुणी एम जूपनां रे, राणी हरखित होइ ॥ गर्ज धरे सा कामिनी रे, जिम जू निधि धरे जोय रे ॥ ॥ रा० ॥ ३ ॥ उपनो पुत्र जे दिवसथी रे, ते दिनथी होय वृद्धि ॥ चार प्रकार गणिमादिका रे, पुत्र पुण्य इणविध रे ॥ रा० ॥ ४ ॥ अनुक्रमे प्रसव्यो पुत्रने रे, धारणी राणीए चंग ॥ जगतने हर्षकारी घणुं रे, संपूरण सवि अंग रे ॥ रा० ॥ ॥ ५ ॥ लक्षण लक्षित देहनी रे, जस आकार पवित्र ॥ पूरव दिशि जिम अर्कने रे, प्रसवे तिम ए पुत्र रे ॥ रा० ॥ ६ ॥ जन्मोत्सव करे पुत्रनो रे, राजा अतिहि उदार ॥ दानादिक आपे घणां रे, आवे वधामणी सार रे ॥ ॥ रा० ॥ ७ ॥ रायघरे धन बहु वधे रे, तिम वली हर्ष वधंत ॥ स्वजन कुटुंब मली सवे रे, हर्षे नाम धरंत रे ॥ रा० ॥ ८ ॥ शुज दिवसे शुज लग्नमां रे, धनकुमर अति चंग ॥ रायने कुमर देखी वधे रे, दिन दिन अति उछरंग रे ॥ रा० ॥ ए ॥ अनुक्रमे यौवन आवीयो रे, सकल कला लही तेण ॥ आश्चर्य उपजे विबुधने रे, थोमा दिनथी जेण रे ॥ रा० ॥ १० ॥ तनु नयणे करी जीतीया रे, कनक कमल कृश केश ॥ मानुं तेणे कारण कस्यो रे, जलण जले परवेश रे ॥ रा० ॥ ११ ॥ पंच धावे माता पिता रे, एक अंकथी लहे एक ॥ स्नेह ने धन साथे वधे रे, जिम विद्या ने विवेक रे ॥ रा० ॥ १२ ॥ बीजनो चंद वधे यथा रे, गिरिमां चंपक ठोम ॥ नागरवेली तरु मधे रे, तिम वधे पुत्र न खोम रे ॥ रा० ॥ १३ ॥ रूपे अनंगने जींपतो रे, अज्यस्यो शास्त्र अशेष ॥ सकल कला शीखी तिणे रे, कोइ नहीं तस शेष रे ॥ रा० ॥ १४ ॥ कलहंसे राजहंसलो रे,

जिम विचरे तिम एह ॥ राजकुमरशुं परवस्यो रे, नमे उद्यानमां तेह रे ॥ ॥ रा० ॥ १५ ॥ लोक वसे जे तिहां कणे रे, गुण संभारे तास ॥ रूप यौवन बुद्धि प्रमुखना रे, वली लावण्य विलास रे ॥ रा० ॥ १६ ॥ हृदयफलक मांहे लिखी रे, मृगअक्षी मन ध्याय ॥ पक्षीछंदो लिखे शीखवा रे, चित्रकरा शुभभाय रे ॥ रा० ॥ १७ ॥ ढाल त्रीजी एणी परे कही रे, धनकुमर अधिकार ॥ धनवतीनी हवे वारता रे, पद्म कहे सुखकार ॥ रा० ॥ ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥ ७६ ॥ सर्व श्लोक तथा गाथा मली ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुसुमपुरे इण अवसरे, सिंह परे सिंह राय ॥ यशकीरति जस अति घणी, समरथ रण करणाय ॥ १ ॥ चंद्रलेखा परे निर्मली, विमला तेहनी नार ॥ पट्टराणी प्राणवल्लभा, देवी भूचरी अनुहार ॥ २ ॥ बहु पुत्रोपरि इछतां, पुत्री हुइ गुणधाम ॥ अनुपम आकृति जेहनी, नृप दीये धनवती नाम ॥ ३ ॥ रत्यादिक रमणी भली, रूपे जीती तेह ॥ युवती योग्य चोसठ कला, दिन थोडे ग्रहे तेह ॥ ४ ॥ भ्रम सहु लोकने उपजे, सरस्सती सरखी भाल ॥ मोहे ते सवि लोकने, मानुं नाखी जाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ चतुर सनेही मोहना ॥ अथवा क्रीमा करी घरे आवीयो ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन सखीए परवरी, जोवा गइ उद्यान रे ॥ पामे शोभा अति घणी, वृक्ष ते पल्लव वान रे ॥ ए० ॥ १ ॥ ॥ सतछद फूली रह्यो, करता भ्रमर गुंजार रे ॥ बेसे भमता आवी तिहां, दीसे अति मनोहार रे ॥ ए० ॥ २ ॥ पंचबाण बाणी थइ, मूके नवलां बाण रे ॥ स्वछांबु सरोवर भस्युं, खग क्रीडे तिण ठाण रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ सारस खगनां जोमलां, क्रेंकारव करे तेह रे ॥ राजहंस तिहां शोभता, दानशाला मानुं जेह रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ ते उपवनमां विचरती, स्वेछाए ते नारी रे ॥ इंद्राणी नंदनवने, विचरे तिम गुणधारी रे ॥ ए० ॥ ॥ ५ ॥ इणी परे विचरतां तेहनी, वृक्ष अशोकनी हेठ रे ॥ चित्रकार एक मनुजने, नजर गइ तिहां ठेठ रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ तस हस्ते चित्रपट्टिका, ले वलथी निज हाथ रे ॥ नरनुं रूप देखी करी, चिंते कमलिनी साथ रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ रूपे विस्मित सा कहे, चित्रकारने एम रे ॥ केहनुं रूप ए चितर्युं, सुर असुर के केम रे ॥ ए० ॥ ८ ॥ अद्भुत रूप ए संभवे, केहनुं नहीं ए रूप रे ॥

बुद्धिकुशल देखाववा, तें लख्युं एह सरूप रे ॥ ए० ॥ ए ॥ लोक अनेक उपायतां, घूरू हुउं विधि श्रांत रे ॥ तो ए रूप उपाथवा, किहां समर्थ हुवंत रे ॥ ए० ॥ १० ॥ चित्रकारक कहे तेहने, चतुराइ नहीं मुज्झ रे ॥ एह पुरुषनी वारता, कहुं ते सांभल तुज्झ रे ॥ ए० ॥ ११ ॥ अचलपुराधीश पुत्रनुं, आलेख्युं में रूप रे ॥ कूटलेखक मुझने कहे, देखी तास अनूप रे ॥ ए० ॥ १२ ॥ उत्कंठित देवांगना, गावे जास चरित्र रे॥ शशिनिर्मल जश जेहनो, जास चरित्र पवित्र रे ॥ ए० ॥ १३॥ गुण उत्कर्ष देखी करी, रहत प्रछन्न अनंग रे॥ देखी जास गंभीरता, अब्धि क्षार मानुं चंग रे ॥ ए० ॥ १४ ॥ निरखे एह जे पुरुषने, चित्र लहे मन तेह रे॥ मुझने मुरखमां गणे, एहमां नहीं संदेह रे ॥ ए० ॥ १५ ॥ कूपदर्दुरनी सारिखी, मुझ शंसा करे ताम रे ॥ मुग्धा तुं कांइ नवि लहे, दीठो नहीं ते जाम रे ॥ ए० ॥ १६ ॥ इंद्राणी मोही रहे, देखी तेहनुं रूप रे ॥ नेत्रविनोदने कारणे, ए आलेख्युं स्वरूप रे ॥ ए० ॥ १७ ॥ देखी सांभली वयणडुं, तस अनुरागी अत्यंत रे ॥ मनसंकल्प लही करी, कमलिनी तव बोलंत रे ॥ ए० ॥ ॥ १८ ॥ जोवा रूप आलेखीयुं, एम कही आगल जाय रे ॥ धनवती शून्य हृदय थकी, तेहनी साथे थाय रे ॥ ए० ॥ १९ ॥ पद्मसंकोचमुखी तदा, पाछुं जोती जाय रे ॥ पदे पदे खलना पामती, गृह सन्मुख सा थाय रे ॥ ए० ॥ २० ॥ रति पण क्यांही नवि लहे, नवि भुंजे न पीवंत रे ॥ निद्रा नावे रयणीमां, उलस वालस हुंत रे ॥ ए० ॥ २१ ॥ स्नान तज्युं अर्चा तजी, अलंकार तजे सर्व रे ॥ अहनिश चिंते तेहने, जिम श्रावक व्रत पर्व रे ॥ ए० ॥ २२ ॥ मोहवशे चेष्टा करे, कामशास्त्र कही जेह रे ॥ तिणे तजीये ए मोहने, जिणथी दुःख अछेह रे॥ ए० ॥ २३ ॥ एक दिन पूछे कमलिनी, धनवती कुमरीने सार रे ॥ पीडे शे दुःखे करी, कहे तुझ दुःखनो पार रे ॥ ए० ॥ २४ ॥ कृतकृत्रिमकोपा कहे, धनवती तेहने वाणी रे ॥ पूछे बाह्य लोकनी परे, मुझने केम अजाणी रे ॥ ए० ॥ २५ ॥ बीजुं महारुं हृदय छे, तुं सखीमात्र न होय रे ॥ तुझ प्रश्ने लज्जित भइ, अथवा जीवित जोय रे ॥ ए० ॥ २६ ॥ उलंभो दीधो मुने, तें साचो मुझ एह रे॥ में जाण्युं ते तादृशो, छतो मनोरथ जेह रे ॥ ए० ॥ २७ ॥ धनइच्छा जाणी करी, में पूछ्युं नैमित्त रे ॥ प्रत्यय दीठा जेहना, ते कहे सुण शुभ चित्त रे ॥ ए० ॥

॥ २८ ॥ धैर्य धरे सुण तुज सखी, शीघ्र होशे वर सार रे ॥ एम कही आश्वासी तिणे, धैर्य धरे सा उदार रे ॥ ए० ॥ २९ ॥ पंमित उत्तमविजयनी, साहे चोथी ढाल रे ॥ पद्म कहे आगल वली, सुणीये वात रसाल रे ॥ ए० ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ १११ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ वस्त्राजरण पहेरी करी, आवे पितरनी पास ॥ बेसे अंक उत्साहशुं, रतिरूपे सुविलास ॥ १ ॥ कुमरी विसर्जी चिंतवे, अहो मुज पुत्री रूप रे ॥ ए सरखो वर कुण हशे, उत्तम गुण अनुरूप ॥ २ ॥ एम चिंतामां दिन गयो, शयन करे नृप रात ॥ देखे सुपनुं एहवुं, सांजलो ते अवदात ॥ ३ ॥ मनमां चिंता नवि करो, इष्टप्राप्तिमां कोय ॥ कमलिनी अर्क संयोगने, कुण करे सहेजे होय ॥ ४ ॥ राजा जाग्यो चिंतवे, सुपन अछे अनुकूल ॥ पण जे चिंता कीजीये, ते छे फुःखनुं मूल ॥ ५ ॥ जे जावी होय ते बने, चिंता न करे अन्य ॥ गतचिंता राजा थइ, करे प्रह समे पुण्य ॥ ६ ॥ यडुक्तं ॥ जाडण कस्सइ चिंता, ते सुविसा नूण डुहफला चेव ॥ होयव महोयवं च, अन्नहा न कुणइ चिंता ॥ १ ॥ सहस सामंते परवस्यो, बेठो ते आस्थान ॥ प्रतिहारी आवी तिसे, कनकदंम जस पाण ॥ ७ ॥ चित्रमती मूक्यो हतो, पहेलां जेह अमात्य ॥ विक्रमधन पासे थकी, आव्यो तेह विख्यात ॥ ८ ॥ द्वारे ते उनो अछे, सुणी वात कहे राय ॥ वहेलो मोकल तेहने, ते पण ततक्षण जाय ॥ ए ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ रामचंदके बाग ॥ ए देशी ॥

॥ विनये करी परणाम, थानक उचित रहे री ॥ राज काजनी वात, रायने सर्व कहे री ॥ १ ॥ नूपति कहे कहे कांइ, आश्चर्य जेह गह्यो री ॥ तेह कहे सुण राय, में जे दृष्टि लह्यो री ॥ २ ॥ दीतुं ते न कहाय, पण संक्षेपे कहुं री ॥ विक्रमधननो पुत्र, आश्चर्यकारी लहुं री ॥ ३ ॥ रूप तेज तस बुद्धि, विनय गंजीरपणुं री ॥ थिरता धैर्य औदार्य, तस गुण केता गणुं री ॥ ४ ॥ गुण एकेकनो पार, बुध पण नविय लहे री ॥ देव देखी जस रूप, मन आश्चर्य वहे री ॥ ५ ॥ कहीये शुं घणुं तास, गुण प्रत्येक स्तवे री ॥ सहसवदन पण तास, आयु पूरे न भवे री ॥ ६ ॥ युक्तायुक्तनी वात, जाणो राज तुमे री ॥ धनवती धन संजोग, योग्य तो लहुं अमे री ॥ ७ ॥ लक्ष्मी

हरि हर गौरी, योगथी जस अर्च्यों री ॥ जाये विधातानो तेह, जो ये योग वस्यो री ॥ ७ ॥ विद्याधर सुर क्यांहि, एहवुं रूप नहीं री ॥ मन चिंते जूपाल, धनवती योग्य सही री ॥ ए ॥ जो होय एह संयोग, पूगे हर्ष जलो री ॥ विधिनो जेह प्रयास, ते पण होय सफलो री ॥ १० ॥ हर्षित कहे जूपाल, तें जलो काम कस्या री ॥ वरचिंताब्धिथी आज, तें मुजने उद्धस्यो री ॥ ११ ॥ धनवती देवा काज, तिहां तुं जाय फरी री ॥ विक्रमधनने प्रार्थी, ए मुज आण खरी री ॥ १२ ॥ चंद्रवती इण नाम, धनवती अनुजा तिहां री ॥ आवी वंदवा हेत, वेठा पितर जिहां री ॥ १३ ॥ निज घर पहोतो दूत, मुदिता चंद्रवती री ॥ पहोती जगिनी पास, कही ते वात ठती री ॥ १४ ॥ धनवती कहे ते जूठ, नहीं ए वात खरी री ॥ अज्ञाने कहे एह, नहीं परमार्थ वरी री ॥ १५ ॥ दूत कोइ अन्य काम, मूक्यो जूपतिए री ॥ मुग्धा एम मुज काज, समजी किम पतिए री ॥ १६ ॥ कमलिणी कहे ए वात, जूठ नवि संजवे री ॥ होशे कारज सिद्धि, वाचा शुकन लवे री ॥ १७ ॥ अथवा कहे ए दूत, निज घर ठेअ हजी री ॥ सुणीये तस मुख वात, वीजुं सर्व तजी री ॥ १८ ॥ दूत तेमी निज पास, तस मुख वात सुणी री ॥ जाव लिखित सा नारी, हरखी चित्त घणी री ॥ १ए ॥ दूतने कहे मुज लेख, धनने देजे जइ री ॥ अचलपुरे ते दूत, पहोतो शीघ्र थइ री ॥ २० ॥ गणांतरे रह्यो राय, प्रणमे तास जणी री ॥ राय पूछे सुखशात, सिंह नरेंद्र तणी री ॥ २१ ॥ शीघ्र आव्यो तुं फेर, होय विकल्प तणे री ॥ सिंह केसरी जे तास, ते कहे जय न मने री ॥ २२ ॥ तुज सरिखा जस राय, हितवंठक कुशल्या री ॥ तस अकुशल किम होय, पर वहु राय मिल्या री ॥ २३ ॥ पण तुज पुत्रने तास, धनवती पुत्री दीये री ॥ धन परे ते उत्कृष्ट, सुर अनिमेष जुए री ॥ २४ ॥ एह उचित संयोग, कनकमां मणिय परे री ॥ अंगे पण तुम स्नेह, वली वली अधिक धरे री ॥ २५ ॥ स्नेह वधे जिम वारि, सिंचे वृक्ष वधे री ॥ नृपतिए मानी वात, एणी परे कार्य सधे री ॥ २६ ॥ सांजली कुमर ते कान, चिंता चित्त धरे री ॥ ताते तो मानी वात, जेह अमात्य कहे री ॥ २७ ॥ गुण अवगुण पण तास, सुपने नविय लहुं री ॥ मिथ्या ने मीठी वाणी, दूत तो वोले सहु री ॥ २८ ॥ पण अणजाणी वात,

करवी चारु नहीं री ॥ दुष्ट नारी दुःखमूल, नाख्युं ग्रंथे सही री ॥ २९॥ यडुक्तं ॥ वाचाला कलहप्रिया च कुटिला क्रोधान्विता निर्दया, मूर्खा मर्मविनाषिणी च कृपणा माया यथा किंकिमा ॥ नर्तुर्द्रूपकरी कलंककलिता कुविंनरी सर्वदा, कद्रूपा गुरुदेवनक्तिरहिता नार्या नवेत्पापतः ॥ २ ॥ कुमर चिंतातुर एम, वेगे नव निससी री ॥ तव आव्यो ते दूत, चिंता दूर थसी री ॥ ३० ॥ दीधुं आदरमान, कुमरे तास वही री ॥ पद्मविजय एम एह, पांचमी ढाल कही री ॥ ३१ ॥ सर्व गाथा ॥ १५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चित्रगति कहे कुंवरने, सांनल हुं कहुं तेम ॥ धनवतीए ए लेख दीयो, तुजने आणी प्रेम ॥ १ ॥ कागल उखेली करी, वांचे कुंवर तत्र ॥ मानुं मदननो तेह ठे, सांनलजो कहुं अत्र ॥२॥ यडुक्तं ॥ हेमाचार्यविरचितनेमिजिनचरित्रे ॥ विशेषितश्रीः शरदा, यौवनेनेव पद्मिनी ॥ परिम्लानमुखी वांछ,-त्यादित्यकरपीडनम् ॥ ३ ॥ वांची कुंवर ते पत्रने, चिंते चित्तमां एम ॥ जो पण नथी प्रत्यक्ष मुज, पण गुणवंती नेम ॥३॥ वचनविलासथी जाणीये, नाव हृदयनो ठाम ॥ नाव लख्या पठी को नहीं, रूपादिकनुं काम ॥४॥ यडुक्तं ॥ गाथा ॥ लहइ हसियं सहस्सं, पावइ लक्खं सहरिसमा लवणं ॥ सप्नावो सज्जणमा,-णुसस्स कोमी विसेसेइ ॥४॥ एम चिंती ते निज करे, लखे लेख तिण वार ॥ धनवतीने जइ आपजे, वली मुक्ताफलहार ॥ ५ ॥ तेह जइ निज स्थानके, सिंहने कहे तुज वात ॥ मानी ठे ते सांनली, हरख्यो साते धात ॥ ६ ॥ हार पत्र धनवती करे, आपीने कहे तेह ॥ धनकुमरे निज हाथथी, लखीयो ठे गुणगेह ॥ ७ ॥ उक्तं च ॥ हेमाचार्यविरचितनेमिचरित्रे ॥ यत्प्रमोदयते सूर्यः पद्मिनीकरपीमनात् ॥ सोऽर्थः स्वनावसंसिद्धो, न हि याच्ञामपेक्षते ॥ ५ ॥ अपरं च ॥ सच्चं पगइएसु, चितयाहारं सारगुणगणग्घवियं ॥ दोसरहियं धरेयंसु, हारं हियए पियपमं च ॥ ६ ॥ वांची मनमां चिंतवे, निज करलता संकेत ॥ कंठ न्यास ए मोकल्यो, हार उचित्त गुण देत ॥ ८ ॥ पहेस्यो हार ते ततक्षणे, संतोष्यो ते दूत ॥ कुमरी परणवा मोकले, नृप सामग्री युत ॥ ए ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥ राग खंनाती ॥ हवे श्रीपालकुमार ॥ ए देशी॥

॥ शुन दिवसे सिंह राय, अचलपुरे वोलाववा जी ॥ वृद्ध मंत्री बहु साथ,

आपे अधिक सोहाववा जी ॥ १ ॥ धण धान्य हाटक रत्न, वस्त्र अमूलक वहु दीयां जी ॥ जातां प्रणमे पाय, ताते पण शीखावीयां जी ॥ २ ॥ गद्गद स्वरथी राय, आदरथी इणी परे जणे जी ॥ नरने विनय उचित, होय विशेष नारीपणे जी ॥ ३ ॥ जो करे तपसी क्रोध, निंदित होय तस तपपणुं जी ॥ पराधीन नित्य नारी, तिणे उपशम शोजे घणुं जी ॥ ४ ॥ नीच पुरुषने संग, उत्तम पण मारग तजे जी ॥ अवला तजे कुल मग्ग, एहमां कुण अचरिज जजे जी ॥ ५ ॥ यडुक्तं ॥ अंवस्स य निंवस्स य, डुएहं विसमा गयाइ मूलाइं ॥ संसग्गेण विणठो, अंवो निंवत्तणं पत्तो ॥ ५ ॥ पुत्रादिक पण जेह, अनुजाइ विण नवि गमे जी ॥ तो सुसरादिक आयत्त, तेह विशेष मन नवि रमे जी ॥ ६ ॥ दाण दीये तस लछी, नवि पासुं मूके कदा जी ॥ राखी पण न रहंत, नरने आपद् होय यदा जी ॥ ७ ॥ कनक रत्नादि आजर्ण, ते विजूषा न करे किमे जी ॥ जूषित होय तव देह, शीलाजरण धरे समे जी ॥ ८ ॥ तिण कारण सुण वत्स, विनय क्षमा शुज संगता जी ॥ अनुवित्तिपणुं वलिदान, राखजो तुम्हे शुरू शीलता जी ॥ ए ॥ देइ पिता रह्या शीख, माता कहे सुण दीकरी जी ॥ सासु ससरा जेठ, तेहनी म चूकजो चाकरी जी ॥ १० ॥ जगिनी परे गणे शोक्य, देव परे पति मानजे जी ॥ पति प्रसाद अपमान, मान विकार ते नाणजे जी ॥ ११ ॥ दीधी एम वहु शीख, रूतां हियडे जीमीने जी ॥ करी प्रमाण तस आण, डुःख आंसु तिहां रेमीने जी ॥ १२ ॥ अचलपुरी उद्यान, पहोती अनुक्रमे धनवती जी ॥ विक्रमधन दीये तास, विपुल आवास शोजे अति जी ॥ १३ ॥ शुज लगने शुज घस्र, अति आमंवरथी तिहां जी ॥ धनवती धनकुमार, परण्यां ने मन उम्मह्यां जी ॥ १४ ॥ तडित जीमूत परे तेह, रति कंदर्प समो वन्यो जी ॥ तिम धनवतीशुं तेह, काल न जाणे जाय गण्यो जी ॥ १५ ॥ तुरिय खिलावण हेत, कुंवर वन मांहि गयो जी ॥ घनरव परे अतिशब्द, ते वनमां सहसा थयो जी ॥ १६ ॥ मन चिंते ते कुमार, नहीं घनगर्जारव इहां जी ॥ नवि दीसे आकाश, मेघघटा परिसरे किहां जी ॥ १७ ॥ एम चिंतवतो जाय, वहु शालवन उद्यानमां जी ॥ शब्दानुसारे तेह, आवी देखे ते रानमां जी ॥ १८ ॥ सुर नर खेचर मध्य, कनककमल उपर रही जी ॥ देता तिहां उपदेश, सूरीश्वर देखे सही जी ॥ १९ ॥ चिंते शुं ए सूरि, नहीं तस डुःख दर्शन अछे जी ॥ एह

च ॥ जाणंति बुद्धिमंता, महिलाचरियं न जाणंति ॥ ६ ॥ जलमज्जे मछिपयं, आगासे पक्खियाण पयपंती ॥ महिलाहिययाणमग्गो, तिन्निवि विरला पयंपंति ॥ ७ ॥ भवबीजक हो दीवी नरकने मग्ग के, शोककंद कलिमूल छे ॥ इणी रीते हो अंगना डुःखखाण के, पंमित मन ए शूल छे ॥ ७ ॥ यतः ॥ भवस्य बीजं नरक,-द्वारमार्गस्य दीपिका ॥ शुचां कंदः कलेर्मूलं, डुःखानां खानिरंगना ॥ ८ ॥ भाइ स्नेह ते हो विघटाव्यो एण के, स्त्रीसामर्थ्य अहो बहु ॥ चिर बांध्यो हो पलटाव्यो स्नेह के, नवि माने हवे मुक कह्युं ॥ ८ ॥ यतः ॥ पेछस्स सामछं इछियाणं, बहु कवम कूम भरियाणं ॥ उम्मूलयंति चिरवरू, मूलमवि बंधुनेहतरुं ॥ ए ॥ स्नेह रूखडुं हो तिहां लगे रहे अच्छ के, नारीवचन दृढ जिहां लगे ॥ तीखा परशुनी हो धारा नवि लग्ग के, सवि नर नारी मूके पगे ॥ ए ॥ यतः ॥ तावच्चिय नेहतरु, सिणिरू बंधूण वट्टए निच्चं ॥ नारीवयण दृढ निसिय, परसुधाराउ न वहंति ॥ १० ॥ एम चिंतवी हो धन सहित ते गेह के, गिरुउ सोंपी तेहने ॥ एकाकी हो नीकलीयो जिन्न के, तृण सम ऋद्धि छे जेहने ॥ १० ॥ हवे जन सवि हो करे तास प्रशंस के, वली कहे नारी वसंतने ॥ करी गांठी हो नीकलीयो बाहिर के, वारंवार कहे कंतने ॥ ११ ॥ ऋद्धि बहुली हो पण नाठी तास के, ज्येष्ट भाइ अरज्यो नवि ॥ वली बलगो हो कहे राखी गांठ के, तें नवि आपीजे सवि ॥ १२ ॥ लघु भाइने हो डव्य वली दीये तेह के, ते खूटे नागे वली ॥ आपे एम हो बहुवार ते ऋद्धि के, लोक हिले लघुने मली ॥ १३ ॥ वृद्ध भ्राता हो तोही धरे स्नेह के, मीठे वचने बोलावतो ॥ एह मनमां हो चिंते इण भांति के, ए मुकने हेलावतो ॥ १४ ॥ नवि जाणे हो पुण्ये करी होय के, लखमी एहने अति घणी ॥ हुं नीकल्यो हो नारीने वयण के, पुण्यहीनमां शिरोमणि ॥ १५ ॥ विलखो थइ हो लज्जा मन आणी के, गाम नगर फरतो फरे ॥ नवि पामे हो पुण्ये करी शून्य के, कोमी एक ते निज करे ॥ ॥ १६ ॥ मेलां तव हो धरे वस्त्र ने देह के, भूल्यो दीन ते दलिदरी ॥ प्रछन्न ते हो वृद्ध भ्रातने तेह के, हणवाने काढे छुरी ॥ १७ ॥ वृद्ध भ्राता हो बंचावी घाय के, मनमां इणी परे चिंतवे ॥ जुवो स्नेही हो बंधव हुतो एह के, मारण आव्यो कैतवे ॥ १८ ॥ करतां मुक हो उपकार अशेष के, कारण विणु वेरी थयो ॥ जेम ए थयो हो तिम सवि परिवार के, मात तात

नार्या नयो ॥ १ए ॥ एह नवमां हो दुःख लहने देत के, परनव वात तो वेगली ॥ लख दोषमां हो हितबुद्धि होय के, विपर्यास ए मति वली ॥ २० ॥ यतः ॥ नूणविवज्जा सोच्चिय, केणइ धूती रयस्सव जणस्स ॥ जं सुय सयणाईसु, दिठदोस लक्खे सुहिय बुद्धि ॥ २१ ॥ दारा परिनवकारा, बंधुजनो बंधनं विषं विषयाः ॥ कोऽयं जनस्य मोहो, ये रिपवस्तेषु सुहृदाशा ॥ २१ ॥ इत्यादिक हो वैराग्य महंत के, नीकलीयो उद्यानमां ॥ दीठा तिहां हो समताधर साध के, रमता उत्तम ध्यानमां ॥ २१ ॥ तस अंते हो जिनवरनो धर्म के, सांनलीने व्रत आदर्‍यो ॥ लघु नाता हो तापसने अंतिके, तापसनी दीक्षा वर्‍यो ॥ २२ ॥ वृद्ध नाता हो पाली चारित्र के, सौधर्मे सुर उपनो ॥ लघु नाता हो ज्योतिष थयो देव के, नम्यो संसार दुःख नीपन्यो ॥ २३ ॥ अनुक्रमे हो बहु शाल उद्यान के, एहमां कृष्ण सरप थयो ॥ सिंह जीवम्रो हो नोगवे सुरसुख के, पूरव पुण्यथी सुख थयुं ॥ २४ ॥ जिनवरनी हो उत्तम जे दीक्ष के, तास प्रनाव ए जाणजो ॥ ढाल आठमी हो वैराग्यनो कंद के, पद्म कहे चित्त आणजो ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २५२ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंह जीव हवे उपनो, आयु खये करी तेह ॥ गजपुर नगरे सुरेंद्र नृप, वसुंधर सुत ससनेह ॥ १ ॥ गुणगणनो आवास ते, दीठा एक दिन साध ॥ जातिसमरण उपनुं, पाम्यो हर्ष अगाध ॥ २ ॥ सिंह जनम तव सांनर्‍यो, उपनो तिहां वैराग्य ॥ गणधर केवलीने निकट, ले दीक्षा महानाग ॥ ३ ॥ पूछे केवलीने तिहां, लघु नाइ संबंध ॥ साप तणो नव सांनली, थयो वैराग्य प्रबंध ॥ ४ ॥ अनुक्रमे चौद पूरव नण्या, ते वसुंधर मुनिराय ॥ तप तपता अति आकरां, संजम ध्यान सुहाय ॥ ५ ॥ अवधिनाण तस उपनुं, तह मणपज्जवनाण ॥ केवल योग्य जाणी ठवे, सूरिपदे निज ठाण ॥ ६ ॥ विचरंतो आव्यो इहां, प्रतिबोधवा नाग ॥ तेहने धर्म सुणावीयो, ते पाम्यो वैराग ॥ ७ ॥ जाति संनारीने कर्‍युं, अणसण अतिहि उदार ॥ गतकाले पंचम दिने, सर्प समाधि मकार ॥ ८ ॥ काल करीने उपनो, वर सौधर्मे देव ॥ ते वसुंधर मुनि जाणजे, जे कहुं तुक स्वयमेव ॥ ॥ ए ॥ कुंवर कहे धन्य स्वामीजी, दुःख बहु देखे लोक ॥ तुम्ह परे व्रत नवि आदरे, तुमे पास्युं फल रोक ॥ १० ॥

॥ ढाल नवमी ॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर तिहां सांभले रे, विक्रमधन महीपाल ॥ पाउ धास्या मुनिवर इहां रे, जीवदया प्रतिपाल ॥ सुगुण नर सुणो सुगुणानी वात ॥ सुणतां होय सुखशात ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वांदवा जाये राय ॥ साथे राणी धारणी रे, धनवती पण सुखदाय ॥ सु० ॥ २ ॥ पंचाभिगम साचवे रे, सचित्त द्रव्यादिक जेह ॥ खड्गादिक मूके तथा रे, राजचिह्न कह्यां तेह ॥ सु० ॥ ३ ॥ राय राणी प्रणमी करी रे, वेसे निज निज स्थान ॥ सांभले धर्मनी देशना रे, कर्णामृत मानुं पान ॥ सु० ॥ ४ ॥ देशना प्रांते भूपति रे, विनये जोडी हाथ ॥ चूतादिकनी वारता रे, स्वप्न पूछे मुनि साथ ॥ सु० ॥ ५ ॥ संपूरण नवि पामीयो रे, तेह स्वपननो अर्थ ॥ कृपा करी मुज दाखीये रे, हितकारक शिवसर्थ ॥ सु० ॥ ६ ॥ ज्ञान मने परजुंजीयुं रे, दीठा केवली जाम ॥ दूर थकी पूछे प्रभु रे, भाखे केवली ताम ॥ सु० ॥ ७ ॥ नेमिचरित्र कह्युं सवे रे, नव भव जेह संबंध ॥ अवधिमने जाणी करी रे, भाखे तेह प्रबंध ॥ सु० ॥ ८ ॥ नवमी वार वपायशे रे, उत्कृष्टुं फल जेह ॥ नवमे भव शिव पामशे रे, धनकुमर सुणो एह ॥ सु० ॥ ९ ॥ नवमे भव बावीशमो रे, नेमि तिर्थंकर नाम ॥ यादववंशमां उपनो रे, होशे गुणनुं धाम ॥ सु० ॥ १० ॥ एम मुनिवचन ते सांभली रे, भूपति मन हरखंत ॥ जिनधर्मे प्राणी घणा रे, दृढधर्मा होवंत ॥ सु० ॥ ११ ॥ केइ भद्रक भावी थया रे, केइ देशविरति लहंत ॥ निज घर पहोतो भूपति रे धनकुमारादिकवंत ॥ सु० ॥ १२ ॥ भव्यांबुज पडिबोहता रे, विहार करे, सूरिराय ॥ ऋतु उचित क्रीडा करे रे, धन धनवतीय सहाय ॥ सु० ॥ १३ ॥ उष्णकाल इणे अवसरे रे, प्रगट्यो अति दुःखदाय ॥ सरितामां पाणी घटे रे, रजनी परे कृश थाय ॥ सु० ॥ १४ ॥ भ्रासम परे वाये वायरा रे, सूर्य करे अति ताप ॥ अंगारा जिम पाथस्या रे, पंथीजनने संताप ॥ सु० ॥ १५ ॥ पंथीजन पंथे भमे रे, तरु तरु तले जइ गाय ॥ परब परब प्रते पेसता रे, कहे पाणी कोइ पाय ॥ सु० ॥ १६ ॥ शकटे जोड्या बलदीया रे, साथ परोणा वग्ग ॥ जिह्वा काढे बाहिरे रे, पाद मूके उन्मग्ग ॥ सु० ॥ १७ ॥ मयण अग्निसंयोगथी रे, तिम प्रस्वेद द्रवंत ॥ ताल पलाश केलिपत्रने रे, निजणे पाय टोयंत ॥ सु० ॥ १८ ॥ मारगवेदु परजले रे, वस्त्र क्लिन्न होय तास ॥

कूप मांहे पडे पंखीयां रे, पामी अतिहि पिपास ॥ सु० ॥ १९ ॥ इण अवसर सर झीलवा रे, आव्या धनवती साथ ॥ क्रीडा करतां दंपती रे, देखे अचरिज पाथ ॥ सु० ॥ २० तिहां अशोकतरु तले रे, दीठा मुनिय महंत ॥ अंगवान शांत रस परे रे, शांत दांत गुणवंत ॥ सु० ॥ २१ ॥ धर्मनो श्रम बहु उपनो रे, तृषाक्रांत मुनिराज ॥ तालु उंठ सूकी गयां रे, मानुं भवसमुद्र जहाज ॥ सु० ॥ २२ ॥ पादांबुजथी सिंचतो रे, भू रुधिरे मूर्छित ॥ पडता पृथिवी उपरे रे, मुनि धनने दर्शित ॥ सु० ॥ २३ ॥ हर्षविषादे उतावला रे, आव्या मुनिनी पास ॥ चिंते धन ए शुं थयुं रे, हा हा दैव विलास ॥ सु० ॥ २४ ॥ धनवती कहे सुणो स्वामीजी रे, नहीं विलंबनुं काम ॥ करो उपगार शीघ्रज थइ रे, पुण्ये लह्या गुणधाम ॥ सु० ॥ २५ ॥ शीतल वातादिक बहु रे, करी उपचार अनेक ॥ सज्ज करी मुनिरायने रे, वेगा धरीय विवेक ॥ सु० ॥ २६ ॥ नवमी ढाल एणी परे रे, भाखी अतिहि रसाल ॥ पंडित उत्तमविजयना रे, पद्मने मंगलमाल ॥ सु० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोडीने विनवे, भक्ति भराणो तेह ॥ सुरदंती किहां थकी हुवे, नीच मातंगने गेह ॥ १ ॥ चिंतामणि दुर्विध घरे, महारणमां सुररुंख ॥ पद्म सरोवर मरुपथे, पामे घेवर भूख ॥ २ ॥ देश अंतवासी अमो, अने पाम्यो तुम संग ॥ तुम देखी मुझ पुण्यना, प्रगट्या अतिहि तरंग ॥ ३ ॥ पण पूछुं तुम्हने प्रभु, किम उपनो ए खेद ॥ जो तुम खेद न उपजे, तो दाखो तस भेद ॥ ४ ॥ मन चिंते मुनिवर तदा, अहो अहो वचन विन्यास ॥ विनय भक्तिथी जाणीये, योग्य जीव सुप्रकाश ॥ ५ ॥ एह पुरुष जिनवर तणा, छे उपदेशने योग्य ॥ एम चिंती कहे कुमरने, सांभली देइ उपयोग ॥ ६ ॥ एह कथा महोटी अछे, पण कहेशुं संक्षेप ॥ सावधान थइ सांभलो, मूकी चित्त व्याक्षेप ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ कोइलो पर्वत धूंधलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ भुवनोदर नगरे वसे रे लो, मोह नरिंद विख्यात रे ॥ राजेसर ॥ सुर नर बहु आणा वहे रे लो, मिथ्यादर्शन अमात्य रे ॥ राजे० ॥ भु० ॥ १ ॥ तास मित्र अज्ञान छे रे लो, त्रिभुवनने दुःखदाय रे ॥ रा० ॥ नरक नगर सार्थप कह्यो रे लो, तद्हेतु पाप उपाय रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ २ ॥ विपरीत

मति लोकनी करे रे लो, माने देव कुदेव रे ॥ रा० ॥ धर्म कुधर्म विषे कहे रे लो, तत्त्व अतत्त्वे हेव रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ३ ॥ पात्र अपात्रे स-ईहे रे लो, अगुणे गुणनी बुद्ध रे ॥ रा० ॥ भव हेतुने मानतो रे लो, मोक्षनुं कारण शुद्ध रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ४ ॥ नाटकक्रीमा वालही रे लो, नारी नेत्र कटाक्ष रे ॥ रा० ॥ हत थइ दासपणुं लह्या रे लो, एहवे देव अध्यक्ष रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ५ ॥ मदनना किंकर थइ रह्या रे लो, मायावी नित क्रुद्ध रे ॥ रा० ॥ एहवा देव अपावता रे लो, जस हस्ते आयुद्ध रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ६ ॥ राग द्वेष जेहने गया रे लो, जे सर्वज्ञ प्रसिद्ध रे ॥ रा० ॥ समता शोभित देहनी रे लो, जेह असंग शिव इद्ध रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ७ ॥ मित्र शत्रु सरिखा गणे रे लो, वर्ज्या नारी-संग रे॥ रा० ॥माया मत्सर मद नहीं रे लो, परभावे नहीं रंग रे ॥ रा० ॥ ॥ भु० ॥ ८ ॥ आयुध नहीं जस हाथमां रे लो, सकल संग परिमुक्त रे ॥ ॥ रा० ॥ त्रण्य लोक परमेसरु रे लो, जैनसमयमां उक्त रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ॥ ए ॥ ढंकावे एह देवने रे लो, माने हवे एह धर्म रे ॥ रा० ॥ स्नान करे पशुवध करे रे लो, करे पंचाग्निनां कर्म रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १० ॥ क-न्यादान वली करे रे लो, जल जलणादि प्रवेश रे॥ रा० ॥ जीवादिकने उलवे रे लो, स्त्रीमुखी तत्त्व निवेश रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ ११ ॥ भूतघात रत प्राणीया रे लो, कोप घणो जस मान रे ॥ रा० ॥ लोभी एह कुपात्रने रे लो, माने पात्रने ध्यान रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १२ ॥ जे शम उपशम रस भर्यो रे लो, सवि जीवने हितकार रे ॥ रा० ॥ मन वच कायने गोपवे रे लो, नहीं मत्सर अहंकार रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १३ ॥ माया वर्जित मुनि-वरा रे लो, ब्रह्मचर्य धरे नित्य रे ॥ रा० ॥ नाणधणा निःसंगता रे लो, निरीहता जस चित्त रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १४ ॥ लोभ गयो जस सर्वथा रे लो, एहवा जे महंत रे ॥ रा० ॥ द्वेष करे ते उपरे रे लो, धारे बुद्धि कु-पात रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १५ ॥ मंत्र यंत्र वली तंत्रने रे लो, रसकिरिया इंद्रजाल रे ॥ रा० ॥ शुभ अशुभ निमित्त कहे रे लो, तिम वैदक असराल रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १६ ॥ पापशास्त्र नित्य जे भणे रे लो, जेहथी प्रा-णनो घात रे ॥ रा० ॥ ते गुणी करीने मनावतो रे लो, तस पूजा वली .. रे ॥ रा० ॥ भु० ॥ १७ ॥ जे पण जाणंता थका रे लो, मंत्र तंत्र

न करंत रे ॥ रा० ॥ पाप थकी वीहीता रहे रे लो, जास निरीह छे चित्त रे ॥ रा० ॥ जु० ॥ १८ ॥ लोजादिकथी वेगला रे लो, सद्यायध्यानमां मग्न रे ॥ रा० ॥ निगुणा माने तेहने रे लो, वली कहे नहीं ए गुणज्ञ रे ॥ रा० ॥ जु० ॥ १९ ॥ जीव वधादिकने कहे रे लो, शिवसुख कारण एह रे ॥ रा० ॥ मिथ्यादर्शन मंत्रवी रे लो, ए विपरीत करे जेह रे ॥ रा० ॥ जु० ॥ २० ॥ दशमी ढाल मांहे कह्युं रे लो, मोह नरिंद चरित्त रे ॥ रा० ॥ पद्मविजय कहे एहथी रे लो, रहेजो वेगला मित्त रे ॥ रा० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ३१७ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ असंव्यवहार नामे अछे, अन्य नगर वली अत्र ॥ गोलक नामे उजलां, असंख्यात गृह तत्र ॥ १ ॥ एक एक घरमां अछे, नाम निगोदे तेह ॥ संख्यातीता उरका, जिनवचने लह्या जेह ॥ २ ॥ एक एक ते उरडे, रहे अनंत कुटुंब ॥ संसारी जीव हुं हतो, तेहमां वहु विरुंव ॥ ३ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ सुण वहेनी पीयुडो परदेशी ॥ ए देशी ॥

॥ जवितव्यता नामे धणीयाणी, वलवंती मुज जाणी रे ॥ जेहने होय अनुकूल राणी, तेहने ते सुख खाणी रे ॥ कहे मुनिवर सुण कुमरजी वाणी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जेहने ए प्रतिकूल खाणी, तेहनी मति मुंजाणी रे ॥ अनंता पुग्गलपरियट्टा, अंते चिंते चित्त आणी रे ॥ क० ॥ २ ॥ अहो जोजो मोह मिथ्या सहिते, मुज जरतारने रुंधी रे ॥ छुःख देतां ए नगरे राखे, में पण नवि करी शुद्धि रे ॥ क० ॥ ३ ॥ ते कारण कोइक दिन लावुं, चारित्र रायने संगे रे ॥ तिहांथी उचाल्यो मुज तेणे, एम चिंती मन रंगे रे ॥ क० ॥ ४ ॥ वनस्पति नगरे तिणे आण्यो, काल अनंत छुःखदायो रे ॥ प्रत्येक तरुमां काल घणो रही, पृथ्वी प्रमुखमां आयो रे ॥ क० ॥ ५ ॥ ते चउ थावर मांहे प्रत्येके, उत्सर्पिणी असंख्याती रे ॥ प्रत्येके विकलेंद्रिय मांहे, काल संख्याता छुःखदाती रे ॥ क० ॥ ६ ॥ पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुजमां, तिम नारक ने देव रे ॥ ए जार्याए अतिय जमाड्यो, करतां मिछनी सेव रे ॥ के० ॥ ७ ॥ पुग्गलपरियट्ट अनंतवती ते, थइ अनुकूल ते जापे रे ॥ माहरी साह्य थकी हवे हण तुं, मोह मिछत्त विलासे रे ॥ क० ॥ ८ ॥ तेहनी साहे वहु में हणीया, तव तेणे देखाड्यो रे ॥

सम्यग्दर्शन नामे मंत्री, मुजने हर्ष कराव्यो रे ॥ क० ॥ ए ॥
सम्यग्दर्शनने, अंगीकृत करी राख्यो रे॥ तेहनी सान्निध्ये राग द्वेष
थीया सुख बहु चाख्यो रे ॥ क० ॥ १० ॥ नित्य सम्यक् आराध्यो
ते पण पुष्ट थइने रे ॥ चारित्र धर्म राय सुत गृहीनो, धर्म ते दीधो
रे ॥ क० ॥ ११ ॥ पलीय पृथकने खंड कस्यो तव, कर्म परिणाम ते
रे ॥ अनुक्रमे सागर संख्याता, ठेदन कर्मनुं थाय रे ॥ क० ॥ १२ ॥
रित्र राय सुत धर्म यतिनो, बंधुपणे गुरु साखे रे ॥ यतिधर्म
करतां, गुरवादिक मुज जाखे रे॥ क०॥ १३॥ दृढपणे एह धर्म
मोहशत्रु हवे हणजे रे ॥ तुज सखाइ तुं अमो साथे, नित्य आगम तुं
जे रे ॥ क० ॥ १४ ॥ नाम मुनिचंद महारुं जाणो, एक दिन गुरुनी
रे ॥ साथ सहित अमे विहार करतां, कर्यो आणा जिननाथे रे ॥ क० ॥ १५ ॥
महा डुर्गम अटवीमां आव्या, धाड पडी तिहां लूंट्यो रे ॥ लोक दशो दिश
सरवे नाठा, हुं तो साथथी छूट्यो रे॥ क० ॥ १६॥ दिशामूढ भूख्यो ने तरस्यो,
भमतो हुं इहां आव्यो रे ॥ घूर्मितलोचन विगतचेतना, ते तुम्हे मुजने
उठाव्यो रे ॥ क० ॥ १७ ॥ धन कहे स्वामी किरपा कीधी, निज चरित्रने क-
हेवे रे॥ जेम तुम्हारी वात कही तुम्हे, डुःख आतम बहु सहेवे रे॥ क० ॥
॥ १८ ॥ वात असारी पण गुरु दाखो, तव कहे गुरु सुण वाणी रे ॥ प्राये
चरित सरव जीवनां, जाणो एणी परे प्राणी रे ॥ क० ॥ १९ ॥ पण मिथ्या-
दर्शनथी पामे, डुःख बहुल ए जीव रे ॥ तव विनति कहे स्वामी मुज, दी-
र्घा डुःख अतीव रे ॥ क० ॥ २० ॥ तेहने घा करवा मुज आपो, तेज प्र-
चंड होय जेहनो रे ॥ सम्यग्दर्शन महा मंत्रीने, देखावो शुज चेनो रे॥
॥ क० ॥ २१ ॥ वचनमार्गथी सम्यग्दर्शन, देखावे मुनिचंद रे ॥ तव पुल-
कित धनकुमरने अंगे, माय न मोदनो वृंद रे ॥ क० ॥ २२ ॥ त्रण भुव-
ननो सार लह्यो में, सम्यग्दर्शन पाम्यो रे ॥ गृहीनो धर्म कस्यो वली अं-
गी, तेहथी डुःख बहु वाम्यो रे ॥ क० ॥ २३ ॥ मुनिवरने घर तेडी आ-
व्यो, पडिलाव्या अन्न पाने रे ॥ आवश्यकादिक शीखण कामे, मुनि राखे
बहुमाने रे ॥ क० ॥ २४ ॥ जाणी तिहां उपगार मोटको, आमहथी मु-
ने रहीया रे ॥ काल केतोइक तिहां मुनि रहीने, गुरुगछमां ज
॥ क० ॥ २५ ॥ धनवती ने धनकुमर परस्पर, पहेलां पण हती

अधिकी थइ तस धर्म लह्याथी, युवराजे करी नित रे॥ क० ॥२६॥ एकादशमी ढालमां पाम्या; समकित जगमां सारो रे ॥ पद्मविजय कहे ते कारण भवि, करो श्रद्धा निरधारो रे ॥ क० ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ३४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परलोके पहोतो पिता, तव सामंत अमात्य ॥ करे अभिषेक भूपतिपदे, दिशदिश तेह विख्यात ॥ १ ॥ राज्य तिहां धनकुंवर हवे, पाले नीति उदार ॥ बंधन छे तिहां काव्यने, सोगठीने कहे मार ॥ २ ॥ दंड छत्रने जाणीये, पक्खुं खगने वन्न ॥ दुहियां मंदिर दीसतां, तुछपणुं स्त्री मन्न ॥ ३ ॥ जाड्यपणुं छे तरुवरे, कलह अछे गजवृंद ॥ पण नहीं तेहना राजमां; लोक विषे दुःखदंद ॥ ४ ॥ जीर्णोद्धार करावतो, तिम रहजत्त विचित्त ॥ साहमीवछल तिम करे, दीये दान शुभ पत्त ॥ ५ ॥ पर्वतिथे पोसह करे, तिम सामायिक सार ॥ वनपालक तस एकदा, दीये वधाइ उदार ॥ ६ ॥ स्वामी तुम मन वालहा, पहेला वांद्या जेह ॥ ते बहु शालिवने इहां, पाउ धास्या गुणगेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ हांरे मारे जोवनीयानो लटको दहाडा चार जो ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे मारे वनपालक सुखदायकनी सुणी वाण जो, राजा ज्युं चिंतामणि पाम्यानी परे रे लो ॥ हांरे मारे माय न देहे न गेहे पुरवर मांहि जो, त्रिभुवन मांहे आणंद ते इणी परे विस्तरे रे लो ॥ १ ॥ हां० ॥ देइ दान अने बहुमान अत्यंत जो, उठीने परणाम करे नृप भावथी रे लो ॥ हां० ॥ करे मज्जन सूरीसर वंदन काम जो, हार विराजित वक्ष वस्त्र निष्पावथी रे लो ॥ २ ॥ हां० ॥ चउदंतो गजखंधगतो नरराय जो, अति शोभंतो नागघटाथी परिवस्यो रे लो ॥ हां० ॥ वरघोडा भूंइ फोड्याथी होये रेत जो, उछलती दिग्अंत तेणे पूरो भस्यो रे लो ॥ ३ ॥ हां० ॥ मणिकिंकिणी खण खण कर रथवर त्यांहि जो, भडे विस्तार विफार ते संकम मग्गने रे लो ॥ हां० ॥ बेठा निज प्रासादे सेठा सार जो, देखाडे मांहोमांहे अंगुलि अग्गने रे लो ॥ ४ ॥ हां० ॥ अनुक्रमे पहोतो गहगहतो मुनिपाय जो, देइ प्रदक्षिणा भक्तिथी प्रणमी उपविशे रे लो ॥ हां० ॥ कहे उपगार कस्यो सहकारनी पेठ जो, एतो काल किहां रह्या तव मुनि उपदिशे रे लो ॥ ५ ॥ हां० ॥ विग्रह देशमां शत्रुनिग्रह काम जो, एटलो रे अमे काल गमाव्यो बाहिरे रे लो ॥

हां० ॥ राजा पूछे रण शुं छे तुम स्वामी जो, अम सरिखाने युद्ध होये किम ताहरे रे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ मुनि कहे जिम ताहरे तिम माहरे युद्ध जो, रात दिवस नवि फीटे नित्य करवो पडे रे लो ॥ हां० ॥ कुतूहल राय बहुल धरी मनमां हर्ष जो, कहे किम युद्ध करीजे जिम वयरी रडे रे लो ॥ ७ ॥ हां० ॥ करी प्रसादने द्यो आस्वाद मुऊ नाथ जो, कहे मुनिवर सुण नरवर मोह छे नृपति रे लो ॥ हां० ॥ सवि प्राणीने जाणीने दीये दुःख जो, कोहलोहमय जोह परिवृत नरपति रे लो ॥ ८ ॥ हां० ॥ जग जीतीने करीय विदीती वात जो, तिणे अवसर हुं चारित्र नृप शरणे गयो रे लो ॥ हां० ॥ जिनशासननो जासन वप्र आधार जो, सेनापति सदागम माहारे थिर थयो रे लो ॥ ए ॥ हां० ॥ शम दम संयम सम्यग ने संतोप जो, कोम्कि गमे सुनटे करी हुं पण परिवस्यो रे लो ॥ हां० ॥ अमरपथी करुं तेह सरिस हवे युद्ध जो, महारा रे ए शिष्य थकी पण थरहस्यो रे लो ॥ १० ॥ हां० ॥ काढी तप करवाल कराल ले हाथ जो, खंतिफलक विवेककवच अंगे धरे रे लो ॥ हां० ॥ जे संतोपनो पोप ते तुरगारूढ जो, ज्ञानादिक त्रिक तीखां शस्त्र धरे करे रे लो ॥ ११ ॥ हां० ॥ मद्दव महोटो नहीं छोटो गजराज जो, अज्जव कुंताग्रे जेदे रिपुवर्गने रे लो ॥ अध्यवसाय शुज थाय ते रथवर जाणी जो, जावधनु यष्टि ग्रही हणता गर्गने रे लो ॥ १२ ॥ हां० ॥ वाण ते जाणी सुदेशनारूप महंत जो, शुज साधनना योग सुजट समवायशुं रे लो ॥ हां० ॥ ढंढेरो सद्आगमनो तिहां वाय जो, बंदीपोस थकी होय तोस सऊायशुं रे लो ॥ १३ ॥ हां० ॥ शत्रु हणीया नवि गणीया कोइ रीत जो, बीजा पण बहु शत्रुथी मूकावीया रे लो ॥ हां० ॥ ए मुनिवर हुं सूरीश्वर मध्य छाय जो, विचरंतो इहां तुऊ मूकाववा आवीयो रे लो ॥ १४ ॥ हां० ॥ कहे राजा महाराजा रण शुज तुज्ज जो, करी उपगारने स्वामी जले पाउं धारीया रे लो ॥ हां० ॥ घर पुर देश तथा वली परिजन सहित जो, पीमा रे पामंता अमने तारीया रे लो ॥ १५ ॥ हां० ॥ ए वयरीथी नयरीलोक अशेष जो, पीड्यो ते मूकावी बीजो नवि शके रे लो ॥ हां० ॥ हे मुनिनाह अथाह करुणजंमार जो, मूकावो ए वयरी जिम मुऊ नवि टके रे लो ॥ १६ ॥ हां० ॥ लेइ दीक्षा ने ग्रही शिक्षा तुम्हे राय जो, न करो ए प्रतिबंध तथा वयरी ग्रहो रे लो ॥ हां० ॥ धनवती पूत जयंत ठवे निज गण जो, धन धनवती केइ मंत्री

सामंत करी महा महो रे लो ॥१७॥हां०॥ सूरि सकाशे शुन्न आशे ग्रही दीक्ष जो, धन राजर्षि तिहां संयम डुक्कर पालता रे लो ॥ हां० ॥ थइ गियत्र गयत्र सूरिपद होय जो, न्नव्यांवुज सूरजनी परे अजुवालता रे लो ॥ १८ ॥ हां० ॥ केइ नरिंद वरिंदने देइ दीक्ष जो, मासखमणनुं अणसण पालीने थया रे लो ॥ हां० ॥ धनवती पण सती पाली अणसण शुरू जो, सामानिक सुर सौधर्मे ते विहुं गयां रे लो ॥ १९ ॥ हां० ॥ न्नाता दोय तस गुणज्ञाता गुणवंत जो, धनदेव ने धनदत्त पण न्नेला उपना रे लो ॥ हां० ॥ गुण आगर रतिसागरमां अवगाढ जो, एह प्रन्नाव जनमांतर संचित पुण्यना रे लो ॥ २० ॥ हां० ॥ धन धनवती नेमि राजीमतीना जीव जो, सुरन्नव सहित कह्यो ए पहिलो न्नव न्नलो रे लो ॥ हां० ॥ वारमी ढाल रसाल ए पहेले खंम जो, पहेलो ए अधिकार थयो अति गुणनिलो रे लो ॥ २१ ॥ हां० ॥ वैरागी त्यागी वमन्नागी जेह जो, पंमित श्रीजिनविजय गुरु शुन्न संयमी रे लो ॥ ॥हां०॥ उत्तमविजय विनेय अठे गुणवंत जो, पद्मविजय कहे वात ए मुऊ मनमां रमी रे लो ॥२२॥हां०॥सर्व गाथा ॥२७७॥ श्लोक॥३३॥इति श्रीमन्नेमिराजीमत्योः सुरसहितः प्रथमो न्नवः समाप्तः॥ इति प्रथमोऽधिकारः समाप्तः॥१॥

॥ अथ द्वितीयोऽधिकारः प्रारन्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमी पास जिणंदने, जास महिम विख्यात ॥ त्रीजो न्नव हवे दाखवुं, ते सुणजो अवदात ॥ १ ॥ न्नरत खेत्र मांहे अठे, गिरि वैताढ्य महंत ॥ रूपमयी लवणाधिगत, पूर्वापर जस अंत ॥ २ ॥ उंचो पणविस जोयणा, पहोलो मूल पचास ॥ दश जोयण तिहांथी जइ, एहवा तिहां विलास ॥ ३ ॥ दक्षिण उत्तर श्रेणी तिहां, खेचरनां रहेठाण ॥ दश योजन पहोलां अठे, तिहां सुणजो मंमाण ॥ ४ ॥ नगर पंचास दक्षिण दिशे, उत्तर दिशिमां साठ ॥ रतन कनकमय कूट नव, जिहां दीसे वहु ठाठ ॥ ५ ॥ सिरू कूट तेहमां अठे, कोश माठेरो उंच ॥ कोश आयाम अध कोश पृथु, जंबूनदमइ संच ॥ ६ ॥ जिनवर चैत्य ते वर्णवुं, प्रतिमा एकसो आठ ॥ देवन्नुवन सम दीपतुं, इणी परे सूत्रे पाठ ॥ ७॥ अंव वकुल चंपक खजुर, डाख चंदनवन ज्यांहि ॥ जे मुनिवर पण देखीने, विस्मय

पामे त्यांहि ॥ ८ ॥ देव देवी आवी करे, क्रीमा वनमां सार ॥ गावे तीर्थंकर चरित्र, चंद्र उज्ज्वल अनुहार ॥ ए ॥ रुषभदेव जिननुं चरित्र, विद्याधर तिहां गाय ॥ कृतप्रसाद नमि विनमिने, संजारी सुखदाय ॥ १० ॥ चारण मुनिवर तिहां कणे, धरता निर्मल ध्यान ॥ सुर खेचर तिरि जेहने, सेवे धरी बहुमान ॥ ११ ॥ इणी परे ते वैताढ्य गिरि, शोजे अति मनोहार ॥ धनकुमार सुर उपजे, ते सुणजो अधिकार ॥ १२ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ कांकरीया मुनिवर ॥ ए देशी ॥ उत्तर श्रेणी तिहां अछे जी, सूरतेजपुर सार ॥ सूरतेज राजा तिहां जी, खेचरचक्री श्रीकार ॥ १ ॥ जवि चित्त धरीने, सांजलो अचरिज वात ॥ ए आंकणी ॥ घरमां ने संग्राममां जी, हाथथी मूके न बाण ॥ विद्युन्मती राणी अछे जी, अंतेउर शिर ठाण ॥ ज० ॥ ॥ २ ॥ चपल नहीं विद्युत परे जी, पण पयोधर उत्कर्ष ॥ तास गर्जमां उपनो जी, धनजीव हवो राय हर्ष ॥ ज० ॥ ३ ॥ लक्षणलक्षित देहनी जी, प्रसवे पुत्र रतन्न ॥ चित्रगति अजिधा ठवे जी, करे पंच धाव जतन्न ॥ ज० ॥ ॥ ४ ॥ सितपक्षनो चंद्रमा जी, जिम वधे रूप अनंग ॥ योवन पाम्यो अनुक्रमे जी, ग्रहीय कला मन रंग ॥ ज० ॥ ५ ॥ सुरगुरु जो तस वर्णवे जी, रूप तणो प्राग्जार ॥ पण ते नवि वर्णवी शके जी, पुण्य जन्मांतर कार ॥ ॥ ज० ॥ ६ ॥ दक्षिण श्रेणीए पुर अछे जी, सीयमंदिर अजिधान ॥ अनंगसिंह तिहां जूपति जी, अनंग परे रूपवान् ॥ ज० ॥ ७ ॥ सिंह परे ते पराक्रमी जी, शशिप्रजा तेहने नार ॥ पुत्रीपणे तस गर्जमां जी, धनवती लीये अवतार ॥ ज० ॥ ८ ॥ बहु पुत्रोपरि पुत्रिका जी, प्रसवे गुणजंकार ॥ पुत्रजन्म महोत्सव परे जी, महोत्सव अति हे उदार ॥ ज० ॥ ए ॥ रतनवती नामे थइ जी, कल्पवृक्षनी वेली ॥ महिला योग कला जणे जी, पूरव पुण्यने जेली ॥ ज० ॥ १० ॥ योवन वय आवी तदा जी, मदन जेदाणां लोग ॥ जोवे पण ते कुंवरी जी, नवि वांछे मन जोग ॥ ज० ॥ ११ ॥ शास्त्र जणे शमता धरे जी, नित्य करे धर्मविचार ॥ पूछे राय निमित्तिउं जी, कुण पुत्री जरतार ॥ ज० ॥ १२ ॥ निमित्तिउं कहे रायने जी, जीती लेशे तुक खग्ग ॥ तेह पुरुष तुं जाणजे जी, रतनवती वर मग्ग ॥ ज० ॥ ॥ १३ ॥ सिद्धायतने शाश्वते जी, जिनवर वंदता जास ॥ कुसुमवृष्टि शिर

उपरे जी, थाशे ते परणशे तास ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा मन हर्षित थयो जी, विस्मित चिंतवे एम ॥ क्रम आगत देवी दीधुं जी, खड्ग ते लेशे केम ॥ ज० ॥ १५ ॥ संग्रामे संकट पडे जी, काम करे मुऊ तेह ॥ तेहने पण लेइ जायशे जी, बलवंतो नर जेह ॥ ज० ॥ १६ ॥ बोलाव्यो निमित्तिउं जी, पूजी करी सत्कार ॥ इण अवसर एह जरतमां जी, नगर चक्रपुर धार ॥ ॥ ज० ॥ १७ ॥ सुग्रीव नामे राजीयो जी, जद्रा ने यशमती नार ॥ जद्राकूखे उपनो जी, लघु तस पद्मकुमार ॥ ज० ॥ १८ ॥ यशमतीनो पुत्रज बम्यो जी, नामे सुमित्रकुमार ॥ विनयी शांत गंजीर ते जी, करे परने उपगार ॥ ज० ॥ ॥ १९ ॥ गुण जाणे परनो कस्यो जी, न्यायवत्सल जसवंत ॥ वासितमति जिनशासने जी, नित नित सुमति धरंत ॥ ज० ॥ २० ॥ जाण्यो विपरीत पद्मने जी, राज्य वंछे तस मात ॥ द्वेष धरे सुमित्रश्री जी, मारणनी करे वात ॥ ज० ॥ २१ ॥ मन चिंते ए जीवतां जी, पद्मने नवि होय राज ॥ ठिड्र गवेषे तेहनां जी, पुत्र तणे तेह काज ॥ ज० ॥ २२ ॥ एक दिन विष मिश्रित करी जी, रसवती दीधी तास ॥ विष तेहने तिम परिणम्युं जी, जिम दीधो गले पास ॥ ॥ ज० ॥ २३ ॥ मूर्छा लही धरणी ढल्यो जी, आवे विषना वेग ॥ नीला दांत थइ गया जी, उपजे दाघ अनेक ॥ ज० ॥ २४ ॥ दारुण उपजे वेदना जी, जे करे जीवनो अंत ॥ बोले चाले ते नहीं जी, जाणे न चेष्टा करंत ॥ ज० ॥ २५ ॥ हुंकारो पण नवि दीये जी, काष्ठ परे रहे तेह ॥ सांजली राजा आवीयो जी, पुत्र उपर धरी नेह ॥ ज० ॥ २६ ॥ मंमलाधिप मंत्री घणा जी, सामंत नगरनां लोक ॥ माता प्रमुख रुदन करे जी, अंतेउर धरे शोक ॥ ज० ॥ २७ ॥ कोलाहल तिहां उठ्यो जी, नगर करे आक्रंद ॥ प्रगटपणे कहे ए कर्युं जी, शोक्य माताए मतिमंद ॥ ज० ॥ ॥ २८ ॥ जद्रा नाठी तेहवे जी, सांजली लोकनी वाणी ॥ विद्यामंत्र औषध घणां जी, राय करावे जाणी ॥ ज० ॥ २९ ॥ मणि रत्न प्रमुख तणां जी, पाणी पाइ करे यत्न ॥ देव तणी पूजा करे जी, शांति करमना प्रयत्न ॥ ज० ॥ ३० ॥ शाता नवि तेहने थइ जी, एक लगारेक मात्र ॥ तेहना गुण संजारतां जी, लोक करे विलोपात ॥ ज० ॥ ३१ ॥ तेम ते आक्रंद उठ्यो जी, जे सांजलीने रान ॥ पंखी तरुअर सहु रड्यां जी, करे तस गुण बहुमान ॥ ज० ॥ ३२ ॥

बीजे अधिकारे कही जी, पहेली ढाल रसाल ॥ पद्मविजय कहे आगले जी, होशे मंगलमाल ॥ न० ॥ ३३ ॥ सर्व गाथा ॥ ४२४ ॥ श्लोक ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चित्रगति इण अवसरे, बेसी प्रवर विमान ॥ बहु विद्याधरे परवस्यो, जोवे नव नव थान ॥ १ ॥ ते नगरे आवी चढ्यो, अति अद्भुत ते वात ॥ देखीने तिहां मोकले, विद्याधर एक जात ॥ २ ॥ ते पण व्यतिकर सांजली, कहे कुमरने तेह ॥ करुणा आवी कुमरने, आवे नृपने गेह ॥ ३ ॥ देखी सुमित्रकुमरने, विद्याए तिहां वारि ॥ मंत्री ठांटे त्रण चलु, सज्ज थयो तिण वार ॥ ४ ॥ विस्मित पूछे ए किस्युं, लोक मळ्यां छे केम ॥ तास पिता सुग्रीव तिहां, वात कहे थइ जेम ॥ ५ ॥ कहे सुमित्र सुण कुंवर जी, तुम्ह कुल जाण्युं आज ॥ पर उपगार गुणे करी, पूछणनुं नहीं काज ॥ ६ ॥ पण सांजलवा मुज घणी, इछा छे तुम वंश ॥ कोण तुम्हे किम आवीया, कहो हीसे अम्ह हंस ॥ ७ ॥ मौन धरीने ते रह्या, न करे आप प्रशंस ॥ पार्श्ववर्त्ती तस मंत्रिमुख, नाखे तेहनो वंश ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ चित्रोमा राजा रे ॥ ए देशी ॥ सुणो स्वामी सुमित्त रे, वेयड्ढ गिरि चित्त रे, सूरतेज विदित, तिहां छे नरपति रे ॥ विद्याधर रायो रे, तस कुलमां आयो रे, सुजट सवायो, नामे चित्रगति रे ॥ १ ॥ कुतूहल निरखंतो रे, आयो विचरंतो रे, उपगार करंतो, तुज घर आवीयो रे ॥ एम सांजली चिंते रे, दुःख अंगथी बीते रे, जुउ किण रीते, कुमरने पावीयो रे ॥ २ ॥ ए विष जले दीधुं रे, मुज कारज सीधुं रे, मुज काम कीधुं, उपगारनुं मात जी रे ॥ किम होत संयोग रे, केम जात ए रोग रे, जमरायने जोग, आवत ए गात जी रे ॥ ३ ॥ विना पच्चक्खाण रे, नवकार न दाण रे, अनंत दुःख खाण, लहत हुं आगले रे ॥ इण मुज जगास्यो रे, नारक दुःख वास्यो रे, जवपार उतास्यो, शिव दीयो करतले रे ॥ ४ ॥ तें कस्यो उपगार रे, तुज्जो अवतार रे, ते पर सुखकार, कहे इम कुमरने रे ॥ घन जगमां वरसे रे, फले तरुअर सरसे रे, अंधकारने निकरे, शुं छे सूरने रे ॥ ५ ॥ तस आग्रहे रहेता रे, चित्रगति दिन केता रे, दोय जण सुख वेत्ता, प्रीति कया करे रे ॥ दीधां दान ने मान रे, वली बहु बहुमान रे, करे तत्र शा-

न, हवे जावा घरे रे ॥६॥ सुमित्र तव जापे रे, सुणो वात विलासे रे, मुऊ देशने पासे, विचरता केवली रे ॥ में सुणीया काने रे, सुजस अजिधाने रे, मुऊ मन एम जाणे, आवशे ए वली रे ॥७॥ थोमा दिन मांहि रे, आवशे जव आंहीं रे, आपण उह्माहे, वे जण वांदशुं रे॥ तिहां लगे तुम रहेवुं रे, एटलुं मुऊ कहेवुं रे, सुणी वली एहवुं, रह्या खेचरवृंदशुं रे ॥ ८ ॥ सुरपादप नामे रे, उद्यान सुठामे रे, क्रीमाने ठामे, विहुं गया अन्यदा रे॥ सहकारनी ठाया रे, जव ते विहुं ठाया रे, सुरजि शीतल वाया, वायरा तदा रे॥ए॥ शब्दादिक सार रे, बोले निरधार रे, अमरसुखकारा, आवे तिणे समे रे ॥ गंधोदक फूल रे, वरसे ते अमूल रे, करे सोनानुं कमल, ते देखीने गमे रे॥ १०॥ क्षणमां ते नाणी रे, लाज वहुलो जाणी रे, जाखे इम वाणी, कमले वेसीने रे ॥ सुर खेचर सुणता रे, हरखे गहगहता रे, शुज जावने वहेता, आवे लोय मने रे ॥ ११ ॥ तिपयाहिण दीधी रे, वली वंदना कीधी रे, शुज जायगा लीधी, वेसण कारणे रे॥ वीजे अधिकारे रे, वीजी ढाल उदारे रे, जाखी सुप्रकारे, पद्मविजय कहे रे ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चित्रगति सुमित्र विहुं, वेठा यथोचित ठाण ॥ मुनि पण तेहने देशना, जाखे मधुरी वाण ॥ १॥ सावधान थइने सुणे, ते पण देशना सार ॥ निद्रा विकथा परिहरी, आलस अंग उतार ॥ २ ॥ निद्राथी नवि सांजले, जिनवर वचन रसाल ॥ कर चरणादिकने वली, जोखम लागे जाल ॥ ३ ॥ निद्रावंतो मानवी, वली मृतक ए दोय ॥ सांजलवे सरिखा कह्या, अंतर दीठ न कोय ॥ ४ ॥ जे जे उंघे प्राणीया, ते नवि बोले साच ॥ पूठे कोइ शुं कह्युं कहो, जिम तिम बोले वाच ॥ ५ ॥ जूआनी परे धूणतो, दीसे विरुउं रूप ॥ जागंता हांसी करे, निद्रानुं लही रूप ॥ ६ ॥ धूणे आंख उघामीने, जूउं देखे सर्व ॥ आंख्यो मीची धूणतो, उंघाणो गतगर्व ॥ ७ ॥ सांजलतां उंघे घणा, प्राये सजा समक्ष ॥ लाज न आवे तेहने, मूके सघलुं दक्ष ॥ ८ ॥ आव्या पठे जाय दोहिली, नवि आवण द्यो तेण ॥ विकथा वर्जो जविजना, विकथा न करो जेण ॥ ए॥ पोते नवि सांजली शके, परने करे अंतराय॥ विकथा ते वितथा करे, आतमहित

नवि थाय ॥ १० ॥ ते माटे सज्ज थइ करो, निड्रा विकथा दूर ॥ केवली कहे ते सांजलो, ध्वनि ज्युं गंगापूर ॥ ११ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ हस्तिनागपुरवर जलुं ॥ ए देशी ॥ चित्रगति उद्देशीने, केवली कहे देशना तास रे ॥ एह संसार असारमां, जमतां नहीं कहीं सुखवास रे ॥ जमतां नहीं कहीं सुखवास, सुणो जवि प्राणीया शुज्ञ योग रे ॥ शुज्ञ योग संयोग, निरोगपणुं अति दोहिलुं एम जाणी रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ धर्म सामग्री अति दोहिली, जे कारण काल अनंत रे ॥ जाति पंचेंदि तिरि नारकी, मांहि जमतां नवि लह्यो अंत रे ॥ ॥ मांहि० ॥ २ ॥ डुर्लजपणुं पामी करी, आर्यक्षेत्र मनुज अवतार रे ॥ धर्म करे नहीं प्राणीया, जाणीने डुःख संसार रे ॥ जाणी० ॥ ३ ॥ यडुक्तं ॥ संसारंमि असारे, नत्थि सुहं वाहि वेअणा पउरे ॥ जाणंतो इह जीवो, न कुणइ जिणदेसियं धम्मं ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ बुमतां पाम्यो जिह्वाफने, मूकी दीये तेह अजाण रे ॥ तिणे सामग्री लही करी, करो धर्म उद्यम मन आण रे ॥ करो० ॥ ४ ॥ धर्म परीक्षा कीजीये, जेम कनक परीक्षा थाय रे ॥ दाह छेदन ने कसोटीए, त्रण ठाण परखी अहेवाय रे ॥ त्र० ॥ ५ ॥ देव गुरु धर्म तत्त्व ए, त्रण ठाण परीक्षाए धर्म रे ॥ दोष अढार रहित सदा, मूकाणां चउ अरु कर्म रे ॥ मू० ॥ ६ ॥ श्लोकं ॥ अंतरायो दानलाजो, वीर्यजोगोपज्ञोगगाः ॥ हास्यरत्यरतिर्जीति, र्जुगुप्सा शोक एव च ॥ २ ॥ कामो मिथ्यात्वमज्ञानं, निड्रा चाविरतिस्तथा ॥ रागद्वेषश्च ते दोषा, स्तेषामष्टादशाप्यमी ॥ ३ ॥ अथवा ॥ अन्नाण कोह मय मा, ण लोह माया रई य अरई अ ॥ निद्दा सोग अलिअवय, ण चोरिया मछर जया य ॥ ४ ॥ पाणिवह पेम किला, पसंग हासाइ जस्स ए दोसा ॥ अठारस विपणठा, णमामि देवाहिदेवं तं ॥ ५ ॥ पूर्व ढाल ॥ आरंजे वर्जित गुरु, ब्रह्मचर्य गुप्तिना धार रे ॥ पंच महाव्रत पालता, मुनिवर गुण सगविस सार रे ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ यडुक्तं ॥ छवय छकायरक्का, पंचिंदिय लोहनिग्गहो खंती ॥ जाव विसुद्धि पडिले, हणा य करणे विसुद्धी य ॥ ६ ॥ संजम जोए जुत्तो, अकुसल मण वयण कायसंरोहो ॥ सीआइ पीडसहणं, मरणं उवसग्गसहणं च ॥ ७ ॥ सत्तावीस गुणेहिं, एएहिं जो विजूसियो साहू ॥ तं पणमिज्जइ जत्ति, प्ररेण हियएण रे जीव ॥ ८ ॥ ममत नहीं निज देहनो,

वाह्य अंतर परिग्रह मुक्त रे॥ धर्मोपगरण जे धरे, ते राखण चरण निमित्त रे ॥ ते० ॥ ८ ॥ यडुक्तं ॥ ससरीरेवि निरीहा, वझंझंतर परिग्गहविमुक्का ॥ धम्मोवगरणमित्तं, धरंति चारित्त रक्खठा ॥९॥ पूर्व ढाल ॥ आप तस्या परने तारवा, जे गुरवादिक समरथ रे ॥ डुर्गति पमता जीवने, गुरवादिक आपे हथ रे ॥ गु० ॥ ९ ॥ नाण दंसण चरणे करी, जीवादिकनी करे शुद्धि रे ॥ दानादिक देतो थको, परलोक साधे इण बुद्धि रे ॥ प० ॥ १० ॥ त्रण थानक शुद्ध धर्म ए, सर्वज्ञे जाख्यो चंग रे ॥ धर्म तणो ढगलो नहीं, रह्यो धर्म आतम अंतरंग रे ॥ र० ॥ ११ ॥ अवराणो कर्मे करी, ते प्रगट करेवा काज रे ॥ कारण सेवे वाह्यथी, तस अंतर प्रगटे राज्य रे ॥ त० ॥ ॥ १२ ॥ विषय प्रमादथी धर्मनां, नवि सेवे कारण जेह रे ॥ तेणे निज आतमा वंचीयो, नवि पामे वंछित तेह रे ॥ न० ॥ १३ ॥ काम अरथ तो पामीये, जो करीये धर्मनो संच रे ॥ जो न करे धर्म प्राणीयो, तो अर्थ कामपणुं वंच रे ॥ तो० ॥ १४ ॥ यतः ॥ धम्माउ अञ्ज कामे, लधूणनआयरी तंमि ॥ कुविउव्वयाण एसो, उद्दालइ अञ्जकामेवि ॥ १० ॥ अरिहंत देव सुगुरु तथा, तेहनो जाख्यो ते धर्म रे ॥ करतां अंते पामीये, शाश्वत अविहड शिवशर्म रे ॥ शा० ॥ १५ ॥ सांजली चित्रगति जणे, स्वामी मुज कस्यो उपकार रे ॥ अर्थ काम मांहि मूर्छीयो, में जाण्युं हवे इणी वार रे ॥ में० ॥ १६ ॥ धर्म करे जे प्राणीया, हांसी वली कीधी तास रे॥ यौवनमदमां नवि लह्युं, कृत्याकृत्य जेह अज्यास रे॥ कृ० ॥ १७ ॥ श्रावककुलमां उपनो, पण नाम मात्र मुज श्राद्ध रे॥ नय मारग कांइ नवि लह्यो, असमंजस करतो अगाध रे ॥ अ० ॥ १८ ॥ तात तथा गुरवादिके, नवि शिक्षा दीधी कांय रे ॥ डुर्द्धर जाणीने मुने, उवेखी मूक्यो प्राय रे॥ उ० ॥ ॥ १९ ॥ जाणो छो तुमे स्वामी जी, त्रण जुवन तणा जे जाव रे ॥ ते माटे तुमशुं कहुं, तुम लाधा पुण्य प्रजाव रे ॥ तु० ॥ २० ॥ एह सुमित्रकुमार जे, थयुं नाम यथार्थ ते मुज रे ॥ पासे रहीने करावीयुं, इणे दर्शन अद्भुत तुज रे ॥ इ० ॥ २१ ॥ आज थकी ते कारणे, मन मान्या अरिहंत देव रे ॥ शुद्ध श्राद्ध गुरुजी कस्या, तस जापित धर्मनी सेव रे ॥ त० ॥ २२ ॥ ए समकित में आदस्युं, ज्यां जीवुं त्यां लगे सीम रे ॥ आवे सुग्रीव नृपति, इण अवसरे वंदन नीम रे ॥ इ० ॥ २३ ॥ विनये केवली प्रणमीया,

सामंत मंत्री परिवार रे ॥ बेठो यथोचित स्थानके, सुणे धर्मदेशना सार रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ अवसरे पूछे नरपति, पय प्रणमी विनय उदार रे ॥ मुज नंदन सुमित्रने, विष दीधुं भद्रा नार रे ॥ वि० ॥२५॥ मुज उपर किरपा करी, मुज जाखो मुनि महंत रे॥ एह अकारज पापिणी, केम कीधुं ते मुनि भा-षंत रे ॥ के० ॥ २६ ॥ भद्रानो नहीं दोष ए, एक सचिव ने दो सामंत रे ॥ तेणे ए कार्य करावीयुं, तव राजा रूठो तंत रे ॥तव०॥२७॥ मंत्री सामंतने नि-रखीया, तव बीहीनो मन शंकाय रे॥ तव कहे केवली सांभलो, तुज मंत्री निर्दोष छे राय रे॥ तु० ॥ २८ ॥ अन्य रायना ते अछे, मंत्री सामंत अति दुष्ट रे ॥ तव राजा विस्मित कहे, मुजथी कोण अन्य छे पुष्ट रे ॥ मु० ॥२९॥ मुनिवर कहे सुण राजीया, राज्यस्थितिना दोय प्रकार रे ॥ बाह्य अभ्यंतर भेदथी, नहीं बाह्यनो ए संसकार रे ॥न० ॥३०॥ अभ्यंतर दोय भेद छे,प्रशस्त अप्रशस्त नाम रे ॥ आद्य भेद पुण्यरूप छे, तस राजा गुणनुं धाम रे॥ त० ॥ ३१ ॥ चारित्रधर्म नामे भलो, तप संजम आदि सामंत रे॥ पापस्वरूप अप्रशस्तनुं, तेहने हणो निर्दय हुंत रे ॥ ते० ॥ ३२ ॥ मोह नामे तस राजीयो, अविवेक मदन छल भेद रे ॥ मत्सर शोकादिक अछे, सामंत तेहथी ते अभेद रे ॥ सा० ॥ ३३ ॥ बाह्य लोकने ए सेवे, करे दोष प्रगट निरधार रे ॥ तुज भार्या पण एहथी, कर्युं पाप विशाल असार रे ॥ क० ॥ ३४ ॥ मि-थ्याभिमान नामे कह्यो, वली बीजो असंतोष नाम रे ॥ मोहपुत्र राग के-सरी, मंत्री विषयाभिलाषनां काम रे ॥ मं० ॥३५॥ मिथ्याभिमान नड्यां थकां, न गणे बंधव सुत बाप रे ॥ स्वजन मित्र पण नवि गणे, करता अकराकर पाप रे ॥ क० ॥ ३६ ॥ नायकपणुं वांछे मने, जो नायकपणुं मुज होय रे ॥ सेवक लोक माहरे होये, मुज आणा पाले लोय रे ॥ मु० ॥ ३७ ॥ निज इछाए विचरीये, वली भोग भोगवीये सार रे ॥ धन धान्य राज्य लक्ष्मी वली, करी अश्व सुभट रथ बार रे ॥ क० ॥ ३८ ॥ ग्राम देश पुर घर वली, महाजन मुख सरवे मुज्ज रे ॥ एह ममत्वबुद्धि जिके, मिथ्या अभिमाननुं गुज्ज रे ॥ मि० ॥ ३९ ॥ अभिलाषा एम नित करे, पण पामे नहीं कोइ काल रे ॥ जेम भद्रा तुज भारजा, ह-णवा वांछ्यो तुज बाल रे ॥ ह० ॥ ४० ॥ पामे जो पुण्ये करी, तो वि-छरतां नवि होय वार रे ॥ अथवा जो विछडे नहीं, तो रोग शरीरे वि-

कार रे ॥ तो० ॥ ४१ ॥ पण जोगववा नवि दीये, अथवा होय आयु समीप रे ॥ जेवुं करी एकलो मरे, खाय अन्य आवीने खीप रे ॥ खा० ॥ ॥ ४२ ॥ देखे प्रत्यक्ष प्राणीया, वली कहीये युक्तिनां लक्ष रे ॥ पण प्राणी समजे नहीं, मिथ्याभिनिवेश ए वृक्ष रे ॥ मि० ॥ ४३ ॥ प्रेरे असंतोषी जीवने, एक शत दीनारने काजे रे ॥ शत मले सहस्र इछा करे, लक्ष कोडी अधिक वली राज रे ॥ ल० ॥ ४४ ॥ राज्य मले चक्रीपणुं, ते पामे शक्रनी होंश रे ॥ एम अतृप्ता परभवे, जातां चित्तमां करे शोष रे ॥ जा० ॥ ४५ ॥ कैलास सम सोना तणा, परवत असंख्याता जोय रे ॥ लोभीने चित्त कांइ नहीं, इछा नभ सरखी होय रे ॥ इ० ॥ ४६ ॥ यदुक्तं ॥ सुवण्ण रूवस्स य पव्वया भवे, सया हु कैलास समा असंखया ॥ नरस्स लुद्धस्स न ते हुं किंचि, इछा हु आगाससमा अणंतया ॥ ११ ॥ पूर्व ढाल ॥ सेवा करे नित्य पारकी, जलमां पेसे वली तेह रे ॥ भीम संग्राम मांहे अडे, आरोहे गिरिवर नेह रे ॥ आ० ॥ ४७ ॥ देश विदेश भमे सदा, करे पाप अनेक प्रकार रे ॥ करवुं न घटे ते करे, पण नवि पामे दीनार रे ॥ प० ॥ ४८ ॥ सिद्ध कार्य नवि तेहनां, केवल होय पापनुं पात्र रे ॥ विण संतोषे एणी पेरे, जेम भद्रा तुज कलत्र रे ॥ जे० ॥ ४९ ॥ शुद्ध जीवने एणी परे, मोह सैन्य करे जंजाल रे ॥ ते कारण निग्रह करो, अंतरंग शत्रु संभाल रे ॥ अं० ॥ ५० ॥ यदुक्तं ॥ असइतु मणुस्सेहिं, मिछादंफोपजुंचए ॥ अकारिणोछ वधंति, मुच्चइकारगो जणो ॥ १२ ॥ ए बीजा अधिकारनी, ढाल त्रीजी कही मनोहार रे ॥ पंडित उत्तमविजयनो, कहे पद्मविजय जयकार रे ॥ क० ॥ ५१ ॥ सर्व गाथा ॥ १२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सांभली सुग्रीव राय तव, जल आंसु भरी नेण ॥ जेम भाख्युं तेम ए प्रभु, पण सांभलो मुज वेण ॥ १ ॥ तुम्ह सरखा निग्रह करे, ए शत्रुने स्वामि ॥ पण पापिणी शुं अनुभवे, अने वर्ते किण ठाम ॥ २ ॥ कहे केवली सुण भूपति, बाहिर गइ तव तास ॥ आभरणादिक लूंटवा, तस्कर आव्या पास ॥ ३ ॥ आपी पल्लीपति भणी, आपे वणिकने तेह ॥ तस घरथी नासी करी, गइ अटवीमां एह ॥ ४ ॥ चोक फेर लाग्यो अगनि, तेहमां झंपापात ॥ रौद्र ध्यानथी ते मरी, रत्नप्रभाए जात ॥ ५ ॥ एक सा-

गरने आयुखे, पठी चंमालिणी थाय ॥ तेहने गर्भ रहे थके, ऊगडो शोक्य कराय ॥ ६ ॥ शोक्यवेध अति आकरा, जेहवां तीखां तीर ॥ भालां शूल तणी परे, परपर दाखे पीर ॥ ७ ॥ मारी तेहने कर्त्तिका, उदर विदारे शोक ॥ मरी बीजे नरके गइ, पाप तणुं फल रोक ॥ ८ ॥ तिहांथी लइ तिर्यंचपणुं, जशे वली नरके तेह ॥ ते संसार अनंत एम, भमशे दुःख अठेह ॥ ए ॥ प्राये तिरिय मनुष्यना, भव करशे ते असार ॥ कहीं शस्त्रे कहीं विष थकी, किहां दग्धे होये मार ॥१०॥ सम्यग्दृष्टि जीवनो, भाव थकी उपघात ॥ कीधा ते अनुभव्या विना, कबहीं ते नवि जात ॥ ११ ॥ यदुक्तं ॥ कृतकर्मक्षयो नास्ति, कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्यमेव भोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाशुभम् ॥ १ ॥ कर्म कस्यां जे जे नरे, ते ते केडे धाय ॥ गाय हजार मले थके, पण वछ वलगे माय ॥ १२ ॥ यदुक्तं ॥ श्लोक ॥ यथा धेनुसहस्रेषु, वत्सो विंदति मातरम् ॥ तथा पूर्वकृतं कर्म, कर्त्तारमनुगछति ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जंबुद्वीप मकार रे ॥ ए देशी ॥ सांभली एणी पेरे वाणी रे, नरपति चिंतवे ॥ जुर्ज जुर्ज कर्म विटंबणा ए ॥ जेहने काजे काम रे, कीध ते इहां अठे ॥ ते तो दुःख सहे ठे घणां ए ॥ १ ॥ सांभली कुमर सुमित्त रे, भणे भूपति प्रति ॥ करकज जोमी एणी परे ए ॥ कर्मबंधननो हेतु रे, हुं थयो तात जी ॥ न घटे मुऊ रहेवुं घरे ए ॥ २ ॥ अनुमति द्यो मुऊ तात रे, लेउं दीक्षा हवे ॥ सर्व जीवने हितकरी ए ॥ कर्म तणो क्षय थाय रे, सुख लहे शाश्वतां ॥ कारण बंधनो नवि वरी ए ॥३॥ यतः ॥ धन्ना ते सप्पुरिसा, जे नवर मनुत्तरंगयामुक्कं ॥ जम्हा ते जीवाणं, न कारणं कम्मबंधस्स ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ सुख मलकावी राय रे, भाखे एणी पेरे ॥ पुत्र अम्हे तें जीतीया ए ॥ जेह अम्हारुं कृत्य रे, ते तुम्हे आदरो ॥ वयथी तो अम्हे वीतीया ए ॥ ४ ॥ धर्म ते करवो तात रे, आगलथी कह्यो ॥ पुत्र तणो पाठल कह्यो ए ॥ सुमित्र कहे सुणो तात रे, नियम न एहमां ॥ संसार दुःख सायर लह्यो ए ॥ ५ ॥ घर बलतुं जब होय रे, तव अनुक्रम किस्यो ॥ अवसर लही नासे सहु ए ॥ रणमां हणतां शत्रु रे, नहीं क्रम को कह्यो ॥ अवसर लही मारे बहु ए ॥ ६ ॥ कहे नृप सांभल पुत्त रे, भुक्त भोगी अम्हो ॥ ते कारण व्रत अमे ग्रहुं ए ॥ भवसागरमां जाज रे, गुरु

अम्हे पामीया ॥ तेणे घर रहो तुम्हे अम्हे कहुं ए ॥ ७ ॥ प्रजा पालण काज रे, राज करो तुमे ॥ अम्हे अंतर रिपुने हणुं ए ॥ पुत्रने थापी राज्य रे, आदरजो तुम्हे ॥ दीक्षा एणी पेरे अम्हे जणुं ए ॥ ८ ॥ कुमर कहे सुणो तात रे, नवि मुज मन रमे ॥ दुःखदायक ए जोगमां ए ॥ तोपण हुं अंतराय रे, न करुं तुम्ह प्रते ॥ एम कहे ते सवि लोगमां ए ॥ ९ ॥ उचित करी सहु मुज रे, हमणां ने पछे ॥ जे तुम्ह मन रुचे ते करो ए ॥ राजा हर्षित होय रे, विनय ते देखीने ॥ पुत्र विनय रयणायरो ए ॥ १० ॥ सुमित्रकुमरने राज्य रे, थापे नरपति ॥ महा विभूतिए करी ए ॥ दान दीये करे पूजा रे, जिनप्रतिमा तणी ॥ बहु लोके नृप परवरी ए ॥ ११ ॥ केइक सामंत साथे रे, दीक्षा पडिवजे ॥ केवली पासे विधि थकी ए ॥ रायऋषि सुग्रीव रे, विहार करे सदा ॥ पाले दीक्षा सुखकारकी ए ॥ १२ ॥ पाले राज्य सुमित्र, लघु बांधव प्रते ॥ ग्रामादि करे आपे बहु ए ॥ पण नाव्यो संतोष रे, बाहिर नीसस्यो ॥ निंदा करे तेहनी सहु ए ॥ १३ ॥ देइ सन्मान ते तास रे, वली संतोषीयो ॥ उत्तम नीच न होय कदा ए ॥ चित्रगति कहे मित्र रे, सघलुं तें कर्युं ॥ भुवनमां करवुं ते तदा ए ॥ १४ ॥ स्वर्गापवर्गनो हेतु रे, जिनवर धर्मनो ॥ तुं मुजने कारण मल्यो ए ॥ वाट जुए मुज तात रे, तेणे अम्हे जायशुं ॥ अवसरे वली मलशुं वल्यो ए ॥ ॥ १५ ॥ बोले गद्‌गद वाणी रे, आंसु रेडतो ॥ चित्रगति तमे शुं कहो ए ॥ मन चिंते महाराय रे, मागे भूपणां ॥ तेहथी कहो केम सुख लहो ए ॥ १६ ॥ जे परदेशी लोक रे, तेहशुं प्रीतडी ॥ दुःखदायी थाये घणी ए ॥ प्रीति करीने जाय रे, पछे मले दोहिला ॥ केवल लहे वात दुःख तणी ए ॥ १७ ॥ आंसु पडते धार रे, एणी परे विनवे ॥ मित्रजी वेहला आवजो ए ॥ विद्याधरनी साथे रे, सुखशाता तणी ॥ वात निरंतर कहावजो ए ॥ १८ ॥ बोलाव्या एम भाखी रे, वैताढ्ये गया ॥ मात पितादिकने मल्या ए ॥ मनमां दुःख बहु आणी रे, सुमित्र प्रमुख जे ॥ अनुक्रमे सहु घर भणी वल्या ए ॥ १९ ॥ जिनवरनी करे पूजा रे, वंदे साधुने ॥ दान दीये अढलकपणे ए ॥ जेह सिद्धांतनां शास्त्र रे, सांभले विधि थकी ॥ आवडे ते नित नित गणे ए ॥ २० ॥ उछव करे नित तेह रे, जिनवर मंदिरे ॥ रथयात्रा करे राजीयो ए ॥ साधर्मिक वाछल्य रे, संग तेहनो करे ॥ एम जग मांहि

गाजीयो ए ॥ २१ ॥ अति अद्भुत चरित्र रे, यौवन भर मांहि ॥ देखीने हर्षित थया ए ॥ स्वजन कुटुंब परिवार रे, परजा जन मली ॥ सवि परशंस करे सया ए ॥२२॥ चोथी ढाल रसाल रे, भाखी एणी परे ॥ ए बीजा अधिकारमां ए ॥ पद्मविजय कहे एम रे, धर्म करो तुम्हे ॥ धर्म सार संसारमां ए ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ १६२ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे सुमित्र रायनी, बेहेन रूपाधिक तेह ॥ देश कलिंगनो अधिपति, तस परणावी जेह ॥ १ ॥ अनंगसिंह खेचर तणो, नामे कमलकुमार ॥ बांधव रतनवती तणो, देखे तास किवार ॥ २ ॥ अपहरीने ते लइ गयो, सांभले सुमित्र राय ॥ वहालपणुं ते बहेननुं, शोकसमुद्रे गाय ॥ ३ ॥ राजकाज सवि परिहर्युं, आमण दूमण तेह ॥ विगतसत्त्व ते थइ रह्यो, न गमे धन ने गेह ॥ ४ ॥ वात सुणे ते चित्रगति, विद्याधर तस मित्र ॥ कहेवरावे तिहां चित्रगति, खेद म करो सुमित्र ॥ ५ ॥ थोडा दिनमां जाणजे, शुद्धि करीने तास ॥ लेइ ताहरी बहेनने, आवुं हुं तुज पास ॥ ६ ॥ एम आश्वासन देइने, करे गवेषणा जाम ॥ सुकूट नगना शिखरमां, लाधी शुद्धि तिणे ताम ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ करेलडां घडी दे रे ॥ ए देशी ॥ चित्रगति चाल्यो हवे, लेवा सुमित्रनी बहेन ॥ हांक्यो कमलकुमारने, आव्यो ते अभिवेण ॥ १ ॥ सुगुण नर सुणजो रे ॥ परस्त्री गमनथी एह, अनर्थ तुम्हे सुणजो रे ॥ ए आंकणी ॥ युद्ध लाग्युं बेहुने तिहां, सांभले कमलनो तात ॥ अनंग सैन्य लइ आवीयो, खेचरसेननो भ्रात ॥ सु० ॥ २ ॥ पुत्र पराभव जाणीने, अमर्ष धरतो राय ॥ चित्रगति साथे तदा, रण करवा सज्ज थाय ॥ सु० ॥३॥ सैन्य परस्पर बिहुं मल्यां, मूके फडोफड बाण ॥ खंभे केइ वेरी तणां, बाण आवे तिण ठाण ॥ सु० ॥ ४ ॥ कोइ आकाशे उछली, करे प्रहार अनेक ॥ शल्य कुंत तरवारना, घा करता अतिछेक ॥ सु० ॥ ५ ॥ केइ वंचावे घातने, केइक प्रछन्न थाय ॥ केइ प्रगट थइ युद्धता, घात करी केइ जाय ॥ सु० ॥ ६ ॥ विद्याधर विद्यावले, करे अंधारुं घोर ॥ नासी जाये हाथथी, करता महारण शोर ॥ सु० ॥ ७ ॥ वली भेला मली उसरे, वली

करे तेह प्रहार ॥ मूर्छाए आंख्यो मले, जूये पडे केइ वार ॥ सु० ॥ ॥ ८ ॥ चेतना लही उठे वली, पडे उठले त्यांहि ॥ हांके वैरी सैन्यने, नमता थाके न ज्यांहि ॥ सु० ॥ ए ॥ कल्पांत काल घननी परे, गाजे विहुं दल तेह ॥ चमके वीजलीपुंज ज्युं, धमके फाल करेह ॥ सु० ॥ १० ॥ बाहुयुद्धे युद्धता, कोइ सुजट बलवंत ॥ मुष्टि घाये घायता, शस्त्रे करे केइ अंत ॥ सु० ॥ ११ ॥ विद्याए विद्या हणी, हणीयां शस्त्रे शस्त्र ॥ चित्रगति कुमरे तदा, खुट्यां वैरीनां अस्त्र ॥ सु० ॥ १२ ॥ अनंगसिंह मन चिंतवे, डुर्जय दीसे एह ॥ कुलक्रमागत खड्गने, लेउं देवे दीधुं जेह ॥ सु० ॥ १३ ॥ संजार्युं ते खड्गने, आव्युं पण ततकाल ॥ देखी शकीये दोहिली, नीकले संहसगमे जाल ॥ सु० ॥ १४ ॥ तरुयड रव करतुं थकुं, जुवन सकल लहे जीक ॥ आवी रह्युं तस हाथमां, चित्रगति निर्वीक ॥ सु० ॥ १५ ॥ कहे अनंगसिंह कुमरने, कुलदेवी संजार ॥ नासी जा मुऊ मुख थकी, किम रह्यो हजी इण ठार ॥ सु० ॥ १६ ॥ चित्रगति हसीने कहे, हवे उगर्युं तुम सैन्य ॥ लोढाना कटका थकी, रही मुऊ मित्रनी वहेन ॥ सु० ॥ १७ ॥ जेहने हैये बल नहीं, शस्त्र करे तस कांइ ॥ निज शस्त्रे करीने लहे, निर्बल घात ते प्राइ ॥ सु० ॥ १८ ॥ एम कहीने विद्याबले, कर्युं अंधारुं तेम ॥ हाथे हाथ सुऊे नहीं, दृष्टिए दृष्टि न जेम ॥ सु० ॥ १९ ॥ वैरी कांइ न देखता, नवि जाणे को क्यांहि ॥ चित्रामण पुतली परे, थिर रह्या जे हता ज्यांहि ॥ सु० ॥ २० ॥ लीधुं करथी खड्गने, वली सुमित्रनी बहेन ॥ जयतसीरी साथे वरी, जागी गयुं तस सेन ॥ सु० ॥ २१ ॥ क्षण अंतर जब देखतो, देखे न हाथमां खग्ग ॥ जगिनी तेम सुमित्रनी, तेम वैरीनो वग्ग ॥ सु० ॥ २२ ॥ अनंगसिंह मन चिंतवे, स्वप्न के ए इंद्रजाल ॥ खड्ग माहरुं लेइ जायतां, नवि लह्यो कोण केहोनो बाल ॥ सु० ॥ २३ ॥ सहसगमे संग्राममां, देखी न शक्यो कोय ॥ ते लीलाए लइ गयो, जेम गजवर कज होय ॥ सु० ॥ २४ ॥ अथवा दैवयोगे करी, असंजाव्य पण होय ॥ नासे केहने हाथथी, नवि होय ते लहे जोय ॥ सु० ॥ २५ ॥ यतः ॥ अघटितघटितानि घटयति, सुघटितघटितानि जर्जरीकुरुते ॥ विधिरेव तानि घटयति, यानि पुमान्नैव चिंतयति ॥ १ ॥ पहेलां नैमित्तिए कह्युं, ए अनिष्ठ पण इष्ठ ॥ मुऊ पुत्री वर थायशे, पण नवि नजरे दीठ ॥

वेदवुं, ते थोडे काले क्षय करवुं रे ॥ स० ॥ १३ ॥ सर्व जीवशुं मैत्री राखे, खामजे सहुने जिनसाखे रे॥ स० ॥ मत करजे कोइ उपर रोष, वली पदमकुमर विशेष रे॥ स० ॥ १४ ॥ एम शुज्ञ भावे पच्चखे आहार, तत्पर वली ते नमुकार रे॥ स०॥ तेह काल करीने समाधि, पंचम कल्पे निरावाध रे ॥ स० ॥ १५ ॥ सामानिक सुर तेह उत्पन्न, रिद्धि महा तास निष्पन्न रे ॥ स० ॥ बीजो पण वीहीतो तिहां नाठो, जाणो पुण्य तस हवे घाठो रे ॥ स० ॥ १६ ॥ राते काले सापे डंस्यो, वेदन समुद्घाते शंस्यो रे ॥ क्रोधानल वलीउं ॥ सातमी नरके नारकी जायो, मुनि आशातन फल पायो रे ॥ क्रो० ॥ १७ ॥ सुमित्र रुषिनुं मरण सुणीने, शुं थयुं एह गुणीने रे ॥ उत्सुकता जागी ॥ शोक बहु थयो चित्रगतिने, विरह थयो महामतिने रे ॥ उ० ॥ १८ ॥ शोक मूकीने एक दिन जावे, सिद्धायतने मन जावे रे ॥ उत्सुकता जागी ॥ विद्याधर तिण समे बहु मलीया, जिन ज्ञानध्यानमां जलीया रे ॥ उ०॥१९॥ न्हवण विलेपण जूषण पूजा, डुंडुहि तिहां वाजे वाजां रे॥ उ० ॥ विद्याधर विद्याधरी गावे, मधुर अति गीत सुहावे रे ॥ उ० ॥ ॥ २० ॥ हर्षे जरे तिहां नाटक करता, एम यात्रा महोछव मन थिरता रे ॥ उ० ॥ तिहां किणे मलीयो बहु समुदाय, सहु जीवने हर्ष ते थाय रे ॥ ॥ उ० ॥२१॥ बीजे अधिकारे ए जाखी, गुरु उत्तम विजय ते साखी रे॥ उ०॥ पद्मविजय कहे ठठी ढाले, पूजा करवा उजमाले रे॥ उ० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा॥

॥ दोहा ॥

॥ देव सुमित्र जे उपनो, यात्रा आवे त्यांहि ॥ देव बहु तिहां परिवस्या, धरी मन अधिक उछांहि ॥ १॥ अनंगसिंह मन चिंतवे, बहु खेचर मल्या आज ॥ रतनवती वर जाणीये, आवे जो जात्राने वाज ॥ २ ॥ इणी अवसरे पूजा रची, जिननी विचित्र प्रकार ॥ जोवा योग्य तिहां थयुं, जक्तिथी अतिहि उदार ॥ ३ ॥ चैत्यवंदन तिहां चित्रगति, करे कोलाहल रोध ॥ रोमांचित स्तवना करे, जिणथी जवि लहे बोध ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ थारे माथे पचरंगी पाघ, सोनारो ठोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥ तुं जग परमेसर, अर्चित केसर, विश्वनो तारु जी ॥सोहे मन मोहे, जवि पडिबोहे, वयणथी वारु जी ॥ जगतारक स्वामी, शिवगति गामी॥ वि० ॥

तुफ दर्शन पामी, निज गुण कामी, निस्तस्या ॥ वा०॥१॥ जवजलनिधि तरता, पार उतरता ॥ वि० ॥ निर्यामक कहीये, पार न लहीये, गुण तणो ॥ वा० ॥ खट जीउ रखवालो, महा गोपालो ॥ वि० ॥ जातां शिवनगरे, सार्थपत्नी परे, तुं जयो ॥ वा० ॥ २ ॥ महा ब्राह्मण रुडो, नहीं कांय कूडो ॥ वि० ॥ करी खय चउ घाती; कर्म अघाती, मूलथी ॥ वा० ॥ तव तुफ अनुकरमे, अंतर हर्म्मे ॥ वि० ॥ गुण प्रगट अनंता; कार्य करंता, निज तणुं ॥ वा० ॥ ३ ॥ राग द्वेष उछेदी, तुंही अवेदी ॥ वि० ॥ हास्यादिक जोहा, गय कोह लोहा, मोहना ॥ वा० ॥ तेम खय अंतराया, वीरज पाया ॥ वि० ॥ खायकने जावे, अज्ञान अजावे, केवली ॥ वा० ॥ ४ ॥ तिम वली अक्षय स्थित, तुंही अमूरत ॥ वि० ॥ अगुरु लहु अव्या,-बाध पमुह वहु, गुणधरा ॥ वा० ॥ नाकवृक्ष चिंतामणि, रत्न ने दिनमणि ॥ वि० ॥ काम कुंजकाम गवी, सुख ते अणमवी, आदिये ॥ वा० ॥ ५ ॥ पण पुद्गल पूरे, नवि दुःख चूरे ॥ वि० ॥ मूल कर्म अजावे, महा सुख पावे, तुफथी ॥ वा० ॥ तुं अज अविनाशी, सहज विलासी ॥ वि० ॥ अजरामर वेदी, तुंज अखेदी, सर्वथा ॥ वा० ॥ ६ ॥ सुर गुरु सम शक्ते, चित्त वहु जक्ते ॥ वि० ॥ जो सहस वदन होय, उदधि आयु तोय, नवि कहे ॥ वा० ॥ तुफ गुण अनंता, केम कहंता ॥ वि० ॥ तो हुं मतिमंदो, तुं गुण कंदो, केम स्तवुं ॥ वा० ॥ ७ ॥ तिणे एटलुं मागुं, तुम पाय लागुं ॥ वि० ॥ जवसायर तारो, पार उतारो, मुफ जणी ॥ वा० ॥ गंजीर स्वरे एम, स्तवना करे तेम ॥ वि० ॥ देखी सुमित्र सुर, आणंद पूरे, मोहीयो ॥ वा० ॥ ८ ॥ कहे तुफ चतुराइ, महा गिरुआइ ॥ वि० ॥ नव वीजे दीसे, अम मन हीसे, एम कही ॥ वा० ॥ करे कुसुमनी वुठि, सहुए दीठी ॥ वि० ॥ वीजे अधिकारे, जय जयकारे, ए कही ॥ वा० ॥ ए ॥ जली सातमी ढाले, रंग रसाले ॥ वि० ॥ उत्तम गुण आगर, प्रणमत नागर, नियमथी ॥ वा० ॥ कहे पद्मविजय जिन,-वरनुं दर्शन ॥ वि० ॥ वली प्रजुजी पूज्या, कुमति ते ध्रूज्या, देखीने ॥ वारु जी ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ २४६ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमति नवि माने किमे, देखी आगम पाठ ॥ रायपसेणी सूत्रमां ए जाना वहु पाठ ॥ १ ॥ तेम ज्ञातामां द्रौपदी, पूजे अति विस्तार ॥ जीवाहीं

कोइ हाण ॥ गु० ॥ २७ ॥ नृपतिए तस मानी वातमी, तेहने दीधुं सन्मान । पु० ॥ तेह जइ अनंगसिंहने कहे, हरख्यो नृप तिणे थान ॥ पु० ॥२ए॥ ए, दिन रत्नवतीने मोकली, पाणिग्रहणने काज ॥ पु० ॥ महा आमंबरे प रएयां ते वेहु, शोने घणुं युवराज ॥ पु० ॥ ३० ॥ सुख नोगवे ते सं-सारनां, जेम महर्ध्धिक देव ॥ पु० ॥ पुण्य कस्यां ते कहीं जाये नहीं, करे वली धर्मनी सेव ॥ पु० ॥ ३१ ॥ लोक प्रशंसा करता अति घणी, दे आणंद मन नयण ॥ पु० ॥ वंदीवृंद पढे गुण जेहना, संतोषे बहु सयण ॥ पु० ॥ ३२ ॥ रत्नवतीशुं करे जिननक्तिने, वंदे नित्य गुरुपाय ॥ पु० ॥ शास्त्र सुणे ते अति सोहामणां, दानी ज्ञानी ते थाय ॥ ३३ ॥ वीजे अधिकारे सोहामणी, नाखी आठमी ढाल ॥ पु० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यसंचय थकी, नित्य होय मंगलमाल ॥ पु० ॥ ३४ ॥ सर्व गाथा ॥ २७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनदेव ने धनदत्त वेहु, लघु ब्राता थया तास ॥ देवलोकमांथी चवी, पुण्य प्रवल ठे जास ॥१॥ मनोगति ने चपलगति, नाम अठे सुखकार ॥ नंदीश्वर प्रमुखे नमे, चैत्य घणां जण चार ॥ २ ॥ विहरमान जिनवर कने, सुणे हर्षे उपदेश ॥ पदकज सेवे रुषिं तणां, नमतो देश विदेश ॥ ३ ॥ काल एणी पेरे निर्गमे, लही एक दिन संवेग ॥ वय परिपाक जाणी करी, धरे नृप मन उद्वेग ॥ ४ ॥ राज्य ठवी तव कुंवरने, आप थयो मुनिनूप ॥ घाती अघाती क्षय करी, पाम्यो सिद्ध स्वरूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ चित्रगति विद्याधरु रे, पाले राज्य उदार ॥ गुणना नोगी ॥ पठित मात्र आवे कला रे, विद्या सिद्ध श्रीकार ॥ गु० ॥ १ ॥ आण वहे विद्याधरा रे, पुण्य प्रवल जग जास ॥ गु० ॥ रत्नवती करे पाटवी रे, अंतेउरमां खास ॥ गु० ॥ २ ॥ खेचर एक एणी अवसरे रे, मणिचूड जस नाम ॥ गु० ॥ एक दिन ते परनव गयो रे, दोय पुत्र तस ठाम ॥ गु० ॥ ३ ॥ शशी सूर नामे अठे रे, राजनिमित्त करे युद्ध ॥ गु० ॥ चित्रगति वहेंची दीये रे, राज्य तास अविरुद्ध ॥ गु० ॥ ४ ॥ युक्ति वचने समजावीया रे, नवि समजे पण मूढ ॥ गु० ॥ कलह करे अति आकरो रे, वैर थयां अति गूढ ॥ गु० ॥ ५ ॥ युद्ध थयां तस आकरां रे, मरण लह्यां ते दोय ॥

॥ गु० ॥ चित्रगति नृपने कहे रे, वात ते आवी कोय ॥ गु० ॥ ६ ॥ परलोके ते बेहु गया रे, राज्य लूंटे पर आय ॥ गु० ॥ सुणी वैराग्य ते उपनो रे, मन चिंते महाराय ॥ गु० ॥ ७ ॥ कर्म विचित्र गति देखीये रे, विषयामिषना गिद्ध ॥ गु० ॥ मूढता जुउं प्राणी तणी रे, मदिरा होय जेम पीध ॥ गु० ॥ ॥ ८ ॥ इच्छा करे प्राणी घणी रे, पण इच्छित नवि थाय ॥ गु० ॥ ज्ञानी नवि चिंता करे रे, अज्ञानी खेदाय ॥ गु० ॥ ए ॥ यतः ॥ अन्नं चिंतियमानं, उदयपउंगेण अन्नहा जायं ॥ चिंतोदय विवरीयं, मुणदो नो चिंतए नाणी ॥ १ ॥ लखमी राखे प्राणीया रे, छंडे लखमी तास ॥ गु० ॥ दान पुण्य न करे कदा रे, पडे डुर्गति पास ॥ गु० ॥ १० ॥ केइ पुरुष इच्छे घणां रे, दानादिक महा जाग ॥ गु० ॥ पुत्रादिक विघन करे रे, रोगादिक अथ लाग ॥ गु० ॥ ॥ ११ ॥ लखमीने मूकी गया रे, करे कलहो तस पुत्र ॥ गु० ॥ शुनक परे जगडी मरे रे, होय जे तास कुपुत्र ॥ गु० ॥ १२ ॥ केइ पुरुष पामी करी रे, चक्रवर्त्तीनी ऋद्ध ॥ गु० ॥ छंडीने षट खंडने रे, तृण परे नवि हुआ गिद्ध ॥ ॥ गु० ॥ १३ ॥ वांछे कोइ अछती सीरी रे, करता क्लेश अनेक ॥ गु० ॥ जाइ तुछ तणे घरे रे, मूके जेह विवेक ॥ गु० ॥ १४ ॥ यतः ॥ संतेवि केइ उप्रइ, केइ असंतेवि अहिलसइ जोए ॥ चयइ परच्चए णवि, पजवो दधूण जह जंबू ॥ २ ॥ पाप करे जीव अति घणां रे, वांछे लखमी सार ॥ गु० ॥ ते तो धर्म आयत्त छे रे, केम पामे अविकार ॥ गु० ॥ १५ ॥ विषजोगी केणी पेरे करे रे, अमृत संजव सुख ॥ गु० ॥ जमता एह संसारमां रे, पामे अनंतां डुःख ॥ गु० ॥ १६ ॥ सेव्यां अकार्य एणे घणां रे, राज्य अनंती वार ॥ गु० ॥ पण नवि तृप्ति कदा लही रे, डुःखदा विषय विकार ॥ गु० ॥ १७ ॥ सिद्धि सुख एक शाश्वतुं रे, अमर अजर अकलंक ॥ गु० ॥ पूर्वे कदा नवि जोगव्युं रे, मानो एह निःशंक ॥ गु० ॥ १८ ॥ जेनी उपमा जग नहीं रे, राग द्वेषादि न यत्र ॥ गु० ॥ ते सुखने नवि उलखे रे, विषया संगे अत्र ॥ गु० ॥ १ए ॥ ते माटे धन्य तेहने रे, जेणे तज्या विषय विकार ॥ गु० ॥ स्वजन कुटुंब तज्यां जेणे रे, तजे लक्ष्मी जे असार ॥ गु० ॥ २० ॥ पाम्या परमाणंदने रे, धन्य वली सुमित्र मित्त ॥ गु० ॥ यौवनमां तजी राजने रे, साध्युं कार्य सुचित्त ॥ गु० ॥ २१ ॥ वयपरिणत प्राये थयो रे, पण नवि छंड्युं राज्य ॥ गु० ॥ पण अनित्य ए सुख अछे रे, त्यजीये ए हवे आज ॥ गु० ॥ २२ ॥ छंडे तृण परे

राज्यने रे, थापे निज सुत पाट ॥ गु० ॥ रत्नवती कुखे थयो रे, पुरंदर थयो राट ॥ गु० ॥ २३ ॥ दानादिक देइ घणां रे, पूजा अति विस्तार ॥ गु० ॥ सिद्धायतने जइ करे रे, संघपूजा तिम सार ॥ गु० ॥ २४ ॥ अमारीपरुह वजडावीया रे, दमधर सूरिनी पास ॥ गु० ॥ रत्नवती मनोगति वली रे, चपलगति सहवास ॥ गु० ॥ २५ ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा धरे रे, तेम केइ मंत्रीनी साथ ॥ गु० ॥ तप तपे अति आकरां रे, धर्म करे निज हाथ ॥ गु० ॥ २६ ॥ पाली चारित्र मनोहरु रे, बहु वरसां लगे शुरू ॥ गु० ॥ पादोपगमन अणसण करी रे, शुन्न लेश्या अविरुद्ध ॥ गु० ॥ २७ ॥ काल करीने उपना रे, माहेंद्रे ते देव ॥ गु० ॥ रत्नवती दोय बांधवा रे, करी चारित्रनी सेव ॥ गु० ॥ ॥ २८ ॥ ते पण त्यांहिज उपना रे, प्रीति घणी मांहोमांह ॥ गु० ॥ सुख नोगवतां स्वर्गनां रे, दिन दिन अधिक उत्साह ॥ गु० ॥ २९ ॥ चोथो नव पूरण थयो रे, थइ ए नवमी ढाल ॥ गु० ॥ पद्मविजय कहे ए थयो रे, बीजो अधिकार रसाल ॥ गु० ॥ ३० ॥ द्वितीयाधिकारे ॥ सर्व गाथा ॥ ३२२ ॥ सर्व अश्ने ॥ ७०१ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ २५ ॥ इति श्रीमन्नेमिराजीमत्योर्द्वितीयो मनुजनवः सुरनवः समाप्तः॥२॥सर्व ढाल॥२१॥

॥ अथ तृतीयोऽधिकारः प्रारन्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति जिणंद समरुं सदा, विघ्न करेवा शांत ॥ नव पंचम कहेवा हवे, मुज मन अधिकी खांत ॥ १ ॥ श्रोता पण सुणजो सहु, चित्त राखी एक ठोर ॥ थिर चित्त विणु जे मानवी तेहथी रुडुं ढोर ॥ २ ॥ ढोर उद्देशी नवि करे, वक्ता कोइ व्यापार ॥ जस अर्थे उद्यम करे, तस पण चित्त विकार ॥ ३ ॥ ते माटे थिर थइ सुणो, वात अधिक सुखकार ॥ नत्र नव अधिकुं सुख लहे, जिनवर नेमिकुमार ॥ ४ ॥ नाम गोत्र जस सांनल्यां, होय क- ... नाश ॥ तास चरित्र सुणतां थकां, किम नहीं होय शिववास ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

... दीयें रत्ननी देशी ॥ पश्चिम महाविदेह, पद्मविजय गुणगेह ॥ सुं- ... समजे पण पुर नगर तिहां वसे जी ॥ ज्युं दरी सिंह अधिष्ठ, अन्य प्र- ... ॥ ५ ॥ रसाल ॥ दूर गयो कलहो जिसे जी ॥ १ ॥ हरिनंदी

तिहां राय, हरि परे विबुध सुहाय ॥ सुं० ॥ पट्टराणी प्रियदर्शना जी ॥ प्रियदर्शन छे जास, लक्ष्मीनो आवास ॥ सुं० ॥ कोमल तनु सुपर्शना जी ॥ २ ॥ तेहनी कुखे आय, चित्रगति शुभ ठाय ॥ सुं० ॥ देवलोकमांथी चवी जी ॥ शुभ सुपने सूचित, उपनो पुण्य पवित्त ॥ सुं० ॥ ते दिनथी सीरी बहु हवी जी ॥ ३ ॥ शुभ दिवसे ते पुत्र, जो राखे घरसूत्र ॥ सुं० ॥ प्रसवे तेजस्वी तनु जी ॥ भुवनने करे संतोष, करे वधामणी पोष ॥ सुं० ॥ प्रजा हर्षित थइ घणुं जी ॥ ४ ॥ अपराजित दीये नाम, खरचे तव बहु दाम ॥ सुं० ॥ रत्न पेरे रमावती जी ॥ हाथ थकी लीये हाथ, अंतेउरनो साथ ॥ सुं० ॥ वल्लभ सहुने गुणवती जी ॥ ५ ॥ दिन दिन तेह वधंत, कला बेहोंतेर पठंत ॥ सुं० ॥ मानुं एणी पेरे मन थकी जी ॥ सोल कला संपुन्न, पण एहनाथी न्यून ॥ सुं० ॥ रजनीकर चंद्र ऊचकी जी ॥ ६ ॥ पाम्यो यौवन देह, रूप लावण्यनुं गेह ॥ सुं० ॥ तेणे समे जाण्युं एणी परे जी ॥ सहसनेत्र थयो शक्र, कमलासन चउ वक्त्र ॥ सुं० ॥ सहस जीभ फणिपति करे जी ॥ ७ ॥ शक्र ते जोवा काज, ब्रह्मा स्तववा वाज ॥ सुं० ॥ फणिधर स्तववा उम्मह्यो जी ॥ रूपे अनंग अवतार, कल्पतरु दातार ॥ सुं० ॥ जे देखी मन गहगह्यो जी ॥ ८ ॥ मित्रे परिवृत तेह, क्रीमा करे ससनेह ॥ सुं० ॥ ग्रहचक्र परिगत चंद ज्युं जी ॥ जननां मन ने नयण, सुखदायक घणुं सयण ॥ सुं० ॥ चंद चकोरा विदितीउं जी ॥ ए ॥ नीकले कुमर ते वहार, तिणे समे नगरीनी नार ॥ सुं० ॥ जोवा आवे दोमती जी ॥ घरनां काम उवेखी, आवे कुमरने देखी ॥ सुं० ॥ सखीउं साथे जोमती जी ॥ १० ॥ एक कहे सुण वात, लखमी कृत घनघात ॥ सुं० ॥ उपनी एह तो पंकजे जी ॥ सेवे कुंवर वेण, एक कहे सुण वेन ॥ सुं० ॥ एहनां नेण ते देखजे जी ॥ ११ ॥ कर्ण लगी जे पत्त, एक कहे सुण वत्त ॥ सुं० ॥ मुजने पण नवि ईश्वरे जी ॥ कीधो एह संयोग, तेणे निर्दयी ए लोग ॥ सुं० ॥ एक शान सखीने करे जी ॥ १२ ॥ कंबु उपम कोट, बाहु पासे करे चोट ॥ सुं० ॥ अन्य कहे अन्यने हसी जी ॥ एहनुं हृदय जे पामी, रति क्रीमाने ठाम ॥ सुं० ॥ निद्रा मुज मन नवि वसी जी ॥ १३ ॥ सखीने कहे सखी एक, सांभली वात विवेक

॥ सुं० ॥ पावीना हुं नए र करे जी ॥ एक सजने देखी, एक नीहे नारा देखी ॥ सुं० ॥ नाहुने पण नेहे हणे जी ॥ २४ ॥ देखन मते वांदी, केकण पणे उखोड़ी ॥ सुं० ॥ कारण नवि निरधार करे जी ॥ लोक करे तिहां वाणी, ए बाह स्थानकी ॥ सुं० ॥ कहे शाने तेह-परवरे जी ॥ २५ ॥ सुत निरखे एक, केम नहावे टेक ॥ सुं० ॥ सिरा-वीनुं वखोडीहुं जी ॥ क्रूर पीरसी निज नाथ, दाद शइ दिव साथ ॥ सुं० ॥ लोक तमासनी जोवीयो जी ॥ २६ ॥ आदरयवश करे बाल, नेत्रांजलि वरी शाल ॥ सुं० ॥ दिन प्रते तृष्णा नवि मटे जी ॥ लोक करे परशंस, उचन रायनो वंश ॥ सुं० ॥ क्रूर प्रशंसीये बहु मते जी ॥ २७ ॥ पंडित गुण तस गाय, नारी लावण्य सुहाय ॥ सुं० ॥ विनय तणो मानुं वन थयो जी ॥ योगेश्वर जेन तत्व, ध्यावे तेन एकत्व ॥ सुं० ॥ लोक एणी पेरें तहु कयो जी ॥ २८ ॥ ए त्रीजे अधिकार, पहेली ढाल उदार ॥ सुं० ॥ अपराजित कुंवर भलो जी ॥ नेमनाथनो जीव, पुण्य अगण्य सदैव ॥ सुं० ॥ पद्मविजय कहे सांभलो जी ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जे दिन कुमर ते जनमीयो, ते दिन जन्म्यो सोय ॥ विमलबोध मंत्रिसुतन, गुणवंतो बहु होय ॥१॥ पांशुक्रीमा सह करे, जणया ते साथे शाल ॥ यौवन पण साथे लहे, क्रीमा करे वली अस्त्र ॥ २ ॥ कुंअर आतम सम गणे, विमलबोधने ताम ॥ विमलबोध पण देव परे, आराधे गुणधाम ॥३॥ एक दिन तुरग रमावता, पहोता नगर उद्यान ॥ तुरग हरीने लेइ गया, महा अटवीने थान ॥ ४ ॥ आका हरि एणी अवसरे, अंबवृक्षनी हेठ ॥ विसामो लइने कहे, मंत्रिसुतने जेठ ॥ ५ ॥ पृथवी कौतुकथी जरी, जमी न देखे जेह ॥ कूआमांनो देडको, जाणो निश्चय तेह ॥६॥ जापा देशोदेशनी, देशाचार विज्ञान ॥ नवि जाणे ते धूर्त्तथी, वंचाये अज्ञान ॥ ७ ॥ यतः ॥ देसंतर जासाउं, जाणिज्जाइ सजण छुजाण विसेसो ॥ धूत्तेहिं न वंचिज्जाइ, हिंमिज्जाइ तेणं पुहवी ए ॥१॥ मृग वायस नेका पुरुष, नवि मूके निज ठाण ॥ हरि गज ने उत्तम पुरुष, ज्यां जाय तिहां निज ठाण ॥ ८ ॥ यतः ॥ त्रयः स्थानं न मुंचंति काकाः कापुरुषा मृगाः ॥ अपमाने त्रयो यांति, सिंहाः सत्पुरुषा गजाः ॥ २ ॥ जे थयुं ते रुडुं थयुं, दमणां न जोइये वेर ॥ देशांतरने देखवा, जाइये हवे पणी

पेर ॥ ए ॥ माता पिता स्नेहे करी, आपत नवि मुऊ आण ॥ दुःख तो उपजशे खरुं, शीघ्र आवशुं ठाण ॥ १० ॥ एम चिंतीने चालीया, कोइक नगर उद्यान ॥ पुष्करिणी तट आवीया, सुणो वात इण थान ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ बीजी ॥

॥ कुंकणनी देशी ॥ इण अवसर एक आवीयो रे॥ सूरिजन ॥ कोइक पुरुष अनाथ ॥ पुण्य प्रगट थयो ॥ थयो थयो रे परगट पुण्य, कुंअरनो जित जयो ॥ ए आंकणी ॥ तास शरीर अति कंपतुं रे ॥ सू० ॥ दीननो नहीं कोइ साथ ॥ पु० ॥ १ ॥ जीत थयो थको एम कहे रे ॥ सू० ॥ राख राख मुऊ राख ॥ पु० ॥ ताहरे शरणे आवीयो रे ॥ सू० ॥ कहे एणी पेरे मुख जाख ॥ पु० ॥ २ ॥ कुंवर कहे तुं बीहीश मां रे ॥ सू० ॥ शक्र थकी एणी वार ॥ पु० ॥ मुऊ जीवतां कोइ थकी रे ॥ सू० ॥ मंत्री कहे रे तिवार ॥ पु० ॥ ३ ॥ जो ए होशे अन्यायीउ रे ॥ सू० ॥ ॥ तो पकशे महा कष्ट ॥ पु० ॥ राजकुंअर कहे सांजलो रे ॥ सू० ॥ नहीं थइये इहां खष्ट ॥ पु० ॥ ४ ॥ क्षत्रीनो ए धर्म ठे रे ॥ सू० ॥ राखे प्रहारथी तेह ॥ पु० ॥ गुणवंता ते निज गुणे रे ॥ सू० ॥ त्राण होय न संदेह ॥ पु० ॥ ५ ॥ शरणागत वली याचका रे ॥ सू० ॥ होय पराङ्मुख जेह ॥ पु० ॥ ते नवि जीवता जाणीये रे ॥ सू० ॥ जीवता मृत सम तेह ॥ ॥ पु० ॥ ६ ॥ ते कारण सुणी मंत्रवी रे ॥ सू० ॥ जीवतो राखो एह ॥ पु० ॥ जेह होय ते राखीये रे ॥ सू० ॥ आपीये आपणो देह ॥ पु० ॥ ७ ॥ इणी अवसरे तिहां आवीयुं रे ॥ सू० ॥ कोटवालनुं सैन ॥ पु० ॥ मार मार करतुं थकुं रे ॥ सू० ॥ पकमो पकमो कहे वेण ॥ पु० ॥ ८ ॥ आवी कुंवरने वींटीयो रे ॥ सू० ॥ कहे आपो ए चोर ॥ पु० ॥ नगर अमारुं मूषीयुं रे ॥ सू० ॥ मारशुं अमे एने ठोर ॥ पु० ॥ ए ॥ कुंवर कहे आरक्षका रे ॥ ॥ सू० ॥ सांजलो महारी वाण ॥ पु० ॥ शरणे आव्यो मांहरे रे ॥ सू० ॥ अमे वेठा एणे ठाम ॥ पु० ॥ १० ॥ शक्र आवी मागे कदा रे ॥ सू० ॥ पण नवि आपुं कोय ॥ पु० ॥ क्रोध चढ्यो कोटवालने रे ॥ सू० ॥ करे संग्राम ते सोय ॥ पु० ॥ ११ ॥ लेइ खड्ग निज हाथमां रे ॥ सू० ॥ त्रास पमाड्यो तास ॥ पु० ॥ द्वीपी जिम मृगने त्रासवे रे ॥ सू० ॥ गया कोसलनृप पास ॥ पु० ॥ १२ ॥ जइ पोकार कस्यो तेणे रे ॥ ॥ सू० ॥ क्रोध चढ्यो तव राय ॥ पु० ॥ सैन्य घणुं तिहां मोकले रे ॥ सू० ॥ ते पण नाठुं जाय ॥ पु० ॥ १३ ॥ वनजेंसो सर जेणी

पेरे रे ॥ सू० ॥ भोली नाख्युं तेम ॥ पु० ॥ तव राजा क्रोधे चढ्यो रे ॥ ॥ सू० ॥ एह करे जुर्ज केम ॥ पु० ॥ १४ ॥ हय गय भड कोडी करी रे ॥ सू० ॥ परवरीयो महाराय ॥ पु० ॥ मंत्रिसुतने चोर सोंपीने रे ॥ सू० ॥ कुंवर ते साहामो थाय ॥ पु० ॥ १५ ॥ पाय ठवी दंतोशले रे ॥ सू० ॥ चढ्यो गजशिर निर्बीक ॥ पु० ॥ तिहां हणीयो महावत प्रत्ये रे ॥ सू० ॥ आव्यो तेह नजीक ॥ पु० ॥ १६ ॥ युद्ध करे तिहां एकलो रे ॥ सू० ॥ बेसी गजवर खंध ॥ पु० ॥ एक मंत्री एणे अवसरे रे ॥ सू० ॥ रायने कहे निर्बंध ॥ ॥ पु० ॥ १७ ॥ तुम्ह आदेशे हुं गयो रे ॥ सू० ॥ सिंहपुरे बहु वार ॥ पु० ॥ हरिनंदी राजा तणो रे ॥ सू० ॥ दीठो ए पुत्र तिवार ॥ पु० ॥ १८ ॥ तव कहेवराव्युं सैन्यमां रे ॥ सू० ॥ युद्ध न करशो कोय ॥ पु० ॥ राजा तव आलिंगीयो रे ॥ सू० ॥ एणी पेरे भाखे सोय ॥ पु० ॥ १९ ॥ तुं मुज मित्र तणो अछे रे ॥ सू० ॥ पुत्र अनूप स्वरूप ॥ पु० ॥ कोइ कारणे तुं आवीयो रे ॥ सू० ॥ नवि जाण्यो सुत भूप ॥ पु० ॥ २० ॥ कुंवर कहे अविनय कस्यो रे ॥ सू० ॥ में तुमचो महाराय ॥ पु० ॥ तव राजा कहे ते विना रे ॥ सू० ॥ नहीं बल बीजे ठाय ॥ पु० ॥ २१ ॥ में तुजने संकट कस्युं रे ॥ सू० ॥ ते खमजो अपराध ॥ पु० ॥ कुंवर कहे खमजो तुम्हे रे ॥ सू० ॥ मुज अपराध अगाध ॥ पु० ॥ ॥ २२ ॥ निज हाथणीए बेसाडीयो रे ॥ सू० ॥ आवे नगर मझार ॥ पु० ॥ ॥ चोरने अभय देइ करी रे ॥ सू० ॥ बोलाव्यो तेणी वार ॥ पु० ॥ २३ ॥ कुंवर पासे आवीयो रे ॥ सू० ॥ मंत्रिसुतशुं सार ॥ पु० ॥ नृप दीधा आवासमां रे ॥ सू० ॥ भोगवे भोग श्रीकार ॥ पु० ॥ २४ ॥ कोसलनृपनो मंत्रवी रे ॥ सू० ॥ आवी कहे एम वाण ॥ पु० ॥ राजाने अनुग्रह करो रे ॥ सू० ॥ कुंवर कहे तिण ठाण ॥ पु० ॥ २५ ॥ सीमाडा राजा भणी रे ॥ सू० ॥ वश करी आणुं आंहि ॥ पु० ॥ दुर्ग सांधुं कहो तेहवा रे ॥ सू० ॥ जाउं वली कहे ज्यांहि ॥ पु० ॥ २६ ॥ जेह असाध्य ते साधशुं रे ॥ सू० ॥ देवप्रसादे हेव ॥ पु० ॥ तव मंत्री कहे कुंवरने रे ॥ सू० ॥ विनय करी घणुं सेव ॥ ॥ पु० ॥ २७ ॥ गुणरत्नाकर तुं भलो रे ॥ सू० ॥ पहोतो अम्ह घर थाय ॥ ॥ पु० ॥ गुणखाणी नृपनी धुआ रे ॥ सू० ॥ अवधारो इण ठाय ॥ पु० ॥ ॥ २८ ॥ कमलमाला नामे अछे रे ॥ सू० ॥ रूप लावण्य निधान ॥ पु० ॥ ॥ मोन करी मंत्रिसुत भणी रे ॥ सू० ॥ अवलोकी करे शान ॥ पु० ॥ २९ ॥

॥ मंत्रिसुत कहे सांजलो रे ॥ सू० ॥ छे तुम तातनो मित्र ॥ पु० ॥ वचन ते किम उल्लंघीये रे ॥ सू० ॥ तव हरख्यो मंत्री तत्र ॥ पु० ॥ ३० ॥ पाणिग्रहण तिहां करे रे ॥ सू० ॥ शुज लगने शुज दिन्न ॥ ु० ॥ दान घणुं दीये दायजे रे ॥ सू० ॥ राजा हर्षित मन्न ॥ पु० ॥ ३१ ॥ नृप कहे देश जोवा तणी रे ॥ सू० ॥ छे इछा मन मांहि ॥ पु० ॥ तोपण सुखमां इहां रहो रे ॥ सू० ॥ रहे कुंवर उछांहि ॥ पु० ॥ ३२ ॥ त्रीजा ए अधिकारनी रे ॥ सू० ॥ बीजी ढाल रसाल ॥ पु० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी रे ॥ सू० ॥ होवे मंगलमाल ॥ पु० ॥ ३३ ॥ सर्व गाथा ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन अणपूछे थके, अपराजित कुमार ॥ नीकलीयो रयणी समे, मंत्रिसुत आधार ॥ १ ॥ मारग जातां तिण समे, कालिका देवी नाम ॥ तेहना चैत्यनी ढुकडुं, रुदन सुण्युं तेणे ताम ॥ २ ॥ शब्दने अनुसारे गयो, तव सुणे एहवुं वेण ॥ मूकावे मुज एहवो, नहीं कोइ पृथ्वी सेण ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सोनानी जारी हे ॥ सुंदर महारा साहेबाने हाथ ॥ कबको राणो अलजो करे जी ॥ ए देशी ॥ अबला बोले हे ॥ सांहिबा जी मारा ॥ वेण रसाल ॥ आ अवसर कोइ नाथ, मुज उपर करुणा करे जी ॥ १ ॥ नहीं एहवो हे ॥ ॥सा०॥ पुरुपरतन्न ॥ आ पापिष्ठथी मुज, छोडवीने थानक धरे जी ॥२॥ करुणा स्वर एम हे ॥ सा० ॥ सांजले तेह ॥ शब्दवेधी परे जेह, चाल्यो नृपनंदन तिसें जी ॥ ३ ॥ मंत्री जाखे हे ॥ सा० ॥ ए नारीनुं वेण ॥ हाथ लेइ तरवार, मुख आगे कोइ नर अछे जी ॥ ४ ॥ एहनी पासे हे ॥ सा० ॥ अग्निनो कुंम ॥ दीसे जाज्वल्यमान, जीपण अति अनरथकरु जी ॥ ५ ॥ पोकारे तव हे ॥ ॥ सा० ॥ गाढ स्वरे सा नारी ॥ विद्याधर ए अधम, कोइ मूकावे एहथी जी ॥ ६ ॥ कुंवर तव कहे हे ॥ सा० ॥ रे पापिष्ठ पुरुष ॥ मुज देखे पण तोही, खेपवे खड्ग ते केणी परे जी ॥ ७ ॥ पुरुषातनपणुं हे ॥ सा० ॥ बीजे नहीं को गार ॥ नारी विणु तुज दुष्ट, फोरववानुं शुज अछे जी ॥ ८ ॥ तव कहे खेचर हे ॥ सा० ॥ तुंहीज पुरुष ॥ देखीशुं हवे तुज, पुरुषपणे पराक्रमे जी ॥ ए ॥ तव तिहां बेहुने हे ॥ सा० ॥ लाग्युं अतिही युद्ध ॥ खड्गे खड्गे ते दोय, लमता पण क्युं नवि होवे जी ॥ १० ॥ मूकी खड्गने हे ॥ सा० ॥

करता बाहु युद्ध ॥ विविध भंगे करे त्यांहि, अंग उपांग मरुडे बेहु जी ॥ ॥ ११ ॥ डुर्जय जाणी हे ॥ सा० ॥ खेचरे दीध ॥ स्नेहबंधन परे बंध, नागपाशनो कुमरने जी ॥ १२ ॥ कुंवर तोडे हे ॥ सा० ॥ ज्युं डुर्जननो नेह ॥ करीय प्रयत्न कुमार, गजवर ज्युं रज्जु प्रते जी ॥ १३ ॥ तव विद्याधर हे ॥ सा० ॥ वरसे बाण अखंम ॥ कुंवर खंमे तेम, खड्गाग्रे तपे पाप ज्युं जी ॥१४॥ लोहना गोला हे ॥ सा० ॥ ताती शिलाए युद्ध ॥ रुंख उखेमी तेम, नाखे शस्त्र विकुर्वीने जी ॥ १५ ॥ क्रोधमां आव्यो हे ॥ सा० ॥ असुरकुमारनी पेरे ॥ तेम ए खेचर डुष्ट, करे प्रहार कुंवर नणी जी ॥ १६ ॥ बाला चिंते हे ॥सा०॥ पुरुषरतन आव्यो आंही ॥ मुज पापिणीने काज, आपद मांहि ए पड्यो जी ॥ १७ ॥ पुण्य प्रनावे हो ॥ सा० ॥ शस्त्र न कोइ अंग ॥ लागुं कुंवरने ताम, तेहनी विद्या सहु हणी जी ॥ १८ ॥ मानुं सूरज हे ॥ सा० ॥ जोवा संग्राम विशाल ॥ तमनर टालतो तेह, उदयाचल उपर चढ्यो जी ॥ १९ ॥ तब तिहां खड्गे हे ॥ सा० ॥ कीधो घाव अतीव ॥ विद्याधरने खंध, आंख मीची धरणी ढळ्यो जी ॥ २० ॥ तव तिहां मदने हे ॥ सा० ॥ कीधो प्रहार ते ताक ॥ बाला हृदये जोइ, समकाले बेहु बेधीयां जी ॥२१॥ विद्याधरने हे ॥ सा० ॥ करे उपचार कुमार ॥ चेतना लाधी ताम, विद्याधरने कुंवर कहे जी ॥ २२ ॥ उठ महाजस हे ॥ सा० ॥ शस्त्र लइने हाथ ॥ थाउ वली रणसज्ज, हार जीत होय पुरुषने जी ॥ २३ ॥ कहे विद्याधर हे ॥ सा० ॥ जीत्यो मुजने आज ॥ ताहरुं चरित्र उदार, देखीने हुं गहगह्यो जी ॥ २४ ॥ हुं ए नारीने हे ॥ सा० ॥ लाव्यो हणवा काज ॥ तुं राखणने हेत, लीधो विक्रीत ते गुण थकी जी ॥ २५ ॥ हवे हुं ताहरे हे ॥ सा० ॥ जाणजे नित्त आयत्त ॥ जेम मनमां तुज होय, तेम करो साहिब गुणधरु जी ॥ २६ ॥ त्रीजी ढाले हे ॥ सा० ॥ त्रीजे ए अधिकार ॥ उत्तमविजय गुरु साह्य, पद्मविजय नाखी इसी जी ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ८७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर प्रशंसा सांनली, लज्जावंत महंत ॥ अवनत मुख करीने कहे, नड सुणो गुणवंत ॥ १ ॥ काम जे होवे ताहरे, ते मुजने हवे नाख ॥ कहे ते रिपुने वश करुं, आणुं ताहरी शाख ॥ २ ॥ तव कहे खेचर

तें कर्युं, माहरुं सघलुं काम ॥ स्त्रीहत्याना पापथी, वार्यो मुज इण ठाम ॥ ३ ॥ पण सांजल एक वातनी, माहरे ठेहडे एक ॥ मणि तथा संरोहिणी, मूलिका ठे सुविवेक ॥ ४ ॥ मणि ठेली घसी मूलिका, पाणी मांहि तेह ॥ चोपड मुज व्रण उपरे, कुमर करे तेम नेह ॥ ५ ॥ विद्याधर ते सज्ज थयो, कुंअर पूठे ताम ॥ कहे योग्य जो होय तुम्ह, कहो व्यतिकर ए ठाम ॥ ६ ॥ विद्याधर कहे सांजलो, माहरो सवि अवदात ॥ कुंअर निसुणे हर्षेशुं, विद्याधर कहे वात ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ गढ बुंदीरा हो राया ॥ ए देशी ॥ वर वेताढ्य गिरिनी उपर, कांइ रथनेउरपुर ठाण हो ॥ प्रजु सुणो मुज वाणी, मन करुणा ते आणी ॥ ए आंकणी ॥ अमृतसेन नृप तेहनो रे राणो, कांइ कीर्त्तिमती राणी जाणी हो ॥ प्र० ॥ १ ॥ रत्नमाला तेहने ठे वेटी, कांइ निमित्तिए एम जाख्युं हो ॥ प्र० ॥ अपराजित एहनो वर थाशे, कांइ रत्नमालाए चित्त राख्युं हो ॥ प्र० ॥ २ ॥ तुज सरिखा गुण तेहना जाख्या, कांइ रत्नमाला घणुं रागी हो ॥ प्र० ॥ ध्याये नित्य पण ते नवि मलीयो, कांइ गुणवंतो वडजागी हो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ सूरसेन नंदन सूरकंते, कांइ देखीने मन मोह्युं हो ॥ प्र० ॥ प्रार्थना करी विवाह कारण, कांइ मनमां नवि आरोह्युं हो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ तेणे प्रतिज्ञा एणी पेरे कीधी, कांइ अपराजित विना परणुं हो ॥ प्र० ॥ बीजो नवि कोइ एम धार्युं, अग्नि करुं वली शरणुं हो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ सूरकंत पण करे अजिग्रह, कांइ परणुं एह हुं नारी हो ॥ प्र० ॥ एम कहीने वेहु साधे विद्या, कांइ वहु उपाय मन धारी हो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ तेहना रूपाधिकगुणलुब्धो, कांइ एणी पेरे वलखां मारे हो ॥ प्र० ॥ पण नवि जाणे सहजे गुण ए, नारी अंगे धारे हो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ यतः ॥ लीलावतीनां सहजा विलासा,-स्तत्र ज्रमत्येव मुधा परम्ध्रिः ॥ स्वजावलोलौ वृषणौ वृषस्य, तत्र ज्रमत्येव मुधा शृगालः ॥ १ ॥ दोहा ॥ एकपखी जे प्रीतडी, ते जाणे डुःखदाय ॥ एकण मन झूरी मरे, एक तणे मन वाय ॥ १ ॥ अणगमतो अणप्रीठतो, कहो केम आवे दाय ॥ परणवा वात तो वेगली, पण वाते मिले वलाय ॥ २ ॥ स्त्री देखी कोण नवि चले प्राणी, कांइ स्त्री तो सहुने वाहाली हो ॥ योगीश्वर पण जेहने

देखी, कांइ जुए मनडुं चाली हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सरोवर जल तंबोल मणि, वृक्ष निशा ने नार ॥ भोजन मेघ वाहन प्रमुख, ए सवि वल्लभ सार ॥ ३ ॥ स्त्री तो पाकी चोरमी, होंश सहुने थाय ॥ सहुने लागे वल्लहा, मूल्य विना विकाय ॥ ४ ॥ सूरकंत हवे हरी गयो तेहने, आणी इणहीज ठाणे हो ॥ प्र० ॥ एहनी प्रतिज्ञा पूरण करवा, अग्नि रची ए टाणे हो ॥ प्र० ॥ ए ॥ हुं सूरकंत ते जाणो कुंअरजी, कांइ नाम ग्रहण नवि योग्य हो ॥ प्र० ॥ रत्नमाला ए नारी जाणो, कांइ नवि आवी मुफ जोग हो ॥ प्र० ॥ १० ॥ उत्तम पुरुषने योग्य न सुणवुं, कांइ भाख्युं में तुम्ह आगे हो ॥ प्र० ॥ माहरुं पाप गयुं सवि विलये, कांइ तुम्ह दरिसणने रागे हो ॥ प्र० ॥ ११ ॥ विद्याधर कहे चरित्र कहो तुम्ह, कांइ मंत्रिसुत सवि भाखे हो ॥ प्र० ॥ ते सवि वात रत्नमाला तिहां, सांभली चित्तमां राखे हो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ मन चिंते वरशे के नांहीं, कांइ गुणवंतो उपगारी हो ॥ प्र० ॥ केम आव्यो ए एणे थानक, चिंतवे एम विचारी हो ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कामदृष्टि थइ एहनी उपर, कांइ ए भरतार ते माहरो हो ॥ प्र० ॥ मानुं मूकावणना मिषथी, कांइ आव्यो परणवा त्यारो हो ॥ प्र० ॥ १४ ॥ नारीनां मात पिता त्यां आव्यां, कांइ वात कही सवि तेहने हो ॥ प्र० ॥ पूर्वे पण भूपतिए दीठो, कांइ आवी प्रतीत सहु केहने हो ॥ प्र० ॥ १५ ॥ रत्नमाला परणावी तेहने, कांइ अपराजित तिण वारे हो ॥ प्र० ॥ सूरकंतने मूकाव्यो तिहां, कांइ रायने भाखे ते वारे हो ॥ प्र० ॥ १६ ॥ तुम्ह पुत्री पहोंचावज्यो त्यारे, कांइ अम्हे घेर जइये ज्यारे हो ॥ प्र० ॥ एम कही सहु निज थानके पहोतां, कांइ सूरकंत हवे पारे हो ॥ प्र० ॥ १७ ॥ मूलिका मणि आपे मंत्रिसुतने, कांइ वेश फेरववानी गोली हो ॥ प्र० ॥ नवि वंछे पण आपे पराणे, कांइ घर जाये बहु गुण बोली हो ॥ प्र० ॥ १८ ॥ कुंवर पण आगल हवे विचरया, कांइ त्रीजे ए अधिकारे हो ॥ प्र० ॥ पद्मविजय कहे चोथी ढाले, कांइ पुण्ये कष्ट विदारे हो ॥ प्र० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिरषा लागी वाटमां, वेग अंबनी छांय ॥ उदक गवेषणने गयो, मंत्रिसुत तिण ठाय ॥ १ ॥ जल लेइने आवीयो, तिणहीज थानक तेह ॥ नवि देखे ते कुमरने, ए आश्चर्य अछेह ॥ २ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ राग मारु ॥ जगत्गुरु हीरजी रे ॥ ए देशी ॥ मंत्रिसुत मन चिंतवे रे, थानक चूको आज॥ करे गवेषणा कुमरनी रे, किहां गया तुमे महाराज ॥ १ ॥ जुर्ज गति कर्मनी रे ॥ कर्म करे ते होय, चाले नहीं केहनुं रे॥ ए आंकणी ॥ देश विदेशे दोडे घणुं रे, जुवे रुखनां मूल ॥ नव दीठो कोइ स्थानके रे ॥ तव उपनुं चित्त शूल ॥ २ ॥ जु० ॥ मूर्छा लही धरणी ढल्यो रे, उठी करे विलाप ॥ शून्य दिश सहु देखतो रे, मन चिंते मुक पाप ॥ ३ ॥ ॥ जु० ॥ देव अकाले शुं कर्युं रे, तें दीधी दुःख पोठ ॥ तें विठडावी माहरा रे, मित्रनी साथे गोठ ॥ ४ ॥ जु० ॥ खेचर नर सुर को नहीं रे, एहने वंची जाय॥ देवविलास विना नहीं रे, दुःख देवाने ठाय ॥ ५ ॥ ॥ जु० ॥ किहां जाउं हवे केहने रे, पूछुं मुक दुःख वात॥ अटवीमां नर को नहीं रे, मुकने दीये सुखशात ॥ ६ ॥ जु० ॥ दुमणो थइने ते रहे रे, न गमे कांइ लगार ॥ कोइ विचार सूके नहीं रे, चिंता मगन अपार ॥ ७ ॥ ॥ जु० ॥ वाहालो लागे मुक घणुं रे, जेम मुख देखुं तुक ॥ नयण वयण मन उल्लसे रे, गति मति थिति तुं मुक ॥ ८ ॥ जु० ॥ तें माहरुं मन खेंचीयुं रे, जेम चमके करी लोह ॥ घणुं घणुं कहीये किस्युं रे, कोइ जवांतर मोह ॥ ९॥ जु० ॥ कूरीने कांखर हुई रे, जेम पींपलनुं पान ॥ अवर न कांइ मुकने गमे रे, निशिदिन ताहरुं ध्यान ॥ १०॥ जु० ॥ एक हानि हांसुं वली रे, ए उखाणो थाय ॥ अणगमतुं मुक ए थयुं रे, हवे शुं करुं उपाय ॥ ११ ॥ जु० ॥ ते कारण तुम्हे कुमरजी रे, आपो दरिसण मुक ॥ हांसीनी वेला नहीं रे, नव घटे एहवुं तुक ॥ १२ ॥ जु० ॥ एम विलाप करी घणुं रे, वली जोवाने लग्ग ॥ ग्रामादिक जमतो थको रे, कुंअर पूठे मग्ग ॥ १३ ॥ जु० ॥ नंदीपुर नगरे गयो रे, चिंते दुःख अथाह ॥ एकलडो मूकी गयो रे, हा हा मुक अनाह ॥ १४ ॥ जु० ॥ केमज जीवे हजीय तुं रे, वहालो न मल्यो मित्र ॥ चिंतातुर उद्यानमां रे, वेगे तव होय चित्र ॥ १५ ॥ जु० ॥ ए त्रीजा अधिकारनी रे, पंचमी ढाल कहाय ॥ राग जेहशुं होय ते विना रे, पद्म कहे न रहाय ॥ १६ ॥ जु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम चिंतातुर थइ रह्यो, विमलबोध तेणी वार ॥ तेहनुं दुःख तेहज

लहे, मुखे न कहाय लगार ॥ १ ॥ सज्जन गुण नव विसरे, जो केलवीया होय ॥ इंटालो ने अजाण नर, फेर न लहीये कोय ॥ २ ॥ शव ने अण- केलवीत वली, सरखां भाख्यां दोय ॥ अणजाण्याथी शव भलुं, जल आपे सहु कोय ॥ ३ ॥ ते माटे जाणो कुंवर, गुणपरीक्षा जेणे कीध ॥ ते विण ते नवि रही शके, तेणे निसासा लीध ॥ ४ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ मनमोहन मनमोहन पावन देहमी जी ॥ ए देशी ॥ एणी अवसरे एणी अवसरे दोय विद्याधरु जी, तिहां आवे तिहां आवे आकाशथी ताम हो ॥ स्वामी अरज स्वामी अरज सुणो एक अम तणी जी ॥ ए आंकणी ॥ करे विनति करे विनति बे कर जोमीने जी, मीठे वचने मीठे वचने करो अम्ह काम हो ॥ १ ॥ स्वा० ॥ अपराजित अपराजित कुमरे मोकल्या जी, तुम्ह पासे तुम्ह पासे तेमवा आज हो ॥ स्वा० ॥ प्रनु चालो प्रनु चालो शीघ्र थइ हवे जी, तुम्ह विरह तुम्ह विरहनां दुःख करे राज हो ॥ २ ॥ स्वा० ॥ ते सांजली ते सांजली अमीअ सिंच्या परे जी, मृत जीव्या मृत जीव्यानी परे तेह हो ॥ स्वा० ॥ हर्षित थयो हर्षित थयो पुलकित तनु तदा जी, नवि माये नवि माये अंगे जेह हो ॥ ३ ॥ स्वा० ॥ पूठे तेहने पूठे तेहने कुशलनी वारता जी, वली वातमी वली वातमी तेह वियोग हो ॥ स्वा० ॥ तव नाखे तव नाखे तेह विद्याधरा जी, तस अतिशें तस अतिशें वात ते जोग हो ॥ ४ ॥ स्वा० ॥ सुणी वातमी सुणी वातमी हवे वियोगनी जी, तुं पाणी तुं पाणी लेवाने जाय हो ॥ स्वा० ॥ अपराजित अपराजितने अम्हे अपहस्यो जी, तेहने तुझ तेहने तुझ विरह ते थाय हो ॥ ५ ॥ स्वा० ॥ अम्ह स्वामी अम्ह स्वामी नवननानु अठे जी, विद्याधर विद्याधरनो ते नाथ हो ॥ स्वा० ॥ अटवीमां अटवीमां मोहोल विकुर्वीने जी, रहे कुमरने रहे कुमरने करे साहमो हाथ हो ॥ ६ ॥ स्वा० ॥ साहमो जइ साहमो जइ कुमर आलिंगीयो जी, हरखी दीये हरखी दीये रतन आसन्न हो ॥ स्वा० ॥ वेसामी वेसामी कहे तुझ गुण घणा जी, देखी नवि देखी नवि माये मन्न हो ॥ ७ ॥ स्वा० ॥ हवे दीठो हवे दीठो प्रत्यक्ष तुझने जी, नवि माये नवि माये त्रण जुवन्न हो ॥ स्वा० ॥ हरिनंदी हरिनंदी राजा धन्य ठे जी, तुझ माता तुझ माताने पण धन्य हो ॥ ८ ॥ स्वा० ॥

जेहना घरमां जेहना घरमां देशमां नयरमां जी, तुं वसतो तुं वसतो तिणे सवि धन्य हो ॥ स्वा० ॥ इहां तेड्या इहां तेड्या तुम्ह ए कारणे जी, मुज घरमां मुज घरमां धन तो अगण्य हो ॥ ए ॥ स्वा० ॥ मुज पुत्री मुज पुत्री दोय सोहामणी जी, एक कमलिनी एक कमलिनी कुमुदिनी नारी हो ॥ स्वा० ॥ नैमित्तिए नैमित्तिए मुजने एम कह्युं जी, तुज पुत्री तुज पुत्रीनो जरतार हो ॥ १० ॥ स्वा० ॥ अपराजित अपराजित नियमे थायशे जी, में मूक्या में मूक्या खेचर ताम हो ॥ स्वा० ॥ तुम्ह पासे तुम्ह पासे तेणे इहां आणीया जी, नवि गणजो नवि गणजो वीजुं काम हो ॥ ११ ॥ ॥ स्वा० ॥ ते कारण ते कारण परणो कुंवरी जी, अम्ह उपर अम्ह उपर अनुग्रह आणी हो ॥ स्वा० ॥ एम जाख्युं एम जाख्युं पण तस नवि रुचे जी, तुज विरहो तुज विरहो मनमां जाणी हो ॥ १२ ॥ स्वा० ॥ तुज ध्यावे तुज ध्यावे निशिदिन कुंवरजी जी, जली रीते जली रीते जोजन नवि थाय हो ॥ स्वा० ॥ नवि सोवे नवि सोवे नवि वोले किमे जी, तुज विरहो तुज विरहो तस न खमाय हो ॥ १३ ॥ स्वा० ॥ ते माटे ते माटे तुजने खोलवा जी, अम्हे आव्या अम्हे आव्या दीठा आंही हो ॥ स्वा० ॥ हवे वार न हवे वार न लावो अध घमी जी, तुम्हे चालो तुम्हे चालो अपराजित ज्यांहि हो ॥ १४ ॥ स्वा० ॥ अम्ह स्वामी अम्ह स्वामी कुमर हरख लहे जी, एम सांजली एम सांजली साथे जाय हो ॥ स्वा० ॥ तस देखी तस देखी जुवनजानु सवे जी, कुंअर पण कुंअर पण हर्षित थाय हो ॥ १५ ॥ स्वा० ॥ तिहां परण्या तिहां परण्या कमलिनी कुमुदिनी जी, तिहां रहेतां तिहां रहेतां एक दिन जाय हो ॥ स्वा० ॥ अणपूछे अणपूछे तिहांथी वेहु जणा जी, सघले ते सघले ते सुखीया थाय हो ॥ १६ ॥ स्वा० ॥ सिरिमंदिर सिरिमंदिर नगरे आवीया जी, मणि आप्यो मणि आप्यो खेचर जेह हो ॥ स्वा० ॥ ते इछित ते इछित पूरे कुमरनां जी, पुण्यवंतने पुण्यवंतने दुःख नवि रेह हो ॥ १७ ॥ स्वा० ॥ करे क्रीमा करे क्रीमा सुखमां तिहां रहे जी, हवे एक दिन हवे एक दिन नगरमां थाय हो ॥ स्वा० ॥ कोलाहल कोलाहल समजण नवि पडे जी, सवि नगरमां सवि नगरमां लोक उजाय हो ॥ १८ ॥ स्वा० ॥ तिहां धनुपे तिहां धनुपे तीर चढावीयां जी, पहेर्यां बकतर पहेर्यां बकतर कर तरवार हो ॥ स्वा० ॥ तुरंगे चढी तुरंगे चढी धावे केटला जी, कोइ दोडे कोइ दोडे

निज पगे त्यार हो ॥ १९ ॥ स्वा० ॥ होकारव होकारव करे केइ वलगता जी, देखी जे देखी जे मन भय होय हो ॥ स्वा० ॥ एहवा भट एहवा भट सज्ज थइने भले जी, भयभ्रांत भयभ्रांत थइ रह्या जोय हो ॥ २० ॥ स्वा० ॥ रथ भरीया रथ भरीया शस्त्रे करी घणुं जी, हेषारव हेषारव करता सार हो ॥ ॥ स्वा० ॥ पाखस्या तिहां पाखस्या तिहां अश्व दोमावता जी, दीये हाटे दीये हाटे तालां तिवार हो ॥ २१ ॥ स्वा० ॥ गृहद्वार गृहद्वार ते देवे जन सवे जी, कोलाहल कोलाहल एणी पेरे थाय हो ॥ स्वा० ॥ परमारथ परमारथ नवि लह्यो तेहनो जी, मंत्रिसुत मंत्रिसुत मोकले धाय हो ॥ २२ ॥ ॥ स्वा० ॥ करी खबर करी खबर आव्यो कुमर कने जी, कहे सांभलो कहे सांभलो नगरनो राय हो ॥ स्वा० ॥ सुप्रभ नृप सुप्रभ नृप आस्थाने हतो जी, जस महिमा जस महिमा जगमां गवाय हो ॥ २३ ॥ स्वा० ॥ प्रतिहार प्रतिहार ते सुतो प्रमादथी जी, कोइ वेरी कोइ वेरी पुरुष ते आवी हो ॥ स्वा० ॥ छल करीने छल करीने रायने घा कस्यो जी, नव सुत कोइ नव सुत कोइ तेने भावी हो ॥ २४ ॥ स्वा० ॥ प्रतिहारनी प्रतिहारनी निंदथी दुःख लह्यो जी, निद्राथी निद्राथी दुःख होय नियम हो ॥ स्वा० ॥ मही सुंघे मही सुंघे ऊंघे जे नरा जी, तेणे टालो तेणे टालो निद्राप्रेम हो ॥ २५ ॥ स्वा० ॥ जो करशो जो करशो निद्रा तो जशे जी, रसस्वाद रसस्वाद तो तुम्ह तणो मूल हो ॥ स्वा० ॥ पछे पूछशो पछे पूछशो कांय कह्युं नहीं जी, अमे तो कह्युं अमे तो कह्युं तुम अनुकूल हो ॥ २६ ॥ स्वा० ॥ एह राजा एह राजा प्रमादथी दुःख लह्यो जी, तेणे करीये तेणे करीये प्रमाद ते केम हो ॥ स्वा० ॥ अधिकारे अधिकारे त्रीजे छठी ढालमां जी, कहे पद्म कहे पद्मविजय धरी प्रेम हो ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ १७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे नृपसुत सुण मंत्रिसुत, जुर्ज भवितव्यता वात ॥ एकाकी परिहरीये, पण आपण सुखशात ॥ १ ॥ सुभटसमूहे परवस्यो, रहे नित निज आवास ॥ नीति सहित पण देखीये, नृपने दुःखनो राशि ॥ २ ॥ ते कारण भवितव्यता, करे ते जगमां होय ॥ कारजसिद्धिमां करे, उद्यम निष्फल होय ॥ ३ ॥ विमलबोध तव एम कहे, निश्चय नय प्रभु एम ॥ पण उद्यम व्यवहार छे, तेह तजाये केम ॥ ४ ॥ न्याय अन्याय करो सवे, पण घानां-

तर ते थाय ॥ पण अपजस अन्यायथी, जस होय करतां न्याय ॥ ५ ॥ निश्चय नयथी जोइये, तो सघलो व्यवहार ॥ उठी जाये तेहथी, उठे घणा विकार ॥ ६ ॥ वेष पहेरो तो वंदीये, नरतने कहे शक्रेंद्र ॥ ते व्यवहारनी मुख्यता, देखाडे जिनचंद्र ॥ ७ ॥ उद्यम करतां उपजे, सवि कारजनी सिद्धि ॥ उद्यम करतां मानवी, पामे रिद्धिनी वृद्धि ॥ ८ ॥ जिनवर दीक्षा लेइ करी, करे कष्ट अघोर ॥ ते उद्यमना साह्यथी, नासे कर्म कठोर ॥ ए ॥ न्याय उद्यम ते मुख्य छे, कार्यसिद्धि होय तास ॥ काकतालीय न्याये करी, फले अन्याये आश ॥ १० ॥ लोक अनुयायीपणुं, नवि होय ते लहे दुःख ॥ लोक अनुजाइ वरततां, ते लहे लक्ष्मी सुख ॥ ११ ॥ धर्म विशुद्ध वली न्याय तेम, अनुजाइ होय लोक ॥ वरते ए रीते तदा, पामे शुभ फल रोक ॥ १२ ॥ आ नव पर नव साधतो, पामे कीर्त्ति अमान ॥ ते कारण पण कारणे, साधे कार्य समान ॥ १३ ॥ कुंवर कहे सुण मित्र तुं, तें कही साची वाण ॥ में उल्लंठपणे कह्युं, वात अयुक्त अजाण ॥ १४ ॥ तें स्याद्वादपणे कह्युं, में जाण्युं एकांत ॥ तुझ परीक्षा कारणे, जाख्युं ए एणी जात ॥ १५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ बाहु जिणेसर विनवुं ॥ ए देशी ॥ सुंदर ॥ मंत्री सामंत प्रमुख तदा, करे उपचार अनेक हो ॥ सुंदर ॥ नवि असमाधि कांइ टली, मुंझाइ रह्या छेक हो ॥ सुं० ॥ १ ॥ पुण्य तणां फल देखजो ॥ ए आंकणी ॥ कामलता गणिका वसे, तेह नगरमां सार हो ॥ सुं० ॥ आवी कहे मंत्री प्रमुखने, सुणो एक वात श्रीकार हो ॥ सुं० ॥ २ ॥ पु० ॥ दोय पुरुष इण नयरमां, नवि करे कांइ वेपार हो ॥ सुं० ॥ विलसे द्रव्य धनी परे, त्यागी तेह अपार हो ॥ सुं० ॥ ॥ ३ ॥ पु० ॥ धर्म तणो ते रागीयो, उत्तम सवि आचार हो ॥ सुं० ॥ सिद्ध पुरुष सरिखो अछे, पुण्य तणो भंमार हो ॥ सुं० ॥ ४ ॥ पु० ॥ कोइ उपचार हशे खरो, सांजली सहु हरखंत हो ॥ सुं० ॥ संजलावे सवि नृप प्रत्ये, नृप पण एम बोलंत हो ॥ सुं० ॥ ५ ॥ पु० ॥ तेडी आवो ते पुरुषने, ते पण जाय तस पास हो ॥ सुं० ॥ बहु प्रणिपत्य करी तदा, आव्या नृपनी सकाश हो ॥ सुं० ॥ ६ ॥ पु० ॥ पूछे किहां थकी आवीया, नगर कह्युं सुपवित्त हो ॥ सुं० ॥ कोण कुलमां तुम्हे उपना, जाखो स्थिर करी चित्त हो ॥ ॥ सुं० ॥ ७ ॥ पु० ॥ मंत्रिसुत सवि वारना, संजलावे आणंद हो ॥ सुं० ॥

विमलबोध ए मंत्रिसुत, गणधर थाशे तुज ॥ वेहुं अति रोमांचित थया, सांजली एहवुं गुज ॥ ७ ॥ केवलीनी सेवा करे, तिहां केताएक दिन्न ॥ जब रहीया केवली प्रज्ञु, तिहां हर्षित मन्न ॥ ८ ॥ मुनिवर विचरे विचरीया, वंदे चैत्य अनेक ॥ सेवे साधु पयकमल, धरी बहुमान विवेक ॥ ॥ ए ॥ सांजले जिनवर धर्मने, विचरे महीयल मांहि ॥ उत्पत्ति रत्नवती तणी, सांजलो हवे उत्साही ॥ १० ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ साहिवा मोती थोने हमारो ॥ ए देशी ॥ जनानंद नामे नयरीनो वासी, जितशत्रु शत्रु करे दासी ॥ गुणवंती,नारी ॥ सुसारी, शीलवंती नारी ॥ ए आंकणी ॥ धारणी नाम अछे तस देवी, रूपे हारी रंजा जेहवी ॥ गु० ॥१॥ तेहनी कुखे उपनी वेटी, प्रीतिमती नामे गुणपेटी ॥ गु० ॥ रत्नवतीनो जीव ए जाणो, पुत्र परे मोछव करे राणो ॥ गु० ॥ २ ॥ रत्नमाला परे लागे वाहाली, हृदयथी नवि मूके कोइ टाली ॥ गु० ॥ अनुक्रमे यौवनवयमां आवी, चोसठ कला तस चित्तमां जावी ॥ गु० ॥ ३ ॥ जारती पण जाणुं ए पासे, इछे करवा कला अच्यासे ॥ गु० ॥ सवि जन जाणे देवी ए साची, लोक तणी मति तेहमां माची ॥ गु० ॥ ४ ॥ पण तेहनी मति न रमे क्यांहि, गुणवंतो न दीठो तेह मांहि ॥ गु० ॥ नरपति चिंते महारी वेटी, रूप गुणे रतिने करी चेटी ॥ गु० ॥ ५ ॥ एहने योग्य हुं पुरुष न देखुं, परणावीने जेम सुख लेखुं ॥ गु० ॥ जो जेम तेम परणावुं एह, तो प्राण घात करी तजे देह ॥ गु० ॥ ६ ॥ एम चिंती पूछे एकांते, तुज विवाह करुं किणी जाते ॥ गु० ॥ अमुक अमुक राजानो कुमार, कहो तो करीये तुम्ह जरतार गु० ॥ ७ ॥ सा कहे तात सुणो मुज वयणां, जोग न वांछे मुनिवर सयणां ॥ गु० ॥ जाण्या छे परमारथ जेणे, जोग न मान्या मनमां तेणे ॥ गु० ॥ ॥ ८ ॥ एहवा जोगने मूरख साथ; सेववा ते वाउलनी वाथ ॥ गु० ॥ मूरख जाख्यो गर्दज सरिखो, देह विकंवन दुर्गति परखो ॥ गु० ॥ ए ॥ दाधारिंगा पति एक जाणो, गुणिगणनो स्वामी मूर्ख पीछाणो ॥ गु० ॥ दानी होय दरिद्री जेह, त्रणे दुःख जाख्यां जग एह ॥ गु० ॥ १० ॥ में तो प्रतिज्ञा कीधी एम, कला करतां मुज जीते जेम ॥ गु० ॥ ते परणुं स्वामी धरी प्रेम, बीजो वर वरवा मुज नेम ॥गु०॥ ११॥ वात थइ दश दिशे

प्रसिद्ध, बहु नृप तिहां मिले कन्या गिद्ध ॥ गु० ॥ करे कला अभ्यास अनेक, वाद विवाद करे अति छेक ॥ गु० ॥ १२ ॥ मांहोमांहे पूछे वात, जाणे हुं हवे जीती जात ॥ गु० ॥ नगर बाहिर एक दिन हवे राय, मांचा मंडावे सुखदाय ॥ गु० ॥ १३ ॥ विविध प्रकारना मांडवा रुडा, दश दिशि दूत घणा तिहां दोड्या ॥ गु० ॥ सहु निज पुत्रने तेडीने आवे, कौतुक जोवाने मन भावे ॥ गु० ॥ १४ ॥ रूप विज्ञान लक्षण सुणी आवे, विद्याधर तेहना गुण गावे ॥ गु० ॥ प्रच्छन्न रूप करी बहु देव, आवे कौतुक लीधा हेव ॥ गु० ॥ १५ ॥ तेह स्वयंवरमंडपे मलीया, बहु राजा बहुबलथी बलीया ॥ गु० ॥ हरिनंदी राजा नवि आव्यो, पुत्रवियोगथी दुःख बहु पाव्यो ॥ गु० ॥ १६ ॥ जितशत्रु राजाए कीधां, बहु सन्मान वेसण तस दीधां ॥ गु० ॥ एहवे अपराजित कुमार, फरता आव्या तिणही वार ॥ गु० ॥१७॥ कोइक भावी तणे संयोग, वात सुणी आव्या तिहां लोग ॥ गु० ॥ मंत्रिसुतने कहे कुमार, भले आव्या इहां एणी वार ॥ गु० ॥ १८ ॥ बहु कौतुक ने कला विचार, देखीशुं आपण निरधार ॥ गु० ॥ वली कन्या पण रूप निधान, देखीशुं गुणथी असमान ॥ गु० ॥ १९ ॥ सुजन घणा इहां आव्या हशे, ते आपणने सहु ओलखशे ॥ गु० ॥२१॥ विद्याधरदत्त गुटिका जेह, रूप परावर्त्त करता तेह ॥ गु० ॥ २० ॥ पामर पुरुषनुं रूप करीने, आव्या गुटिका पास धरीने ॥ गु० ॥ प्रीतिमती एणे अवसर आवी, साथे दासी प्रमुख तेह लावी ॥गु०॥२१॥ हरिणलंछन हार्यो निज वदने, दाडिमकली हारी जस रदने ॥ गु० ॥ हारलता शोभे घणुं तास, कामी जनने नाखण पास ॥ गु० ॥२२॥ मणि वलयाकर अग्रे शोभे, जस रव सुणी सवि जन मन क्षोभे ॥ गु० ॥ रक्त अशोक प्रभापद जाणो, तिणे रंजे जन हृदय पीछाणो ॥ गु० ॥ २३ ॥ रणझण करता नेउर पाद, मानुं करे इंद्राणीशुं वाद ॥ गु० ॥ जेह दुकूल धार्युं निज अंगे, सुरलोके पण नवि लहे रंगे ॥ गु०॥ २४ ॥ करे शृंगार विशिष्ट प्रकारे, आभूषण बहु अंगे धारे ॥ गु० ॥ परिमल बहुल अछे तस श्वासे, अंगरक्षक प्रतिहारी पासे ॥ गु० ॥ २५ ॥ सुभटसमूहे परवरी आवे, देखी सहु मन अचरिज थावे ॥ गु० ॥ प्रेक्षक लोक करंती दूरे, प्रिय सखी तस आणंद पूरे ॥ गु० ॥ २६ ॥ मालती नाम अछे तस साच, एणी परे भाखे मधुरी वाच ॥ गु० ॥ भूचर राजा

सवि मली आव्या, ताहरा गुण मन मांहि भाव्या ॥गु०॥२७॥ देश कदं-बनो स्वामी एह, भुवनचंद नामे गुणगेह ॥ गु० ॥ पुत्रादिकथी ए परिव-रीयो, पूर्ववधू तिलक ज एह करीयो ॥ गु० ॥ २८ ॥ सुभटचरित्रे करीने शूर, रिपुदलने जस दीसे गयो भूर ॥गु०॥ दक्षिण देशपति एह राय, समरकेतु प्रणमे सहु पाय ॥ गु० ॥ २९ ॥ वरुण नाम पश्चिम दिशि राय, जेहना गुण दश दिशिमां गवाय ॥ गु० ॥ सुभट गुणी दानी मानी होवे, जस नामे रिपुदल सवि रोवे ॥ गु० ॥ ३० ॥ उत्तर दिशिनो नाथ कुबेर, नृप-गुण मांहि अनुत्तर मेर ॥गु०॥ सोमप्रभ नामे पण दीपे, सूरतेजथी रिपु-बल झीपे ॥ गु० ॥ ३१ ॥ नाम धवल ए राजा रुडो, कृष्ण करे रिपुबल तिहां भूंमो ॥ गु० ॥ शूर भीम आदि बहु राजा, देखावे बेहु पक्ष मांहे ताजा ॥ गु० ॥ ३२ ॥ एह धनंजय सुजस छे सार, कलिंग शूरसेन मंगल धार ॥ गु० ॥ खेचरपति मणिचूड ए राय, विद्या सिद्ध घणी जस थाय ॥ गु० ॥ ३३ ॥ रत्नचूड मणिप्रभ वली जाण, सुमनस विद्याधरमां प्रमाण ॥ गु० ॥ शूरसेन सुसेन राजान, अमितप्रभने दीये बहु मान ॥ ॥ गु० ॥ ३४ ॥ रूप सौभाग्य ने तेज वखाणे, वर कुमरी जो तुज मन जाणे ॥ गु० ॥ एह राजाना पुत्र युवान, कला बहोंतेर वली रूपनिधान ॥ गु० ॥ ३५ ॥ त्रीजे ए अधिकारे भाखी, नृप वर्णव कस्था बहु जन साखी ॥ गु० ॥ आठमी ढाल अधिक उल्लासे, पद्मविजय कहे शुभ अ-भ्यासे ॥ गु० ॥ ३६ ॥ सर्व गाथा ॥ २७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी दृष्टि करे यदा, भालां परे अति तिक्ष ॥ कुमर हृदय जेम कमल-दल, शल्य सहित थयां विद्ध ॥ १ ॥ अबला थया अबलालये, सबला सबला राय ॥ पण वामा वामांग जस, भूपे ते वर थाय ॥ २ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ थारा मोहला उपर मेह, झबूके बीजली हो लाल ॥ झबूके बीजली ॥ ए देशी ॥ एणी अवसर तिहां प्रीति,-मती कला वरसती हो लाल ॥ म० ॥ गीत विचार करंती, पूर्व पक्षे सती हो लाल ॥ पू० ॥ तिहां कोइ कुमरना मुखथी, वचन नवि नीकल्युं हो लाल ॥ व० ॥ आवी गले अहे तेम, मन सर्वनुं संकल्युं हो लाल ॥ म० ॥ १ ॥ कोइक स्खलना बोलतां, पामे प्रा-

णीया हो लाल ॥ पा० ॥ कोइक मौन धरी रह्या, मानुं अजाणीया हो लाल ॥ मा० ॥ कोइक बोले असंबद्ध, लोक हसावता हो लाल ॥ लो० ॥ पण कोइ उत्तर पक्ष, करण नवि पावता हो लाल ॥ क० ॥ २ ॥ सवे निलीन थया जव, प्राणी बक परे हो लाल ॥प्रा०॥ तव हसता देइ ताली, कहे केइ इणी परे हो लाल ॥ क० ॥ जो जो सरस्वती नारी, तेणे स्त्री पक्ष करे हो लाल ॥ ते० ॥ कोइ कहे जीत्या नारी, तोहि जीवित धरे हो लाल ॥ तो० ॥ ३ ॥ कोइ कहे त्रीया राज्य, ए कारण जाणीये हो लाल ॥ ए० ॥ एणी परे थयो कोलाहल, ते जनवाणीए हो लाल ॥ ते० ॥ एम असंबद्ध देखी, नृपति मन चिंतवे हो लाल ॥ नृ० ॥ कृष्ण करी मुख दृष्टि, नृनाग समी ठवे हो लाल ॥ नृ० ॥ ४ ॥ गुण सवि जगमां आय, रह्या शुं एटला हो लाल ॥ र० ॥ राजकुमर मलीया ठे, बहोत ते केटला हो लाल ॥ ब० ॥ विधि पण नूल्यो वात, ए करतां शुन्न परे हो लाल ॥ ए० ॥ प्रीतिमती पति नवि, निपजाव्यो कोइ घरे हो लाल ॥ ॥ नि० ॥ ५ ॥ अथवा खिन्न थयो विधि, तिणे एह सारिखो हो लाल ॥ ॥ ति० ॥ नवि निपजावी शक्यो एम, करुं मन पारखो हो लाल ॥ क० ॥ मंत्री कहे सुण स्वामी, विषाद न कीजीये हो लाल ॥ वि० ॥ उद्यम करतां इछित, फल सवि लीजीये हो लाल ॥ फ० ॥ ६ ॥ राजकुमर असंख्य, मल्या इहां तुम घरे हो लाल ॥ म० ॥ नवि लहीये कोइ जीत्यो, न जीत्यो नली परे हो लाल ॥ न० ॥ एम कही करे उद्घोषणा, सुणो सवि राजीया हो लाल ॥ सु० ॥ खेचर कुमार प्राकृत नर, जे गुण गाजीया हो लाल ॥ जे० ॥ ७ ॥ मुऊ पुत्री जे जीतशे, तस परणावशुं हो लाल ॥ ॥ त० ॥ युक्तिसंगत उद्घोषणा, सांनली नावशुं हो लाल ॥ सां० ॥ मन चिंते अपराजित, कुंवर ए स्त्री अठे हो लाल ॥ कुं० ॥ एहनी साथे जीत, थये परणशुं पठे हो लाल ॥ थ० ॥ ८ ॥ नवि घेटानी साथे के, गजने रण घटे हो लाल ॥ ग० ॥ नारी स्वन्नावे दोष, संयुत ते नवि मटे हो लाल ॥ सं० ॥ जो न करुं विवाद तो, ए पण मद धरे हो लाल ॥ ए० ॥ शास्त्र अलीक होय नरपक्ष, हारे एणी परे हो लाल ॥ हा० ॥ ए ॥ एम चिंतवीने आवे, सहु मुख आगले हो लाल ॥ स० ॥ रूपांतर रह्यो तोहि, शोन्ने लावण्यबले हो लाल ॥ शो० ॥ अन्नपटल अंतरित, शशी पण उजु

थकी हो लाल ॥ श० ॥ अधिक विराजे एह, ते जाणे सहु वकी हो लाल ॥ ॥ ते० ॥ १० ॥ मारगधूलिथी लिप्त, शरीर छे यद्यपि हो लाल ॥ श० ॥ तोपण काचथी मरकत, छाया नवि छपी हो लाल ॥ छा० ॥ तेम सवि राजकुमारमां, कुमर राजे घणुं हो लाल ॥ कु० ॥ देखी कुंअरने हृदय, विंधाणुं कुमरी तणुं हो लाल ॥ विं० ॥ ११ ॥ पूर्व जन्मना स्नेह, थकी तस भावती हो लाल ॥ थ० ॥ हरख तणो उत्कर्ष, घणो मन पावती हो लाल ॥ घ० ॥ पूर्व पक्ष करे दूर, ते उत्तर पक्षथी हो लाल ॥ ते उ० ॥ जेम कोइ देव संक्रांत, होय तेम दक्षथी हो लाल ॥ हो० ॥ १२ ॥ ग्रंथांतरथी तेह, लगारेक दाखीये हो लाल ॥ ल० ॥ पूरव पक्ष कहे, कुंवरी अम्हे भाखीये हो लाल ॥ कुंव० ॥ आदि मध्य अंत अक्षर, विणु वल्लभ होय हो लाल ॥ वि० ॥ निशालीया वली नारी ने, योगीसर जोये हो लाल ॥ ॥ यो० ॥ १३ ॥ दिवस वलेवने दिन, वांधुं हाथे कुंअर कहे हो लाल ॥ ॥ वां० ॥ सांजली मनमां कुमरी, हर्ष घणो लहे हो लाल ॥ ह० ॥ कहे वली कोण न चाले, इछी वल्लभ किस्युं हो लाल ॥ इछी० ॥ नरपति विजय करे कहो, केहनो हर्षशुं हो लाल ॥ क० ॥ १४ ॥ तस्कर वल्लभ कांय, नाटकभूमि केहवी हो लाल ॥ ना० ॥ वर्षाकालमां होय, नदी किण जेहवी हो लाल ॥ न० ॥ देवो उत्तर एह, साथे वच एकशुं हो लाल ॥ सा० ॥ अगाध वारि पूर जनित, तरंग विवेकशुं हो लाल ॥ त० ॥ १५ ॥ एणी परे कुमरीनी वाणी, सायर लहेर उछली हो लाल ॥ सा० ॥ कुमरी वचन कचवर तव, वह्यो सवि खलभली हो लाल ॥ व० ॥ कुसुममाल महकंती, कुंअर कंठे ठवे हो लाल ॥ कुं० ॥ तव खेचर नरभूपति, क्रोधथी इम लवे हो लाल ॥ क्रो० ॥ १६ ॥ जुर्ज जुर्ज सर्व राजान, मेली विगोवीया हो लाल ॥ मे० ॥ उत्तम वंश उत्पन्न, समग्र गुण भावीया हो लाल ॥ स० ॥ मूकी तेहने प्राकृत, नर अंगीकर्यो हो लाल ॥ न० ॥ नवि लहीये कुल जाति, वंश तेहने वर्यो हो लाल ॥ वं० ॥ १७ ॥ नीचगामीपणुं शास्त्र, मांहि नदी नारीने हो लाल ॥ मां० ॥ तेम नीपनुं कही उभ्या, धरती आस्फालीने हो लाल ॥ ध० ॥ पण नवि सहीये एह, पराभव आकरो हो लाल ॥ ॥ प० ॥ अम सवि वेगां परणे, कापडी पामरो हो लाल ॥ का० ॥ १८ ॥ जोवा चढाये कीत, लही पण नवि सहु हो लाल ॥ ल० ॥ एहने

हणीने नारीने, माला अम्हे ग्रहुं हो लाल ॥ मा० ॥ एम कहेतां सवि रण, संग्राममां सज्ज थया हो लाल ॥ सं० ॥ तव कोइ मीठ हणी गज, शिर कुंअर गया हो लाल ॥ शि० ॥ १९ ॥ तेहज शस्त्रे युद्ध, करे वेगो तिहां हो लाल ॥ क० ॥ क्षणेक मांहि हणी रथिकने, वेगो रथ जिहां हो लाल ॥ वे० ॥ वली तुरगोपरि जूझि, रही जूझे घणुं हो लाल ॥ रही० ॥ वली गज उपरे एम, करे शूरापणुं हो लाल ॥ करे० ॥ २० ॥ रण आकाशमां वीज, पुंज परे चमकतो हो लाल ॥ पुं० ॥ गजघटा मांहि केसरी परे, एक ते दीपतो हो लाल ॥ ए० ॥ तमचरं मांहि सूरज, उगे जेम सोहतो हो लाल ॥ उ० ॥ अमृतथी जेम रोग, समूह दूरे थतो हो लाल ॥ स० ॥ २१ ॥ जेम दीपीथी पशुवर्ग, नासे सवि वेगलो हो लाल ॥ ना० ॥ जेम वनमहिषथी तुरंग, समूह होय पांगलो हो लाल ॥ स० ॥ वाघ थकी मृगयूथ, मातंगे कज यथा हो लाल ॥ मा० ॥ पर सवि सैन्य विसंस्थल, करे कुंअर तथा हो लाल ॥ क० ॥ २२ ॥ शास्त्र थकी पराजय थया, नारीथी आपणे हो लाल ॥ ना० ॥ शस्त्र थकी एणे एकले, जीत्या म्हापणे हो लाल ॥ जी० ॥ तव सवि रणसंग्राम, करण उठ्या वली हो लाल ॥ क० ॥ सोमप्रभ नृपहस्ती उपर, चढे कुंवर वली हो लाल ॥ च० ॥ २३ ॥ लक्षण तिलक चिह्नथी, उंलख्यो जेटले हो लाल ॥ उं० ॥ आलिंगन करे हर्ष, धरी नृप तेटले हो लाल ॥ ॥ ध० ॥ करय निवारण युद्ध, करण पण तिणे समे हो लाल ॥ क० ॥ कहे मुझ वेननो पुत्र ए, अपराजित रमे हो लाल ॥ अ० ॥ २४ ॥ विमल करी दशे दिश जेणे, निर्मल निज गुणे हो लाल ॥ नि० ॥ हरिनंदी नृपपुत्र, विना कोण एम भुणे हो लाल ॥ वि० ॥ एह अनेक मल्या, नरपति रण कारणे हो लाल ॥ न० ॥ अपराजित ए एक, थयो संहारणे हो लाल ॥ थ० ॥ २५ ॥ निज बल मेरुमंथानशुं, पर बल सायरो हो लाल ॥ प० ॥ मथीयो कृष्ण लछी परे, प्रीतिमती वर्यो हो लाल ॥ प्र० ॥ तव सवि राजकुमार, मली शंसा करे हो लाल ॥ म० ॥ जितशत्रु सुणी वात, हरख मनमां धरे हो लाल ॥ ह० ॥ २६ ॥ थइ उपशांत नृपति, सवि पासे रही करी हो लाल ॥ स० ॥ दिवस प्रशस्ते प्रीति,-मती एणी परे वरी हो लाल ॥ म० ॥ रूप स्वभावनुं देखी, सवि हर्षित थया हो लाल ॥ स० ॥ दइ संन्मान विसर्ज्या, सहु निज घर गया हो लाल ॥ स० ॥ २७ ॥ नगरलोक

सवि विभ्रम, पामे निज मने हो लाल ॥ पा० ॥ देवमिथुन ए दीसे, दीये सुख नेनने हो लाल ॥ दी० ॥ देश घणा करी तुरग, रथादिक पामीया हो लाल ॥२०॥ प्रीतिमतीशुं सुख,नोगवे सुखकामीया हो लाल ॥नो० ॥२७॥ जितशत्रु नृपमंत्री, सुता परणावता हो लाल ॥सु०॥ विमलबोध मंत्रिसुतने, तिहां देवरावता हो लाल ॥ ति० ॥ ए त्रीजा अधिकारनी, ढाल नवमी कही हो लाल ॥ ढाल० ॥ पद्मविजय कहे पुण्य थकी, नित्य सुख सही हो लाल ॥ नि० ॥ ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिनंदी नृप पासथी, एक दिन आव्यो दूत ॥ अमृतवदन नामे नलो, जाण्यो तास आकूत ॥ १ ॥ करी आलिंगन कुंवर ते, पूछे एणी परे तास ॥ कुशल वात माय तायनी, तव कहे दूत विलास ॥ २ ॥ कुशल शुं पूछे तेहनुं, सांजल मारी वात ॥ मात पिता तुज रोवतां, जाये दिन ने रात ॥ ॥ ३ ॥ अश्रुपात जल आगले, सायर जल अति स्तोक ॥ नित्य प्रलाप करे घणा, धरतां ताहरो शोक ॥ ४ ॥ पोकारे करुण स्वरे, पामे मूर्छा नाव ॥ तुज वियोग दुःख आर्त्तथी, देवे दैवे सराव ॥ ५ ॥ वहु थानक ताहरुं चरित, सांजली हर्षित थाय ॥ पण कोइ नावी नावथी, मिलन न ताहरुं थाय ॥ ६ ॥ प्रीतिमती परण्या तणी, सांजली ताहरी वात ॥ तुम तेमणने कारणे, मुज मोकवे तुम्ह मात ॥ ७ ॥ वात सुणी मन चिंतवे, अपराजित कुमार ॥माय तायने सुख दीये,सघलो ए संसार ॥८॥ म्हें तो दुःख दीधुं घणुं, हुं तो अधम शिरदार ॥ एम कही आंसु रेजतो, मानुं मेघजलधार ॥ ए॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ धन्यो रे कुंवरजीनो सेहरो ॥ ए देशी ॥ जुवनजानु एणी अवसरे, अमृतसेन नरनाथ रे ॥ विनीत ॥ कुंवर पासे आव्या वही,निज पुत्री लेइ साथ रे ॥ वि० ॥ १ ॥ लीलावंत कुंवर नलो ॥ सूरकांत विद्याधरु, बीजा खेचर अनेक रे ॥ वि० ॥ वहु रिद्धे करी परवस्था, आवे अति धरीय विवेक रे ॥ वि० ॥ ॥ २ ॥ ली० ॥ जितशत्रु राजा तणी, आणा लही कीध प्रयाण रे ॥ वि० ॥ प्रीतिमती आदे देइने, वहु नारी सहित सुप्रमाण रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ ली० ॥ हय गय रह नडे परवस्यो, विद्याधर सेन्य संपन्न रे ॥ वि० ॥ अखंड प्रयाणे आवीयों, सिंहपुर नगरने आसन्न रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ ली० ॥ विद्या-

धर जइ आगले, राजाने तेह कहंत रे ॥ वि० ॥ राजा पण हर्षित थइ, साह्मो वहु वलथी आवंत रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ ली० ॥ सामंत मंत्रीए परवस्यो, तेम नगरलोक सुविशेष रे ॥ वि० ॥ आव्या निज तात जाणी करी, पाय प्रणमे सवधू अशेष रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ ली० ॥ स्नेहे शिरचुंवन नरपति, हवे करे नगरप्रवेश रे ॥ वि० ॥ वर हाथणी उपर सोहीये, पाय प्रणमता वहोत नरेश रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ ली० ॥ करे लोक प्रशंसा एणी पेरे, जुर्ज एकाकी गयो एह रे ॥ वि० ॥ ऋद्धि लेइ आव्यो घणी, ए तो पूरव कृत शुन्न रेह रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ ली० ॥ यतः ॥ वच्चंति सुपुरिसा जञ, तञ पिठं न मुंचई लछी ॥ निम्मलगुणपम्बिद्धा, सुन्नगे महीले च अणुरत्ता ॥ १ ॥ सुकयसहाय एगागिणो, वि जायंति नूण जयपहुणो ॥ सुकयविमुक्को न्निरकं, एगागी न्नमइ चक्कीवि ॥ २ ॥ कश्चित्पुनराह ॥ प्रीतिमती धन्य एहने, जेणे एहवो वर पत्त रे ॥ वि० ॥ रोहण गिरिनी न्नूमिका, लहे रत्नसंयोग सुयुत्त रे ॥ वि० ॥ ए ॥ ली० ॥ परस्त्वाह ॥ कुंवर कृतपुण्य जाणीये, जेणे एहवी स्त्री लीध रे ॥ वि० ॥ कृष्ण विना को नवि लहे, नारी लक्ष्मी संबंध रे ॥ वि० ॥ १० ॥ ली० ॥ एम शंसा सुणतो थको, आवे निज मंदिर तेह रे ॥ वि० ॥ सन्मानी विसर्जीया, पहोता ते निज निज गेह रे ॥ वि० ॥ ॥ ११ ॥ ली० ॥ कोसल नृपनी पुत्रिका, आवी कनकमाला तिहां नार रे ॥ वि० ॥ सुप्रन्न रायनी वेटकी, आवे रंन्ना नामे उदार रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ ॥ ली० ॥ एम सवि नारी संघातशुं, सुख न्नोगवे विषयनां चंग रे ॥ वि० ॥ मनोगत चपलगति हवे, ठांडे देवलोकनो संग रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ ली० ॥ सूर सोम नामे न्नला, लघु बांधव थया ते तास रे ॥ वि० ॥ अपराजित राज्ये ठवी, राय लीये दीक्षा गुरु पास रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ ली० ॥ दीक्षा पाले वहु परे, वाल्यां तेणे कर्म कुकाठ रे ॥ वि० ॥ केवलनाण लही करी, काढ्यां तेणे कर्म ते आठ रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ ली० ॥ आतमसत्ता न्नोगी थयो, गुण प्रकट्या जास अनंत रे ॥ वि० ॥ सादि अनंत न्नांगे करी, सुखीया थया शिववधू कंत रे ॥ वि० ॥ १६ ॥ ली० ॥ उचित जनपद न्नाइने दीये, पट्टराणी प्रीतिमती थाप रे ॥ वि० ॥ विमलबोध मंत्रिपदे, थापे अपराजित आप रे ॥ वि० ॥ ॥ १७ ॥ ली० ॥ पाले राज्य ते एणी पेरे, जीते वली राय अनेक रे ॥ वि० ॥ चैत्य करावे अन्निनवां, करे पूजा धरीय विवेक रे ॥ वि० ॥ १८ ॥ ली० ॥

रथयात्रा करे अति घणी, जिनशासन उन्नति चंग रे ॥ वि० ॥ साधर्मिक उत्तम तणो, करे राजा नित नित संग रे ॥ वि० ॥ १९ ॥ ली० ॥ साधुजन सेवा करे, धरे निर्मल ध्यान ने ज्ञान रे ॥ वि० ॥ एम बहु दिन ते राजवी, पाले राज्य दीये नित दान रे ॥ वि० ॥ २० ॥ ली० ॥ ए त्रीजा अधिकारनी, कही दशमी ढाल विशाल रे ॥ वि० ॥ पद्म कहे श्रोताघरे, होजो नित्य मंगलमाल रे ॥ वि० ॥ २१ ॥ ली० ॥ सर्व गाथा ॥ ३३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन रयवाडी चड्यो, नयरउद्याने राय ॥ दीठो तिहां एक पुरुषने, अनंगदेव सुखदाय ॥ १ ॥ अनंगरूप मुख चंद ज्युं, कमलपत्र सम नयण ॥ कनकशिला परे हृदयस्थल, सेवे बहु तस सयण ॥ २ ॥ पुरजोगल परे बांहुडी, रक्तोत्पल पद पाण ॥ तस कनक सम कांति जस, पहेर्यां आजरण ठाण ॥ ३ ॥ वय सरखी ने रूप सम, मित्रवर्ग समुदाय ॥ तेम सुंदरी रंजा समी, परिवृत बेठो आय ॥ ४ ॥ जमे पीए दीए दान बहु, चंदन प्रमुखनो लेप ॥ कुसुमदाम पहेरी घणी, पण नहीं मन आक्षेप ॥ ५ ॥ कपूरयुत तंबोल तस, वीणा वेणु मृदंग ॥ वाजे नाचे नाटिका, दीसे चढतो रंग ॥ ६ ॥ बंदीजन बोले घणा, बिरुदावली उदार ॥ द्रव्य तिहां खरचे घणुं, तेह अति मनोहार ॥ ७ ॥ देखी अपराजित कहे, कोण ए पुरुष कयछ ॥ देव परे क्रीडा करे, तव कहे नर पासछ ॥ ८ ॥ समुद्रपाल सञ्चवाह सुत, अनंगदेव महाराज ॥ सुणी चिंते नृप धन्य हुं, एहवा राज भुक आज ॥ ९ ॥ थाय प्रतीति ए ऋद्धिथी, देवलोकनी वात ॥ देश नयर तिणथी किश्युं, जिहां एहवा न विख्यात ॥ १० ॥ एणी परे शंसा करी घणी, देखी सीरीउद्यान ॥ राज पहोतो निज घरे, चिंतवतो ते थान ॥ ११ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ वाहलो मारो वाय छे वांसली रे ॥ ए देशी ॥ नृपति दिवसनां कृत्य करी रे, जिनप्रतिमा पूजंत ॥ वाहलो मारो जावे छे जावना रे ॥ संध्या समये ते एणी परे रे, ध्यान रात्रि ते करंत ॥ वा० ॥ १ ॥ विहाणे वली जिन पूजीया रे, बेठो गजवरखंध ॥ वा० ॥ कोडिगमे जदे परवर्यो रे, ऋद्धि तणो रे संबंध ॥ वा० ॥ २ ॥ पुर बाहिर नीकलतां थका रे, शब दीठुं तिहां एक ॥ वा० ॥ चार जणे ते उपाडीयुं रे, बिरुतुं ते अतिरेक ॥ वा० ॥

॥ ३ ॥ करुण स्वरे अति देखीने रे, रोवे बहु तिहां लोक ॥ वा० ॥ कमलाननी चंपक गोरडी रे, मूके मोटी पोक ॥ वा० ॥ ४ ॥ रति सम बाला ते कूटती रे, मस्तक देती घाय ॥ वा० ॥ वक्षस्थल घणुं ताडती रे, करती अति खेदाय ॥ वा० ॥ ॥ ५ ॥ उठे पडे ने पोकारती रे, मूके श्वासोच्छ्वास ॥ वा० ॥ केश तोडे ने जूषण दले रे, मूके महोटा निःश्वास ॥ वा० ॥ ६ ॥ गुण संजारीने विलपती रे, रोवरावे अन्य लोक ॥ वा० ॥ एम असमंजस देखीने रे, राय पूछे धरी शोक ॥ वा० ॥ ७ ॥ पार्श्ववर्ती तव एम कहे रे, जे तुम्हे दीठो काल ॥ वा० ॥ समुड्पालसुत क्रीडतो रे, ते आज पाम्यो काल ॥ वा० ॥ ८ ॥ सांजली राय ते वारता रे, पाम्यो अतिहि विषाद ॥ वा० ॥ इंड्जाल ए देखीये रे, केम ते मोह विवाद ॥ वा० ॥ ॥ ए ॥ के स्वपनुं एह वही गयुं रे, काले दीठो केणी रीत ॥ वा० ॥ आज अवस्था ए केहवी रे, धिक् यम ए विपरीत ॥ वा० ॥ १० ॥ अणचिंतव्यो ए आवी पडे रे, न गणे रूप कुरूप ॥ वा० ॥ ईश्वर डुर्गति सवि हरे रे, राय रंक सम रूप ॥ वा० ॥ ११ ॥ बहु प्रयोजनवंता प्राणीया रे, एहवुं प्रयोजन नांही ॥वा०॥ एकाकी ए जीवडो रे, बहु सहाय छे आंही ॥वा०॥ ॥ १२ ॥ ए आदि कांइ नवि सुणे रे, न गणे कोइ बलवंत ॥ वा० ॥ पंडित मूर्ख ते नवि गणे रे, रोगी रोगाक्रांत ॥ वा० ॥ १३ ॥ देवथी पण शंकाय नहीं रे, नारक ने तिर्यंच ॥ वा० ॥ मनुष्य पण जडपी लीये रे, सवि जनने ए प्रपंच ॥ वा० ॥ १४ ॥ धन मूकीने जाता रहे रे, डुःखे अर्जित बहु तेह ॥ वा० ॥ जतन करीने राखीयुं रे, पण नवि जोगवे एह ॥ वा० ॥ ॥ १५ ॥ अन्यथा आवीने ते जोगवे रे, तिणे ए सर्व अथिर ॥ वा० ॥ मुआ पछी ए पोकारतां रे, जांगशे कोण ए पीर ॥ वा० ॥ १६ ॥ पुण्य पातक कर्युं ते सवे रे, आवे साथे तास ॥ वा० ॥ लोक मूरख थइ रुदन करे रे, कोहने केहनी आश ॥ वा० ॥ १७ ॥ जे उपचार मृत्यु तणो रे, ते नवि जाणे मर्म ॥ वा० ॥ छे उपचार जिनवर तणो रे, जाख्यो शुद्ध धर्म ॥ वा० ॥ १८ ॥ जन्म मरण गोचर नहीं रे, पहोंचावे शिव मांहि ॥ वा० ॥ जिनवर धर्म छे एहवो रे, नवि आराधे उछांहि ॥ वा० ॥ १ए ॥ ते कारण कदि आवशे रे, मृत्यु अमारे पास ॥ वा० ॥ दीनपणुं करवुं पडे रे, करुं उपाय कोइ तास ॥ वा० ॥ २० ॥

यतः ॥ जस्सत्थि मच्चुणा सरकं, जस्स अत्थिय लायणं ॥ जो जाणइ न मरिस्सामि, सोहु कंखेसुए सिया ॥ घर बलते सुखे कोण सुवे रे, शत्रु गणमां प्रमाद ॥ वा० ॥ कोण करे मूरख प्राणीया रे, राय करे ते विप्राद ॥ वा० ॥ २१ ॥ धाम पडे यमरायनी रे, एम राजा उद्वेग ॥ वा० घर पहोतो ते वैराग्यथी रे, धर्म अधिक विवेक ॥ वा० ॥ २२ ॥ कुंभपुर नगरमां वंदीया रे, केवलनाणी मुणींद ॥ वा० ॥ कुमर अवस्थाए ते हुइ रे, जाणी भाव नरिंद ॥ वा० ॥ २३ ॥ अनुक्रमे विचरतां आवीया रे, सुर नर खेचर साथ ॥ वा० ॥ सांभली राय वंदन गयो रे, वंदे मुनिवर नाथ ॥ वा० ॥ २४ ॥ देशना सांभली हर्षशुं रे, पामे वैराग्य अत्यंत ॥ वा० ॥ प्रीतिमतीना कुंवर प्रत्ये रे, पद्मने राज्य ठवंत ॥ वा० ॥ २५ ॥ भवबन मांहे अग्नि समी रे, लीए दीक्षा महाराय ॥ वा० ॥ प्रीतिमती ने दोय बांधवा रे, विमलबोध मुनि थाय ॥ वा० ॥ २६ ॥ पाली चारित्रने ऊपना रे, अग्यारमे देवलोक ॥ वा० ॥ आरण नामे सोहामणुं रे, चारित्रनुं फल रोक ॥ वा० ॥ २७ ॥ भोग अनुत्तर भोगवे रे, सामानिक सुर मांहि ॥ वा० ॥ प्रीति परस्पर बहु धरे रे, हर्ष घणो उत्साही ॥ वा० ॥ २८ ॥ करे अठाइ मोछव घणा रे, समवसरण मांहि जाय ॥ वा० ॥ देशना सांभले मोदथी रे, साथे सहु समवाय ॥ वा० ॥ २९ ॥ ए त्रीजा अधिकारनी रे, थइ अग्यारमी ढाल ॥ वा० ॥ ए अधिकार पूरण थयो रे, भव ठठो सुरसाल ॥ वा० ॥ ॥ ३० ॥ खिमाविजय जिनवर तणा रे, उत्तम गुणज विशाल ॥ वा० ॥ पद्मविजय कहे गावतां रे, होवे मंगलमाल ॥ वा० ॥ ३१ ॥ इति श्रीमन्नेमिराजीमत्योस्तृतीयो मनुष्यभवः सुरभवसहितः समाप्तः ॥ प्रथमखंडस्य तृतीयोऽधिकारः समाप्तः ॥ ३७६ ॥ सर्व गाथा ॥ १०७७ ॥

॥ अथ प्रथमखंडस्य चतुर्थोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ संभव सुख कर प्रणमीये, श्रुतदेवी श्रुतदाय ॥ हवे चोथो अधिकार शुभ, कहेवा हर्ष न माय ॥ १ ॥ जिम जिम आगल सांभलो, तिम तिम अधिको स्वाद ॥ शंखकुमर संबंध हवे, सुणो मूकी परमाद ॥ २ ॥ निद्रा विकथा परहरी, गुप्ति थइ कर जोड ॥ भक्ति थकी जे सांभले, ते लहे श्रेयनी

कोड ॥ ३ ॥ आह च ॥ निद्दा विगहा परिवाज्जएहिं, गुत्तेहिं पंजलि उडेहिं ॥ नत्तिबहु माणपुवं, उवउत्तेहिं सुणेयवं ॥ १ ॥ सातमो जव घणो सुखकरु, पुण्य अधिक विस्तार ॥ किण नगरी किण देशमां, आवी लीये अवतार ॥ ४ ॥ तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म, करे निकाचित केम ॥ किम थानिक सेवा करे, सांजलजो धरी प्रेम ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ मुनिमन मानस हंसलो ॥ ए देशी ॥ जंबूद्वीपना जरतमां, कुरु देशे अजिराम रे ॥ जिनपदथी जनपद कह्यो, पवित्र घणुं गुणधाम रे ॥ १ ॥ सांजलो सुखकर चरित्र ए, थाये जनम पवित्र रे ॥ सां० ॥ ए आंकणी ॥ हथिणाउर नयरी वसे, जनम्या जिहां जिनचंदो रे ॥ शांति प्रमुख चक्री थया, इण नयरी सुखकंदो रे ॥ २ ॥ सां० ॥ नामे श्रीषेण ठे राजीयो, जेह प्रतापे ठे युत्तो रे ॥ विकसंत कमल सूरय परे, चंद्र नहीं कर दीत्तो रे ॥ ३ ॥ सां० ॥ पट्टराणी तस श्रीमती, श्री सम जेहनुं रूप रे ॥ पण नवि इछे गोपीपति, एहवुं शील अनूप रे ॥ ४ ॥ सां० ॥ शंख हिम कुंद परे उजलो, चंद्रमा अति अद्भुत रे ॥ निज वदन मांहि पेसतो, स्वपनामां देखे पसुत्त रे ॥ ५ ॥ सां० ॥ श्रीमती कहे जरतारने, ते पण पूछे निमित्त रे ॥ निमित्तिउं जोइ शास्त्रने, जाखे थिर करी चित्त रे ॥ ६ ॥ सां० ॥ चंद्र परे पुत्रज थशे, वयरी तम करे दूर रे ॥ सकल धरा धरापति थशे, जगदानंदनो पूर रे ॥ ७ ॥ सां० ॥ दान देइ विसर्जीयो, निमित्तिउं तिणी वारो रे ॥ अपराजित सुर उपनो, तेहना गर्ज मझारो रे ॥ ८ ॥ सां० ॥ पूरण मासे प्रसवीयो, पुत्र प्रजा प्रतिपाल रे ॥ दासी नाम हिरएयका, वधावे नरपाल रे ॥ ए ॥ ॥ सां० ॥ देइ दासीने वधामणी, जनम मोछव करे राय रे ॥ रत्न चूरणना रे साथीया, मांगलिक ते वनाय रे ॥ १० ॥ सां० ॥ हल मुसल उंचां करे, करे रयणां ते दीपो रे ॥ कनककलश द्वारे ठवे, पद्म प्रधान समीपो रे ॥ ॥ ११ ॥ सां० ॥ कर करवाल धरी करी, नृपद्वारे जट कोड रे ॥ करे पताका अजिनवी, घर घर मनने कोड रे ॥ १२ ॥ सां० ॥ तोरण वांधे वाहिरे, राजपंथ करे शुद्ध रे ॥ नीर सुगंधे सिंचता, गुण गाये वहु वुद्ध रे ॥ १३ ॥ सां० ॥ सिंघाटक त्रिक चाचरे, राजपंथ जिहां होय रे ॥ करी कनकराशि तिहां, दान दीये सहु कोय रे ॥ १४ ॥ सां० ॥ चारक

शोधन नृप करे, करे अमारीना घोष रे ॥ दश दिन सघला देशमां, करता बहु जन पोष रे ॥ १५ ॥ सां० ॥ सघले जिनने देहरे, पूजा विरचे जिनरायो रे ॥ दंम निवारे भूपति, दश दिन नवि कर थायो रे ॥ १६ ॥ सां० ॥ कुंअर तणे पुण्ये करी, मणि कनक ने निधानो रे ॥ सुर आवी तस घर भरे, प्रगट पुण्य अमानो रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ दुंदुहि वाजे आकाशमां, नाचे रमणीउं द्वारो रे ॥ पहेरे भूषण अति अभिनवां, बहु मूलां बहु नाख्यो रे ॥ ॥ १८ ॥ सां० ॥ पुष्फ तंबोल प्रमुख घणां, आपे ने वली लेय रे ॥ भोजन पान करे सुखे, प्रमुदित नगरनां लोय रे ॥ १९ ॥ सां० ॥ एम दश दिन सुविभूतिथी, हर्षित राय करंत रे ॥ बारमे दिन अभिधा भधुं, शंखकुमार ठवंत रे ॥ २० ॥ सां० ॥ स्नान मज्जन मंमन वली, क्रीमा ने वली अंक रे ॥ पंच धाव्ये पाली जतो, वधतो कुंअर निःशंक रे ॥ २१ ॥ सां० ॥ वयरी मित्र घरे नित वधे, उपघात ने वली मोद रे ॥ नृप घर कुंअर वधे घणुं, उपजे सहुने विनोद रे ॥ २२ ॥ सां० ॥ लेखाचारजनी कने, मूके भणवाने राय रे ॥ बुध पण कुंअर देखीने, मनमां हर्षित थाय रे ॥ २३ ॥ सां० ॥ व्याकरण निमित्त गणित भएयो, आगम मंत्र ने तंत्र रे ॥ विद्या वैदकशास्त्र ने, अलंकार छंद यंत्र रे ॥ २४ ॥ सां० ॥ ज्योतिष गारुम काव्य ने, नाटिक मदननां शास्त्र रे ॥ महाभारत धनुपकला, हस्ती शिक्षा वली वस्त्र रे ॥ ॥ २५ ॥ सां० ॥ धातुर्वाद ने द्यूतनी, लक्षण पुरुष ने नार रे ॥ कागरुतादिक शकुननां, अंग विद्या मन धार रे ॥ २६ ॥ सां० ॥ नाटक गीतादिक कला, पुरुषनी कला बहोंतेर रे ॥ दिन थोमामां शीखीयो, थयो बृहस्पति पेर रे ॥ ॥ २७ ॥ सां० ॥ ए चोथा अधिकारनी, पहेली ढाल रसाल रे ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी, होवे मंगलमाल रे ॥ २८ ॥ सां० ॥ सर्व गाथा ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ यौवन प्रारंभ्यो हवे, पसरंतो कंदर्प ॥ तरुणी हृदय तपावतो, इच्छा ज्वाल प्रसर्प ॥ १ ॥ विमलबोध पण उपनो, गुणनिधि मंत्रिपुत ॥ मतिप्रभ नाम छे जेहनुं, जे राखे घरसूत्र ॥ २ ॥ पांशुक्रीमा साथे भण्या, यौवन पाम्या साथ ॥ बीजा पण राजपुत्रशुं, रमतो हाथोहाथ ॥ ३ ॥ पुर उद्याने जायतां, नाख्यो बोले एम ॥ हर्ष धरी उत्साहशुं, दाखे बहुविध प्रेम ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी सजनीनी ॥ अथवा ॥ अविनाशीनी सेजमीए, रंग लागो मह्हारी सजनी जी ॥ ए देशी ॥ कृष्ण कुटिल ने श्लक्ष्णतापणुं,केश मांहि रह्युं एहने जी ॥ धवल सरल गुरुतापणुं ए त्रिहुं, मनमां दीठुं जेहने ॥ १ ॥ सखीउं सुणजो जी,शंखकुंवरनुं रूप ॥स०॥ ए आंकणी ॥ अष्टमीनो जेम चंद्रमा दीसे, जाल उपम लहे एहनी जी ॥ जो नवि होत जगतमां चंदो,होत कलंकनी रेह ॥२॥ स० ॥ लोचन मानुं बाण छे एहनां, भ्रूयुग धनुष आकार जी ॥ तेणे हृदय हणे नारीनां, रतिपति करे विकार ॥ ३ ॥ स० ॥ कुसुमचाप कहे लोक अनंगनुं, ते मिथ्या सवि जाणो जी ॥ अणमिचाणां लोचन, एहनां केतकी फूल पीछाणो ॥ ४ ॥ स० ॥ कमलनी उपम लोचन जेहनां, नालां उपम नासा जी ॥ कमलनी शोभा सवि हरी लीधी, तिणे कज नीर निवासा ॥ ५ ॥ स० ॥ रक्तोत्पल संस्थित रवि किरणां, पंति परे ते शोहे जी ॥ जास कपोलने पद्मराग परे, अधर अरुण मन मोहे ॥ ६ ॥ स० ॥ उज्ज्वल दंत किरणनी श्रेणी, काम हींचोला कान जी ॥ कंबु उपम कोट छे जेहनी, हरतो माहरी शान ॥ ७ ॥ स० ॥ घन गर्जारव जींपे एहवो, गंभीर जेहनो नाद जी ॥ पुरकमाड परे हृदयने देखी, मुज मन उपजे विषाद ॥ ८ ॥ स० ॥ परिघ परे भुजदंड देखीने, काम दंड मुज देवे जी ॥ आपदपुरी भोगल सरिखी,ये बहु भामणां लेवे ॥ ९ ॥ स० ॥ पंचानन सम लंक केडनो, उदर हरे मुज चित्त जी ॥ रोमराजिए शोभित दीसे, सुंदर अतिहि विचित्र ॥ १० ॥ स० ॥ ऐरावणशुंढा सम उरुयुग, काम नृपति घरद्वारे जी ॥ कंचन थांभा सरिखी शोभे, जंघा जास विचारे ॥ ११ ॥ स० ॥ कर पद तलीयां पद्मराग वर, पंक्ति हृदयने रंजे जी ॥ नख राता शोणित परे दीसे, मह्हारा हृदयने भंजे ॥ १२ ॥ स० ॥ एक अवयव सम बीजे ठामे, दुर्लभ लहीये भवने जी ॥ तो समुदाय सीरी ए देखी, विंधे अनंग मुज मनने ॥ १३ ॥ स० ॥ त्रिदश अंगना एम गुण गावे, तेम नगरीनी नारी जी ॥ नित नित एम कुंअरने देखी, पामे आणंद जारी ॥ १४ ॥ स० ॥ पूर्व पुण्यथी विविध प्रकारे, कुंअर करे विलास जी ॥ एक दिन राय सभामां बेठो, करतो न्याय तपास ॥ १५ ॥ स० ॥ मंत्री सामंत सहस्रशुं मिलीयो, तिणे अवसर तिहां द्वारे जी ॥ आकुल लोक बहु मुखदीनां, आवी एम

पुकारे ॥ १६ ॥ साहिब सुणजो जी ॥ पल्लीपतिनुं कूट, साहिब सुणजो जी ॥ ए आंकणी बे ॥ मुधा प्रजाना रक्षक थाउं, तव पूछे राय केहने जी ॥ तेह कहे तुझ देशनी सीमा, पर्यंते बे जेहने ॥ १७ ॥ सा० ॥ विशाल-श्रृंग नामे बे पर्वत, हेठल वहे बहु नदीउं जी ॥ पूर्व अपर विभागनी माझिम, न पडे तिणे जन खदीयो ॥ १८ ॥ सा० ॥ नामे समरकेतु तिहां पल्ली,-पति रहे बे अति बलीयो जी ॥ तेह डुर्गना बलथी सघले, देश देशमां हलीयो ॥ १९ ॥ सा० ॥ लूंटे सहु जनने डुःख देवे, अमे पण तेहनी पांते जी ॥ धण कण जांरु सवि हरी लीधां, आव्या तुम्ह उपांते ॥ २० ॥ सा० ॥ ताहरुं शरण करीने आव्या, हवे अम्हने तुम्हे राखो जी ॥ ते शत्रुनी जीत करीने, जगमां पामो साखो ॥ २१ ॥ सा० ॥ ते सांजलीने क्रोध चढ्यो तव, देवरावे नृप ढक्का जी ॥ सामंत प्रमुख सवि थया साथे, जेह पराक्रम पक्का ॥ २२ ॥ सा० ॥ तव विनये करी पाये प्रणमी, शंखकुमर एम जापे जी ॥ न घटे स्वामी तुम्हने चढवुं, पल्लीपतिने पासे ॥ २३ ॥ सा० ॥ जंबुक उपर सिंह न गाजे, पंकज उपर हाथी जी ॥ ते कारण परसाद करीने, आपो मुजने साथी ॥ २४ ॥ सा० ॥ दास परे बांधीने लावुं, तुम्ह पसायथी स्वामी जी ॥ तव कहे सर्व ए युक्त विनवे, शंखकुमर शिर नामी ॥ २५ ॥ सा० ॥ रवि तणां जे किरण अबे ते, अंधकारने टाले जी ॥ नरपतिए जुगतुं ते जाणी, करी आणा ततकाले ॥ २६ ॥ सा० ॥ एम कहीने शंखकुमर तव, नीकलीयो मन-रंगे जी ॥ वात सुणी पल्लीपति डाह्यो, कपट कूटने जंगे ॥ २७ ॥ सा० ॥ डुर्ग शून्य मूकी नीकलीयो, किहांइक जइ रह्यो बानो जी ॥ ते वात कुमरे पण जाणी, हेरु मुख शुज शानो ॥ २८ ॥ सा० ॥ हेरु कहे सुण स्वामी शून्यो, म्हेली डुर्ग ते नाठो जी ॥ मांहि पेसीने थाउं बलीया, जेम लेइ कूटे जागो ॥ २९ ॥ सा० ॥ औत्पत्तिकी आदि चउ बुद्धि, सागर शंखकुमारो जी ॥ कहे हसीने एहवी वाणी ए, कूर कपट आचारो ॥ ३० ॥ सा० ॥ ए कपटे बहु देशने लूसे, एहनी वात न जाणो जी ॥ पण सघलुं सारुं निपजशे, देखो एह जगाणो ॥ ३१ ॥ सा० ॥ कोइक गकोर नवो निपजावी, आकंवर बहु कीधो जी ॥ तेहने डुर्ग मांहि मोकलीयो, राजचिह्न सहु दीधो ॥ ॥ ३२ ॥ सा० ॥ ते पण ध्वज फरकावतो महोटी, तूर वजावतो पेगो जी ॥ पोलद्वार देइने मोदे, थिर थइ डुर्गमां बेगो ॥ ३३ ॥ सा० ॥ शंखकुमार

कोइ महोटा वनने, जइ निकुंजे वेगे जी ॥ कोइ न जाणे तिम ते छाने, बहु बुद्धे करी जेगे ॥ ३४ ॥ सा० ॥ पल्लीपति तव जाणे एहवुं, डुर्गमां पेगे राय जी ॥ आवी चिहुं दिशे वींटी लीधो, जाणे हवे कहीं जाय ॥ ३५ ॥ सा० ॥ मनमां चिंते तव ते एहवुं, एटले आव्यो कुमार जी ॥ सैन्य तणो सायर लेइ साथे, बुद्धि तणो भंमार ॥ ३६ ॥ सा० ॥ जेम महोटो कोइ कोट होय तेम, डुर्ग चोरने वींव्या जी ॥ डुर्गद्धार दीधां मन चिंते, कुमरे दीसे वींव्यां ॥ ३७ ॥ सा० ॥ हवे नासीने कहो किहां जाइये, पल्लीपति विमासे जी ॥ तव कूहाडो खंध धरीने, आवे कुंअरनी पासे ॥ ३८ ॥ सा० ॥ जेम तुऊने मन आवे तेम कर, हुं बुं ताहरो दास जी ॥ कूम कपट अम्हे करी जाणुं, पण नहीं राजविन्यास ॥ ३९ ॥ सा० ॥ ते तुम्हे कूम कपटने जीत्यां, ल्यो सघलुं धन माहरुं जी ॥ मुऊ अपराध खमो तुम्हे सघलो, बिरुद दयानुं ताहरुं ॥ ४० ॥ सा० ॥ एहवां वचन सुणीने कुमरे, धण कण रतन ते लीधां जी ॥ जेहना जे जे माल हुंता ते, संभारीने दीधा ॥ ४१ ॥ सा० ॥ शेष हतुं ते रह्युं भंमारे, पल्लीपति कस्यो आगे जी ॥ राय तणे प्रणिपातने अर्थे, चाढयो नगरने मागे ॥ ४२ ॥ सा० ॥ ए चोथा अधिकारनी भाखी, बीजी ढाल रसालो जी ॥ पद्मविजय कहे पुण्य तणे बल, पामे मंगलमालो ॥ ४३ ॥ सा० ॥ सर्व गाथा ॥ ८० ॥

॥ दोहा ॥

॥ अटवी मांहि आवीया, अनुक्रमे जेहवे तेह ॥ तव सूरय मन चिंतवे, आणी अधिको नेह ॥ १ ॥ अभिनव सूरज ऊगीयो, शंखकुमर गुणधाम ॥ नागो बीहीतो बापडो, मानुं द्वीपांतर गाम ॥ २ ॥ पथिक गमन निवारतो, पसरे अति अंधकार ॥ रजनी जेह अनर्थनी, खाण कही निरधार ॥ ३ ॥ आथमते ऊगे थके, होवे वदने राग ॥ सूरय सत्पुरुषा तणो, एहज अधिक सोभाग ॥ ४ ॥ यतः ॥ उदयंमिवि अच्छमणे, विधरइ रत्तत्तणं दिवसनाहो ॥ रिद्धिसुआवइसुअ, तुल्लच्चि अणुण सप्पुरिसा ॥ १ ॥ ताप पमाको कर थकी, कुनृपनी परे एह ॥ पापशुद्धि कारण ठवे, पश्चिम समुद्रमां देह ॥ ५ ॥ सूर्यराय जब आथम्यो, चोर परे तम ताम ॥ पसर्युं कृष्ण भ्रमर परे, पंथीजन विश्राम ॥ ६ ॥ कौशिककुल बोल्यां तदा, पंखी गयां निज थान ॥ वेला थइ तस्कर तणी, रात पकी तिणे रान ॥ ७ ॥ पार-

दारिक हरख्या घणुं, रजनी रमणी तत्र ॥ करे विलास तम अंधने, किश्युं अयुक्त ठे अत्र ॥ ८ ॥ नलिनी स्त्री तव विरहथी, सूरय पतिना तेह ॥ मिचाइ मानुं रोवती, एवो पति सनेह ॥ ए॥ शंखकुमार खमा करे, तिहां आवास उत्तंग ॥ पलंगे बेसी कहे, मंत्रिसुत मनरंग ॥ १० ॥ जिन शासनमां कुशल तुं, तस अनुसारे जेह ॥ कौतुक सहित सुणाव तुं, कोइ कथा होय तेह ॥ ११ ॥ कहे मंत्री सुणो स्वामी जी, तुम्ह आगल अम्ह बुद्धि ॥ शी गणती पण सांजलो, एक कथा सुविशुद्ध ॥ १२ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ राणी कहे राजा प्रते, जरी दीर्घ उसासा ॥ स्वामी तुम्ह सुपसायथी, संपूरण आशा ॥ ए देशी ॥ जरत क्षेत्र मांहे अठे, जयपुर नामे नयरी ॥ तेह नगरने राजीये, जीत्या सहु वयरी ॥ १ ॥ सांजलो साहिबा माहरी, एक वात सनूरी ॥ ए आंकणी ॥ चंद्र जानु शिव कृष्ण ए, चार मित्र ते रुमा ॥ प्रीति घणी लखमी घणी, मनमां नहीं कूमा ॥ २ ॥ ॥सां०॥ एक दिन चंद्र ते चिंतवे, मनमां एम आणी ॥ बाप तणी लखमी नवि, जोगववी वखाणी ॥ ३ ॥ सां० ॥ पीवां थण माता तणां, तेम बापनी ऋद्धि ॥ जोगववी बाल कालमां, पठे हास्य ते सिद्धि ॥ ४ ॥ सां० ॥ निज बांहे अर्जी करी, ऋद्धि विलसे जेह ॥ तेह प्रशंसे सहु जना, सुख पामे देह ॥ ५ ॥ सां० ॥ एम चिंती कहे मित्रने, तस मन पण जाव्युं ॥ संजलावे निज तातने, तस मन नवि आव्युं ॥ ६ ॥ सां० ॥ संपदा बहु घरमां अठे, जोगवो तुम्हे सार ॥ देशांतरमां आपदा, लहीये निरधार ॥ ७ ॥ सां० ॥ जलव्यापार न तुम्हे लहो, सुखमां नित्य रहेता ॥ इत्यादिक ताते कह्युं, पण साहसुं कहेता ॥ ८ ॥ सां० ॥ थाके नवि कोइ वचनथी, तव तेहना तात ॥ जहाज एकेकुं करी दीये, चारेनां चार जात ॥ ए ॥ सां० ॥ करियाणां तिहां बहु जरे, जरीयां उल्लासे ॥ चढवानो दिन नवि गणे, वली मुहूरते खास ॥ १० ॥ सां० ॥ तव सांजले तिहां अति बूरा, रासजरव तेह ॥ बामण ने नागा मले, जगुआं वस्त्र जेह ॥ ॥ ११ ॥ सां० ॥ लूला हाथ पगे करी, काणा ने अंध ॥ काष्ठजार तिहां आवता, वली आवे डुर्गंध ॥ १२ ॥ सां० ॥ वाय वाये अति आकरा, कांकरा बहु जडे ॥ थइ अकाले वृष्टि ते, सहु बोले जूंडे

॥ १३ ॥ सां० ॥ लागुं पलेवडुं एहवे, वढे वहु मांजार ॥ सवि अपशुकन एणी परे, थाये तिण वार ॥ १४ ॥ सां० ॥ तव तस सज्जन कुटुंब मली, मित्र मात ने तात ॥ तुम्हे प्रवहणमां नवि चढो, एम कहे सहु वात ॥ १५ ॥ सां० ॥ चंद्र कहे तव त्रटकीने, शुं काम तुम्हारे ॥ सुख डुःख जेहवुं आवशे, ते सहेवुं अमारे ॥ १६ ॥ सां० ॥ सुख डुःख घर पण पामीये, कस्यां कर्म न जाय ॥ शकुनाशकुन विचारणा, शी करवी ताय ॥ १७ ॥ सां० ॥ चिंता करतां मानवी, पामे डुःख अपार ॥ जनमारो चिंता करे, पण नवि लहे पार ॥ १८ ॥ सां० ॥ चिंता न करो तात जी, थाणहार ते थाशे ॥ तिणे अम्हे चढशुं बाप जी, कुण अम्ह लेइ जाशे ॥ १ए ॥ सां० ॥ जो उपसर्ग थशे घणो, तो अम्हे पण लमशुं ॥ वयरीनां वाहण हणी, अम्हे आगल चढशुं ॥ २० ॥ सां० ॥ एम चोथा अधिकारनी, त्रीजी ढाल ते सारी ॥ पद्मविजय कहे पापथी, थाये कष्ट ते भारी ॥ २१ ॥ सां० ॥ सर्व गाथा ॥ ११३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सज्जन शकुन दोय वारता, पण ते चंद्रकुमार ॥ नवि रहे कोइ प्रकारशुं, दीये आणा तिण वार ॥ १ ॥ वार्युं न करे प्राणीया, आपमति जे होय ॥ मंदोदरी वारे घणुं, पण रावण मस्तक खोय ॥ २ ॥ चंद्र वार्यो पण नवि रहे, आव्यो उदधि उपकंठ ॥ चार मित्रशुं परवस्यो, धरतो मन उत्कंठ ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ हांरे ढोला रहो तो हुं रांधुं खीचमी, ढोला रहो तो कढीयां डूध ॥ ढोला मारु हे, आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥ वेग प्रवहण उपरे, साथे चार मित्र संयुक्त ॥ सुणो स्वामी रे, सुगुण कामी रे ॥ वात सुणो तुम्हे कर्मनी, कांइ कीधां कर्म न जाय ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ जल कल्लोलने देखतां, वहु जलजंतु करे उत्त ॥ सु० ॥ १ ॥ वा० ॥ वाहण चलावे वेगशुं, कांइ वायु वेगे चलाय ॥ सु० ॥ जर सायरमां आवीया, कांइ अनुक्रमे चार ते जाय ॥ सु० ॥ २ ॥ वा० ॥ एकाएक तिणे समे, कांइ गाजे जे मेघ अकाल ॥ सु० ॥ जलनिधि पण गाजे घणो, कांइ थयो उपद्रव तिण ताल ॥ सु० ॥ ३ ॥ वा० ॥ तिहां प्रतिकूल वाये वायरो, कांइ जलधि लहेर पण तेम ॥ सु० ॥ वीजलीपुंज पडे घणा, चिहुं दिश अंधकार ते

एम ॥ सु० ॥ ४ ॥ वा० ॥ प्रवहण ने जनचित्त वली, कांइ डोलवा लाग्यां साथ ॥ सु० ॥ मेघघटा चढी तेणी परे, नवि सूझे हाथोहाथ ॥ सु० ॥ ॥ ५ ॥ वा० ॥ अशुभ उदय तिहां उछल्यो, साथे आक्रंद समग्ग ॥ सु० ॥ सढ सघला जमी गया, नवि सूझे कोइने मग्ग ॥ सु० ॥ ६ ॥ वा० ॥ जांग्यां प्रवहण चार ते, कांइ बूड्यां सघलां लोक ॥ सु० ॥ जांज गयां सवि सायरे, कांइ उपनो सहुने शोक ॥ सु० ॥ ७ ॥ वा० ॥ अपजशथी बीहीना घणुं, मानुं फलक ग्रह्यां तिणे चार ॥ सु० ॥ अन्य अन्य द्वीपे तदा, खेपव्या ते समुद्रे तिवार ॥ सु० ॥ ८ ॥ वा० ॥ सार्थवाह सुत चंद्र जे, पामी कांठो करे विलाप ॥ सु० ॥ दैववशे लही आपदा, मुज आवी पहोतुं पाप ॥ सु० ॥ ए ॥ वा० ॥ द्रव्य गयुं सवि माहरुं, में वचन न मान्युं कोय ॥ सु० ॥ मिथ्या आग्रहवंतने, सघला उपसर्ग ते होय ॥ सु० ॥ १० ॥ वा० ॥ स्वजन शकुन निमित्तिए, हुं वार्यो न रह्यो तास ॥ सु० ॥ द्रव्यपिपासा अति करी, फल तेहनुं ए दुःखराश ॥ सु० ॥ ११ ॥ वा० ॥ मुख हवे केहने देखाडशुं, एम करी मनमां अभिप्राय ॥ सु० ॥ वस्त्रपाश बांधी गले, मरवाने ते सज्ज थाय ॥ सु० ॥ १२ ॥ वा० ॥ एणी अवसरे कोइ ब्राह्मणे, छुरीए करी छेद्यो पाश ॥ सु० ॥ कहे ते अकार्य तुं शुं करे, एम मरतां किम सुखवास ॥ सु० ॥ ॥ १३ ॥ वा० ॥ जो नवि जीववुं ताहरे, तो सांभल माहरी वात ॥ सु० ॥ ढुकडो एक गिरि अछे, वांछित आपे सुखशात ॥ सु० ॥ १४ ॥ वा० ॥ तिहां जइने प्राण छंडजे, जेम पामे इछित ठाम ॥ सु० ॥ एम सुणी चंद्र तिहां गयो, दीये फांसो मरवा काम ॥ सु० ॥ १५ ॥ वा० ॥ मा साहस कर एम कहे, त्रण वार सुणे ते कान ॥ सु० ॥ चोय फेर जोयुं खरुं, पण दीठुं नहीं को थान ॥ सु० ॥ १६ ॥ वा० ॥ फरी फांसी दीधी तेणे, वली तिमहीज कहे बीजी वार ॥ सु० ॥ वली जोयुं तिणे खांतशुं, पण नवि लह्यो को किणे ठार ॥ सु० ॥ १७ ॥ वा० ॥ त्रीजी वार निषेधीयो, तव जोयुं मन करी चूंप ॥ सु० ॥ वृक्ष अंतर रह्या साधुजी, दीठुं तिहां अद्भुत रूप ॥ सु० ॥ १८ ॥ वा० ॥ तिहां जइ कहे सुणो स्वामी जी, हुं मंदभाग्य भगवंत ॥ सु० ॥ मरण न आवे किणी परे, तव भाखे करुणावंत ॥ सु० ॥ १ए ॥ ॥ वा० ॥ अविधिमरणथी शुं निपजे, जीवतो देखे भद्द ॥ सु० ॥ अविधिमरण तुज देखीने, कीधो एणी परे में सद्द ॥ सु० ॥ २० ॥ वा० ॥ ए चोथा

अधिकारनी, कही चोथी ढाल रसाल ॥ सु० ॥ पद्म कहे मुनिसंगथी, लहेशो ए मंगलमाल ॥ सु० ॥ २१ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ १३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अविधिमरण नवि कीजीये, अविधिमरण दुःखदाय ॥ अविधिमरण कीधां घणां, पण नवि लहे शिवठाय ॥ १ ॥ नगर निगोद मांहे जम्यो, काल अनंतानंत ॥ पण विधिमरण न को लह्युं, जिणथी लहीये अंत ॥ ॥ २ ॥ विधिमरणे पाम्या घणा, स्वर्ग तथा अपवर्ग ॥ स्त्रीजन उचित अविधिमरण, तेहथी केम होय सर्ग ॥ ३ ॥ जो जीवतो होय प्राणीयो, तो लहे कोडि कल्याण ॥ इहां दृष्टांत ते माहरो, निश्चय करीने जाण ॥ ४ ॥ चंद्र पूछे तव मुनि प्रते, ते कहो तुमची वात ॥ सावधान थइ, सांभलो, मुनि कहे निज अवदात ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ शीरोहीरो शालु हो, के उपर जोधपुरी ॥ ए देशी ॥ मंगलपुर नयरे हो, के चंद्रसेन राजा ॥ भानु नाम अमात्य ते हो, के गुणथी अति ताजा ॥ तस नाम सरस्वती हो, के नारी विख्याता ॥ रूपवंती अतिहि हो, के शास्त्रे व्याख्याता ॥ १ ॥ चक्रवाक तणी परे हो, के प्रीति ते जोर बनी ॥ देश देश प्रसिद्धि हो, के थइ ते अति घणी ॥ एक एक विना विहुं हो, के रही ते नवि शके ॥ एकनी वात विरुद्ध हो, के सुणी प्राण नवि टके ॥ २ ॥ एक दिन सरस्वती स्त्री हो, के सूती खाट मांहि ॥ रोती सहसा तव हो, के उठी दुःख त्यांहि ॥ पूछे तव भानु हो, के ए शुं तुज थयुं ॥ तव भाखे नारी हो, के ए तो सहज भयुं ॥ ३ ॥ पूछे वली हठथी हो, के कहे हवे नारी खरुं ॥ में सुपनमां दीठुं हो, के एहवुं दुःखकरु ॥ रमतो में दीठो हो, के बीजी नारी समो ॥ तुजने ते कारण हो, के मुजने नवि गम्यो ॥ ४ ॥ चिंते मन भानु हो, के सुपने खेद लह्यो ॥ तो प्रत्यक्ष देखे हो, के प्राण विछोह कह्यो ॥ ते कारण बीजी हो, के नारी ते नवि परणुं ॥ जो परणुं तो पामे हो, के सरस्वती दुःख घणुं ॥ ५ ॥ एम नियम कर्यो तिणे हो, के चाल्यो नवि चले ॥ कहे बहु जन परणो हो, के पण नवि मन मले ॥ ए थइ प्रसिद्धि हो, के राजाने द्वारे ॥ ते सांभली राजा हो, के कटके जाय त्यारे ॥ ६ ॥ भानुने मूकी हो, के नग-

रमां अति वेगे ॥ झूरे जइ राजा हो, के चिंते अति वेगे ॥ भानु सरस्वतीनी हो, के प्रीति ते परखवा ॥ कांय कारज जूठुं हो, के कहावे निरखवा ॥ ७ ॥ आवो तुम्हे भानु हो, के कारज अम्ह घणुं ॥ भानु तव आवे हो, के करी ते शीघ्रपणुं ॥ कूडो लखी पत्रज हो, के राजा मोकले ॥ मांहि लख्युं एवुं हो, के भानुने यम गले ॥ ८ ॥ ते सुणी सरस्वतीना हो, के हृदयनो स्फोट थयो ॥ ततकाल नारीनो हो, के प्राणवियोग भयो ॥ तेणे समे राजा हो, के वात ते शीघ्र सुणे ॥ निज आतम निंदे हो, के मुखथी एम भणे ॥ ए ॥ में कीध अकारज हो, के स्त्रीहत्या आवी ॥ थाइश किहां जइने हो, के हवे हुं निष्पावी ॥ सुणी पीयुनुं मरण ते हो ॥ के नारीए प्राण तज्या ॥ नरके जावाने हो, के हवे अम्हे शीघ्र सज्या ॥ १० ॥ भानु पण सुणीने हो, के जीवशे केणी परे ॥ राजा आवे तव हो, के भानु कने सुपरे ॥ साहामा किम आव्या हो, के सेवकने स्वामी ॥ ए अनुचित दीसे हो, के एम कहे शिर नामी ॥ ॥ ११ ॥ कांइ कारणे आव्या हो, के अम्हे ताहरी पासे ॥ वस्तु एक मागण हो, के आव्या उल्लासे ॥ तव भाखे भानु हो, के एम केम कीजीये ॥ तुऊ काजे जीवित हो, के स्वामी दीजीये ॥ १२ ॥ भाखो तुम्हे जेवुं हो, के काम ते मुऊ भणी ॥ तस वात कहे तव हो, के जे थइ नारी तणी ॥ अम्हे कहीये तुऊने हो, के तें मरवुं नांहीं ॥ ए पातक कीधुं हो, के अम्हे महोटुं साही ॥ १३ ॥ ते सांभली मनमां हो, के खेद अपार लहे ॥ ते भानु एणी परे हो, के भूपतिने कहे ॥ मुऊ प्राण निठुर ठे हो, के केम नवि देह जहे ॥ मुऊ प्राणप्रिया ते हो, के एणी परे मरण लहे ॥ १४ ॥ स्वामी द्यो आणा हो, के जाउं मुऊ घरे ॥ तव दीधी आणा हो, के आव्यो शीघ्र परे ॥ घर माणसे राख्यां हो के, पहेलां अस्थि ग्रही ॥ जइ तेहने पूजे हो, के मनमां उम्मही ॥ १५ ॥ तस गुण संभारी हो के, नित नित रुदन करे ॥ नित करे विलापा हो, के नारीनुं ध्यान धरे ॥ क्षण क्षण करे इछा हो, के ए मरवा तणी ॥ पण रायनुं वचन ते हो, के नवि शके अवगणी ॥ १६ ॥ एम बहु संवत्सर हो, के तेहने वही गया ॥ हवे एक दिन चिंते हो, के नारीना मरण थया ॥ जब मरण थशे मुऊ हो, के तव ए अस्थि प्रते ॥ कुण नाखशे गंगा हो, के माहरे प्राण जते ॥ १७ ॥ तो हुं जीवंतां हो, के नाखुं गंग मांहि ॥

नृप पूछ्या विण ते हो, के नीकल्यो ऊहांहि ॥ गंगाने कांठे हो, के पहोतो अनुकरमे ॥ वाणारसी नगरी हो, के आव्यो तेह समे ॥ १७ ॥ सुर सरिता कांठे हो, के विप्रने दान दीये ॥ तिहां करे विलापा हो, के गुण संजारी हिये ॥ हवे नारीनां हाऊकां हो, के ते पण जाय खरां ॥ एहने आधारे हो, के हजी लगी प्राण धस्या ॥ १९ ॥ न खमाये विरहो हो, के म्हें ए कांता तणो ॥ क्षण क्षणमां सांजरे हो, के प्रेम ते अतिहि घणो ॥ केम मलशे नारी हो, के ए मुऊने हवे ॥ मुऊ प्राणआधारा हो, के जस गुण कुण मवे ॥ २० ॥ मुऊ हृदय ते फाटे हो, के ए गुण संजारी ॥ अवगुण न समाइ हो, के एहवी मुऊ नारी ॥ चोथे अधिकारे हो, के पांचमी ढाल जली ॥ कहे पद्म-विजय सुणो हो, के आगल वात वली ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ १६३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम विलाप करतां थका, इण अवसर तिहां एक ॥ आवी राय तणी धुआ, सरस्वती नाम विवेक ॥ १ ॥ तिहां कुतूहल जोती थकी, आवी तेहनी पास ॥ पूछे तेह कुमारिका, ऊःख जर देखी तास ॥ २ ॥ तुऊ सरिखुं ऊःख केहने, में नवि दीठुं क्यांहि ॥ केम तुं रुदन करे घणुं, तेह कहे मुऊ आंही ॥ ३ ॥ पुण्यहीन हुं पापीयो, शुं पूछे मुऊ वात ॥ वली आग्रहे पूछे थके, कहे सघलो अवदात ॥ ४ ॥ ते सुणी ऊहापोह थयो, जातिसमरण पाम ॥ आवरण खस्यां ते जातिनां, गंगातीरने ठाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ नानो के नानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥ मूर्छा लइ धरणी ढली रे, सखीउं वीहीनी ताम ॥ लागी मोहनी रे ॥ आवी रायने तव कह्युं रे, नृप आवे तिणे ठाम ॥ ला० ॥ १ ॥ शीतल विंजे वायरा रे, चंदन चर्चे अंग ॥ ॥ ला० ॥ तव चेतन वल्युं तेहने रे, बेठी थइ मनरंग ॥ ला० ॥ २ ॥ राय पूछे पुत्री जणी रे, मूर्छानो विरतंत ॥ ला० ॥ कहे पुत्री सुणो तात जी रे, कहीये ए जिम हुंत ॥ ला० ॥ ३ ॥ पूरव जवनो मुऊ पति रे, हुं हती सर-स्वती नाम ॥ ला० ॥ ए घणो मुजने वालहो रे, हुं पण जीवित ठाम ॥ ॥ ला० ॥ ४ ॥ वात कही बहु प्रत्ययी रे, मानी नृपति तेह ॥ ला० ॥ बहु हरखे परणावतो रे, निज पुत्री गुणगेह ॥ ला० ॥ ५ ॥ निज पंचस्वर्थी पूठीयुं रे, कहे सघलो विरतंत ॥ ला० ॥ मनमां चिंते सरस्वती रे, जुउ ए

म्हारो कंत ॥ ला० ॥ ६ ॥ मुज अर्थे दुःख बहु सह्युं रे; जुर्ज एं कर्म विचित्त ॥ ला० ॥ पूरवथी वली प्रीतडी रे, अधिकी हुइ सुविदित्त ॥ ला० ॥ ॥ ७ ॥ सुख जोगवे तिहां दंपती रे, दिन दिन अधिके नेह ॥ ला० ॥ राज्य देइ हवे जानुने रे, पाम्यो पंचत्व तेह ॥ ला० ॥ ८ ॥ जानु ने हवे सरस्वती रे, जोगवे जोग रसाल ॥ ला० ॥ एक दिन सरस्वती अंगमां रे, उपनो गद असराल ॥ ला० ॥ ए ॥ दाघज्वर अति आकरो रे, देखाडे बहु वैद्य ॥ ला० ॥ नरपति द्रव्य आपे घणुं रे, पण नवि टाले सद्य ॥ ला० ॥ १० ॥ वैद्ये तजी ते नारीने रे, नृप मन चिंता थाय ॥ ला० ॥ चिंतवे जीवतां एहने रे, मरण जो म्हारुं थाय ॥ ला० ॥ ११ ॥ तो दुःख देखुं हुं नहीं रे, विरह ते दुःख दातार ॥ ला० ॥ क्षण एक हुं नवि रही शकुं रे, ए मुज प्राणआधार ॥ ला० ॥ १२ ॥ हवे मुज झंपा रुयडो रे, हवे जीवे शुं होय ॥ ला० ॥ प्राणप्रिया मरवा पडी रे, ए सम अवर न कोय ॥ ला० ॥ १३ ॥ सातमे माले ते चढ्यो रे, करवा जीवितत्याग ॥ ला० ॥ चारण मुनिवर तिणे समे रे, दीठो ते महाजाग ॥ ला० ॥ १४ ॥ मुनि कहे तुं शुं करे रे, आप तणो वध एम ॥ ला० ॥ बालजने जे आचर्युं रे, ते करीये कहो केम ॥ ला० ॥ १५ ॥ अविधि मुआने सुख नहीं रे, परजव पण होय दुःख ॥ ला० ॥ तव कहे मुनिवर सांजलो रे, मुजने नहीं इहां सुख ॥ ॥ ला० ॥ १६ ॥ शुं करुं स्वामी जी ते कहो रे, नवि सहेवाये वियोग ॥ ला० ॥ प्राण धरी हुं नवि शकुं रे, उपनो सरस्वती रोग ॥ ला० ॥ १७ ॥ तव कहे मुनिवर एणी परे रे, धर्म करो तुम्हे राय ॥ ला० ॥ धर्म सकल दुःख घायको रे, बाल युवा वृद्ध थाय ॥ ला० ॥ १८ ॥ देव ते अरिहा आदरो रे, रागद्वेषादिक मुत्त ॥ ला० ॥ पंच महाव्रत पालतां रे, गुरु सुसाधु उत्त ॥ ला० ॥ १९ ॥ यतः ॥ रागाइ दोस रहिर्उ, चउत्तीसाइसय संजुर्उ धीरो ॥ परजवगारं मिरर्उ, देवो मइएरि सो हवइ ॥ १ ॥ अवद्यमुक्ते पथि यः प्रवर्त्तते, प्रवर्त्तयत्यन्यजनं च निःस्पृहः ॥ स एव सेव्यः स्वहितैषिणा गुरुः, स्वयं तरन् तारयितुं क्षमः परम् ॥ २ ॥ तत्त्व अहो जिन जाखीयो रे, पापनां गण अढार ॥ ला० ॥ विरति करो तुम्हे तेहनी रे, एणी परे धर्म उदार ॥ ॥ ला० ॥ २० ॥ धर्म ते सार संसार छे रे, जग आधार ए धर्म ॥ ला० ॥ सद्गति पहोंचाडे जलो रे, बांधे नवि ते कर्म ॥ ला० ॥ २१ ॥ एणी परे

उपदेश सांजली रे, अंगीकरे तेह राय ॥ ला० ॥ सरस्वत। पासे लावीयो रे, नूपति ते रुपिराय ॥ ला० ॥ २२ ॥ वंदना करी ते जावथी रे, देशविरति करे अंग ॥ ला० ॥ पाप विलय गयां तेहनां रे, रोग गयो मुनिसंग ॥ ला० ॥ ॥ २३ ॥ राज्यसीरी एम जोगवे रे, वृद्ध थया जानु राय ॥ ला० ॥ राय राणी मन चिंतवे रे, दीक्षा लीउं जिनराय ॥ ला० ॥ २४ ॥ पुत्रने राज्य थापी करी रे, सुगुरु तणे पायमूल ॥ ला० ॥ दीक्षा आदरे राजीयो रे, पाले व्रत अनुकूल ॥ ला० ॥ २५ ॥ साधवी पासे सरस्वती रे, लीये दीक्षा शुन योग ॥ ला० ॥ गीतारथ जानु थयो रे, देइ गुरु उपयोग ॥ ला० ॥ २६ ॥ आणा एकाकी तणी रे, यद्यपि शास्त्रे निषिद्ध ॥ ला० ॥ तोपण शास्त्र जाणी करी रे, तेहने आणा दीध ॥ ला० ॥ २७ ॥ ते जानु हुं जाणजे रे, आ वेगो तुऊ पास ॥ ला० ॥ मरण लहंत नृपवच सुणी रे, तो किम जिन धर्म वास ॥ ला० ॥ २८ ॥ राज्य पालत कुण एणी परे रे, श्रेय परंपरा एम ॥ ला० ॥ ते कारण तुं धर्मने रे, कर वली कांइक नेम ॥ ला० ॥ २९ ॥ बाल मरण करी वेगलुं रे, पामे जेहथी श्रेय ॥ ला० ॥ चंद्र कहे तव मुनि प्रते रे, द्यो मुऊ जेह आदेय ॥ ला० ॥ ३० ॥ ए चोथा अधिकारनी रे, जाखी छठी ढाल ॥ ला० ॥ पद्मविजय कहे जिन तणा रे, धर्मथी मंगलमाल ॥ ला० ॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ चंद्र कहे सुणो स्वामी जी, अनवस्थित चित्त मुऊ ॥ मित्र वियोगी धन विरहो, जाखुं विनये तुऊ ॥१॥ ते कारण किरपा घणी, करी आपो मुऊ तेह ॥ स्वस्थ चित्त जेम माहरुं, थाये धर्म सनेह ॥ २ ॥ वली विशेष अवसर लही, आदरशुं व्रतजार ॥ मुनिवर एणी परे कहे, शीखो तुम्हे नवकार ॥३॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी चोपाइ ॥ सांजल तुं हवे चंद्रकुमार, जाखुं फल हुं श्रीनवकार ॥ एहनां पद नव संपद आठ, जपतां नासे कर्म कुकाठ ॥ १ ॥ लघु अक्षर एकसठी वखाण, एहमां सात अक्षर गुरु जाण ॥ सर्व मलीने अमसठ थाय, सममसठ पण कोइक कहेवाय ॥ २ ॥ होइ मंगल माने छे जेह, पण अयुक्त जाख्युं छे एह ॥ निशीथचूर्णि मांहि ए कह्युं, प्रवचनसारउद्धारे लह्युं ॥ ३ ॥ कोइ कारण एहनी चूलिका, आराधे शिवतरु मूलिका ॥ कमल बत्रीश पांखडीनुं करे, एक एक तिहां अक्षर जरे ॥ ४ ॥ ते जरतां बत्रीश

लोन्न रे ॥ झींपता पाले चारित्रधर्मने जी, श्री मुनिवरजी थइ थिर थोन्न रे॥ ३ ॥ एणी० ॥ पिंमविशुद्धि चउ न्नेदथी जी, पंच समितिना धार रे॥ त्रणे गुप्ते गुप्ता रहे जी, न्नावना न्नावता बार रे ॥ ४ ॥ एणी० ॥ प्रतिमा बारे यथाशक्ति करी जी, पाले करे वली इंद्रियरोध रे॥ पमिलेहण पण-विस ते न्नावशुं जी, अन्निग्रह चार तणो करे शोध रे ॥ ५ ॥ एणी० ॥ मलिन शरीर पण जेहनुं जी, ध्यान अति सुविशुद्ध रे॥ युग प्रमाणे दृष्टि धरी करी जी, चाले मुनिवर धरमे बुद्ध रे ॥ ६ ॥ एणी० ॥ उपशम सारे शोन्नित देहमी जी, मासखमणे मुनिराय रे ॥ पारण दिन तिहां आव्या गोचरी जी, हरखे सहु समवाय रे ॥ ७ ॥ एणी० ॥ सुंदर नामे चाकर ते-हनो जी, न्नाखे सहु मन आणी खांत रे ॥ आपो तुम्हे न्नात पाणी मुनि-वर प्रते जी, शुद्ध मान थयुं सवि तंत रे ॥ ८ ॥ एणी० ॥ तव कर्मकर सुंदर मन चिंतवे जी, अहो अहो माहरुं न्नाग्य विशाल रे ॥ तप तापित मुनि-वरनी देहमी जी, ए फासु वली अशन रसाल रे ॥ ए ॥ एणी० ॥ ते पण सहु देवरावे तुऊ कने जी, केम नथी नाचतो प्राणी आज रे ॥ आप संबंधी तुऊ किहांथी होवे जी, तुऊ पासे देवरावे कुण काज रे ॥ १० ॥ ॥ एणी० ॥ ते कारण निज इन्नाए आपशुं जी, आज जाग्यां मुऊ पूरव पुण्य रे ॥ वली परन्नवनुं पुण्य उपार्जीये जी, जेम नवि थाउं पुण्ये शून्य रे ॥ ११ ॥ एणी० ॥ मुनिवर प्रतिलान्न्या तिणे न्नावथी जी, हर्षित विपुल अशन ने पान रे ॥ रोमराजी विकस्वर थइ जी, प्रगट्यां पुण्य अमान रे ॥ १२ ॥ एणी० ॥ न्नोग करम अर्ज्युं घणुं जी, ते चारे मित्र वधते न्नाव रे ॥ सुंदरे वलीय विशेषे जाणजो जी, ए तो जाणो न्नाव विशेषनो दाव रे ॥ १३ ॥ एणी० ॥ अनुक्रमे जयपुर नगरे आवीया जी, मिलीयो ते स्वजन कुटुंबनो वग्ग रे ॥ करे वधामणां अति प्रमोदशुं जी, सुख न्नोग-वतां जेम सुरसग्ग रे ॥ १४ ॥ एणी० ॥ ज्योतिष देवमां पांचे उपना जी, तिहांथी चवीने चंडकुमार रे ॥ नाशिकपुरमां सारथवाह घरे जी, समुद्र तणी लखमी ठे नार रे ॥ १५ ॥ एणी० ॥ ऋद्धि घणी ठे तेहने घरे जी, उपनो रतिवर्द्धन तस नाम रे ॥ ब्रह्मस्थलमां सार्थवाह धनंजयो जी, श्री नामे नारी अति गुणधाम रे ॥ १६ ॥ एणी० ॥ न्नानु ते तेहनी कुखे उपनो जी, अनंगदेव धर्युं अन्निधान रे ॥ राजग्रहे सागरनी स्त्री

सुंदरी जी, शिव चवी रतिसुंदरी थइ जाण रे ॥ १७ ॥ एणी० ॥ विजयपुरे दत्तघरणी रूपिणी जी, रतिमाला कृष्ण तणो थयो जीव रे ॥ हवे विश्वपुर नयरीमां उपनो जी, सुंदर जिणे दान दीधुं अतीव रे ॥ १८ ॥ एणी० ॥ जास प्रताप जग विस्तस्यो जी, एहवो थयो महोटो कोइ नरिंद रे ॥ सहुए हवे रहे सुखमां निज निज घरे जी, फल पाम्युं दीधुं दान मुणींद रे ॥ १९ ॥ एणी० ॥ राजगृही नगरे रतिवर्द्धन गयो जी, मांड्यो तिणे तिहां अतिहि व्यापार रे ॥ बहु दिन अंते एक दिन बाहरे जी, नंदन वन उद्यानमां सार रे ॥ २० ॥ एणी० ॥ दक्षिण लोचन फुरके चिंतवे जी, मन वल्लभ कोइक मलशे आज रे ॥ चोथा अधिकारे आठमी ढालमां जी, पद्मविजय कहे पुण्यने काज रे ॥ २१ ॥ एणी० ॥ सर्वगाथा ॥ २५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जमणुं लोचन फुरकीयुं, वल्लभ इछे तेह ॥ इण अवसर कुलबालिका, देखे अति सनेह ॥ १ ॥ ब्रह्म तणी पूजा करे, रूपे रति अवतार ॥ स्त्री पण देखे तेहनुं, रूप मनोहर सार ॥ २ ॥ रूप अतिशय बेहुनां, पूरव भव अभ्यास ॥ देखत प्रीति थइ तिसी, भाखी न शकीये जास ॥३॥ नयन पदारथ नयन रस, नयने नयन मिलंत ॥ अणजाण्याशुं प्रीतडी, पहेली नयन करंत ॥४॥ नयन तणी गति अलक हे, किणथी कली न जाय ॥ लाख लोककुं भेद कर, ससनेहीपें जाय ॥ ५ ॥ नयण ते सयण वजीर छे, प्रेमजंजीर परगट्ट ॥ हीर हैयानुं जिहां मल्युं, तस निरखे गहगट्ट ॥ ६ ॥ चित्तशुं चित्त मिली गयां, नेहे मलीयां नयण ॥ इश्युं विकस्युं पंकज परे, मुखे न कहाये वयण ॥ ७ ॥ नयण मिलाप एणी परे करी, पहोती बाला गेह ॥ मन मूकी सा तस कने, लागो अतिहि सनेह ॥ ८ ॥ रतिवर्द्धन कोइ पुरुषने, पूछे तास विरतंत ॥ ते कहे सागरदत्त सुत, अनुजा विमलनी संत ॥ ९ ॥ रतिसुंदरी ए नामथी, छे मेना अवतार ॥ रतिवर्द्धन ते सांभली, पाम्यो हर्ष अपार ॥ १० ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ सरोवर पाणी हुं गइ ॥ मोरारी रे ॥ मलीयो गोपीनाथ ॥ साथे गोरी रे ॥ ए देशी ॥ रतिवर्द्धन एणी अवसरे ॥ मन मोह्युं रे ॥ करे विमलशुं व्यापार ॥ चित्त आरोह्युं रे ॥ मित्राइ करी विमलशुं ॥ म० ॥ प्रीति वधी ते अपार ॥ ॥ चि० ॥ १ ॥ रागी होये जे जेहनो ॥ म० ॥ करे उपाय अनेक ॥

मदमत्त धायो, तव सघलो लोक पलायो हो ॥ ४ ॥ सा० ॥ ते कन्या ऊपर आयो, तव ते तस सन्मुख धायो हो ॥ सा० ॥ हणीयो तस पश्चिम पाद, लकुटे करी महोटे नाद हो ॥ ५ ॥ सा० ॥ हाथी तस सन्मुख चाल्यो, कोपे करी नजरे ज्ञाल्यो हो ॥ सा० ॥ ते पुरुषे तास बोलावी, कन्या ठानी घणुं ज्ञावी हो ॥ ६ ॥ सा० ॥ तस निर्जय स्थानक मूके, तस तात तुष्ट सुविवेके हो ॥ सा० ॥ इण अवसरे वर्षा आयो, मुसलधाराए धायो हो ॥ ७ ॥ सा० ॥ तिहां लोक गयां सहु नासी, हुइ लोक तणी तिहां हांसी हो ॥ सा० ॥ तिहां अनंगदेवे नवि जाण्युं, शुं नाम क्यां गइ शुं ठाणुं हो ॥ ८ ॥ सा० ॥ बहु काल लगे तिहां जोइ, पण नवि लाधी ते कोइ हो ॥ सा० ॥ तव ते विरहानले बलतो, ते उपाय विना वलवलतो हो ॥ ए ॥ सा० ॥ फरतो फरतो इहां आव्यो, ते अनंगदेव हुं पायो हो ॥ सा० ॥ तोपण हजी जीवुं जाइ, कही वात जे महारी जाइ हो ॥ १० ॥ सा० ॥ तिणे तुं धीरज धरजे, चिंता चित्तमां मत करजे हो ॥ सा० ॥ उद्यम चिंतवी कोइ सारो, सत्त्वरहितने सुखनो वारो हो ॥ ११ ॥ सा० ॥ यतः ॥ तण सरिसं पि न लिप्पइ, कज्जं पुरिसस्स सत्तरहियस्स ॥ आरुह सत्तवस्सउ, वसंमि वंदंति देवावि ॥ १ ॥ रतिवर्द्धन कहे सुणी वात, तें साधु कह्यो अवदात हो ॥ सा० ॥ पण जाखो उपाय तुम्हारो, जेम होवे डुःख निवारो हो ॥ १२ ॥ सा० ॥ कहे अनंगदेव उपाय, जेहथी ए कारज थाय हो ॥ सा० ॥ आ देशमां एह आचार, परणवा दिन पूरवे सार हो ॥ १३ ॥ सा० ॥ जाय कामने देहरे कन्या, देइ द्वार पूजा करे धन्या हो ॥ सा० ॥ ए रात्रि समे करे काम, जे कामे ते दीये काम हो ॥ १४ ॥ सा० ॥ ते कारण हुं तुं दोय, आगल पेसीने जोय ॥ सा० ॥ पछे सर्व काम ते थाशे, ताहरुं डुःख ते सघलुं जाशे हो ॥ १५ ॥ सा० ॥ रतिवर्द्धनने आवासे, आव्या दोय रहे सुखवासे हो ॥ सा० ॥ थइ प्रीति ते अति घणी तेहने, न खमाय विरह ए केहने हो ॥ १६ ॥ सा० ॥ विश्वपुरे सचि सांथ मोकलीयो, हवे लगन दिवसने कलीयो हो ॥ सा० ॥ तस पूर्व दिने आवी बाला, तव ते पण गया उजमाला हो ॥ १७ ॥ सा० ॥ करी बे जण तेह शणगार, पडिमा पूठे तिण वार हो ॥ सा० ॥ तेह अलख रह्या तिणे ठामे, बाला हवे पूजणकामे

हो ॥ १८ ॥ सा० ॥ सवि लोकने द्वारे मूके, दीये द्वार विवेक न चूके हो ॥ सा० ॥ पूजानां उपगरण लेइ, एकाकी पूज करेइ हो ॥ १९ ॥ सा० ॥ करी पूजाने एणी परे पत्रणे, लज्जा केहनी तिहां न गणे हो ॥ सा० ॥ सांभल तुझ नाम अनंग, मुझ उपर केम फल्यो रंग हो ॥ २० ॥ सा० ॥ केम अंग विना करे काम, मानुं तिणे सफलुं छे नाम हो ॥ सा० ॥ पण एक विसंभ्रम आवे, केम काम नामे तुझ छावे हो ॥ २१ ॥ सा० ॥ केम सांकडे मुझने नाखी, शुं कहुं तुझ फिरी फिरी भाखी हो ॥सा०॥ रतिवर्द्धनने दीयो बोल, केम फरे हवे माहरो कोल हो ॥ २२ ॥ सा० ॥ बीजाने मुझने देतां, केम उवेखी सुख सहेता ॥ जन्मांतर होय जे कन्या, विहुंने न देवाये धन्या हो ॥ २३ ॥ सा० ॥ यतः ॥ सकृत् जल्पंति राजानः, सकृत् जल्पंति पंमिताः ॥ सकृत् कन्याः प्रदीयंते, त्रिएयेतानि सकृत् सकृत् ॥ १ ॥ मुझ जीव तो माहरे हाथे, हत्या देइश तुझ माथे हो ॥ सा० ॥ ॥ एम कही तस प्रतिमा सरिसो, दीधो फांसो अति विरसो हो ॥ २४ ॥ सा० ॥ रतिवर्द्धन सहसा आवी, कहे मां साहस मुझ भावी हो ॥ सा० ॥ एम कहीने छेद्यो पाश, पाम्या सहुए उल्लास हो ॥ २५ ॥ सा० ॥ चोथे अधिकारे जाणी, ए दशमी ढाल गवाणी हो ॥ सा० ॥ सज्जन मलीया सुख थावे, पद्मविजय एण दावे हो ॥२६॥ सा० ॥ सर्व गाथा ॥२२२॥

॥ दोहा ॥

॥ हर्षे धरीने पूछती, तुं कुण छे महाभाग किहांथी आव्यो तव कहे, सघलो कर्म विपाग ॥ १ ॥ अनंगदेव ते बेहुने, करी अनंगनी शाख ॥ पाणिग्रहण करावीयुं, मंगल मुखथी भाख ॥ २ ॥ हवे रतिसुंदरी वेष जे, पहेरे देव अनंग ॥ रतिसुंदरी पहेरे तदा, पुरुष वेष मनरंग ॥ ३ ॥ कहे अनंगदेव इणी परे, रतिसुंदरीने छाण ॥ जाइश हुं घर एहने, एहमां नहीं को काण ॥ ४ ॥ तुमे तो नासीने जशो, हुं पण आवी मलेश ॥ रतिवर्द्धन कहे तेहने, सांभल तुं मित्रेश ॥ ५ ॥ नवि मोकलीये तुझ प्रति, थाय अनर्थ इण वात ॥ तव को पुरुष छींक्यो तिसे, ते कहे अनंगदेव भ्रात ॥ ६ ॥ छींक शकुनथी जाणीये, थाशे मुझ कल्याण ॥ अनर्थ तो दूरे जाणजे, भाभ कहे सुख छाण ॥ ७ ॥

लपणाथी मानुं, आकाशने जीपती ॥ ते नगरीनो वर्णन, केटलो कीजीये ॥ वासुपूज्यनां पंच, कल्याणक लीजीये ॥ १ ॥ नाम जितारि ते, नगरीनो राजीयो ॥ तेज प्रताप महिमाथी, जे जग गाजीयो ॥ चोर चरमने नवि, सहेवाये तेजथी ॥ मित्र प्रजा सहु लोक, बोलावे हेजथी ॥ २ ॥ जे अहंकारी शत्रु, सुनटने देखवा ॥ माया विनीत गुण, आछादन लेखवा ॥ जस लेवाने लोन्नी, परधने पांगलो ॥ परस्त्री देखण जेह, कह्यो ठे आंधलो ॥ ३ ॥ कीर्तिमती तस राणी, गुणखाणी कही ॥ शुन्न सुपने सूचित, गर्ने पुत्री रही ॥ रोहणाचल परवतमां, रतन शुचि जीसी ॥ तनुकांते अजुआल, करे जे दश दिशी ॥ ४ ॥ जनम समय वधामणुं, महा मोछव करी ॥ जितारि नृप जसमती, तस अन्निधा धरी ॥ गिरुआ लोकने पर,-उपगारनी बुद्धि परे ॥ सज्जननी सुखदायक, गोठमी ज्युं धरे ॥ ५ ॥ तिण परे दिन दिन वधती, नागरवेलमी ॥ अण अन्यसित तस आवी, कला सुखवेलमी ॥ अनुक्रमे यौवन आव्युं, ते नारी तणुं ॥ महिमा मात्र ते यौवन हुं, किणी परे नणुं ॥ ६ ॥ तोपण सांजल हुं, तुऊने कांयक कहुं ॥ मानुं जस पद अंगुली, अलतापणे लहुं ॥ नहमणि किरण परे नह, किरण ते जाणीये ॥ नाद मधुर कलहंस, परे वखाणीये ॥ ७ ॥ कमलिनीनाला उपम, जंघा जेहनी ॥ चालती थल कमलिनी परे, सोहे मोहनी ॥ नान्निमंमल विपुल, मृदु अति सोहती ॥ मदन तणी मानुं शय्या, जनमन मोहती ॥ ८ ॥ मुक्ताफलना हार, थकी विराजती ॥ कुचफल कठिण विशाल, कलश परे न्राजती ॥ कर पदनां तल जेहनां, कमल समां कह्यां ॥ श्वासोश्वास सुरन्नि घणुं, चंदन परे लह्यां ॥ ९ ॥ बोले वचन ते वीणा, वेणुनी परे ॥ अधर अरुण जिम कुंकुम, राग वदन धरे ॥ अणमातुं मानुं सरलपणुं, जस हृदये वसे ॥ आवी रह्युं नासिकाए, सरलपणे नवि वचे ॥ १० ॥ नेत्र कमलनां पत्र, वन्यां शुन्न श्रवण ते ॥ जास कपोल ज्योत्स्नाए, पखाले वयण ते ॥ पंचमी चंद्र परे शुन्न, न्नाल ते धारती ॥ बांहुलता मानुं कुटिल,-पणाने वारती ॥ ११ ॥ मालती कुसुम ने केतकी, सहित वेणी नली ॥ मृदु स्निग्ध कुटिल, कृष्णपणुं जिहां वली ॥ कनक कांति जस देह, घणुं जोवा जिसी ॥ जो सुरगुरु आवी वर्णवे, पण नवि कहे तिसी ॥ १२ ॥ पण अनुरूप पुरुष कोइ, जगमां नवि जड्यो ॥ जाणे

विधाताए कोइ, घड्यो के नवि घड्यो ॥ एक दिन तेह श्रीषेण, नरेंद्रना सुत तणा ॥ गुणे सांजले शंखकुमारना, श्रवणे अति घणा ॥ १३ ॥ ते दिनथी शंखकुमरना, ध्यानने ध्यावती ॥ नित नित ध्यावे तेहने, तत्त्वने जिम जति ॥ राय जितारि तेहनो, जाव जाणयो हवे ॥ युक्त जाणी कहेवरावे, श्रीषेणने एहवे ॥ १४ ॥ मणिशेखर विद्याधरे, दीठी तेहने ॥ विवाह अर्थे रायने, कहे द्यो एहने ॥ तव कहे राय इणे शंख,-कुमार अंगीकस्यो ॥ ते विना अन्य इछे नहीं, अग्नि शरण धस्यो ॥ १५ ॥ बीजा पण बहु राज,-कुमर तस प्रार्थता ॥ तेह वात सहु नूपतिने, संजलावता ॥ हवे एक दिन मणिशेखर, तास हरी गयो ॥ हुं तेहनी धावमात, अतुं मुज दुःख थयो ॥ १६ ॥ हाथे हुं तिहां वलगी, विलपती कुंअरी ॥ इहां ते दुःष्ट विद्याधरे, नाखी मुज परी ॥ कुण जाणे किहां लइ गयो, तेह खबर नहीं ॥ तिणे हुं करुं हुं विलाप, सांजल कुंअर सही ॥ १७ ॥ तव कुंअर कहे सांजलो, मातजी माहरी ॥ चहात खोलीने लावुं, पुत्री हुं ताहरी ॥ तिहां लगे तुम्हे इहां रहेजो, मन थिरता करी ॥ इम चाल्यो शंखकुमार, घणुं मन संवरी ॥ १८ ॥ खोले अटवी मांहि, बहु उद्यम करे ॥ धन्य कुमरना धैर्यने, किणी परे विसरे ॥ विद्याधरनी खबर, नहीं ते किहां गयो ॥ पण शंखकुमार एकाकी, खोलन सज्ज थयो ॥ १९ ॥ रात रही अवशेष, थोमी हवे थाकती ॥ तिमिर धम्मिल्ल कसंत, तारा चमकावती ॥ कोलाहल करे पंखी, चिहुं दिशे अति घणो ॥ मानुं रुदन करे शोक, धरे जसमती तणो ॥ २० ॥ मानुं हवे विधि तिहांथी, तमने संहरे ॥ शंखकुमारने अटवी, मार्ग प्रगट करे ॥ हवे दश दिश तिहां कांयक, विकसित थइ रहे ॥ मानुं जसमती लाज, आसन जाणी गहगहे ॥ २१ ॥ सूरजानुए तिमिर, सवि दूरे कस्यो ॥ कायर सैन्य हतो ते पण, मन थरहस्यो ॥ एणी परे रात गइ ने, परजातज थयो ॥ पूरव दिशि पासे रवि, आवण सज्ज थयो ॥ २२ ॥ संध्याराग परे सिंदूर, तिलक कस्यो ॥ अति शोने शणगार, मानुं अंगे धस्यो ॥ तव जानु पण अरुण, कुंकुम सम तनु करी ॥ चंद्र प्रदीप उलवतो, आवे संचरी ॥ २३ ॥ ते पूरव दिश पण अनि,-नव नारी वनी ॥ तमलज्जा उंसारती, दीसे ज्युं कनी ॥ इणी अवसर तिहां सूर, नरेंद्र जब उगीयो ॥ निज करे करी तव कमल, कोश लगे पूगीयो ॥ २४ ॥

तमशत्रु ने तारा, रेणुकण टालतो ॥ गगणांगणे मंगल कल,-शा परे म्हाल-तो ॥ कुमुदिनी ठंमी कमलिनी, पासे भ्रमर गया ॥ सवि निज स्वार्थे प्राणी, मल्या तिणे इम थया ॥ २५ ॥ चक्रवाक तिहां कूजित, शब्द करी रह्या ॥ विरह विमुक्त थया तिणे, मनमां गहगह्या ॥ विरह ते दावानलनी, ज्वालाथी कही ॥ अधिकी सांजरे फरसे, इम निश्चय सही ॥ २६ ॥ भुवन सरव आणंदने, पाम्युं तिणे समे ॥ पण एक कौशिक कुलना, मनमां नवि गमे ॥ ए चोथा अधिकारनी, ढाल ते बारमी ॥ पद्मविजय कहे वात, नहीं कोइ कारमी ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अनुक्रमे शंखकुमर हवे, विशालशृंग गिरिराज ॥ उपर चढीयो एकलो, ज्युं वनमां मृगराज ॥ १ ॥ वनगह्वरमां देखतो, विद्याधर ते नार ॥ विद्याधरने इम कहे, जसमती स्त्री तेणी वार ॥ २ ॥ मुज प्रतिज्ञा नवि खसे, आ भव ने भव ठेर ॥ शंखकुमर विनु माहरे, भर्त्ता नवि कोइ ओर ॥ ३ ॥ करे विवाहनी प्रार्थना, खेचर अनेक प्रकार ॥ जसमती आंसु रेऊती, कहे न करुं भरतार ॥ ४ ॥ ते बेहु जणे दीठे तिहां, शंखकुमरने ताम ॥ शंखे पण दीठां तिहां, चिंते सख्युं हवे काम ॥ ५ ॥ तव विद्याधर इम कहे, जसमतीने सुण नार ॥ काल आकर्यो आवीयो, ए ताहरो भर-तार ॥ ६ ॥ पूरव परिचित माहरो, तुऊ देखंतां एह ॥ हणीने परणुं तुऊने, लेइ जाशुं निज गेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ जीहो जाण्युं अवधि प्रयुंजीने ॥ ए देशी ॥ जीहो एम करतां खेचर प्रते, जीहो हाके शंखकुमार ॥ जीहो परनारीना पातकी, जीहो मूक तुं अबला नार ॥ १ ॥ सुगुण नर, जूर्ड जूर्ड वीर्य विशेष ॥ जीहो विद्याधरशुं बोलतां, जीहो शंका नवि धरे रेख ॥ २ ॥ सु० ॥ जीहो नीच लोक जे आदरे, जीहो तुं केम आदरे तेह ॥ जीहो निज नारी मूकाववा, जीहो मानुं कहे वच एह ॥ ३ ॥ ॥ सु० ॥ जीहो विद्याधर हसीने कहे, जीहो एह ते ताहरी नार ॥ जीहो परस्त्री ते अमने कही, जीहो कर हवे सार संभाल ॥ ४ ॥ सु० ॥ जीहो एम करतां ते बेहुने, जीहो लाग्युं युद्ध अपार ॥ जीहो कर आस्फालन बिहुं करे, जीहो भ-मता करे प्रहार ॥ ५ ॥ सु० ॥ जीहो खड्गयुद्ध करतां थका, जीहो छेदे खड्ग तिवार ॥

जीहो गुणवंता ते विहुं मल्या, जीहो मूके खड्ग व्यवहार ॥ ६ ॥ सु० ॥ जीहो बाहुयुद्धथी जूझता, जीहो वली खड्गे व्यवहार ॥ जीहो वली बाहुयुद्ध करे, जीहो थाके नहीं किवार ॥ ७ ॥ सु० ॥ जीहो तव रूठो विद्याधरु, जीहो करी भृकुटि निज जाल ॥ जीहो विद्याना सामर्थ्यथी, जीहो रचे शिला विकराल ॥ ८ ॥ सु० ॥ जीहो वृक्ष विकूर्वी नवनवां, जीहो गोलानी कइ कोम ॥ जीहो वींछी सापनां शर घणां, जीहो नाखे मनने कोम ॥ ए ॥ सु० ॥ जीहो शंखकुमर बचावतो, जीहो पुण्यप्रबल महावीर ॥ जीहो जाय विफल केइ खंमतो, जीहो वरसे ते ज्युं नीर ॥ १० ॥ सु० ॥ जीहो तेहनां शस्त्र तेहने मुखे, जीहो नाखे शंखकुमार ॥ जीहो तव खेचर विलखो थइ, जीहो ऊनो रह्यो तिण वार ॥ ११ ॥ सु० ॥ जीहो चाप ने बाण ग्रहे तदा, जीहो विद्याधरथी कुमार ॥ जीहो बाणे भेद्यो हृदयमां, जीहो मूर्छा पामे अपार ॥ १२ ॥ सु० ॥ जीहो विद्याधर धरणी ढल्यो, जीहो तव तिहां आव्यो कुमार ॥ जीहो वातादिक उपचारथी, जीहो कुंअर करे उपगार ॥ १३ ॥ सु० ॥ जीहो स्वस्थ करी कुंअर कहे, जीहो हाथमां ले तरवार ॥ जीहो धीरज अवलंबी मने, जीहो मूक म निज व्यवहार ॥ १४ ॥ सु० ॥ जीहो तव भाखे विद्याधरु, जीहो तुझ साथे किसी होड ॥ जीहो त्रण भुवनमां तुझ समो, जीहो न मले बीजी जोड ॥ १५ ॥ सु० ॥ जीहो जास विद्याउं माहरी, जीहो विफल थइ सवि सार ॥ जीहो पुण्य रहित हुं प्राणीयो, जीहो तुं पुण्यवंत शिरदार ॥ १६ ॥ सु० ॥ जीहो तुं गंभीर सोहामणो, जीहो ताहरो वचन विन्यास ॥ जीहो धीरवंत तुं अति घणो, जीहो तुझ उदारता खास ॥ १७ ॥ सु० ॥ जीहो रूपवंत महिमानिलो, जीहो गुणगणश्री भरी देह ॥ जीहो बालांनो प्रतिबंध जे, जीहो थानक दीसे एह ॥ १८ ॥ सु० ॥ जीहो नारीरतन जे एहवी, जीहो नवि जुगति अन्य ठाण ॥ जीहो काकने अंबनी मंजरी, जीहो योग्य नहीं केणे काण ॥ १९ ॥ सु० ॥ जीहो राजहंसने योग्य ते, जीहो दर्दुर नलिनी न योग ॥ जीहो योग्य नहीं ते जीवीया, जीहो ए नारीशुं भोग ॥ २० ॥ सु० ॥ जीहो तेह तुम्हे फल पामीया, जीहो हुं थयो रागे रे अंध ॥ जीहो रागअंधने दुःख होये, जीहो अंध अधिक कामांध ॥ २१ ॥ सु० ॥ यतः ॥ दिवा पश्यति नो घूकः, काको नक्तं न पश्यति ॥ अपूर्वः कोऽपि कामांधो, दिवा नक्तं न पश्यति ॥ १ ॥ जीहो तुझ गुणे मुझ मन

खंचीयुं, जीहो जेम चमके करी लोह ॥ जीहो ताहरो सेवक हुं सदा, जीहो देखी गुण संदोह ॥ २२ ॥ सु० ॥ जीहो निर्गुण होय प्रसिद्ध घणा, जीहो जिम मकराकर रीत ॥ जीहो एह कुमर परे गुण घणा, जीहो जगमां नहीं परतीत ॥ २३ ॥ सु० ॥ जीहो जसमती मनमां एणी परे, जीहो चिंतवे हुं पुण्यवंत ॥ जीहो एहना गुण नवि धरी शकुं, जीहो एक हृदये करी तंत ॥ २४ ॥ सु० ॥ जीहो एक वाचाथी नवि शके, जीहो एहना गुण कही कोय ॥ जीहो अंगीकरशे के नहीं, जीहो मुज मन थाय ए सोय ॥ २५ ॥ सु० ॥ जीहो हाथे न पामे कूबमो, जीहो कल्पवृक्षफल जेह ॥ जीहो मरुपंथी पामे किमु, जीहो मानस सरजल तेह ॥ २६ ॥ सु० ॥ जीहो रत्ननिधान दुःखीया घरे, जीहो लहीये दुर्लभ एह ॥ जीहो अम्ह हाथे केम आवशे, जीहो एह पुरुष गुणगेह ॥ २७ ॥ सु० ॥ जीहो पण जाणुं हुं मन थकी, जीहो दृष्टि एहनी देख ॥ जीहो आदरशे मुजने सही, जीहो संशय नहीं इहां रेख ॥ २८ ॥ सु० ॥ जीहो कहे खेचर कुंअर सुणो, जीहो खमजो मुज अपराध ॥ जीहो लज्जित तव कुंअर कहे, जीहो तुं गुणवंत अगाध ॥ २९ ॥ सु० ॥ जीहो कहे विद्याधर जे कहे, जीहो ते करुं ताहरुं काम ॥ जीहो कहे कुंअर सुणो जाइये, जीहो गिरि वैताढ्यने ठाम ॥ ३० ॥ सु० ॥ जीहो तेरमी ढाल एणी परे, जीहो चोथे ए अधिकार ॥ जीहो पद्मविजय कहे पुण्यथी, जीहो होवे जय जयकार ॥ ३१ ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ शाश्वत प्रतिमा वंदीये, सिद्धायतने सार ॥ भाखे कुंवर एणी परे, एहज जग हितकार ॥ १ ॥ इणी अवसर तिहां आवीयो, विद्याधर परिवार ॥ मणिशेखर सेवक सहु, तास गवेषणहार ॥ २ ॥ सहु प्रणमे कुंअर प्रति, जाणी तस उपगार ॥ बे विद्याधर मोकले, निज सैन्यमां कुमार ॥ ३ ॥ वात सुणावी सैन्यने, निज पुर मोकले सैन्य ॥ तेमावे धावमातने, कहेवरावी शुभ वेण ॥ ४ ॥ हवे कुंअरनां वचनथी, वैताढ्ये लेइ जाय ॥ जसमती धावमाता वली, साथ लीये तिणे ठाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ अब लीलां रंगावो वरनां मोलीयां ॥ ए देशी ॥ शाश्वत जिनप्रतिमा वंदीये, जेम वंदे शंखकुमारो रे ॥ पूजा रचे अष्ट प्रकारनी, आणंद उल्लास

अपारो रे ॥ शा० ॥ १ ॥ नावे जिनवर स्तवना करे, जाणी तस लाज अपारो रे ॥ श्रीउत्तराध्ययने नाखीयो, उंगणत्रीशमे अधिकारो रे ॥ शा० ॥ २ ॥ यडुक्तं ॥ थय थूइ मंगलेणं, नंते जीवे किं जणइ ॥ थय थुइ मंगलेणं, नाण दंसण चरित्त वोहिलानं जणई ॥ १ ॥ नाण दंसण चरित्त, वोहिलानं संपत्तेय जीवे ॥ अंतकिरियं कप्पविमाणो वित्तियं, आराहणं आराहेई ॥ २ ॥ श्रीनगवती सूत्र मांहे नमे, चारण मुनि जिनवरचैत्य रे ॥ तिम वैताढ्ये जिनवर नमे, ते शंखकुमर तिहां नित्य रे ॥ शा० ॥ ३ ॥ श्रीरुपन प्रनु पहेला कह्या, चंड्रानन वीजा धारी रे ॥ वारिपेण प्रनु त्रीजा लह्या, वर्द्धमान नामे गुणधारी रे ॥ शा० ॥ ४ ॥ ए चार नामे जिन शाश्वता, प्रणमे मणिशेखर साथ रे ॥ अनुक्रमे कनकपुरे तिहां, तेम्रो आवे निज पुर साथ रे ॥ शा० ॥ ॥ ५ ॥ वहु नक्ति करे मनरंगथी, निज घर मांहे लेइ आवे रे ॥ विद्याधर देखी जसमती, अंग अनंग न मावे रे ॥ शा० ॥ ६ ॥ विद्याधर शंखकुमारनुं, रूप देखी मन घणुं मोहे रे ॥ वैताढ्यवासी सवि खेचरा, सांनली यश कीरति सोहे रे ॥ शा० ॥ ७ ॥ सवि आवी तस पासे रहे, क्षण एक पासुं नवि मूके रे ॥ सहु रायना शत्रु वश करे, ते पण कोइ विनय न चूके रे ॥ शा० ॥ ८ ॥ ते रीते सवि रागी हुवा, जेम भृत्य नाव धरे सरवे रे ॥ निज निज घर तेम्री हर्पशुं, याचे धुया विवाहने करवे रे ॥ शा० ॥ ए ॥ पण ते परणे नहीं एम कहे, जसमती परण्या पठी वातो रे ॥ केताइक दिन तिहां रही करी, हवे करे प्रयाणनी वातो रे ॥ शा० ॥ १० ॥ मणिशेखर कुमर विमानमां, वली ले निज पुत्री साथे रे ॥ विद्याधर सहस गमे तिहां, आवे लेइ निज धूया हाथे रे ॥ शा० ॥ ११ ॥ जसमती पण साथे लेइ वल्यो, चंपा नयरीए पहोतो रे ॥ विद्याधर तव एक मोकले, मणिशेखर नृप सम होतो रे ॥ शा० ॥ १२ ॥ जितारि नृप आनंदीयो, नवि माये देहे न गेहे रे ॥ सामंत मंत्री पुरजन वली, परवरीयो नृप घणुं रेहे रे ॥ शा० ॥ १३ ॥ शंखकुमरनी साहमो आवीयो, हरखे करी कुमर आलिंगे रे ॥ सहु खेचरने सन्मानीया, पाय पडे जसमती रंगे रे ॥ शा० ॥ १४ ॥ नूपति पण मस्तक चुंवतो, सवि लोकने हर्प न माय रे ॥ पुरलोक अंतेउर सहु करे, प्रशंसा मली समुदाय रे ॥ शा० ॥ १५ ॥ ए कुमर ते जयवंतो रहो, राज्य देश वूफतो राख्यो रे ॥ पुत्रीविरहे राय जीवत नहीं,

नृपनो उपगारी ए नाख्यो रे ॥ शा० ॥ १६ ॥ सांजलतो श्लाघा एणी परे, बहु रिद्धि थकी परवरीयो रे ॥ कामिनीनां कटाक्ष कमल थकी, पूजाने गामे ते धरीयो रे ॥ शा० ॥ १७ ॥ प्रवेश करे चंपापुरी, पहोतो राज्यनवने तेह रे ॥ देश नयरमां करे वधामणां, नरपति तिहां अति ससनेह रे ॥ शा० ॥ ॥ १८ ॥ श्रीवासुपूज्य जिनराजनी, प्रतिमा वंदे बहु नावे रे ॥ चारण जिम अत्रनां चैत्यने, वंदे नगवती कहे चावे रे ॥ शा० ॥ १९ ॥ जेम द्रौपदी उठा अंगमां, कल्पसूत्रमां सिद्धार्थ रायो रे ॥ जिनवरपूजा नाखी नली, नवि माने ते दुर्गति जायो रे ॥ शा० ॥ २० ॥ जिनवरनी पूजा शास्त्रमां, नाखी छे अनेक प्रकारो रे ॥ खट दर्शन मांहे नहीं किहां, पूजानो कीध निवारो रे ॥ शा० ॥ २१ ॥ सूरियान्न सुरें पूजा करी, ते समकितवंत महंत रे ॥ मिथ्या करणी ते नवि करे, वखाणे वीर नगवंत रे ॥ शा० ॥२२॥ यतः ॥ पापं लुंपति दुर्गतिं दलयति, व्यापादयत्यापदं ॥ पुण्यं संचिनुते श्रियं वितनुते, पुष्णाति नीरोगताम् ॥ सौनाग्यं विदधाति पल्लवयति, प्रीतिं प्रसूते यशः ॥ स्वर्गं यछति निर्वृतिं रचय,-त्यर्चार्हतां निर्मिता ॥ १ ॥ निज आतम कृतार्थने मानतो, तिहां पूजे जिनवर पायो रे ॥ शुन्न दिवसे शुन्न लग्ने हवे, महा रिद्धि थकी ते रायो रे ॥ शा० ॥ २३ ॥ जसमती परणावे प्रेमशुं, विद्याधरनी बहु कुमरी रे ॥ परणे तिहां अति हरखे करी, जिनवचन पूर्वेनुं समरी रे ॥ शा० ॥ २४ ॥ विद्याधर निज थानक गया, सुख नोगवे शंखकुमारो रे ॥ जसमती अन्य नारी साथे नला, नोग नोगवे अति श्रीकारो रे ॥ शा० ॥ २५ ॥ जसमती ने शंखकुमर तणे, अति आकरी प्रीति बंधाणी रे ॥ क्षण एक वियोग न सही शके, एम लोक कहे ते वाणी रे ॥ शा० ॥ २६ ॥ विधि कुटिल प्रकृति खल जाणीये, नित्य चाले अयुक्ते पंथे रे ॥ जसमती शंखकुमर संयोगथी, अपयश मानुं निज मंथे रे ॥ शा० ॥ २७ ॥ जुउ कुमरीने कोण हरी गयो, एह तो मूंकावी लाव्यो रे ॥ ए रचना विधि विनु नवि होय, शंख परे उज्ज्वल गुण नाव्यो रे ॥ शा० ॥ ॥ २८ ॥ चोथे अधिकारे चौदमी, ढाल नाखी उछव केरी रे ॥ कहे पद्मविजय आगल सुणो, करणी शंखकुमार अनेरी रे ॥ शा० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ४६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुख नोगवतां तिण समे, आव्यो एक तिहां दूत ॥ श्रीषेण राये मो-

कह्यो, तेरुणने निज पुत ॥ १ ॥ स्वस्तिश्री गजपुर थकी, लखे श्रीषेण नरिंद ॥ चंपापुरी विषे राजनो, शंखकुमर मुखचंद ॥ २ ॥ स्नेहोत्कंठ थकी कहे, क्षेम कुशल छे मुज ॥ वांछुं नित अम्हे पत्रने, क्षेम कुशलना तुज ॥ ३ ॥ अछुं वियोगी ताहरां, दर्शन वांछुं नित्य ॥ ते कारण वहेला तुमे, आवो धरी मन प्रीत ॥ ४ ॥ वांची कुमर ते पत्रने, आणा मागे राय ॥ हय गय रह भट सैन्यशुं, हस्तिणाउर भणी जाय ॥ ५ ॥ जसमती प्रमुख अंतेउरी, साथे पहोतो त्यांह ॥ मात पितादिक सहु मळ्यां, वाध्या हर्ष उछाह ॥ ॥ ६ ॥ सूर सोम बंधव विहुं, आरणकल्पथी आय ॥ जसधर गुणधर नामथी, उपन्या निज लघु भाय ॥ ७ ॥ मतिप्रभ जसधर गुणधरा, अन्य मित्र बहु साथ ॥ क्रीमा करे नित हर्षशुं, जसमती पण लेइ हाथ ॥ ८ ॥ राजकुंवर पण नित रहे, भोगवे भोग विलास ॥ तव नरपति मन चिंतवे, जाणी राज्य जंजाल ॥ ए ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ घरे आवोजी आंबो मोरीयो ॥ ए देशी ॥ नरपति मनमां इम चिंतवे, मुज पुत्र अति गुणवंत ॥ ए राज्यने योग्य थयो हवे, शंखकुमर गंभीर महंत ॥ १ ॥ न० ॥ भुक्ता भोगी थयो वये परिणम्यो, हवे राज्य भोगवुं जेह ॥ तेह मूढपणुं असंगत वली, धीर पुरुषने नवि घटे एह ॥ २ ॥ न० ॥ शिरवाल मालती माला समा, होशे तव नवि उलखाशे ॥ तो फूल तणी इछा कीसी, ए मूढपणुं कहेवाशे ॥ ३ ॥ न० ॥ लोइउखले खांड्युं तंबोल जे, ते पण विसंस्थूल थाय ॥ चुवे घणुं लाला मुख थकी, ए तो विबुध विटंबणा प्राय ॥ ४ ॥ न० ॥ वली वली विरसित थइ देहडी, पवने कंपे जस अंग ॥ तिहां चंदनरस विलेपन करे, केम लोक हसे नहीं रंग ॥ ५ ॥ न० ॥ वली रुधिर मांस सूकी रह्यां, अस्थि रह्यां थाकतां शेष ॥ तस आभरणे विभूषा करे, ए तो लघुता पामे विशेष ॥ ६ ॥ न० ॥ हितवचन न माने तेहनो, कोइ स्वजन कुटुंब परिवार ॥ तव धर्म साधवो दोहिलो, वृद्धपणुं जब थाशे असार ॥ ७ ॥ न० ॥ निज पुत्र योग्य जाणी करी, बहु राजा लेवे दीख ॥ हुं पुत्र छते पण नवि अहुं, श्रीजिनवर केरी शीख ॥ ८ ॥ न० ॥ हजी वृद्ध अवस्था न पामीयो, साधुं निज आतम काज ॥ एम चिंती शंखकुमारने, शुभ दिवसे थापे राज ॥ ए ॥ न० ॥ सवि नगरलोक हर्षित थयां,

तेम मंत्री सामंत प्रमोद ॥ गुणधर गणधर पासे लीये, दीक्षा विधिथी लही मोद ॥ १० ॥ न० ॥ भणी सूत्रने गीतारथ थया, करे उग्र तपस्या साध ॥ निरतिचार चारित्र पालता, नवि करता कोइ अपराध ॥ ११ ॥ ॥ न० ॥ हवे शंख राय पाले राज्यने, वश करी वयरीनो व्रात ॥ पट्टदेवी जसमतीने करे, मतिप्रज्ञ मंत्रिपदे थात ॥ १२ ॥ न० ॥ आणा वहे सहु परजा तिहां, सीधां सघलां नृपकाज ॥ पूरवे जे दुःसाध्यने साधीयां, पाले अखंड एम राज ॥ १३ ॥ न० ॥ देश मांहे सघले करावतो, जिनवरनां चैत्य विशाल ॥ करे स्वर्गशुं तेह विवादने, वली करतो तास संभाल ॥ ॥ १४ ॥ न० ॥ करे रथयात्राउं तेहवी, देखीने थाय आह्लाद ॥ करे दानशालाउं पगपगे, नवि स्वपर विशेष विवाद ॥ १५ ॥ न० ॥ पडह वजावे अमारीना, करे साहमीवछल राय ॥ जे निर्धन ते धनवंत कस्या, त्रण भुवनने आनंद थाय ॥ १६ ॥ न० ॥ श्रीषेण मुनीश्वर विचरता, करे कर्म तणो नित्य घात ॥ तपरूप अग्नि पेदा करी, घातिकर्म इंधण करे पात ॥ १७ ॥ ॥ न० ॥ एम सकल घातिकर्म क्षय करी, ऋषि पाम्या केवलज्ञान ॥ प्रतिबोध करे सूरज परे, भवि लोककमल अज्ञान ॥ १८ ॥ न० ॥ एक दिन हस्तिणाउरे आवीया, अनुक्रमे विहार करंत ॥ रचे कनककमल सुरवर तिहां, गंधोदक फूल वरसंत ॥ १९ ॥ न० ॥ सहसंबवन उद्यानमां, आवी समवसस्या शुद्ध छाय ॥ उद्यानपालक भूपालने, वधामणी दीये तिहां आय ॥ २० ॥ न० ॥ तस दान देइ संतोषीयो, हरख्यो मन राय अपार ॥ हवे केवलीने वंदन भणी, सज्ज थाय करी शणगार ॥ २१ ॥ न० ॥ एम ए चोथा अधिकारनी, भाखी पन्नरमी ढाल ॥ गुरु उत्तमविजय कृपा थकी, होय पद्मने मंगलमाल ॥ २२ ॥ न० ॥ सर्व गाथा ॥ ४०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गज तुरंगम अति भला, रथ भटनो नहीं पार ॥ सामंत मंत्रीसर सहित, पुरजन लोक अपार ॥ १ ॥ जसमती प्रमुख अंतेउरी, लेइ सघलो परिवार ॥ पहोतो राय उद्यानमां, उतरे गजथी तिवार ॥ २ ॥ पंच अभिगम साचवी, करे प्रदक्षिणा तीन ॥ विनये केवलीने नमी, बेठो आणंद पीन ॥ ३ ॥ शंख भूपति भाखे इस्युं, करी कृपा मुज स्वाम ॥ जे मुज करवा योग्य ते, भाखो [illegible] शिर नाम ॥ ४ ॥ एक पिता ने मुनिवरु, वली लघुं

केवलज्ञान ॥ तुम विना कहो केहनुं करुं, स्वामी जी बहु मान ॥ ५ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ वैरागी थयो ॥ ए देशी ॥ केवली कहे सुण नृपति रे, त्रण्य भुवनमां सार ॥ मूकी एक शुद्ध धर्मने, अवर न को आधारो रे ॥ १ ॥ नविजन सांजलो ॥ धारो धर्मनी बुद्धि रे, मूकी आमलो ॥ ए आंकणी ॥ आदि नहीं संसारनी रे, तेहमां नमतो जीव ॥ बहु थानक धन अर्जीयो रे, कीधां पाप अतीव रे ॥ २ ॥ न० ॥ धन अर्थे दुःख बहु सह्यां रे, कहेतां नावे पार ॥ कर्मबंधन तेहथी थयां रे, नोगवे अन्य धूनारो रे ॥ ३ ॥ न० ॥ नर यौवनमां आवीयो रे, रूप प्रवर बहु नार ॥ ते पण राखी नवि रही रे, मूकी अनंती वारो रे ॥ ४ ॥ न० ॥ जीव एकेके नोगव्यां रे, राज्य अनंती वार ॥ नवमा ग्रैवेयक लगे गयो रे, पण नवि लह्यो नवपारो रे ॥ ५ ॥ न० ॥ जीवानिगमे नाखीयो रे, वली कहे नगवती अंग ॥ दास रंकपणुं पामीयो रे, तमस्तमा दुःख लह्यां अंगो रे ॥ ६ ॥ न० ॥ मात पिता पुत्रजपणे रे, भ्रात कलत्र ने बहेन ॥ शत्रु मित्रपणे वली रे, वार अनंत लह्युं एण रे ॥ ७ ॥ न० ॥ यतः ॥ न सा जाइ न सा जोणी, न तं ठाणं न तं कुलं ॥ न जाया न मुया जब, सव्व जीवा अणंतसो ॥ १ ॥ पण संतोष न सुख थकी रे, दुःखथी नहीं निर्वेद ॥ मोह विषे धारितपणे रे, नष्ट विवेक लहे खेदो रे ॥ ८ ॥ न० ॥ लखमी विषय शरीर ए रे, सयण यौवन वली राज्य ॥ पंचेंद्रिय सुख पामीया रे, आ नवमां पण आजो रे ॥ ए ॥ न० ॥ करिकर्ण चंचलनी परे रे, लखमी अथिर न्रुच जाण ॥ फल किंपाकनी सारिखां रे, विषय विनाश वखाणो रे ॥ १० ॥ न० ॥ यतः ॥ अथिरा ज लच्छिर्ठ, अथिरा विसया ॥ इति वचनात् ॥ पाप करे ए प्राणीयो रे, जेह शरीरने काज ॥ ते पण परमारथ थकी रे, अथिर अशुचि तणी पाजो रे ॥ ११ ॥ न० ॥ यतः ॥ सरुण परुण विद्धंसण, धम्मे इति सव्वेई ठदेहर्ठ ॥ इंद्रवज्राछंद ॥ अचेतन प्रेत, दरीर जरेत, नरी मन खेत, की हे यह क्यारी ॥ व्याधिकी पोट, आराधिकी उंट, उपाधिकी जोट, समाधिसुं न्यारी ॥ रे जीउ देह, करे सुखहाणि, इत्तो परतो तुंहि, लागत प्यारी ॥ देही तो तोही, तजेगि निदानपें, तुंहि तजे न क्युं, देहकी यारी ॥ १ ॥ संध्या समये वृक्षमां रे, पंखी मिले बहु त्यांहि ॥ प्रातः समय जाइ दह दिशे रे, को किहां ने को

क्यांहि रे ॥ १२ ॥ भ० ॥ तिम सवि सज्जन आवी मल्यो रे, कर्मवशे इहां आय ॥ आयुक्षये सहु थानके रे, कर्म कस्यां तिहां जाय रे ॥ १३ ॥ भ० ॥ हास्य लीला मद जेहथी रे, वली ममकार ते थाय ॥ जरा राखसी यौवन हरे रे, समय समय घटे आयो रे ॥ १४ ॥ भ० ॥ राज्य मांहे सुख नहीं कदी रे, सुख अभिमान ते जाण ॥ दीरघ भवफल पामतो रे, आ भव पण दुःख वाणो रे ॥ १५ ॥ भ० ॥ खरज खणननी उपमा रे, भवसुख जाण नरिंद ॥ तुछ अने दुःखमूल छे रे, कटु फलनां दीये वृंदो रे ॥ १६ ॥ ॥ भ० ॥ ते कारण आधार छे रे, धर्म जगत हितकार ॥ सार शाश्वत सुखदायको रे, जाणी अपूर्व उदारो रे ॥ १७ ॥ भ० ॥ पामी मनुजनो भव भलो रे, सांभलो धर्म विशेष ॥ करीये पण ए धर्मने रे, चिंतवीये शुभ रेख रे ॥ १८ ॥ भ० ॥ सुख दुःख अर्थ ने काममां रे, चित्तरुद्ध नर जेह ॥ न करे ए जिनधर्मने रे, बहु हारे नर तेह रे ॥ १९ ॥ भ० ॥ अनंत पुजलपरिअट्टे रे, अंते पाम्यो ए धर्म ॥ ते पण फोकट हारीयो रे, दुर्लभ फरी ए मर्म रे ॥ २० ॥ भ० ॥ संवेगे पुलकित थइ रे, आंसु भरीयां रे नयण ॥ भूपति कर जोमी कहे रे, जेम कहो छो तेम वयण रे ॥ २१ ॥ भ० ॥ जेम भाख्युं स्वामी तुमे रे, तेम करशुं मुनिराय ॥ थापी जसमती पुत्रने रे, पुंमरीक निज ठाय रे ॥ २२ ॥ भ० ॥ पण स्वामी किरपा करी रे, भाखो मुजने रे एह ॥ कारण शुं स्वामी कहो रे, जसमती उपर नेह रे ॥ २३ ॥ ॥ भ० ॥ चोथा ए अधिकारमां रे, भाखी सोलमी ढाल ॥ पद्मविजय कहे केवली रे, भाखे प्रेम विशाल रे ॥ २४ ॥ भ० ॥ सर्व गाथा ॥ ५२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूरव भवना नेहथी, बांध्यो अविहम प्रेम ॥ धनकुमार ने धनवती, प्रथम भवे तुम्हे एम ॥ १ ॥ ते भवमां समकित लह्युं, पाली प्रव्रज्या सार ॥ सौधर्में सुर उपना, मित्रपणे श्रीकार ॥ २ ॥ चित्रगति ने रयणवइ, स्त्री भरतारनो योग ॥ विद्याधर भवमां लह्या, महाव्रतनो उपभोग ॥ ३ ॥ माहिंद देवलोके मित्र दो, चोथा भवमां जाण ॥ अपराजित ने प्रीतिमती, पति भार्या मन आण ॥ ४ ॥ आरणकल्पे उपना, मित्रपणे तिहां देव ॥ सातमे भव शंखकुमार तुं, जसमती नारी हेव ॥ ५ ॥ अपराजित विमानमां, उपजशो बहु प्रेम ॥ तिहांथी भारतक्षेत्रमां, थाइश अरिहा नेम ॥ ६ ॥

राजिमती नामे धुया, उग्रसेननी सार ॥ तुऊ पासे संयम ग्रही, शिव लहेशे निर्धार ॥ ७ ॥ गुणधर जसधर बांधवा, मतिप्रज्ञ मंत्री खास ॥ गणधरपदवी पामशे, ए पण ताहरी पास ॥ ८ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ टूक अने टोमा वच्चे रे, मेंदीनां दोय रूंख ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥ शंखकुमर एम सांजली रे, उल्लसित अंग अपार ॥ संयमरंग लागो ॥ ए आंकणी ॥ पुंमरीक निज पुत्रने रे, थापे राज्य उदार ॥ १ ॥ सं० ॥ तृण परे रमणी रमा तजी रे ॥ शंख राय दोय बंधु ॥ सं० ॥ जसमती ने मतिप्रज्ञ वली रे, तजी संसार संबंध ॥ २ ॥ सं० ॥ केवली पासे आदरे रे, अति महोटे मंमाण ॥ सं० ॥ दीक्षा जिनवरनी कही रे, जेहथी थाय कल्याण ॥ ३ ॥ सं० ॥ शंख मुनि जणतां थका रे, गीतारथपद थाय ॥ सं० ॥ संयम पाले निर्मलुं रे, नवि अतिचार लगाय ॥ ४ ॥ सं० ॥ तीर्थंकरपद अर्जीयुं रे, सेवी थानक वीश ॥ सं० ॥ जक्ति करे मुनि एणी परे रे, वाधे जगत जगीश ॥ ५ ॥ सं० ॥ अरिहंत तस प्रतिमा वली रे, स्तवे पूंजे मनरंग ॥ सं० ॥ अवर्णवाद बोले नहीं रे, अरिहंतपद इम चंग ॥ ६ ॥ सं० ॥ सिद्ध तणी स्तवना करे रे, सिद्ध स्थानकने देख ॥ सं० ॥ रात्रि जागरण उंब्ल्व करे रे, ज्ञानादिक गुण पेख ॥ ७ ॥ सं० ॥ बालक ग्लान मुनि तणी रे, करे वेयावच्च सार ॥ ॥ सं० ॥ प्रवचननुं वात्सल्य करे रे, त्रीजे पदे इम धार ॥ ८ ॥ सं० ॥ वस्त्र आहार औषध वली रे, आपे करी अति जक्त ॥ सं० ॥ चोथुं थानक इणी परे रे, आराधे निज शक्त ॥ ए ॥ सं० ॥ वीश वरष पर्यायथी रे, साठ वरष वये वृद्ध ॥ सं० ॥ जघन्यथी समवायांग जणया रे, थिविर जक्ति एम सिद्ध ॥ १० ॥ सं० ॥ बहुश्रुत अर्थ अपेक्षथी रे, तेहनी करे नित सेव ॥ सं० ॥ अन्न वस्त्रादिक आपवुं रे, पद बठुं एम हेव ॥ ११ ॥ सं० ॥ तप उत्कृष्ट करे घणां रे, जेह तपस्वी लोक ॥ सं० ॥ उंजो दीये तेहने रे, सप्तम पद इम रोक ॥ १२ ॥ सं० ॥ प्रश्न करे लीये वाचना रे, द्वादशांगीनी जेह ॥ सं० ॥ सूत्र अरथ उपयोगथी रे, अष्टम पद थाये एह ॥ १३ ॥ सं० ॥ शंकादिक दूषण नहीं रे, धैर्यादिक गुण युत्त ॥ सं० ॥ सम संवेगादिक थकी रे, दर्शन पद एम उत्त ॥ १४ ॥ सं० ॥ रत्नत्रयी उपचारथी रे, विनय करे गुणगेह ॥ सं० ॥ प्रथमाध्ययन विनय कह्यो रे, उत्तराध्ययने

एह ॥ १५ ॥ सं० ॥ इछामिछादिक थकी रे, आवश्यक करे नित ॥ सं० ॥ अतिचारने परिहरे रे, एकादशमे रीत ॥ १६ ॥ सं० ॥ ईर्यासमिति आदि थकी रे, मूल उत्तर गुण सार ॥ सं० ॥ बारमुं पद आराधतो रे, करे सफलो अवतार ॥ १७ ॥ सं० ॥ करतो ते शुज ध्यानने रे, क्षण क्षण लव लव जेह ॥ सं० ॥ करे परिहार प्रमादनो रे, तेरमुं पद शुज रेह ॥ १८ ॥ सं० ॥ बाधारहितपणे करे रे, निरवांछकता युक्त ॥ सं० ॥ चौदमे पद तपनी करे रे, जुक्तजोगी एम जुक्त ॥ १९ ॥ सं० ॥ संविजाग तपसी विषे रे, अन्नादिकनो होय ॥ सं० ॥ त्रिकरण शुद्धे ते करे रे, पन्नरमुं पद जोय ॥ २० ॥ सं० ॥ आचार्यादिक दश तणे रे, वेयावच्चना कार ॥ सं० ॥ जक्त पान आणी दीये रे, सोलमे पद निर्धार ॥ ॥ २१ ॥ सं० ॥ साधु ने वली साधवी रे, श्रावक श्राविका सार ॥ सं० ॥ सर्व अपाय निषेधतो रे, सत्तरमुं पद धार ॥ २२ ॥ सं० ॥ सूत्र अर्थ अपूर्वनुं रे, ग्रहण करे ऋषिराय ॥ सं० ॥ एम अढारमुं पद जलुं रे, नित्य आराधन थाय ॥ २३ ॥ सं० ॥ श्रद्धाने दीपावतुं रे, अवर्णवादनो रोक ॥ इम श्रुतज्ञाननी जक्तिथी रे, ठंगणीशमुं गतशोक ॥ २४ ॥ सं० ॥ विद्या निमित्त कविपणे रे, वाद कहे वली धर्म ॥ सं० ॥ शासननी उन्नति करे रे, विशमा पदनो ए मर्म ॥ २५ ॥ सं० ॥ तीर्थंकर नाम गोत्रने रे, अर्जे शंखकुमार ॥ सं० ॥ दीर्घ काल पाल्युं जलुं रे, संयम निरतिचार ॥ २६ ॥ सं० ॥ अंते अणसण आदरे रे, पादोपगमन विशाल ॥ सं० ॥ वृद्धकाल परे थिर थइ रे, करे समाधिमां काल ॥ २७ ॥ सं० ॥ अपराजित विमानमां रे, शंख ने जसमती दोय ॥ सं० ॥ तिम मतिप्रज दोय बांधवा रे, देवपणे सहु होय ॥ २८ ॥ सं० ॥ तेत्रीश सागर आउखे रे, कल्पमां बत्रीश जाल ॥ सं० ॥ आठमा जवमां एणी परे रे, जोगवे जोग विशाल ॥ २९ ॥ सं० ॥ चोथे अधिकारे कही रे, ए सत्तरमी ढाल ॥ सं० ॥ ए अधिकार पूरण थयो रे, आठमो जव सुविशाल ॥ ३० ॥ सं० ॥ पहेले अधिकारे कही रे, ढालो चार उदार ॥ सं० ॥ नव जाखी बीजा तणी रे, त्रीजानी अग्यार ॥ ३१ ॥ सं० ॥ ॥ चोथानी सत्तर कही रे, सवि ठंगणपचास ॥ सं० ॥ प्रथम खंम पूरण थयो रे, हर्षे अधिक उल्लास ॥ ३२ ॥ सं० ॥ सत्यविजय गुरु राजीया रे, कपूरविजय तस शिष्य ॥ सं० ॥ क्षमाविजय तस पाटवी रे, अधिकी

जास जगीश ॥ ३३ ॥ सं० ॥ तस पट्टोदय जगीयो रे, मानुं अजिनव जा ॥ सं० ॥ जिनविजयो जगमां जयो रे, जस नामे सुखखाण ॥ ३४ ॥ सं० ॥ श्रुतउदधि पारंगमी रे, उत्तमविजय गुरु नाम ॥ सं० ॥ रत्नविजय गणि कहेणथी रे, उद्यम कीध उद्दाम ॥ ३५ ॥ सं० ॥ पद्मविजय कहे जिन तणा रे, पूरव जव विस्तार ॥ सं० ॥ जाख्या अति हर्षे करी रे, सुणतां जय जयकार ॥ ३६ ॥ सं० ॥ सर्व गाथा ॥५६ए॥ इति चतुर्थोऽधिकारः ॥४॥ खंम खंम सरसाइ घणी, जिम साकर जेली पय जणी ॥ गुरु श्रीउत्तमविजयथी लह्यो, प्रथम खंम एम पद्मे कह्यो ॥ ५७० ॥ प्रथमाधिकारे सर्व गाथा ॥ ३७ए ॥ द्वितीयाधिकारे ॥ ३२२ ॥ तृतीयाधिकारे ॥ ३७६ ॥ चतुर्थाधिकारे ॥ ५७० ॥ सर्व गाथा ॥ १६४७ ॥ इति प्रथमः खंमः समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अथ नेमिनाथचरित्रे द्वितीयखंडस्य प्रथमोऽधिकारः प्रारज्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमी सरसती गुणवती, जे मुखकज मंमाण ॥ वीजो खंड हवे वर्णवुं, श्रोता सुणो सुजाण ॥ १ ॥ सूरजमंडन पास वली, प्रणमुं धर्म जिणंद ॥ जे जव पास निवारीने, आपे धर्म अमंद ॥ २ ॥ श्रीमलधार गछे नमुं, हेमसूरि जस नाम ॥ जास वचनरस लव लही, लहीये ए कवि गाम ॥ ३ ॥ कुमारपाल जूपालनो, जे गुरु हेम सूरींद ॥ तस प्रणमी तस वचनथी, जाखुं चरित्र जिणंद ॥ ४ ॥ दीक्षा विद्यागुरु नमुं, उत्तम सुविधि जास ॥ शुद्ध प्ररूपक ने वली, बहु किरिया अज्यास ॥ ५ ॥ जिम जिम जाखुं आगले, तिम रस अधिको थाय ॥ तिणे श्रोता सुणजो सवे, आलस दूर उमाय ॥ ६ ॥ एक हेम जो कर चढे, तो दुःखीयो नवि थाय ॥ दोय हेम जस हाथमां, तस वच किम न पूजाय ॥ ७ ॥ जविजन जक्ति धरी घणी, करो निद्रा तुमे दूर ॥ बांधे कांक्षा मोहनी, एह प्रमादथी जूर ॥ ८ ॥ आठ दोष प्रमादथी, होवे परगट जाव ॥ होय अणाण संशय वली, मिथ्याज्ञान स्वजाव ॥ ए ॥ राग द्वेष मतिभ्रंश तिम, धर्म अनादर थाय ॥ दुःप्रणिधाने योगनो, एम अवगुण कहेवाय ॥ १० ॥ यतः ॥ जगवतीसूत्रे ॥ कहणं जंते जीवा कंखा मोहणिद्धं, कम्मं बंधंति ॥ गोयमा दपचयं

॥ इत्यादौ, तद्वृत्तौ ॥ गाथा ॥ पमाउय मुणिंदेहिं, नणिउं अह नेएउं ॥ अन्नाणं संसउ चेव, मिछानाणं तहेव य ॥ १ ॥ रागो दोसो मइप्रासो, धम्मंमि अणायरो ॥ जोगाण डुप्पणीहाणं, अछहा वज्जिअवउं ॥ २ ॥ ते कारण तुम्हे नविजना, मत करजो परमाद ॥ सुणशे जे सुणशे कथा, रसउल्कर्षे आह्लाद ॥ ११ ॥ आठे नव एम वर्णवी, नवमो नाखुं सार ॥ हरिवंशे प्रनु उपना, जिनवर नेमकुमार ॥ १२ ॥ ते कारण हरिवंशनी, कहुं उत्पत्ति उदार ॥ जे सांनलतां नव तणा, जाये पापविकार ॥ १३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ अरज अरज सुणोने रुमा राजीया हो जी ॥ ए देशी ॥ ऋषन ऋषन जिनेश्वरना थया हो जी, चक्री नरत नरिंद ॥ पाट पाट असंख्याता वही गया हो जी, उपना सीयल जिणंद ॥ ऋ० ॥ १ ॥ तेहना तेहना तीर्थमां उपनो हो जी, सुमुख नामे नरिंद ॥ आव्यो आव्यो कोसंबी बाहिरे हो जी, रयवाडीने आणंद ॥ ऋ० ॥ २ ॥ वीर वीर कुविंदनी नारजा हो जी, वनमाला तिहां दीठ ॥ अतिशय अतिशय रूपवती नली हो जी, देखी जगमां उक्किठ ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ नारीने नारीने अंतेउरे ठवे हो जी, तव ते वीर कुविंद ॥ तेहना तेहना वियोगथी आकलो हो जी, करतो बहुत आक्रंद ॥ ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ फाटां फाटां वस्त्र पहेर्यां तिणे हो जी, धूले खरडी देह ॥ वनमाला वनमाला करतो थको हो जी, हिंडे परवश्यो तेह ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ पुरमां पुरमां नमतां एक दिने हो जी, देखे ते नरनाह ॥ नारीए नारीए पण गोंखथी हो जी, दीठो हींमतो राह ॥ ऋ० ॥ ६ ॥ पामी पामी विषाद ते बेहु जणां हो जी, निंदे आतम आप ॥ इण समे इण समे वीजली तिहां पडी हो जी, मानुं लागो शाप ॥ ऋ० ॥ ७ ॥ काल काल करीने उपना हो जी, युगल हरिवर्ष खेत ॥ वीर पण वीर पण तप अज्ञानथी हो जी, सोहम देव संकेत ॥ ऋ० ॥ ८ ॥ अवधि अवधिथी वेर संनारतो हो जी, चंपा नयरीनो राय ॥ पुत्र पुत्र नहीं चंद्रकीर्तिने हो जी, कल्पे तस जमराय ॥ ऋ० ॥ ९ ॥ नेला नेला नगरना जन थया हो जी, खोले रायने तेह ॥ चिंते चिंते देवता युगलने हो जी, मारी तो नवि शकुं रेह ॥ ऋ० ॥ ॥१०॥ जिम डुःख जिम डुःख पामे ए बहु हो जी, तिम करुं हुं निर्धार ॥ धनुशत धनुशतनी करी देहडी हो जी, लावे चंपानी बार ॥ ऋ० ॥ ११ ॥ न-

गर नगरनां लोकने एम कहे हो जी, तुमचो एह राजान ॥ लक्षण लक्षण सहित आव्यो अछे हो जी, हरिवर्षथी एह थान ॥ कु० ॥ १२ ॥ हरि नाम हरि नाम राजा ए रुअडो हो जी, हरणी नामे ए नार ॥ कल्पवृक्ष कल्पवृक्ष खावे वली हो जी, चाखे वली तिणी वार ॥ कु० ॥ १३ ॥ मछ ने मछ ने मृग आदे देइ हो जी, जल थल खेचर जीव ॥ आमिष आमिष एहने आपजो हो जी, कल्पवृक्ष फलथी अतीव ॥ कु० ॥ १४ ॥ एणी परे एणी परे देज्यो तिहां लगे हो जी, जिहां मांस निःकेवल खाय ॥ मदिरा मदिरा प्रमुख देजो तुमे हो जी, जिणी पेरे दुर्गति जाय ॥ कु० ॥ १५ ॥ हाथ हाथ जोडी सहु सांभले हो जी, वचन करे ते प्रमाण ॥ रथवर रथवरमां वेसाडीने हो जी, करता वहोत मंडाण ॥ कु० ॥ १६ ॥ मस्तक मस्तक छत्र धरावतो हो जी, हरिणी देवी ते साथ ॥ वाजती वाजती अतीव दुंदुहि हो जी, विरुद बोले सहु साथ ॥ कु० ॥ १७ ॥ इणी परे इणी परे घर उद्यानथी हो जी, आणी हर्ष अत्यंत ॥ अनुक्रमे अनुक्रमे नयविक्रम थकी हो जी, नाथ समुद्र पर्यंत ॥ कु० ॥ १८ ॥ जगमां जगमां ते परगट थयो हो जी, आयु पण थयुं ह्रास ॥ हरिवर्ष हरिवर्षथी आएयुं युगलीयुं हो जी, तिणे हरिवंश विलास ॥ कु० ॥ १९ ॥ अथवा अथवा नाम हरि हतुं हो जी, तिणे ए थयो हरिवंश ॥ काल काल अनंते उपजे हो जी, एह अछेरुं असंश ॥ कु० ॥ २० ॥ एहवां एहवां ए चोवीशीए हो जी, दश आश्चर्य ते थाय ॥ ग्रंथ ग्रंथ विस्तारना भय थकी हो जी, नवि चाखुं इण ठाय ॥ कु० ॥ २१ ॥ यतः ॥ उवसग्ग गप्भहरणं, इत्थी तित्थं अभाविया पुरिसा ॥ कण्हस्स अवरकंका, अवरयणं चंदसूरेणं ॥ १ ॥ हरिवंसकुलुप्पत्ति, चमरुप्पाओ अ अठसय सिद्धा ॥ असंजयाण पूया, दसविअरणं तेण कालेण ॥ २ ॥ हरिनृप हरिनृप पुत्र ते उपनो हो जी, पृथिवीपति नामे राय ॥ तेहनो तेहनो महगिरि सुत थयो हो जी, हिमगिरि नृप सुत सार ॥ कु० ॥ ॥ २२ ॥ तेहनो तेहनो वसुगिरि सुत थयो हो जी, मित्रगिरि सुत सार ॥ एणी परे एणी परे पाट असंख्य थया हो जी, उत्तम जस अवतार ॥ कु० ॥ ॥ २३ ॥ पुत्र पुत्र थइ लीये दीक्षाने हो जी, पाले संयम चार ॥ अनुक्रमे अनुक्रमे मुनिसुव्रत थयो हो जी, तीर्थंकरपद धार ॥ कु० ॥ २४ ॥ तेहुने तेहुने पाटे बहु नरपति हो जी, हुआ ते अतिक्रांत ॥ जिनवर जिनवर

नमि एकवीशमा हो जी, तेहनो तीरथ तंत ॥ कु० ॥ २५ ॥ मथुरा मथुरा नगरी दीपती हो जी, जिहां जिनदेउल पास ॥ सुपास सुपास जिनथुभ जिहां भलो हो जी, जांबुनदनी ते खास ॥ कु० ॥ २६ ॥ हरिवंश हरिवंशमां यडु नृप हुआ हो जी, तेहने शूर ते पुत ॥ शूरने शूरने शौरि सुवीर थया हो जी, सुत दो राखे घरसूत ॥ कु० ॥ २७ ॥ शौरि शौरिने राज्य थापी करी हो जी, युवराजे ते सुवीर ॥ पामी पामी वैराग्य ते आदरे हो जी, दीक्षा ते महाधीर ॥ कु० ॥ २८ ॥ मथुरा मथुरानुं राज सुवीरने हो जी, शौरि दीये लघु भ्रात ॥ जइने जइने कुशार्त्त देशे करे हो जी, शौर्यपुरी सुविख्यात ॥ कु० ॥ २९ ॥ अंधक अंधकवृष्णि आदि भला हो जी, शौरि रायने जात ॥ भोज भोजवृष्ण्यादि सुवीरने हो जी, तस बल पार न थात ॥ कु० ॥ ३० ॥ राज्य राज्य आपी भोजवृष्णिने हो जी, सिंधु देशे ते जाय ॥ सौवीर सौवीर नगर थापे तिहां हो जी, सुवीर ते महाराय ॥ कु० ॥ ३१ ॥ शौरि शौरि राजा अंधकवृष्णिने हो जी, थापी राज्य उदार ॥ मुनिवर मुनिवर सुप्रतिष्ठ कने हो जी, आदरे ते व्रतभार ॥ कु० ॥ ३२ ॥ पाली पाली प्रव्रज्या आकरी हो जी, पामी केवलज्ञान ॥ भविजन भविजनने प्रतिबोधीने हो जी, पाम्या शिवपुर थान ॥ कु० ॥ ३३ ॥ भोज भोजवृष्णि मथुरा धणी हो जी, तेहने पुत्र ते थाय ॥ उग्रसेन उग्रसेन ते महा विक्रमी हो जी, जेहना जग गुण गाय ॥ कु० ॥ ३४ ॥ अंधक अंधकवृष्णिने भारया हो जी, सुभद्रा एणी नाम ॥ पुत्र पुत्र थया दश तेहने हो जी, उत्तम गुणना धाम ॥ कु० ॥ ३५ ॥ समुद्र समुद्रविजय अक्षोभ वली हो जी, स्तिमित ने सागर नाम ॥ हिमवंत हिमवंत अचल धरण भला हो जी, पूर्ण आठमे ठाम ॥ कु० ॥ ३६ ॥ अभिचंद्र अभिचंद्र वसुदेव जाणीये हो जी, दश दशार्ह कहेवाय ॥ कुंती कुंती ने माद्री दो बे बही हो जी, ए संतान सहाय ॥ कु० ॥ ३७ ॥ कुंती कुंती परणावे पांडु प्रते हो जी, दमघोष नृपने दे अन्य ॥ एणी परे एणी परे राज्यकारज चले हो जी, पामी परगट पुण्य ॥ कु० ॥ ३८ ॥ त्रीजे त्रीजे खंडे पहेली कही हो जी, ढाल प्रथम अधिकार ॥ पंडित पंडित उत्तमविजयनो हो जी, पद्म कहे सुखकार ॥ कु० ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अंधकवृष्णि एक दिने, सुप्रतिष्ठ अणगार ॥ अवधिज्ञानी मुनिवर

प्रते, पूछे प्रश्न उदार ॥ १ ॥ पुत्र अछे दश माहरे, दशमो छे वसुदेव ॥ रूपथी मानुं अनंग पण, आवी करतो सेव ॥ २ ॥ सहुने लागे वाहलो, वहोंतेर कला निधान ॥ मानुं जस विक्रमे गयो, शक्र ते ऊर्ध्व विमान ॥ ३ ॥ शुं इणे पुण्य कर्खुं घणुं, जाखो करुणावंत ॥ पूरव जव तव उपदिशे, मुनिवर तेह महंत ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी नराणानी ॥ मगधमंकले नंदिग्राम छे रे, रोर विप्रनी नारी रे॥ राजनीया ॥ कर्म कस्यां बूटे नहीं रे॥ ए आंकणी ॥ सोमिला नाम सोहामणी रे, सुत नंदिषेण कुमार रे॥ रा० ॥ १ ॥ क० ॥ बालपणे माय तायने रे, हरी गयो यम महीपाल रे ॥ रा० ॥ क० ॥ मंदजाग्य शिरोमणि रे, नंदिषेण ते बाल रे॥ रा० ॥ २ ॥ क० ॥ अनुक्रमे ते महोटो थयो रे, गागर परे वध्युं पेट रे ॥ रा० ॥ क० ॥ दंत दंतोशलनी परे रे, मानुं गजवरे करी जेट रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ क० ॥ वामणो ने वह्लज्ज नहीं रे, शिरना खूणा चार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ कान ते ठींकर शोजता रे, वदन तुंबड अनुहार रे ॥ रा० ॥ ४ ॥ क० ॥ हाथ टुंकमा तेहना रे, आंख पीया नित थाय रे ॥ रा० ॥ क० ॥ मुख उपर माखी बणवणे रे, नाक ते बेसी जाय रे ॥ रा० ॥ ५ ॥ क० ॥ केरू उदर मल्यां टुकमां रे, पग पण अतिहि खुवार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ करज परे सम को नहीं रे, माने नवि कोइ कार रे ॥ रा० ॥ ६ ॥ क० ॥ स्वजनने पण ते नवि गमे रे, मूले जीवे नित्य रे ॥ रा० ॥ क० ॥ एक दिन माउल निज घरे रे, तेमी आवे धरी प्रीति रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ क० ॥ पुत्री सात छे तेहने रे, अणपरणी रूपवंत रे ॥ रा० ॥ क० ॥ मामो कहे जाणेजने रे, कन्या देशुं एक तंत रे ॥ रा० ॥ ८ ॥ ॥ क० ॥ तेह लोजथी नित करे रे, माउल घर सहु काम रे ॥ रा० ॥ क० ॥ जाणे वात पहेली धुया रे, कहे एणी परे तिणे ठाम रे ॥ रा० ॥ ९ ॥ क० जो मुजने परणावशे रे, नंदिषेणने तात रे ॥ रा० ॥ क० ॥ तो मरशुं निश्चे सही रे, नंदिषेणे सुणी वात रे ॥ रा० ॥ १० ॥ क० ॥ मनमां खेद लह्यो घणो रे, माउल बोले ताम रे॥ रा० ॥ क० ॥ देउं पुत्री बीजी तुने रे, खेद म कर इण काम रे ॥ रा० ॥ ११ ॥ क० ॥ वात सुणी बीजी कहे रे, खाउं विष इण वार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ नवि परणुं नंदिषेणने रे, मामो जाखे तिवार रे ॥ रा० ॥ १२ ॥ क० ॥ अनुक्रमे साते निषेधती रें, मामो

कहे सुण बाल रे ॥ रा० ॥ क० ॥ पुत्री कोइक परणावशुं रे, जाचीने तत-
काल रे ॥ रा० ॥ १३ ॥ क० ॥ धीरो थाजे बालका रे, तव चिंते नंदिषेण रे,
॥ रा० ॥ क० ॥ माउलपुत्री इछे नहीं रे, अन्य वांछे कहो केण रे ॥ रा०
॥ १४ ॥ क० ॥ हुं तो दुःखित रूपथी रे, इम मन धरी वैराग्य रे॥ रा०
॥ क० ॥ नीकल्यो माउल घर थकी रे, कीधो नंदिपुर त्याग रे ॥ रा० ॥१५॥
॥ क० ॥ रत्नपुरे पहोतो वही रे, क्रीमा करतां जाम रे ॥ रा० ॥ क० ॥ दंप-
तीने देखी तिहां रे, निज निंदा करे ताम रे ॥ रा० ॥ १६ ॥ क० ॥ मर-
वानी इछा करी रे, कोइ वनांतरे जाय रे ॥ रा० ॥ क० ॥ देखीने प्रणमे
तिहां रे, सुस्थित मुनि ऋषिराय रे ॥ रा० ॥ १७ ॥ क० ॥ जाणी ज्ञानथी
मुनिवरु रे, नाखे एणी परे वाण रे ॥ रा० ॥ क० ॥ मरण न कर महा-
भाग तुं रे, पामीश दुःखनी खाण रे ॥ रा० ॥ १८ ॥ क० ॥ धर्म न कीधो
परभवे रे, दुःख पामे तिणे आज रे ॥ रा० ॥ क० ॥ सुख अर्थी करो
धर्मने रे, धर्मथी लहो शिवराज रे ॥ रा० ॥ १९ ॥ क० ॥ आत्मघात कीधा
थका रे, सुख नवि होवे कोय रे ॥ रा० ॥ क० ॥ धर्म दीक्षाथी पामीये रे,
भव भव सुख लहे सोय रे ॥ रा० ॥ २० ॥ क० ॥ सुणी प्रतिबोध ते पा-
मीयो रे, लीये महाव्रत मुनि पास रे ॥ रा० ॥ क० ॥ गीतारथ अभिग्रह
करे रे, साधु वैयावच्च खास रे ॥ रा० ॥ २१ ॥ क० ॥ बाल ग्लानादिक सा-
धुनी रे, वेयावच्च करे तेह रे ॥ रा० ॥ क० ॥ अभिग्रह ते पूरो करे रे,
गुणगणनो मुनि गेह रे ॥ रा० ॥ २२ ॥ क० ॥ एक दिन इंद्र प्रशंसता रे,
देवसभा मांहि सार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ नंदिषेण समो नहीं रे, वेयावच्च
करनार रे ॥ रा० ॥ २३ ॥ क० ॥ शक्रवचन अणमानतो रे, देव एक कहे
एम रे ॥ रा० ॥ क० ॥ पूछीथी नगर चंपाइशुं रे, ते मानुं कहो केम रे ॥
रा० ॥ २४ ॥ क० ॥ रूप धरी ग्लान साधुनुं रे, रत्नपुर उद्यान रे ॥
रा० ॥ क० ॥ वेसारी ते साधुने रे, कूट धरी मन ध्यान रे ॥ रा० ॥ २५ ॥
॥ क० ॥ रूप बीजुं वली साधुनुं रे, करी जाये पुर मांह रे ॥ रा० ॥ क० ॥
मुनि वसतिए आवतो रे, मनमां धरी उत्साह रे ॥ रा० ॥ २६ ॥ क० ॥ बीजे
खंडे बीजी थइ रे, ढाल प्रथम अधिकार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ पद्मविजय कहे
सांभलो रे, मुनिदृढता अधिकार रे ॥ रा० ॥ २७ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तप तपता अति आकरां, नंदिषेण मुनिराज ॥ पारणदिन तेहज अछे, करता आतम काज ॥ १ ॥ करवा बेठा आहार ते, कवल उपाडे जाम ॥ तव सुर साधुवेषथी, बोले वचन उद्दाम ॥ २ ॥ करी प्रतिज्ञा एहवी, वेयावच्च करुं सर्व ॥ पण तुं बोले एटलुं, नवि करतो धरे गर्व ॥ ३ ॥ अतिसार रोगे करी, पीडे मुनिवर अंग ॥ तृषाक्रांत मुनिवर जला, वनमां बेठा चंग ॥ ४ ॥ तेहनी खबर लीधा विना, जोजन करतो तुंहीं ॥ पेटजरा थातां थका, होय प्रतिज्ञा शुंहीं ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥ समतासागर मुनिवर चालीया, मूकी कवल ते ठामो जी ॥ पाणी लेवा रे मुनि घर घर जमे, लब्धि तणा गुरु धामो जी ॥ १ ॥ स० ॥ कल्प होय ते सुर अकल्प करे, पण मुनि लब्धिप्रजावे जी ॥ पाणी शुद्ध मल्युं तव लेइ वल्या, वन अजिमुख ते जावे जी ॥ २ ॥ स० ॥ ढुकडा आवे रे तव माया मुनि, जाखे वचन कठोर जी ॥ रे मूरख हुं अवस्था एहवी, पाम्यो बेठो कुठोर जी ॥ ३ ॥ स० ॥ जोजनलोलुप तुं तो थइ रह्यो, शीघ्र न आव्यो केम जी ॥ वेयावच्चनी प्रतिज्ञा ताहरे, कहे केम रहेशे एम जी ॥ ४ ॥ स० ॥ कहे नंदिषेण स्वामी माहारो, खमजो तुम्हे अपराधो जी ॥ सज्ज करुं तुम्ह थोडे दिन हवे, यद्यपि रोग अगाधो जी ॥ ५ ॥ स० ॥ पाणी एह उचित छे मुनिवरु, एम कही पाये नीरो जी ॥ कहे चालो स्वामी जी उपाशरे, नंदिषेण मुनि धीरो जी ॥ ६ ॥ स० ॥ ग्लान मुनि कहे धिग् तुज मुंजने, चालणने असमर्थो जी ॥ देखीने वली मुजने शुं कहे, तुज प्रतिज्ञा व्यर्थो जी ॥ ७ ॥ स० ॥ खंध वेसारीने नंदिषेण जी, चाल्या मारग जामो जी ॥ पगे पगे क्रोध करे माया मुनि, जाखे एणी परे तामो जी ॥ ८ ॥ स० ॥ शीघ्र तुं केम चाले रे पापीया, मुजने उपजे खेदो जी ॥ हलवे हलवे चाल तुं शुज परे, उपजे मुज प्रस्वेदो जी ॥ ९ ॥ स० ॥ तव मुनि चाले मंद गते करी, देव अमर्ष धरंत जी ॥ करे वमीनीति मुनिनी उपरे, वली इणी परे जाखंत जी ॥ १० ॥ स० ॥ वेगनो जंग करे तुं किणी परे, तव चिंते ऋषिरायो जी ॥ रोग

याणुं ते करे, तप तणुं फल जो होय ॥ तो भवांतर नृपवध भणी, थाउं कही तप खोय ॥ ए ॥ मु० ॥ तिहां आउखुं पूरुं करी, उग्रसेन नृपनी नार ॥ धारणी तणे उदरे थयो, करतो अतिहि विकार ॥ १० ॥ मु० ॥ दोहद ते एहवो उपजे, पतिमांस भक्षण काज ॥ दिन दिन ते कृशता लहे, धरती ते मनमां लाज ॥ ११ ॥ मु० ॥ घणे कष्टथी दोहला तणी, कही वात सघली जाम ॥ राखी अंधारे ओरडे, उग्रसेन नृपने ताम ॥ १२ ॥ मु० ॥ शशला तणुं आमिष ग्रही, बांधे ते नृपने पेट ॥ मंत्री ते कापी कापीने, आपे राणीने नेट ॥ १३ ॥ मु० ॥ दोहला ते राणीना थया, संपूर्ण भावे त्यांह ॥ मन मांहे राणी चिंतवे, जावुं हवे कहो क्यांह ॥ १४ ॥ मु० ॥ भरतार विना पुत्रे किस्युं, हवे जीववुं नहीं युत्त ॥ मरवा भणी ते सज्ज थइ, तव मंत्री कहे इम उत्त ॥ १५ ॥ मु० ॥ साते दिने देखावशुं, जीवतो स्वामी तुझ ॥ एम स्वस्थ करी राणी प्रते, पण नवि कह्युं ते गुह्य ॥ १६ ॥ ॥ मु० ॥ देखावता दिन सातमे, उग्रसेन नृपने जाम ॥ करे महोत्सव हर्षशुं, धारणी राणी ताम ॥ १७ ॥ मु० ॥ पोष वदि चौदश दिने, विष्टि ने मूल नक्षत्र ॥ प्रसवे ते राणी यामिनी, विष वृक्ष परे कुपुत्र ॥ १८ ॥ मु० ॥ राणी ते बीहीनी तेहथी, दोहला तणे अनुसार ॥ पूर्वे करावी कांसनी, पेटी ते अति मनोहार ॥ १ए ॥ मु० ॥ पुत्रने तेहमां खेपवी, रतने करी ते पूर ॥ नृपनाम अंकित मुद्रिका, वली पत्रिका लखी तूर ॥ २० ॥ मु० ॥ आपी ते दासी हाथमां, वेवरावी जमुना मांहि ॥ रायने राणी कहे तदा, मृत पुत्र प्रसव्यो त्यांहि ॥ २१ ॥ मु० ॥ शौरी ते पुरनी बाहिरे, मंजूषा आवी जाम ॥ शौचने अर्थे आवीयो, सुभद्र देखे ताम ॥ २२ ॥ मु० ॥ काढे नदीना पूरथी, परभात समये तेह ॥ पत्रिका रत्ननी मुद्रिका, देखे शिशु गुणगेह ॥ २३ ॥ मु० ॥ पाम्यो ते विस्मय आकरो, आणे सुखे निज गेह ॥ निज नारीने दीये सुत भणी, लहे हर्ष अति ससनेह ॥ २४ ॥ मु० ॥ पेटी तणे नामे करे, दंपती अभिधा कंस ॥ दिन दिन ते हवे वाधतो, जणवे पोतानो वंश ॥ २५ ॥ मु० ॥ बालक तणा ते वृंदमां, क्रीमतो करे कल्लोल ॥ थाय ते राजा सहु तणो, कोइ न करे तस तोल ॥ २६ ॥ मु० ॥ बीजे ते खंडे ढाल ए, चोथी प्रथम अधिकार ॥ कहे पद्म नवि जाये कही, कस्यां पुण्य ते निर्धार ॥ २७ ॥ मु० ॥ सर्व गाथा ॥ १५२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रमतां ते बालक प्रते, मारे कूटे नित्य ॥ लोक उलंजा तस करे, मात पिता शुन्न रीत ॥ १ ॥ ते पण दंपती कंसने, आपे जइ वसुदेव ॥ मर्यादा दश वर्षनी, कंस करे तस सेव ॥ २ ॥ ॥ प्रीति वधी ते वेहुने, सकल कला जणे दोय ॥ क्रीमा पण साथे करे, यौवन पण तस होय ॥ ३ ॥ पाम्या तेह प्रसिद्धि एम, ते वसुदेव ने कंस ॥ चंद्र अने अंगार जेम, लोक करे परशंस ॥ ४ ॥ शुक्तिमती नयरी थकी, सुवसु वसुनो नंद ॥ नासी नागपुरे गयो, जाणी क्लेश आक्रंद ॥ ५ ॥ पुत्र वृहद्रथ तेहनो, राजग्रहे ते जाय ॥ तेहना वंशमां उपनो, नाम वृहद्रथ राय ॥ ६ ॥ पुत्र जरासंध तेहनो, प्रतिवासुदेव महंत ॥ त्रणे खंमनो अधिपति, आण प्रचंम फुरंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ घोमी तो आइ थारा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥ एक दिन दूत ते मोकले ॥ राजनजी ॥ समुद्रविजयने पास हो ॥ करो काम अमारुं एटलुं ॥ ए आंकणी ॥ गिरि वैताढ्य पासे वसे ॥ रा० ॥ सिंहपुरी सुखवास हो ॥ १ ॥ क० ॥ सिंह परे अति आकरो ॥ रा० ॥ सिंहरथ नामे राय हो ॥ ॥ क० ॥ बांधीने आणो इहां ॥ रा० ॥ तो करशुं हुं पसाय हो ॥ २ ॥ क० ॥ तेहने निज पुत्री आपशुं ॥ रा० ॥ वली मनवल्लन्न शुन्न गाम हो ॥ क० ॥ एम जरासंधे कहावीयो ॥ रा० ॥ बलवंत सुणी तुऊ नाम हो ॥ ३ ॥ क० ॥ समुद्रविजय जब सज्ज होये ॥ रा० ॥ तब वसुदेव ने कंस हो ॥ क० ॥ करी प्रणामने विनवे ॥ रा० ॥ हुं सिंहरथ करुं ध्वंस हो ॥ ४ ॥ क० ॥ समुद्रविजय कहे सांजलो ॥ रा० ॥ तुम्हे अति बालकुमार हो ॥ क० ॥ युद्धनो अवसर तुऊ नहीं ॥ रा० ॥ तुमे रहो इहां करो सार हो ॥ ५ ॥ क० ॥ आग्रहथी वली याचीयो ॥ रा० ॥ तब दीये सेना साथ हो ॥ क० ॥ शीघ्र आवे वसुदेवने ॥ रा० ॥ सन्मुख ते सिंहनाथ हो ॥ ६ ॥ ॥ क० ॥ युद्ध लागुं बेहुने तिहां ॥ रा० ॥ हारे वसुदेव सैन्य हो ॥ क० ॥ कंस थयो तब सारथी ॥ रा० ॥ युद्ध करे अति अदैन्य हो ॥ ७ ॥ क० ॥ सुर असुर परे अमर्षे ॥ रा० ॥ विविध शस्त्रे करे युद्ध हो ॥ क० ॥ परिघ लेइ एक हाथमां ॥ रा० ॥ कंस ते उठ्यो बुद्ध हो ॥ ८ ॥ क० ॥ जांज्यो सिंहरथ रथ प्रते ॥ रा० ॥ चूर्ण थइ गयो तेह हो ॥ क० ॥ तब

सिंहरथ क्रोधे चढ्यो ॥ रा० ॥ लेइ करवाल कर तेह हो ॥ ए ॥ क० ॥ मारवा धावे कंसने ॥ रा० ॥ तव क्षुरप्रे वसुदेव हो ॥ क० ॥ छेदी असिने बांधीयो ॥ रा० ॥ वृक जिम छागने हेव हो ॥ १० ॥ क० ॥ कंस नाखे वसुदेवना ॥ रा० ॥ रथमां छल बल जाण हो ॥ क० ॥ सैन्य सवि भागी गयुं ॥ रा० ॥ सिंहरथनुं सपराण हो ॥ ११ ॥ क० ॥ जय पाम्या वसुदेव जी ॥ रा० ॥ शौरीपुरमां जाय हो ॥ क० ॥ समुद्रविजय हरख्या घणुं ॥ रा० ॥ करे प्रशंसा ते राय हो ॥ १२ ॥ क० ॥ समुद्रविजय वसुदेवने ॥ रा० ॥ भाखे एकांते एम हो ॥ क० ॥ कौष्टुक निमित्तिए भाखीयुं ॥ रा० ॥ मुझने धरी अति प्रेम हो ॥ १३ ॥ क० ॥ जीवयशा जरासंधने ॥ रा० ॥ पुत्री लक्षण हीन हो ॥ क० ॥ पति पितृकुल क्षय करी ॥ रा० ॥ एह वात अति दीन हो ॥ १४ ॥ क० ॥ सिंहरथ राय आण्या थकी ॥ रा० ॥ पुत्री देशे तास हो ॥ क० ॥ तास निवारण चिंतवो ॥ रा० ॥ कहे वसुदेव ते खास हो ॥ १५ ॥ क० ॥ कंसे सिंहरथ बांधीयो ॥ रा० ॥ आपो कन्या एण हो ॥ ॥ क० ॥ वणिकपुत्र राजा कहे ॥ रा० ॥ नहीं आपे कोइ वयण हो ॥ १६ ॥ ॥ क० ॥ विक्रम क्षत्रिय सारिखुं ॥ रा० ॥ देखी इछे निर्धार हो ॥ क० ॥ तेडे वणिकने भूपति ॥ रा० ॥ पूछे हवे वारंवार हो ॥ १७ ॥ क० ॥ वात कही सवि कंसनी ॥ रा० ॥ आपे मुद्रिका जेह हो ॥ क० ॥ पत्रिका पण आपे तदा ॥ रा० ॥ पत्रिका वांचे तेह हो ॥ १८ ॥ क० ॥ वांची चिंते भूपति ॥ रा० ॥ उग्रसेन सुत सार हो ॥ क० ॥ ते विना वीर्य न एहवुं ॥ रा० ॥ जगमां कोइ निर्धार हो ॥ १९ ॥ क० ॥ समुद्रविजय लेइ कंसने ॥ रा० ॥ जाए जरासंध पास हो ॥ क० ॥ सोंपे सिंहरथ राजीयो ॥ रा० ॥ कंस पराक्रम वास हो ॥ २० ॥ क० ॥ जीवयशा आपी तिणे ॥ रा० ॥ हवे कहे नगरी माग हो ॥ क० ॥ मथुरा नगरी मागतो ॥ रा० ॥ तात वैरनो लाग हो ॥ २१ ॥ क० ॥ मथुरा आपी कंसने ॥ रा० ॥ आव्यो मथुरा ताम हो ॥ क० ॥ काष्ठपंजरमां खेपवे ॥ रा० ॥ उग्रसेन तिणे ठाम हो ॥ २२ ॥ क० ॥ पूर्वे वात सुणी हती ॥ रा० ॥ वणिके भाखी तिवार हो ॥ क० ॥ तेहथी क्रोधे धमधम्यो ॥ रा० ॥ मागी मथुरा प्यार हो ॥ २३ ॥ क० ॥ पुत्र घणा उग्रसेनने ॥ रा० ॥ अयमत्तादिक नाम हो ॥ क० ॥ असमंजस देखी तातने ॥ रा० ॥ होय वैराग्यनुं धाम हो ॥ २४ ॥ क० ॥ व्रत आदरे ॥ रा० ॥ तात दुःखे तिणी वार हो ॥ क० ॥ राज्य

तणां सुख जोगवे ॥ रा० ॥ माने सहु तस कार हो ॥ २५ ॥ क० ॥ जामाता जरासंधनो ॥ रा० ॥ वली विक्रम निज देख हो ॥ क० ॥ तृण सम जाणे सहु प्रते ॥ रा० ॥ त्रण जुवन सुविशेष हो ॥ २६ ॥ क० ॥ बीजे खंडे पांचमी ॥ रा० ॥ ढाल प्रथम अधिकार हो ॥ क० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो ॥ रा० ॥ सुणतां जय जयकार हो ॥ २७ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ १०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शौरीपुरथी तेमीयो, सुजद्र वाणियो जेह ॥ बहु सुवर्णादिक दानथी, सत्कारे धरी नेह ॥ १ ॥ तव धारणी बहु विलपती, करे अनेक पोकार ॥ पण ते दुष्ट मूके नहीं, यमराजा अनुहार ॥ २ ॥ कंस मंजूषामां ठवी, मूक्यो जमुना मांहि ॥ उग्रसेन जाणे नहीं, मुज अपराध ये यांही ॥ ३ ॥ तिणे मुज जर्त्ता मूक तुं, नित नित जाखे एम ॥ पण मूके नहीं तेहने, पूर्व निदानथी तेम ॥ ४ ॥ समुद्रविजय राजा प्रते, दीधो अति सत्कार ॥ राजगृही नगरी थकी, आवे निज पुर सार ॥ ५ ॥

॥ ढाल बही ॥

॥ धुर समरी सरसती माय, वली प्रणमो सद्गुरुपाय ॥ थुणशुं अर्बुद गिरिराय, जविजन जेटीये जले जावे ॥ ए देशी ॥ वसुदेव शौरीपुर मांहि, करे क्रीमा अति उछांहि ॥ गाम गाम जमे सुख ज्यांहि ॥ १ ॥ सहु तिहां साजन मली आवे, वसुदेव तणा गुण गावे ॥ ए आंकणी ॥ वसुदेव हींमीथी जाणो, विस्तार थकी मन आणो ॥ संक्षेप कहुं इण ठाणो ॥ २ ॥ स० ॥ जिम मंत्र आकर्षी आवे, तिम नगरनारी सहु धावे ॥ वसुदेवने मनमां ध्यावे ॥ ३ ॥ स० ॥ जिम कामण कीधुं होवे, फरी फरी वसुदेवने जोवे ॥ घरे सुखमां को नवि सोवे ॥ ४ ॥ स० ॥ मधुपुमा पुठे जेम माखी, घरमां जाये चित्त राखी ॥ जाइ शीघ्र आवुं इम जाखी ॥ ५ ॥ स० ॥ घरमां नवि दीसे नारी, नवि जोजन करे दुःख वारी ॥ तरसी रहे ते निर्धारी ॥ ६ ॥ स० ॥ एक एकने ठेली जावे, पति जमतो मूकी आवे ॥ निशिदिन ध्यान तेहनुं ध्यावे ॥ ७ ॥ स० ॥ खंडण पीसण व्यापार, रंधण करणी तेती वार ॥ नवि करती नारी एं वार ॥ ८ ॥ स० ॥ न जणाये वरणावरण, करे नागरी तेहनुं शरण ॥ एहने पाल्युं पूर्वे चरण ॥ ए ॥ स० ॥ घरकाम सहि उवेखी, जाये वसुदेवने पेखी ॥ एम नगरलोक सहु देखी ॥ १० ॥ स० ॥

असमंजस वात ए थाय, नित नित एह तो न खमाय ॥ सहु राजद्वारे मली जाय ॥ ११ ॥ स० ॥ कहे समुद्रविजयने एम, कहो प्रभु करीये अमे केम ॥ कहे समुद्रविजय धरी प्रेम ॥ १२ ॥ स० ॥ शुं दुःख छे तुमने दाखो, तुमे स्पष्टपणे मुफ भाखो ॥ तस उत्तर चित्तमां राखो ॥ १३ ॥ स० ॥ सुणो स्वामी वात हमारी, वसुदेव पुठे सहु नारी ॥ ध्यावे चित्तमां सहु तस धारी ॥ १४ ॥ स० ॥ कोइ नासे स्नान करंती, आभूषण अंगे धरंती ॥ विपरीत ते नासे फरंती ॥ १५ ॥ स० ॥ म्हेली छूटी वेणयो चाले, व्यंतरीनी परे पडे टाले, कामीजननां चित्त ते हाले ॥ १६ ॥ स० ॥ एम नगरमां थयुं विपरीत, अमने उपजे अप्रीत ॥ पण न घटे तुम ए रीत ॥ १७ ॥ स० ॥ ए कुमरने राखो वाली, के अमने मूको उचाली ॥ तुमने कहीये खाली खाली ॥ १८ ॥ स० ॥ एम सांभली राय ते बोले, तुमे शे कारण थया टोले ॥ शुं वात करो हल्लोले ॥ १९ ॥ स० ॥ तुम्ह इछित करशुं काज, नवि कहेजो वसुदेव राज ॥ एम कहुं वारंवार हुं आज ॥ २० ॥ स० ॥ विसर्जे सहुने राय, नमवा वसुदेव ते जाय ॥ बेसारे अंके भाय ॥ २१ ॥ स० ॥ कहे समुद्रविजय सुणो वात, कृश दीसे तुम्हारुं गात ॥ अम मनमां चिंता थात ॥ २२ ॥ स० ॥ मत जाजो क्रीमा करवा, बाहिर जावो शे फरवा ॥ देखीजे एक दिन मरवा ॥ २३ ॥ स० ॥ नवनवी कला घरमां बेठा, भणो बुद्धि तणा तुम्हे जेठा ॥ अपूर्व ग्रहो उकिठा ॥ २४ ॥ स० ॥ वैरी दोषी बहु दीसे, कोइ घात करे आवी रीषे ॥ तिणे कहीये विशवावीशे ॥ २५ ॥ स० ॥ वसुदेव विनीतमां वारु, आज्ञा मानी सुखकारु ॥ जेम कह्युं तेम करे अति चारु ॥ २६ ॥ स० ॥ नाटक ने गीत विनोद, करता पामे परमोद ॥ दाने जेम तेह पयोद ॥ २७ ॥ स० ॥ एक दिन तिहां आवती देखे, कुब्जा दासी शुभ वेषे ॥ गंध द्रव्य ते साथे पेखे ॥ २८ ॥ स० ॥ पूछे कुण काजे एह, गंध लेइ जाये ससनेह ॥ कुब्जा बोली सुणी तेह ॥ २९ ॥ ॥ स० ॥ शिवादेवी राणीए कीधुं, समुद्रविजयने दीधुं ॥ म्हें पण आदरथी लीधुं ॥ ३० ॥ स० ॥ वसुदेव कहे सुणो दासी, माहरे अंगे ए थासी ॥ इम कोंटी लीये सुविलासी ॥ ३१ ॥ स० ॥ तव रोषे चढी अति कुब्जा, चूंगा तुं शुं करे जा जा ॥ सुख भोगवो बेठा ताजां ॥ ३२ ॥ स० ॥ जो एहवां चरित्र तुम्ह दीसे, तो यंत्री राख्या रीषे ॥ नीकलवा न दीये तीसे ॥ ३३ ॥

स० ॥ तव पूछे तास विचार, वीहीनी कहे तेणी वार ॥ जे नयरवात निर्धार ॥ ३४ ॥ स० ॥ वीजे खंडे सुविशाल, पहिले अधिकारे रसाल ॥ कहे पद्मविजय ठठी ढाल ॥ ३५ ॥ स० ॥ सर्व गाथा ॥ २२६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ न ठरे वात नारी हृदय, श्वान उदर जिम खीर ॥ जिहां लगे नवि कोइने कहे, तिहां लगे करे तस पीर ॥ १ ॥ मुंज राय नारी थकी, खोयुं शिर ततकाल ॥ नारी चरित्रना अंतनो, नवि पामे कोइ पार ॥ २ ॥ तिहां चिंते वसुदेवजी, मनमां होशे एम ॥ समुद्रविजय राजा तणा, नहींतर इम करे केम ॥ ३ ॥ नगरनारी इछक घणो, फरे पुरमां वसुदेव ॥ यंत्र्यो इम चिंती करी, वृद्ध नाइजी हेव ॥ ४ ॥ एम चिंती दासी प्रते, विसरजी ततकाल ॥ क्षेत्रांतर सूरय गयो, थयो ते संध्याकाल ॥ ५ ॥ लज्जा ने अभिमानथी, देश जोवाने काज ॥ वेष परावर्तन करी, चाल्यो वसुदेव राज ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ हरणी जव चरे लालना ॥ ए देशी ॥ वसुदेव चाल्यो वेगशुं लालना ॥ लाल हो पुर वाहिर ते जाय ॥ कुमर कलानिलो लालना ॥ काष्ट ग्रही तिहां ढुकडां ॥ ला० ॥ ला० ॥ चय रचे तिहां एक ठाय ॥ १ ॥ कु० ॥ नाथ रहित एक शव तिहां ॥ ला० ॥ ला० ॥ वाले ते चय मांहि ॥ कु० ॥ नोजपत्रमां एणी परे ॥ ला० ॥ ला० ॥ इम लखे धरी उछांहि ॥ २ ॥ कु० ॥ जेहना दोष कहे जना ॥ ला० ॥ ला० ॥ वहु गुणवंत पण जेह ॥ कु० ॥ केम जीवे दुःख देइने ॥ ला० ॥ ला० ॥ पितरादिकने तेह ॥ ३ ॥ कु० ॥ शीलवंत पण शुं होवे ॥ ला० ॥ ला० ॥ गुणवंतो पण कांय ॥ कु० ॥ जेहथी होय प्रजा दुःखी ॥ ला० ॥ ला० ॥ दुःख पितरादिक थाय ॥ ४ ॥ कु० ॥ एम चिंती चयमां वल्यो ॥ ला० ॥ ला० ॥ पंचत्व लह्यो वसुदेव ॥ कु० ॥ मृतकारज करजो तुमे ॥ ला० ॥ ला० ॥ चीठी लखी एम देव ॥ ५ ॥ कु० ॥ वांधी गोपुरथंनशुं ॥ ला० ॥ ला० ॥ देवलमां रह्या रात ॥ कु० ॥ नयरी वार रयणी गमी ॥ ला० ॥ ला० ॥ थयो उद्योत प्रजात ॥ ६ ॥ कु० ॥ नीकलीयो वसुदेवजी ॥ ला० ॥ ला० ॥ ब्राह्मणनो करी वेष ॥ कु० ॥ इणी अवसर कोइ अंगना ॥ ला० ॥ ला० ॥ रथ वेठी सुविशेष ॥ ७ ॥ कु० ॥ पीयर जातां वालिका ॥ ला० ॥ ला० ॥ देखी ब्राह्मण तेह ॥ कु० ॥ वालिका कहे

माता प्रते ॥ ला० ॥ ला० ॥ ब्राह्मण थाको एह ॥ ८ ॥ कु० ॥ वेसारो रथ उपरे ॥ ला० ॥ ला० ॥ सुणी वेसारे नार ॥ कु० ॥ अनुक्रमे पहोता ते गाममां ॥ ला० ॥ ला० ॥ स्नान करे वली आहार ॥ ९ ॥ कु० ॥ यक्ष तणे देउल जइ ॥ ला० ॥ ला० ॥ सूतो संध्याकाल ॥ कु० ॥ पांमव पुठे आवीया ॥ ला० ॥ ला० ॥ जाण्यो वसुदेव काल ॥ १० ॥ कु० ॥ खेद लहे सहु यादवा ॥ ला० ॥ ला० ॥ करे आक्रंद पोकार ॥ कु० ॥ हा वसुदेव तुं किहां गयो ॥ ला० ॥ ला ॥ तुं अमचो आधार ॥ ११ ॥ कु० ॥ समुद्रविजय बहु विलपता ॥ ला० ॥ ला० ॥ किहां मुऊ लागुं पाप ॥ कु० ॥ लोकवचनथी राखीयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ घरमां कहीने आप ॥ १२ ॥ कु० ॥ तुम मुख क्यारे देखशुं ॥ ला० ॥ ला० ॥ करे मृत्युनां काम ॥ कु० ॥ वात सुणी वसुदेवजी ॥ ला० ॥ ला० ॥ थिर मन थाये ताम ॥ १३ ॥ कु० ॥ विजयखेटकपुरे आवीयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ तिहां सुग्रीव ठे राय ॥ कु० ॥ श्यामा विजयसेना धुवा ॥ ला० ॥ ला० ॥ रूप, कलानो ठाय ॥ १४ ॥ कु० तेह कलाथी जीतीयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ परणे तिहां दोय नार ॥ कु० ॥ सुख जोगवतां तेहशुं ॥ ला० ॥ ला० ॥ देव परे अति सार ॥ १५ ॥ कु० ॥ नामे अक्रूर नंदन थयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ विजयसेनाने तेह ॥ कु० ॥ ते पण वसुदेव सारिखो ॥ ला० ॥ ला० ॥ मूके प्रछन्न गेह ॥ १६ ॥ कु० ॥ घोर अटवी मांहि गयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ तरषा लागी तास ॥ कु० ॥ पोहतो सरतीरे जिसे ॥ ला० ॥ ला० ॥ आव्यो गज तस पास ॥ १७ ॥ कु० ॥ विंध्याचल पर्वत समो ॥ ला० ॥ ला० ॥ चढीयो तस शिर तेह ॥ कु० ॥ खेद पमाडी गज प्रते ॥ ला० ॥ ला० ॥ बेठो शिर करी देह ॥ १८ ॥ कु० ॥ अर्चिमाली पवनंजयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ विद्याधर ए दोय ॥ कु० ॥ देखी वसुदेव क्रीमतो ॥ ला० ॥ ला० ॥ तेह हरी गया सोय ॥ १९ ॥ कु० ॥ कुंजरावर्त उद्यानमां ॥ ला० ॥ ला० ॥ मूक्यो आणी त्यांहि ॥ कु० ॥ विद्याधर नरपति जलो ॥ ला० ॥ ला० ॥ अशनिवेग वसे ज्यांहि ॥ २० ॥ कु० ॥ श्यामा नामे कन्या जली ॥ ला० ॥ ला० ॥ परणावे तेह राय ॥ कु० ॥ सुख जोगवे संसारनां ॥ ला० ॥ ला० ॥ दंपती काल गमाय ॥ २१ ॥ कु० ॥ एक दिन वीण वजावतां ॥ ला० ॥ ला० ॥ तूठो वसुदेव तास ॥ कु० ॥ माग तुं वर मुऊ पासथी ॥ ला० ॥ ला० ॥ तव कहे ते सुविलास ॥ २२ ॥ कु० ॥

तुम्ह विरह मुऊ मत होजो ॥ ला० ॥ ला० ॥ पूछे कारण तास ॥ कु० ॥ तव श्यामा कहे एणी परे ॥ ला० ॥ ला० ॥ सांजलो धरी उल्लास ॥२३॥ कु० ॥ किन्नरगीतपुरी जली ॥ ला० ॥ ला० ॥ गिरि वैताढ्यमां सार ॥ कु० ॥ अर्चिमाली तिहां राजीयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ तेहने दोय कुमार ॥ २४ ॥ कु० ॥ ज्वलन अशनिवेग नामथी ॥ ला० ॥ ल० ॥ ज्वलनवेग ठवे राज्य ॥ कु० ॥ अर्चिमाली व्रत आदर्युं ॥ ला० ॥ ला० ॥ साधे आतमकाज ॥ कु० ॥ २५ ॥ अंगारक तस सुत उपनो ॥ ला० ॥ ला० ॥ ज्वलननी विमला नारी ॥ कु० ॥ अशनिवेगनी हुं धुवा ॥ ला० ॥ ला० ॥ सुप्रजा मात मलार ॥ कु० ॥ २६ ॥ अशनिवेग जाइ प्रते ॥ ला० ॥ ला० ॥ ज्वलनवेग ठवे राज ॥ कु० ॥ देवलोक ते पामीया ॥ ला० ॥ ला० ॥ जूपति थयो मुऊ ताय ॥ २७ ॥ कु० ॥ राज्य ग्रहे विद्यावले ॥ ला० ॥ ला० ॥ अंगारक जत्रीज ॥ कु० ॥ अशनिवेग अष्टापदे ॥ ला० ॥ ला० ॥ आवे मन धरी खीज ॥ २८ ॥ कु० ॥ चारण मुनि तिहां पेखीयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ पूछे प्रश्न उदार ॥ कु० ॥ राज्य थशे मुऊ के नहीं ॥ ला० ॥ ला० ॥ मुनि वोले तिणी वार ॥ २९ ॥ कु० ॥ तुऊ पुत्री श्यामापति ॥ ला० ॥ ला० ॥ गज जीत्याथी जाण ॥ कु० ॥ तास प्रजाव थकी होशे ॥ ला० ॥ ला० ॥ हरख्यो मुनिवर वाण ॥ ३० ॥ ॥ कु० ॥ नगर वसावी मुऊ पिता ॥ ला० ॥ ला० ॥ मुनिवचने इहां ठाय ॥ ॥ कु० ॥ विद्याधर दोय मोकले ॥ ला० ॥ ला० ॥ जलावर्त्ते नित राय ॥ ३१ ॥ ॥ कु० ॥ देखी गज उपर चढ्यो ॥ ला० ॥ ला० ॥ आण्या तुम इण ठार ॥ कु० ॥ मुऊ परणावी वेगशुं ॥ ला० ॥ ला० ॥ श्यामा नामे नार ॥ ३२ ॥ ॥ कु० ॥ वीजे खंडे सातमी ॥ ला० ॥ ला० ॥ ढाल प्रथम अधिकार ॥ कु० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी ॥ ला० ॥ ला० ॥ होवे जय जयकार ॥ ३३ ॥ कु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्यामा कहे सुण स्वामी जी, पुण्यवंत शिरदार ॥ तुम्हने घात करे रखे, ते अंगार कुमार ॥ १ ॥ धरणेंद्रे विद्याधरे, कीधो छे आचार ॥ अतीत काल वहु उपरे, सांजलजो निर्धार ॥ २ ॥ जिनवर चैत्यनी ढुकडा, नारी तथा मुनि पास ॥ मारे विद्या तेहनी, होवे सर्व निराश ॥ ३ ॥ ते कारण तुम्ह विनवुं, विरह म थाजो स्वाम ॥ एकाकी तुम्ह पापीयो, रखे हणे कोइ ठाम ॥ ४ ॥ वाणी तेहनी सांजली, अंगीकरे वसुदेव ॥ काल विनोद

गमावतो, एक दिन सुतां हेव ॥ ५ ॥ अंगारक खेचर तिहां, हरी जाय आकाश ॥ वलीयो पण ठलनेदथी, नवि पूगे कोइ तास ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ जीरे मारे जाग्यो कुंवर जाम ॥ ए देशी ॥ जीरे मारे जाग्यो वसुदेव जाम, चिंते कुणे मुक अपहस्यो ॥ जीरे जी ॥ जी० ॥ देखे अंगार ते ताम, श्यामा खङ्ग करे धस्यो ॥ जी० ॥ १ ॥ जी० ॥ युद्ध ते करता दोय, श्यामाने खंमित करी ॥ जी० ॥ जी० ॥ वे श्यामा जब थाय, तब जाणे माया खरी ॥ जी० ॥ २ ॥ जी० ॥ करे मुष्टिप्रहार, अंगारक शिर उपरे ॥ जी० ॥ जी० ॥ वज्रे करी सुरेंद्रनाथ, नेदे पर्वत जिणी परे ॥ जी० ॥ ॥ ३ ॥ जी० ॥ अतिविस्तर सर मांहि, तरतो तरतो आवतो ॥ जी० ॥ जी० ॥ वासुपूज्य चैत्य मांहि, आवे धन्य निज नावतो ॥ जी० ॥ ४ ॥ जी० ॥ पीड्यो तेह प्रकार, नाखी दीधो वसुदेवने ॥ जी० ॥ जी० ॥ पड्या सरोवर मांहि, चंपा नयरीने उपवने ॥ जी० ॥ ५ ॥ जी० ॥ पुण्यवंत नर जेह, ते नवि दुःख पामे कदा ॥ जी० ॥ जी० ॥ सर्प होय फूलमाल, पुण्य पूरव कृत होय यदा ॥ जी० ॥ ६ ॥ जी० ॥ जलमां थल होय तास, जेहने पुण्य होये सदा ॥ जी० ॥ जी० ॥ पग पग प्रगटे निधान, पुण्य होये पासे तदा ॥ जी० ॥ ७ ॥ जी० ॥ वैरी होये मित्र, विष अमृत थाय तेहने ॥ जी० ॥ ॥ जी ॥ वन होवे आराम, पुण्य प्रगट होये जेहने ॥ जी० ॥ ८ ॥ जी० ॥ पूरव पुण्यथी एह, पमीयो सरोवर लहेरमां ॥ जी० ॥ जी० ॥ पाम्यो प्रनु दीदार, ते वसुदेव निज लहेरमां ॥ जी० ॥ ए ॥ जी० ॥ वंदना करे निज नाव, राति थाकती तिहां रह्या ॥ जी० ॥ जी० ॥ चंपा नयरमां जाय, मल्यो विप्र मन गहगह्या ॥ जी० ॥ १० ॥ जी० ॥ पुरुष युवान ते त्यांहि, वीणा हाथे सहु कने ॥ जी० ॥ जी० ॥ देखे ठामो ठाम, तव पूछे द्विज नमीने ॥ जी० ॥ ११ ॥ जी० ॥ कहो कारण ए विप्र, द्विज वसुदेवने एम कहे ॥ जी० ॥ जी० ॥ चारुदत्त इहां शेठ, पुत्री एक पुण्ये लहे ॥ ॥ जी० ॥ १२ ॥ जी० ॥ गंधर्वसेना नाम, रूपवती कला आगली ॥ जी० ॥ ॥ जी० ॥ कीधी प्रतिज्ञा एम, नर्त्ता ते करशुं कली ॥ जी० ॥ १३ ॥ जी० ॥ मुजने जीते तेह, वीणावादे हर्षशुं ॥ जी० ॥ जी० ॥ सहु जाणे मन एम, अमे पण तिहां कला वर्षशुं ॥ जी० ॥ १४ ॥ जी० ॥ तिणे सवि

नगरना लोक, वीण वजावे घर बारणे ॥ जी० ॥ जी० ॥ मास मास प्रते अन्न, मले परीक्षा कारणे ॥ जी० ॥ १५ ॥ जी० ॥ सुग्रीव ने यश-ग्रीव, गंधर्व आचारिज कने ॥ जी० ॥ जी० ॥ तिहां सुग्रीव अति सार, कहे ब्राह्मण इम शुन्न मने ॥ जी० ॥ १६ ॥ जी० ॥ जाये सुग्रीवनी पास, ब्राह्मण रूपे नीपनो ॥ जी० ॥ जी ॥ स्कंदिल महारुं नाम, गौतम गोत्रनो उपनो ॥ जी० ॥ १७ ॥ जी० ॥ गंधर्वसेना नारी, परणवानी इछा करुं ॥ जी० ॥ जी० ॥ तुम्ह पासे थइ शिष्य, वीणा शीखवा हर्षे करुं ॥ जी० ॥ ॥ १८ ॥ जी० ॥ मूर्छा ने गुण दोष, थानक नवि जाणे किमे ॥ जी० ॥ जी० ॥ ताडे फीणी तांति, वीण वजावे ते नवि खमे ॥ जी० ॥ १९ ॥ जी० ॥ सुग्रीव जाणी मूर्ख, नवि आदर तेहने करे ॥ जी० ॥ जी० ॥ लोक हसे बहु तास, ए पण जुर्ज होंशज करे ॥ जी० ॥ २० ॥ जी० ॥ गंधर्वसेना नारी, निश्चय ए नर परणशे ॥ जी० ॥ जी० ॥ बोले ग्रामनी वाणी, गोपन आत्म-करण वशे ॥ जी० ॥ २१ ॥ जी० ॥ रहे सुग्रीव घर नित्य, वाद दिवस थयो अन्यदा ॥ जी० ॥ जी० ॥ सुग्रीवनी तिहां नारी, आपे वस्त्र युगल तदा ॥ जी० ॥ २२ ॥ जी० ॥ श्यामा संबंधी वस्त्र, पहेरे ते खांते करी ॥ जी० ॥ जी० ॥ पहेरी चाल्यो ताम, सवि जनने कौतुक करी ॥ जी० ॥ २३ ॥ जी० ॥ कहे सहु राजकुमार, उंरा आवो राजीया ॥ जी० ॥ जी० ॥ न्नाग्यवंत शिरदार, तुम्हो गुणगणथी गाजीया ॥ जी० ॥ २४ ॥ जी० ॥ अम्ह-ने निश्चय एह, परणशो ए तुम्हे कामिनी ॥ जी० ॥ जी० ॥ जीतशो तुम्हे निर्धार, सफल थशे तुम्ह यामिनी ॥ जी० ॥ २५ ॥ जी० ॥ गंधर्वकला बहु हाथ, एम खमखड हसता सवे ॥ जी० ॥ जी० ॥ उंचे आसन तास, विचमें सहु मिलीने ठवे ॥ जी० ॥ २६ ॥ जी० ॥ गंधर्वसेना आवी, मानुं रंन्ना अवतरी ॥ जी० ॥ जी० ॥ स्वपरदेशी लोक, जीते गांधर्वे करी ॥ जी० ॥ २७ ॥ जी० ॥ रूप करे ते स्वन्नाव, समुद्रविजय अनुज न्नलो ॥ जी० ॥ जी० ॥ देव परे कामरूप, श्रीवसुदेवजी गुणनिलो ॥ जी० ॥ २८ ॥ जी० ॥ देखी कुमरनुं रूप, चित्त चमकी ते कुंवरी ॥ जी० ॥ जी० ॥ विस्मय लहे सवि लोक, कुण ए चिंते फरी फरी ॥ जी० ॥ २९ ॥ जी० ॥ आपे सहु तस वीण, कुंवर दूषण दाखवे ॥ जी० ॥ जी० ॥ गंधर्वसेना तास, आपे वीण वजावने ॥ जी० ॥ ३० ॥ जी० ॥ वीणा सज्ज करी सार, कहे

वसुदेव सुणो तुम्हे ॥ जी० ॥ जी० ॥ एह वीणाए आज, कहो ते गाइ-जे अम्हे ॥ जी० ॥३१॥ जी० ॥ बीजे खंडे ढाल, आठमी एह सोहामणी ॥ जी० ॥ जी० ॥ एम प्रथम अधिकार, पद्मविजय जावे जणी ॥ जी० ॥ ३२॥

॥ दोहा ॥

॥ गंधर्वसेना तव कहे, विष्णुकुमार चरित्र ॥ सुर खेचर नर गावतां, करतुं जुवन पवित्र ॥१॥ ते श्रीविष्णुकुमारनुं, गावो चरित्र रसाल ॥ पद्म चक्री अग्रज मुनि, जगमां अति हे रसाल ॥ २ ॥ कहे वसुदेव सुणो तुम्हे, मन करी एकण ठाम ॥ सुणतां होय पवित्र जव, लहीये शिवपुर गाम ॥ ३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ चंडाउलानी देशी ॥ हथिणाउर नगरे वसे रे, नाम पद्मरथ राय ॥ लखमीमती तस जारया रे, तेहने सुत दोय थाय ॥ तेहने सुत दोय थाय कुमार, एक विष्णु महापद्म ते सार ॥ एक दिन सुव्रत नामे अणगार, पाउ धास्या ते नगरी मझार ॥ १ ॥ जी साजनजी जी रे ॥ ए आंकणी ॥ तेहनी पासे व्रत ग्रहे रे, विष्णुकुमार ने राय ॥ महापद्म राज्ये ठवी रे, संयम सन्मुख थाय ॥ संयम सन्मुख थाय महाराज, आणे कर्म शत्रुने वाज ॥ साधे नित नित आतमकाज, पाम्या ते अनुक्रमे शिवराज ॥ जी० ॥ २ ॥ विष्णुकुमर पण साधुजी रे, पाले संयम सार ॥ साठ सयां वरसां लगे रे, तप डुक्कर करनार ॥ तप डुक्कर करनार ते पाया, लब्धि उपनी बहु सुखदाया ॥ सूक्ष्म बादर रूप सुहाया, वैक्रिय लब्धि तणी करे काया ॥ जी० ॥ ॥ ३ ॥ गगनगामिनी तिम लही रे, कहेतां न आवे पार ॥ महापद्म चक्रीने अठे रे, नमुचि पुरोहित सार ॥ नमुचि पुरोहित सार करे ते, साधु संघाते वाद धरे ते ॥ सजा समक्ष तस हारी परे ते, लोक मांहे वात सहु पसरे ते ॥ जी० ॥ ४ ॥ एक दिन राजा रीझवी रे, वर माग्यो राय पास ॥ राज्य बेठो नमुचि तदा रे, आव्युं वासावास ॥ आव्युं वासावास तिवारे, साधु रह्या गजपुर शुज वारे ॥ सवि परजा आणा शिर धारे, नमुचि साधु सहुने हंकारे ॥ जी० ॥ ५ ॥ कहे मुनिने सुणो साधुजी रे, महारे नहीं तुम्ह काम ॥ तुम्हे मुझरे नवि आवीया रे, तव साधु कहे आम ॥ तव साधु कहे आम नमुचि, अम्ह मुझरे तुझ कीर्त्ति शी उंची ॥ अम्ह नवि जाणुं ए ताहरी कुंची, नमुचि कहे तव वाणी ते नीची ॥ जी० ॥ ६ ॥

माह्रा राज्यमां नवि रहो रे, शुं कहुं जाकुं तुम्ह ॥ जो रहेशो तो जाणशो रे, नवि सहेशुं कोइ अम्ह ॥ नवि सहेशुं कोइ अम्हे तुमारो, वांक कहे मुनिवर तिण वारो ॥ वर्षाए वास्यो छे विहारो, शरद कालमां गमन विचारो ॥ जी० ॥ ७ ॥ तव नमुचि एणी परे कहे रे, सात दिवस मांहे जाउ ॥ तव आचारज चिंतवे रे, भेला सघला थाउ ॥ भेला सघला थाउ रे भाइ, पूछे एणी परे चित्तमां लाइ ॥ जेहने जेहवी रिद्धि ते पाइ, तेह दाखो प्रगटपणे आइ ॥ जी० ॥ ८ ॥ संघ तणुं ए काम छे रे, लाभ कह्या छे महोटा ॥ एह वात तुमे सांभली रे, कोइ म थाजो खोटा ॥ कोइ म थाजो खोटा ए वात, साधु सुणीने बोले उजात ॥ गगनगामिनी लब्धि आयात, कारज कहो मुजने सुखदात ॥ जी० ॥ ९ ॥ संघ साधु मली एम कहे रे, मंदिरथी तेमी आवो ॥ विष्णुकुमार मुनि प्रते रे, तव ते आणंद पावो ॥ तव ते आणंद पावीने जावे, क्षण मांहे मेरुचूला पावे ॥ संघ तणी आणा कहे भावे, तव विष्णु मुनि कहे इण रावे ॥ जी० ॥ १० ॥ चालो हमणां जाइये रे, करो तुमे विश्राम ॥ सूता तव लेइ चल्या रे, गजपुर नयरने ठाम ॥ गजपुर नयरने ठाम ते आवे, संघ सहु तव वात सुणावे ॥ विष्णु कहे तुम्हे रहो थिर भावे, एह भार मुज शिर सोहावे ॥ जी० ॥ ॥ ११ ॥ जइ नमुचि बोलावीयो रे, ते पण उभो थाय ॥ कहे विष्णु सुणो वातडी रे, द्यो मुनि रहेवा ठाय ॥ द्यो मुनि रहेवा ठाय ते भापे, तुम्हे चक्रीना भाइ सुवासे ॥ तुमे मुजने किम मान्य न थाशो, श्रमण को नवि रहे माह्री पासे ॥ जी० ॥ १२ ॥ विष्णुकुमार कहे सुणो रे, जीव बहुल थया आज ॥ श्रमणलोकने वारीयुं रे, आज विहारनुं काज ॥ आज विहारनुं काज न थाय, ताह्री आणा जो कदी थाय ॥ तो नयरी उद्यान रहाय, वर्षाकाल अंते सहु जाय ॥ जी० ॥ १३ ॥ तोपण हुं एम जाणशुं रे, माहरुं वचन तें कीध ॥ तव नमुचि कहे सांभलो रे, ए पण वात न सिद्ध ॥ ए पण वात न सिद्ध ते कोय, ते मुजने वधयोग्य ते होय ॥ किम रहे ते उद्यान पलोय, विष्णुकुमार कहे तव जोय ॥ जी० ॥ १४ ॥ भरतादिक राजा थया रे, रक्षा करी तेणे साध ॥ पूजा मान्या इश्रीया रे, भक्ति करीने अगाध ॥ भक्ति करीने अगाध ते नमीया, ताह्रा मनमां किम नवि गमीया ॥ एह महा मुनिवर उपशमीया, तव ते कहे मुज मन नवि

रमीया ॥ जी० ॥ १५ ॥ वली नमुचि कहे विष्णुने रे, तें कही साची वात ॥ बाप दादा जेहना राजवी रे, ते तो इणी परे थात ॥ ते तो इणी परे थात ते न्याय, जेहना कुलमां होय मुनिराय ॥ हुं तो हुं सुण पहेलो राय, परनी वात मने न सुहाय ॥ जी० ॥ १६ ॥ मुऊने दीठा नवि गमे रे, सात दिवस पछी एह ॥ देखीशुं जो चावतो रे, मारीशुं अम्हे तेह ॥ मारीशुं अम्हे तेहने जाणो, तुम विना जीवतो नहीं पीठाणो ॥ एह वात साची मन आणो, मन चिंते मुऊ न मले टाणो ॥ जी० ॥ १७ ॥ बीजे खंडे ए कही रे, नवमी ढाल रसाल ॥ पहेले अधिकारे जली रे, सुणतां मंगलमाल ॥ सुणतां मंगलमाल ते थाय, पंमित उत्तमविजय कहेवाय ॥ तेहना शिष्यपणे सोहाय, नामे पद्मविजय गुण गाय ॥ जी० ॥ १८ ॥ गाथा ॥ ३२४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन सुणी नमुचि तणां, चिंते विष्णुकुमार ॥ एह डुष्ट नमुचि थयो, मुनिवध उद्यमकार ॥ १ ॥ मुऊने पण घुगतुं नहीं, संघ पीका जिणे थाय ॥ ते उवेखी मूकवुं, महोटुं पाप कहाय ॥ २ ॥ संघनुं वैयावच्च करत, पामे लाभ अपार ॥ जो ए अवसर नवि करुं, तोपण किम होय पार ॥ ३ ॥ शक्ति शे लेखे होय, संघ तणे नहीं काम ॥ शीखामण देउं एहने, राखुं शासन माम ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ देवमां नगीनो म्हारो, ध्यानमां लीनो म्हारो, केसर जीनो म्हारो, साहेबो ॥ प्रभु मोरा रति एक-रूप देखाम हो ॥ ए देशी ॥ विष्णु ऋषि कहे नमुचिने ॥ साजन म्हारा ॥ सांजल माहरी वाण हो ॥ त्रण पग मूकुं तेटखुं ॥ सा० ॥ आप तुं मुऊने ठाण हो ॥ १ ॥ क्रोधे जराणो म्हारो, नवि माने राणो म्हारो, हठनो ए टाणो म्हारो, साहिबो ॥ साहिब म्हारा मधुर वचन समजाय हो ॥ ए आंकणी ॥ प्राण त्याग करे मुनिवरा ॥ ॥ सा० ॥ पण नवि करे विहार हो ॥ म्हारुं वचन इणी परे सुणो ॥ सा० ॥ ॥ रहेशे पण निर्धार हो ॥ २ ॥ क्रो० ॥ त्रण क्रम दीधी जूमिका ॥ सा० ॥ पण नवि बीजो भार हो ॥ जो देखीश अन्य थानके ॥ सा० ॥ जाणो जम अनुहार हो ॥ ३ ॥ क्रो० ॥ रोप चढ्यो तेह सांजली ॥ सा० ॥ वधवा लागो तेह हो ॥ वैक्रिय शरीर प्रजावथी ॥ सा० ॥ लाख योजन

होय देह हो ॥ ४ ॥ क्रो० ॥ पूर्व पश्चिम दोय पद धर्‍या ॥ सा० ॥ विश्व कंपावे तेण हो ॥ त्रीजो पद मूके तदा ॥ सा० ॥ नमुचि पुठे दुःख देण हो ॥ ५ ॥ क्रो० ॥ घाल्यो रसातल नमुचिने ॥ सा० ॥ अचला ते चल थाय हो ॥ पर्वत कंपे तिहां कणे ॥ सा० ॥ हालकलोल थइ जाय हो ॥ ॥ ६ ॥ क्रो० ॥ मर्यादा मूकी करी ॥ सा० ॥ समुद्र छोलाणा त्यांहि हो ॥ जय बहु लोकने उपजे ॥ सा० ॥ नवि धरे कोइ उछांहि हो ॥ ७ ॥ ॥ क्रो० ॥ देवने पण भ्रम उपनो ॥ सा० ॥ शुं थयुं एह अकाल हो ॥ शक्रने पण शंका थइ ॥ सा० ॥ जाणी ते विकराल हो ॥ ८ ॥ क्रो० ॥ अवधिज्ञानथी जाणीयुं ॥ सा० ॥ कोपनुं कारण तत्र हो ॥ गंधर्व देवने मोकले ॥ सा० ॥ विष्णुकुमार ठे यत्र हो ॥ ए ॥ क्रो० ॥ गीत नाटक करे तेहवां ॥ सा० ॥ जेहथी थाय उपशांत हो ॥ कोपथी दुर्गति पामीये ॥ सा० ॥ तुम्हो मुनिवर महांत हो ॥ १० ॥ क्रो० ॥ समतासागर मुनि थया ॥ सा० ॥ महापद्म प्रणमे पाय हो ॥ ठलंघो देइ चक्रीने ॥ सा० ॥ आवे जिहां गुरुराय हो ॥ ११ ॥ क्रो० ॥ आलोइने पमिक्कमी ॥ सा० ॥ पाली शुद्ध चारित्त हो ॥ सा० ॥ मोक्ष गया मुनिराजीया ॥ सा० ॥ परमानंदे सित्त हो ॥ १२ ॥ क्रो० ॥ शांति थइ सहु जीवने ॥ सा० ॥ वरत्यो जय जयकार हो ॥ जनम थया सहुना नवा ॥ सा० ॥ विघन गयां दूर पार हो ॥ १३ ॥ क्रो० ॥ श्री वसुदेवजी इणी परे ॥ सा० ॥ वीण वजावी सार हो ॥ देखी सहु अजरिज लह्या ॥ सा० ॥ पाम्या अति चमत्कार हो ॥ १४ ॥ क्रो० ॥ बीजे खंडे इणी परे ॥ सा० ॥ दशमी ढाल विशाल हो ॥ पहेले अधिकारे कही ॥ सा० ॥ पद्मने मंगलमाल हो ॥ १५ ॥ क्रो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीण वजावी तिणी परे, गंधर्वसेना नार ॥ जाति मानुं नरवेष धरी, आवी सरस्वती सार ॥ १ ॥ चारुदत्त ते देखी करी, सहु विसर्जे ताम ॥ श्री वसुदेवने तेमीने, आवे ते निज धाम ॥ २ ॥ सांजल कुंअर तुं वातमी, तुऊ मनमां ठे एम ॥ वणिकसुता मात्रज तणुं, पाणिग्रहण करुं केम ॥ ३ ॥ पण ए वात कहेशुं सवि, अवसर पामी स्वाम ॥ पण इमणां परणो तुम्हे, अम कहुं हुं शिर नाम ॥ ४ ॥ इम करी परणावी तिणे, विद्याचारय दोय ॥ श्यामा विजया कन्यका, रूप मनोहर जोय ॥ ५ ॥ सुग्रीव यश-

प्रवहण भांग्युं त्यांहि ॥ १ ॥ पुण्यसंयोगे आवीयुं, फलक एक मुज हाथ ॥ सात दिवस सायर भम्यो, पण ते फलकनी साथ ॥ २ ॥ पाम्यो पार सायर तणो, राजपुरे वली जाय ॥ तेह नगर उद्यानमां, आश्रम एक शुभ ठाय ॥ ३ ॥ दिनकरप्रभ नामे वसे, परिव्राजक अभिराम ॥ शांत दांत घणुं देखीये, धर्म तणुं मानुं धाम ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥ तेह त्रिदंमी देखी मुज्ज, कहे सांभल कहुं वात हुं तुज ॥ बाबू मान ले ॥ ए आंकणी ॥ तुं केम दुःखीयो एवडो आज, तुं थाइश महोटो महाराज ॥ १ ॥ बा० ॥ तेरा दुःख में खम्यां न जाय, मेरा मनमें आरति थाय ॥ बा० ॥ गुरुकी हम हे ऐसी शीख, जपो अलख ऊंर भावकी भीख ॥ २ ॥ बा० ॥ कंथा पहेरुं लगावुं विभूति, परदुःखीये दुःखीयो सुण पुत ॥ बा० ॥ जगकुं सुख तब हमकुं सुख, जग दुःखीयो तब हमकुं दुःख ॥ ३ ॥ बा० ॥ मायामें सहु जग लपटाय, हम तो नित्य निरंजन ध्याय ॥ बा० ॥ बात कहे बे तेरी जेह, तुज देखी मुज थरहरे देह ॥ ४ ॥ बा० ॥ तब प्रणमी कहे चारुदत्त, पाछली जेटली थइ निज वत्त ॥ बा० ॥ चारुदत्तनां सांभली वयण, अवधूत आंसु भरीयां नयण ॥ ५ ॥ बा० ॥ रे वत्स तुं हवे धीरो थाय, धीरजे सवि दोलत भले आय ॥ बा० ॥ तें धन अर्थी हे सुण बहोत, धन देवरावुं आव तुं पहोत ॥ ६ ॥ बा० ॥ तेरे घरकी दासी होय, लखमी तेम करीये तुं जोय ॥ बा० ॥ ते सुणी चाल्यो चारुदत्त, लोभीने होय बहुलुं सत्त ॥ ७ ॥ बा० ॥ बीजे दिन एक अटवी मांहि, पहोतो मन धरतो उछांहि ॥ बा० ॥ तिहां एक पर्वत मांहे जाय, निबम शिला उघाडे पाय ॥ ८ ॥ बा० ॥ दुर्गपाताल नामे बिल तेह, तेहमां पेठो त्रिदंमी जेह ॥ ॥ बा० ॥ भमतां भमतां दीठो कूप, रस थानक महा दारुण रूप ॥ ए ॥ बा० ॥ चार हाथनो ते विस्तार, मानुं नरक तणुं ए द्वार ॥ बा० ॥ तुंबडुं आपी कहे मुज एम, सुण कहुं वत्स धरी तुज प्रेम ॥ १० ॥ बा० ॥ एहमां रस भरीने तुं आव, एम कही मंचिका मांहि ठाव ॥ बा० ॥ रज्जु झाली मोकल्यो त्यांहि, मेखला दीठी में तेह मांहि ॥ ११ ॥ बा० ॥ तिहां रस भरीयो दीठो जोर, लेतां वारे कोइ तिणे ठोर ॥ बा० ॥ चारुदत्त छे माहरुं नाम,

मोकल्यो जगवंते ए ठाम ॥ १२ ॥ वा० ॥ शे मुऊने तुं करे निषेध, म्हारे ए रसशुं ठे वेध ॥ वा० ॥ ते पण कहे सुण म्हारी वात, वणिक ने धनवांठक हुं थात ॥ १३ ॥ वा० ॥ एह त्रिदंमीए नाख्यो मुऊ, सुण वली आगल जाखुं तुऊ ॥ वा० ॥ रसमां मत तुं बोले हाथ, कोहीने थाशे ते काथ ॥ १४ ॥ वा० ॥ जरीने आपुं तुऊने एह, पण मत बोलजे ताहरी देह ॥ वा० ॥ तव में तुंबडुं आप्युं तास, रस जरी आप्यो मुऊने खास ॥ १५ ॥ वा० ॥ मांची हेठे ते बांध्युं तुंब, रज्जु हलावी पामी बुंब ॥ वा० ॥ खेंची काढे तापस ताम, कूपने तटे आव्यो हुं जाम ॥ १६ ॥ वा० ॥ मागे तुंबडुं माहरी पास, तव ड्रोही लोजी लह्यो तास ॥ वा० ॥ में रस ढोली नाख्यो सार, नाखी दीधो मुऊ तिवार ॥ १७ ॥ वा० ॥ तेह अकारण बंधु ताम, कहे मत कर तुं खेद ए ठाम ॥ वा० ॥ रसमां तो नथी पमीयो अत्र, रोगनी उत्पत्ति थाये यत्र ॥ १८ ॥ वा० ॥ बीजो नहीं उपाय ते कोय, नीकलवानो सुण कहुं तोय ॥ वा० ॥ गोधा जव आवे इण ठाम, तेहने पूंठडे वलगजे ताम ॥ १९ ॥ वा० ॥ तव लग तुं इहां रहे शुज ध्यान, करी पंच परमेष्ठीनुं ज्ञान ॥ वा० ॥ तास वचने हुं लह्यो आनंद, तेह पंचत्व लह्यो सुखकंद ॥ २० ॥ वा० ॥ जीषण शब्द सुण्यो एक दिन्न, तव बीहीनो आकुल थयो मन्न ॥ वा० ॥ संजारी ते पुरुषनुं वयण, गोधा जाणी निश्चय नयण ॥ २१ ॥ वा० ॥ पान करीने पाठी जाय, पूंठडे वलग्यो हुं तिण ठाय ॥ वा० ॥ गाय पूंठडे वलगे गोवाल, तेम वलग्यो हुं अति सुकुमाल ॥ २२ ॥ वा० ॥ नरक मांहिथी नीकले जेम, अथवा गर्जावासथी तेम ॥ वा० ॥ देखी जीवलोकने वहार, नवो जनम एणे अवतार ॥ २३ ॥ वा० ॥ मूकी दीधुं पूंठडुं जाम, मूर्बा आवी मुऊने ताम ॥ वा० ॥ पमीयो जूमि वली लाधुं चेत, जेंसो एक धायो डुःख देत ॥ २४ ॥ वा० ॥ एक शिला उपर चढ्यो रंग, तेह शिला चाले निज शृंग ॥ वा० ॥ अजगर वनजेंसाने खाय, तव नासी गयो तिहांथी पलाय ॥ २५ ॥ वा० ॥ अटवी अंते पाम्यो गाम, तिहां मुऊ मामलमित्रनुं धाम ॥ वा० ॥ डुःखनी श्रेणि लही में तत्र, किम कही शकीयें ते डुःख अत्र ॥ २६ ॥ वा० ॥ बीजे खंडे बारमी ढाल, पहेले अधिकारे ए रसाल ॥ वा० ॥ पंमित उत्तमविजयनो शिष्य, पद्मविजय कहे पुण्ये जगीश ॥ २७ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ ४१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुद्रदत्त नामे मल्यो, मातलमित्र सुजाण ॥ तिण लाल्यो पाल्यो घणुं, करुणा मनमां आण ॥ १ ॥ अंग सज्ज माहरुं थयुं, नांभ ग्रह्यां तिहां तुछ ॥ रुद्रदत्त साथे गयो, मनमां हर्षे अतुछ ॥ २ ॥ एक नदी तिहां मोटकी, इरकुगवती तस नाम ॥ उतरी गिरिकूटे गया, वेत्रवने अभिराम ॥ ३ ॥ अनुक्रमे पहोता अम्हे, टंकण देश मजार ॥ दोय ग्रह्या तिहां बोकमा; तिण अजपथ लह्या पार ॥ ४ ॥ रुद्रदत्त बोल्यो तिहां, हवे न चलाये पाय ॥ पयचारीनो आशरो, नहीं को इणे ठाय ॥ ५ ॥ तिणे ए मारी बोकमा, मांस करीने बार ॥ रोम करी अंतर वली, करीये इस्यो प्रकार ॥ ६ ॥ मांहि आपण पेसीये, नारंम पंखी आय ॥ मांसनी भ्रांतिए लेइ जशे, स्वर्णभूमिने ठाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ हो पियु पंखीयमा नारी गुणावली ताम जो, पंजरीयुं कर लीधुं झरते लोयणे रे लो ॥ ए देशी ॥ हो सुण प्राणीयमा चारुदत्त कहे ताम जो, आपणने ए अज दोय उपगारी थया रे लो ॥ हो सु० ॥ दुर्ग उतास्या एण जो, तेहने केम हणीये करी बंधु परे मया रे लो ॥ १ ॥ हो० ॥ एहनो कुण इहां नाथ जो, दीन हृदय पशु मुखथी नवि बोली शके रे लो ॥ हो० ॥ जीवनो वध दुःखदाय जो, जीव तणा वधथी सुकृत कोइ नवि टके रे लो ॥ २ ॥ हो० ॥ नरग तणां फल थाय जो, जीवघातथी कडुआं फल प्राणी लहे रे लो ॥ हो० ॥ ठाम ठाम कहे सूत्र जो, श्री दशवेकालिक आचार प्रमुख कहे रे लो ॥ ३ ॥ हो० ॥ पुण्य क्रीमानी भूमि जो, पापरेणु विखेरणने वायु समी रे लो ॥ हो० ॥ भवसमुद्रमां नाव जो, आपद अग्नि उपर मानुं मेघघटा रमी रे लो ॥ ४ ॥ हो० ॥ दूती श्री संकेत जो, देवलोकनी नीसरणी भाखी दया रे लो ॥ हो० ॥ प्रिय सखी मुक्तिनी एह जो, दुर्गति द्वार भोगल सम ए दया सया रे लो ॥ ५ ॥ यतः ॥ क्रीमाभूः सुकृतस्य दुःकृतरजःसंहारवात्या भवो,-दन्वन्नौर्व्यसनाग्निमेघपटली संकेतदूती श्रियाम्॥ निःश्रेणिस्त्रिदिवौकसः, प्रियसखी मुक्तेः कुगत्यर्गला, सत्वेषु क्रियतां कृपेव भवतु क्लेशैरशेषैः परैः ॥ १ ॥ हो० ॥ श्रावककुले उपन्ने जो, कोइ प्रकारे मुजने एह घटे नहीं रे लो ॥

हो० ॥ नहीं अपराधी एह जो, तुजने पण नवि मारवो मित्र घटे अहीं रे लो ॥ ६ ॥ हो० ॥ रुद्रदत्त सुणी ताम जो, क्रोध थकी चारुदत्तने एणी परे रे लो ॥ हो० ॥ तुज आयत्त न एह जो, किम मुज करे निषेध तुं मुज मन नवि सहे रे लो ॥ ७ ॥ हो० ॥ निर्दयपणे हण्यो एक जो, वीजो रे मारणने धायो पापीयो रे लो ॥ हो० ॥ चारुदत्तनुं मुख जो, जोवे रे ते अज मन मांहि कांपीयो रे लो ॥ ८ ॥ हो० ॥ कहे चारुदत्त ताम जो, माहरो जोरो नहीं ए आगल को हवे रे लो ॥ हो० ॥ पण सुण माहरी वात जो, एह अवस्था मांहि सखाइ जे थवे रे लो ॥ ए ॥ हो० ॥ धर्म जिणंदनो धार जो, धीरज धरी सुण अज तुं माहरी वाणीने रे लो ॥ हो० ॥ वीतराग करी देव जो, गुरु ते जाणजे जे देवनी धरे आणने रे लो ॥ १० ॥ हो० ॥ जीवघात वली जूठ जो, दूर थकी अदत्तने पच्चक्के तुं वली रे लो ॥ हो० ॥ ब्रह्मचर्य धरी शुद्ध जो, परिग्रह ममत्व तजो इणी परे कहे केवली रे लो ॥ ११ ॥ हो० ॥ तज चउविह तुं आहार जो, सर्व जीवशुं मैत्रीजावो चित्तथी रे लो ॥ हो० ॥ वली विशेष रुद्रदत्त जो, मैत्रीजावे धरजे तुं शुज रीतथी रे लो ॥ १२ ॥ हो० ॥ ए नथी हणतो तुज जो, पूर्वेउपार्जित कर्म तुने आवी मल्यां रे लो ॥ हो० ॥ निमित्त मात्र ए जाण जो, पण विण कीधां कर्म कोइने नवि फल्यां रे लो ॥ १३ ॥ हो० ॥ तें मास्या बहु जीव जो, पूर्व जवे ते कर्म अति तुजने दुःख दीये रे लो ॥ हो० ॥ ते तुं कर्मशुं रोष जो, करीने दूर करे एणी परे निकामीये रे लो ॥ १४ ॥ हो० ॥ सांजली वचन रसाल जो, अमृतनी परे तेहना हृदयमां परिणम्यां रे लो ॥ हो० ॥ देतो तिहां नवकार जो, चारुदत्तनां वयण ते अज मनमां रम्यां रे लो ॥ १५ ॥ हो० ॥ रुद्रदत्ते हण्यो ताम जो, वीजो रे ते वोकज्जो तिणे निर्दयपणे रे लो ॥ हो० ॥ तेहनी खोलमां दोय जो, हाथ मांहे छुरी लेइने वेग मद घणे रे लो ॥ १६ ॥ हो० ॥ जारंड पंखी ताम जो, लेइ चाल्यो अम्ह वे जणाने आमिष गणी रे लो ॥ हो० ॥ अन्य जारंड तिहां आय जो, जुद्ध करण लागो आमिष इछा घणी रे लो ॥ १७ ॥ हो० ॥ चारुदत्त सुणी ताम जो, चंचूपुटथी कर्मवशे सरमां पड्यो रे लो ॥ हो० ॥ छुरीए छेदी वंध जो, तेह सरोवर तरीयो कर्मे थकी जस्यो रे लो ॥ १८ ॥ हो० ॥ जातां अटवी मांहि जो, दीठो रे पर्व-

त ते उपर हुं चढ्यो रे लो ॥ हो० ॥ दीठा तिहां मुनिराय जो, काउस्सग्गध्याने ते कर्म थकी वढ्यो रे लो ॥ १ए ॥ हो० ॥ कर्म तणी गति जोय जो, कर्म करे शुं शुं नवि पामे प्राणीयो रे लो ॥ हो० ॥ कर्मे रामजी राण जो, वसीया रे सीताने कलंक ते आणीयो रे लो ॥ २० ॥ हो० ॥ वरस लगे नवि लह्यु जो, निक्षा रे श्री रुषन्न जिनेसर राजीयो रे लो ॥ हो० ॥ मल्लि तीर्थंकर नारी जो, कर्म थकी जश जेहनो जगमां गाजीयो रे लो ॥ २१ ॥ हो० ॥ दश मस्तक जुर्ज खोय जो, रावण कर्मे करीने बहु दुःख पामीयो रे लो ॥ हो० ॥ कलावती गया हाथ जो, कर्मे रे ब्रह्मदत्त निज चक्षु वामीयो रे लो ॥ २२ ॥ हो० ॥ सुनूम चक्री देखी जो, सायरमां ते बूमो अणखूटे मुर्ज रे लो ॥ हो० ॥ सुर करता जस सेव जो, पण कोइ कर्म तणी गति नवि नावे जुर्ज रे लो ॥ २३ ॥ हो० ॥ कर्मे चारुदत्त जो, रिद्धि लही वली कर्मे ते सवि हारीयो रे लो ॥ हो० ॥ कर्म करे ते होय जो, कर्मे रे चारुदत्तने एम करावीयो रे लो ॥ २४ ॥ हो० ॥ कर्मे खेती थाय जो, कर्म विना ते सूकी जाय ततक्षणे रे लो ॥ हो० ॥ अथवा वृषन्न मरी जाय जो, कर्म विना ते पंच मांहि कोइ नवि गणे रे लो ॥ २५ ॥ ॥ हो० ॥ प्राणी जमवा जाय जो, कर्मे नोजन देनारी कृपण होवे रे लो ॥ हो० ॥ अथवा माखी आवी जो, जो जोगवाइ मले तो पातुं ते नवे रे लो ॥ २६ ॥ हो० ॥ कर्मे मुनिवर पाम जो, बीजे रे खंडे पहेला अधिकारमां रे लो ॥ हो० ॥ पद्मविजय कहे एम जो, तेरमी ढाल सुणो नवि जय जयकारमां रे लो ॥ २७ ॥ हो० ॥ सर्व गाया ॥ ४४४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनि देखीने प्रणमीयो, पारे मुनि काउस्सग्ग ॥ धर्मलान्न देइ कहे, साधंता शिवमग्ग ॥ १ ॥ रे चारुदत्त शेठजी, केम आव्यो तुं आंही ॥ मनुष्य मात्र चारो नहीं, संन्नवीये कोइ प्राही ॥ २ ॥ खग विद्याधर सुर वली, आवे आणे ठाम ॥ तुं मुजने नवि उलखे, पण सांनल कहुं आम ॥ ३ ॥ अमितगति विद्याधरु, चंपा नयरी बार ॥ मूकाव्यो बंधन थकी, तें मुजने अवधार ॥ ४ ॥ अष्टापदनी ढुकमो, दीठो वयरी तेह ॥ नासी अष्टापदे गयो, चैत्यशरण करे जेह ॥ ५ ॥ तव हुं महारी नारीने, लेइ चाल्यो निज धाम ॥ मुजने तव महारो पिता, थापे राज्यने ठाम ॥ ६ ॥ हिरण्यकुंन

सुवर्णकुंज, मुनिवर दोय सुजाण ॥ चारण मुनि पासे ग्रहे, मुऊ पिता व्रत ठाण ॥ ७ ॥ मनोरमा स्त्री माहरे, तेहना पुत्र ते दोय ॥ सिंहयशा वराहग्रीव, लक्षणवंता सोय ॥ ७ ॥ विजयसेना नारी वली, तेहनी कूखे एक ॥ गंधर्वसेना नामथी, अतिशय कला विवेक ॥ ए ॥ राज देइ सिंहजस प्रते, वराहग्रीव युवराज ॥ विद्या आपी दोयने, साधुं आतम काज ॥ १० ॥ तात गुरु पासे ग्रही, दीक्षा पुण्यप्रनाव ॥ विचरंतो इहां आवीयो, यावाने निःपाव ॥ ११ ॥ लवणसमुद्र मांहे रह्यो, कुंजकंठ ए द्वीप ॥ कर्कोटक नामे गिरि, तपीये तप जिहां खिप्प ॥ १२ ॥ तुं किम आव्यो इम कहे, में कही सघली वात ॥ इण अवसर अचरिज थयुं, ते सुणजो अवदात ॥ १३ ॥ मुनिवर पासे आवीया, विद्याधर दोय नाय ॥ मुनि प्रणमी जव उपविशे, तव नाखे मुनिराय ॥ १४ ॥ चारुदत्त ए जाणजो, जे कहेतो तुम्ह नित ॥ तव मुऊ ताय ताय करी, प्रणमे मन धरी प्रीत ॥ १५ ॥ वेठा जव ते वेहु जणा, तव आयो एक देव ॥ दिव्य रूप धरतो थको, प्रणमी करी मुऊ सेव ॥ १६ ॥ देइ प्रदक्षिणा मुनि प्रते, वंदे ते रुषिराय ॥ तव पूछे विद्याधरा, देव प्रते चित्त लाय ॥ १७ ॥ चूक्या देव थइ तुम्हे, एम वंदन किम जोय ॥ धर्माचारय माहरो, देव कहे ए होय ॥ १७ ॥ ते कारण नवि चूकीयो, देव कहे सुणो वात ॥ धर्माचारज माहरो, इणी परे ए कहे वात ॥ १ए ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ तुं कुल मांहे उपनी, उपजीने पायो हो परियागतनुं पाणी ॥ हो राज ॥ अलगी रहे मुऊ नयणथी, फट पापिणी हत्यारी हो मुखडुं कांइ देखाडे ॥ हो राज ॥ ए देशी ॥ वाणारसी नयरी नली, दोय परिव्राजिका निवसे हो निज दर्शन घणुं कुशला ॥ हो राज ॥ सुनद्रा सुलसा अछे, नामे ते न ऊीताये हो पंडित जो मले वहुला ॥ हो राज ॥ १ ॥ याज्ञवल्क्य परिव्राजको, अति पंडित ते फिरतो हो विरुद ते एहवुं धरावे ॥ हो० ॥ मुऊने जे जीते इहां, तेहनो हुं थाउं शिष्य हो वली करुं जेह करावे ॥ हो० ॥ २ ॥ याज्ञवल्क्य जीत्यो तिहां, थइ परिव्राजिका सुलसा हो दासी तस करे सेवा ॥ हो० ॥ यौवनवये ते वेहु मल्यां, कर्म तणा परवशथी हो नित थइ नोगनी हेवा ॥ हो० ॥ ३ ॥ एम करतां एक सुत थयो, लोकना हास्यथी वीहीतां हो सुत ठवे पिप्पल हेठे ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ इण अवसर तिहां डूंबनुं रे, आव्युं टोळुं एक रे ॥ चतुर नर ॥ उभा ठेलंगडी करे हो लाल ॥ ए देशी ॥ ते मातंगना यूथथी रे, आवी मातंगी एक रे ॥ चतुर नर ॥ दीये आशीष ते अति भली हो लाल ॥ बेसी पासे तेहने रे, कहे वसुदेवने वात रे ॥ च० ॥ उत्तर द्यो मुज सांभली हो लाल ॥ १ ॥ ऋषभ जिनेश्वर आपीयां रे, पुत्रने वहेंची राज्य रे ॥ च० ॥ नमि विनमि पासे नहीं हो लाल ॥ प्रभु दीक्षा लेइ अनुक्रमे रे, अष्टापद गिरि जाय रे ॥ च० ॥ आत्मस्वरूप मांहे रही हो लाल ॥ २ ॥ नमि विनमि पण आवीया रे, राज्यना अर्थी जीव रे ॥ च० ॥ नित उटकाव करी तिहां हो लाल ॥ छिंचण सम करे फूलना रे, ढगला प्रभु मुख आय रे ॥ च० ॥ ठेलंग करे उभा जिहां हो लाल ॥ ३ ॥ तिहां धरणेंद्र भगे घणुं रे, देखी प्रभु पर भक्ति रे ॥ च० ॥ आप्युं राज हरखे करी हो लाल ॥ दक्षिण उत्तर श्रेणिनुं रे, सुतने देइ निज राज्य रे ॥ च० ॥ लेइ चारित्र सिद्धि वरी हो लाल ॥ ४ ॥ नमिनो सुत मातंग थयो रे, लेइ दीक्षा गयो सग्ग रे ॥ च० ॥ तेहना वंशमां शोभतो हो लाल ॥ प्रहसित नामे खेचर थयो रे, तेहनी हुं हुं नारी रे ॥ च० ॥ नाम हिरण्यवती थतो हो लाल ॥ ५ ॥ सिंहदंष्ट्र सुत माहरे रे, नीलजशा धुया सार रे ॥ च० ॥ ते दीठी मारग जतो हो लाल ॥ तेह मारे करी पीकती रे, परणो धरी मन राग रे ॥ च० ॥ दिवस ते आज सोहावतो हो लाल ॥ ६ ॥ तव वसुदेव कहे इस्युं रे, कहीशुं वात विचारी रे ॥ च० ॥ एम सुणी ते थानक गइ हो लाल ॥ अन्य दिवस ग्रीषम समे रे, जलक्रीडा करी राय रे ॥ च० ॥ सूतो नारी सह जइ हो लाल ॥ ७ ॥ तिहां एक आवी भूतडो रे, काली तेहनो पाण रे ॥ च० ॥ उठ उठ मुख बोलतो हो लाल ॥ पूठे बुक्की मारतो रे, लेइ चाल्यो आकाश रे ॥ च० ॥ भूत ते भारथी डोलतो हो लाल ॥ ८ ॥ जइ चय पासे मूकीयो रे, धगधगती जस ज्वाल रे ॥ च० ॥ पासे हिरण्यवती खेचरी हो लाल ॥ आपी हिरण्यवती प्रते रे, श्रीवसुदेव कुमार रे ॥ च० ॥ भूत अदृष्ट थयो ते करी हो लाल ॥ ९ ॥ तव कहे हसीने खेचरी रे, कर्यो विचार के नाहीं रे ॥ च० ॥ करो विचार हवे थिर थइ हो लाल ॥ तिणे अवसर आवी तिहां रे, नीलयशा नामे नारी रे ॥ च० ॥ देवी परे सखीमां गइ हो लाल

॥ १० ॥ हिरण्यवती कहे तेहने रे, ले ताहरो नरतार रे ॥ च० ॥ सुणी लेइ आकाशे गइ हो लाल ॥ हिरण्यवती वसुदेवने रे, आवी कहे एम वात रे ॥ च० ॥ मेघप्रन वने सुणी सज्ज थइ हो लाल ॥ ११ ॥ नाम हिरिमंत तिहां अछे रे, विद्याधर अंगार रे ॥ च० ॥ विद्या साधतां तेहने हो लाल ॥ निःफल थाय छे स्वामी जी रे, साधे छे वली तेह रे ॥ च० ॥ बहु काले सिद्धि जेहने हो लाल ॥ १२ ॥ तुम नजरे सिद्ध थायशे रे, करो स्वामी उपगार रे ॥ च० ॥ कुंवर कहे सखुं एहने हो लाल ॥ सुणी शिवमंदिर लेइ गइ रे, सिंहदंष्ट्र जिहां राय रे ॥ च० ॥ घर तेमी आवे तेहने हो लाल ॥ १३ ॥ नीलजशा निज पुत्रिका रे, परणावे धरी हेज रे ॥ च० ॥ कोलाहल एणी अवसरे हो लाल ॥ सांनली पूछे वातमी रे, तेमी तिहां प्रतिहार रे ॥ च० ॥ कहे वसुदेव एणी परे हो लाल ॥ १४ ॥ शे कारण एम थइ रखुं रे, तव कहे ते प्रतिहार रे ॥ च० ॥ नयर शकटमुख जाणीये हो लाल ॥ नीलवंत राजा नलो रे, नीलवती तस नारी रे ॥ च० ॥ फरजन दोय वखाणीये हो लाल ॥ १५ ॥ नील नामे नंदन नलो रे, नीलांजना धुया तास रे ॥ च० ॥ रीति पहेलां तिहां इम हती हो लाल ॥ नाइ नगिनी हुए दंपति रे, तेहमां नहीं कोइ निंद्य रे ॥ च० ॥ पंचे मान्युं ते वती हो लाल ॥ १६ ॥ नीलकुमर ने नीलांजना रे, नोगवतां सुख नोग रे ॥ च० ॥ नीलकंठ सुत उपनो हो लाल ॥ नीलयशा संकेतथी रे, आवी मागे तेह रे ॥ च० ॥ इणी अवसर इहां नीपनो हो लाल ॥ १७ ॥ नाम बृहस्पति पूछीयुं रे, निलयशानो तात रे ॥ च० ॥ कोण पति मुज धुयानो थशे हो लाल ॥ ते कहे वसुदेव राजीयो रे, इम सुणी आएयो तुज रे ॥ च० ॥ परणाव्यो शुन दिन वशे हो लाल ॥ ॥ १८ ॥ तेह सुणीने आवीयो रे, लाग्युं युद्ध महांत रे ॥ च० ॥ हारीने गयो खेचरो हो लाल ॥ वीजे खंडे पहेली कही रे, वीजे अधिकारे ढाल रे ॥ च० ॥ पद्म कहे ए मन धरो हो लाल ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते सांनली हर्षित थया, श्रीवसुदेव कुमार ॥ नीलयशा साथे करे, क्रीमा अतिहि उदार ॥ १ ॥ श्रीहिरिमंत गिरे गयां, एक दिन दंपती तेह ॥ पति इछा क्रीमा तणी, जाणी ते ससनेह ॥ २ ॥ कदलीघर नारी रचे, रमतां तिहां आनंद ॥ देखे मोर प्रते तिहां, नयण तणे सुखकंद ॥ ४ ॥

कला कलापी पूर्ण ए, देखी विस्मित थाय ॥ तेह लेवा गइ जेटले, अच-रिज होय तिण ठाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ मालीकेरे बागमां दो नारिंग पके रे लो, अहो दो नारिंग पके रे लो ॥ ए देशी ॥ जाये तेहने झालवा, तव तेह कलापी रे लो ॥ अहो तव० ॥ गरुड परे ऊडी गयो, निज खंध आरोपी रे लो ॥ अहो निज० ॥ १ ॥ केडे वसुदेव दोडीया, पण नारी न लही रे लो ॥ अहो प० ॥ रात रही कोइ थानके, चाल्यो ते सवही रे लो ॥ अ० ॥ २ ॥ दक्षिण दिशि जातां थका, गिरितट नामे नयरी रे लो ॥ अ० ॥ वेदध्वनि महोटी सुणी, पूछे तिहां शौरि रे लो ॥ अ० ॥ ३ ॥ वेदपाठ किणे कारणे, करे लोक ए हरखे रे लो ॥ अ० ॥ तव दशग्रीव ब्राह्मण कहे, इण नयरीए निरखे रे लो ॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥ सुरदेव ब्राह्मण अछे, एह ग्रामनो स्वामी रे लो ॥ अ० ॥ क्षत्रि-याणी तस भारजा, जेहने सुता पामी रे लो ॥ अ० ॥ ५ ॥ वेदनी जाण ते कन्यका, देखी तस तात जी रे लो ॥ अ० ॥ ज्ञानीने पूछे तव कहे, इणी परे सुणो वात जी रे लो ॥ अ० ॥ ६ ॥ वेदथी जीतशे एहने, ते पर-णशे नारी रे लो ॥ अ० ॥ तेहने जीतवा कारणे, बीजां काम निवारी रे लो ॥ अ० ॥ ७ ॥ वेद अभ्यास करे सहु, ब्रह्मदत्तनी पासे रे लो ॥ अ० ॥ तेह सुणी हर्षित थयो, करतो सुविलासे रे लो ॥ अ० ॥ ८ ॥ ब्राह्मण रूप धरी करी, गया ब्रह्मदत्त पासे रे लो ॥ अ० ॥ स्कंदिल नामे ब्राह्मणो, गौतम गोत्रवासे रे लो ॥ अ० ॥ ए ॥ वेद भणावो मुजने, तव ब्रह्मदत्त भाखे रे लो ॥ अ० ॥ आर्य अनार्य बे भेदथी, आचारिज दाखे रे लो ॥ अ० ॥ १० ॥ तेहनी उत्पत्ति सांभलो, आर्य वेद तो कीधा रे लो ॥ अ० ॥ भरत चक्रीए जाणजो, तेह जग प्रसिद्धा रे लो ॥ अ० ॥ ११ ॥ वेद अनारज उपना, तेहनी सुणो वात रे लो ॥ अ० ॥ चारणयुगल-पुरे वसे, अयोधन नृप ख्यात रे लो ॥ अ० ॥ १२ ॥ सुलसा नामे वर सुता, मांडे स्वयंवरा मंडप रे लो ॥ अ० ॥ तव तस माता रोवती, देखी ते अजंप रे लो ॥ अ० ॥ १३ ॥ पूछे वात ते मातने, तव कहे तस कामे रे लो ॥ अ० ॥ तहारा तातनो भाणेजो, मधुपिंगल नामे रे लो अ० ॥ १४ ॥ वरवो तुजने ते घटे, बीजाने वरतां रे लो ॥ अ० ॥ मुजने

दुःख बहु उपजे, तिणे रुदन ते करतां रे लो ॥ अ० ॥ १५ ॥ तव कहे सांजलो मात जी, बीजो नहीं परणुं रे लो ॥ अ० ॥ एह वात करतां थका, थयुं एम तस हरणुं रे लो ॥ अ० ॥ १६ ॥ चेटी सगर राजा तणी, ठानी वात ते जाणी रे लो ॥ अ० ॥ सगर रायनी आगले, मंदोदरीए वखाणी रे लो ॥ अ० ॥ १७ ॥ सगर राय पण तिणे समे, उत्कट महा बलीयो रे लो ॥ अ० ॥ काढी मूकाव्यो तिहां थकी, मनमां खलजलीयो रे लो ॥ अ० ॥ १८ ॥ बलीया आदमी जे करे, ते सघलुं ठाजे रे लो ॥ अ० ॥ जय जयकार सहु कहे, उपर तूर वाजे रे लो ॥ अ० ॥ ॥ १९ ॥ गलीया आदमी जे करे, ते सघलुं वाय रे लो ॥ अ० ॥ कोइ वचन माने नहीं, गरुदा पाटू खाय रे लो ॥ अ० ॥ २० ॥ बलीयो जानु नरपति, काढी मूक्यो तेह रे लो ॥ अ० ॥ मधुपिंगल मन चिंतवे, जुर्ज शुं करे एह रे लो ॥ अ० ॥ २१ ॥ विष्णु राय सुत हुं जलो, अजोधननो जाणेज रे लो ॥ अ० ॥ सोम वंशमां उपनो, दीपतो ठे तेज रे लो ॥ अ० ॥ २२ ॥ सूर्यवंशी ए नारी ठे, मुजने घटे देवी रे लो ॥ अ० ॥ तोपण मुज अपमानीयो, ए वात ते केहवी रे लो ॥ अ० ॥ २३ ॥ एणी परे द्वेष धरी करी, थयो तपसी बाल रे लो ॥ अ० ॥ काल करीने उपनो, देवता महाकाल रे लो ॥ अ० ॥ २४ ॥ परमाधामी उपनो, अति ते विकराल रे लो ॥ अ० ॥ साठ सहस्र सुर अधिपति, महापापनो ढाल रे लो ॥ अ० ॥ २५ ॥ चिंते मनमां देवता, सगरादिक राजा रे लो ॥ अ० ॥ दुःख पामे तिम हुं करुं, नवि रहे जेम ताजा रे लो ॥ अ० ॥ २६ ॥ शुक्तिमती नयरी जली, तिहां हुर्ज विवाद रे लो ॥ अ० ॥ यज्ञ पशुना जाखीया, पर्वते ते विषाद रे लो ॥ अ० ॥ २७ ॥ लोके काढी मूकीयो, तस पासे आवे रे लो ॥ अ० ॥ तेह देवता इम कहे, एक वात सुहावे रे लो ॥ अ० ॥ २८ ॥ खीरकदंबक ताहरो, अध्यापक रुडो रे लो ॥ अ० ॥ हुं पण तेहनो शिष्य हुं, लोके कह्यो तुज कूडो रे लो ॥ अ० ॥ २९ ॥ ते सांजलीने आवीयो, ताहरो पक्ष थापुं रे लो ॥ अ० ॥ तेहवो उपाय करुं हवे, तुज जश आरोपुं रे लो ॥ अ० ॥ ३० ॥ एम कहीने देवता, विकुर्वे मारी रे लो ॥ अ० ॥ विविध रोग करे लोकने, एणी परे मन धारी रे लो ॥ अ० ॥ ३१ ॥ पर्वत यज्ञ करावतो, सहु लोकने त्यारे रे लो ॥ अ० ॥ रोग विलय जाये तिहां, देव

माया धारे रे लो ॥ अ० ॥ ३२ ॥ पर्वत पासे आवी करी, करे यज्ञ ते राजा रे लो ॥ अ० ॥ थलचर खेचर जीवना, वधथी थाये साजा रे लो ॥ ॥ अ० ॥ ३३ ॥ सगर रायनो पण करे, परिवार ते मांदो रे लो ॥ अ० ॥ अंतेउर परिजन सवे, बहु रोगे फांदो रे लो ॥ अ० ॥ ३४ ॥ एक हजार ने आठ ते, करे यज्ञ उदारा रे लो ॥ अ० ॥ बहु धन तिहां खरचावीयुं, जेम मेघनी धारा रे लो ॥ अ० ॥ ३५ ॥ जीवनो वध तिहां बहु थयो, कहेतां नावे पार रे लो ॥ अ० ॥ ब्राह्मणने संतोषीया, देइ दान उदार रे लो ॥ अ० ॥ ३६ ॥ ब्राह्मण पण सहु लोजीया, प्रशंसा करे तेहनी रे लो ॥ अ० ॥ नाम दिवाकर राजीयो, करे यज्ञनी श्रेणी रे लो ॥ अ० ॥ ३७ ॥ तिण अवसर नारद ऋषि, लेइ जाये ते पशुआ रे लो ॥ अ० ॥ जाणे देव ते वातमी, देखी वात विरसुआ रे लो ॥ अ० ॥ ३८ ॥ पडिमा ऋषज्ज जिनंदनी, थापे मनोहारी रे लो ॥ अ० ॥ विघन विघातने कारणे, मंगल सुखकारी रे लो ॥ अ० ॥ ३९ ॥ देखाडे ते विमानने, एणी परे कहे सुणजो रे लो ॥ अ० ॥ मरण लहे जे यज्ञमां, देवता थाये मुणजो रे लो ॥ ॥ अ० ॥ ४० ॥ लोक प्रवाद थयो तिहां, यज्ञथी सुर थाये रे लो ॥ अ० ॥ ते दिनथी मांमी करी, गोमेधादि कराय रे लो ॥ अ० ॥ ४१ ॥ स्वर्गहेतु जाणी करी, सगर ने सुलसा रे लो ॥ अ० ॥ होमाणां ते यज्ञमां, पामे दुःख विलसा रे लो ॥ अ० ॥ ४२ ॥ एणी परे पर्वतथी वली, मधुपिंगल बीजो रे लो ॥ अ० ॥ तेम पिप्पलाद ते जाणीये, अनारय खीज्यो रे लो ॥ अ० ॥ ४३ ॥ इणी परे वेद अनार्यनी, उत्पत्ति मन आणो रे लो ॥ अ० ॥ परण्यो विद्याधर सुता, नारद तेणे गाणो रे लो ॥ अ० ॥ ४४ ॥ तेहना वंशमां ए थइ, सोमश्री अजिरामा रे लो ॥ अ० ॥ ते कारण सहु अन्यसे, जीत्याना जामा रे लो ॥ अ० ॥ ४५ ॥ आर्य अनार्य दोये जणुं, तव तेह जणावे रे लो ॥ अ० ॥ अनुक्रमे जीती कुमरीने, तस पियु परणावे रे लो ॥ अ० ॥ ४६ ॥ तिहां सुख जर लीला करे, बीजे खंडे रसाल रे लो ॥ अ० ॥ बीजे अधिकारे कही, पद्मे बीजी ढाल रे लो ॥ अ० ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन रमवाने गयो, ते उद्यान मझार ॥ इंद्रशर्मा नामे तिहां, देखे त्यां इंद्रजाल ॥ १ ॥ कहे वसुदेवजी तेहने, विद्या आप तुं मुज ॥ ते कहे

विद्या आपशुं, पण सुण विधि कहुं तुज ॥ २ ॥ सांजे मांडे साधवा, पूरी थाय संवार ॥ पण विघन थाये घणां, कोइ सखाइ धार ॥ ३ ॥ ते कहे हुं परदेशीउं, माहरे नहीं सखाइ ॥ तव कहे ते इंद्रजालीउं, सांजल रे तुं नाइ ॥ ४ ॥ थाउं सखाइ ताहरो, म करो खेद लगार ॥ विद्या मांडे साधवा, ते वसुदेव कुमार ॥ ५ ॥ तिण समे ते इंद्रजालीयो, शिविकाए हरी जाय ॥ जाएयो उपसर्ग तेहमां, वसुदेवजी थिर थाय ॥ ६ ॥ वहाणुं वाये जाणीयो, ए माया सद्भाव ॥ उतस्यो ते शिविका थकी, नाठो तिहांथी ताव ॥ ७ ॥ रात शेष रही थोमली, तृणशोषकपुर जाय ॥ देउलमां सूतो जइ, तिहां एक अचरिज थाय ॥ ८ ॥ राक्षस आव्यो तिहां कणे, श्रीवसुदेव उठाय ॥ हरवा मांड्यो जेटले, तव करे मुष्टि घाय ॥ ९ ॥ बाहुयुद्ध करी तेह सम, करी युद्ध ते अस्त्र ॥ शिला तले पछाडतो, धोबी धुवे जिम वस्त्र ॥ १० ॥ मास्यो ते राक्षस प्रते, वहाणुं वहायुं जाम ॥ लोक ते देखी तेहने, आदरमान करे ताम ॥ ११ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वाडी फूली अति नली ॥ मन जमरा रे ॥ ए देशी ॥ लोक हरख पामी करी ॥ सुणो सयणा रे ॥ रथ आरोपी कुमार ॥ लाल सुणो वयणां रे ॥ तूर वजावतां बहु परे ॥ सुणो० ॥ जाये नगर मजार ॥ १ ॥ ला० ॥ मानुं परणवाने चव्यो ॥ सु० ॥ श्रीवसुदेव कुमार ॥ ला० ॥ पांचसें कन्या सहु मली ॥ सु० ॥ देवा मांडे तिवार ॥ २ ॥ ला० ॥ कहे वसुदेव हुं नहीं करुं ॥ सु० ॥ पाणिग्रहण ए वार ॥ ला० ॥ पण एक वात मुजने कहो ॥ सु० ॥ कुण हतो पुरुष असार ॥ ३ ॥ ला० ॥ तव कोइ नर कहे सांजलो ॥ सु० ॥ श्रीकंचनपुर सार ॥ ला० ॥ देश कलिंगमां जाणीये ॥ सु० ॥ जितशत्रु राय ते ठार ॥ ४ ॥ ला० ॥ सुदाम नाम ते सुत थयो ॥ सु० ॥ तेह राजाने स्वाम ॥ ला० ॥ पण ते सहज स्वजावथी ॥ सु० ॥ मांसलोलुप दुःख ठाम ॥ ५ ॥ ला० ॥ जेहनो जेह स्वजाव जे ॥ सु० ॥ टाव्यो न टले तेह ॥ ला० ॥ श्वान ते पग उंचो करी ॥ सु० ॥ मुतरे कारण केह ॥ ६ ॥ ला० ॥ सोइ चाढे अंगुली ॥ सु० ॥ श्वानपुछ रहे वक्र ॥ ला० ॥ कुंज विटाले कागमो ॥ सु० ॥ शिर हरे चक्रीनुं चक्र ॥ ७ ॥ ला० ॥ लींब ते कमवो सहजथी ॥ सु० ॥ दूध उज्ज्वल नित होय ॥ ला० ॥ शुंठ हरे ते

वायने ॥ सु० ॥ अमृत मिष्ट ते जोय ॥ ८ ॥ ला० ॥ भद्रक विनीत रुजु कह्या ॥ सु० ॥ क्रोधादिक तनु जास ॥ ला० ॥ मुनिवर भाख्या एहवा ॥ सु० ॥ सहज स्वभाव विलास ॥ ए ॥ ला० ॥ नवि मटे ते केमे कस्युं ॥ सु० ॥ जेह-नो जेह स्वभाव ॥ ला० ॥ ते कारण सुदामने ॥ सु० ॥ मांस खाधानो भाव ॥ १० ॥ ला० ॥ राय तो उपकारी घणो ॥ सु० ॥ पण छूट्युं नवि जाय ॥ ला० ॥ दिन दिन मोर एकेकनुं ॥ सु० ॥ मांस अपावे राय ॥११॥ ला० ॥ वंशगिरिथी आणता ॥ सु० ॥ नित एकेको मोर ॥ ला० ॥ एक दिन तेहने भदवा ॥ सु० ॥ मलीयो मार्जार ते चोर ॥ १२ ॥ ला० ॥ तव तिहां सूपकारक भलो ॥ सु० ॥ बालक मांसने रांध ॥ ला० ॥ दीधुं ते स्वादी घणुं ॥ सु० ॥ पूछे तव तेह साध ॥ १३ ॥ ला० ॥ ते पण सहु संभला-वतो ॥ सु० ॥ कहे तव इणी परे तेह ॥ ला० ॥ मोरने थानके रांधजो ॥ सु० ॥ मांस मनुष्यनुं जेह ॥ १४ ॥ ला० ॥ नित नित लोकना बालका ॥ सु० ॥ लेइ जाये ते दुष्ट ॥ ला० ॥ एक दिन जाणे नरपति ॥ सु० ॥ कोपे थयो ते पुष्ट ॥ १५ ॥ ला० ॥ काढी मूक्यो नयरथी ॥ सु० ॥ बाप थकी ते भीत ॥ ला० ॥ वसतो पर्वत मांहे ते ॥ सु० ॥ पुरमांथी नर नित ॥ १६ ॥ ला० ॥ ते कारण तुम्हे कुमरजी ॥ सु० ॥ रूडुं कस्युं एह काम ॥ ला० ॥ बहु नरहत्या उतरी ॥ सु० ॥ तुम्हे प्रभु गुणना धाम ॥ १७ ॥ ला० ॥ तेह सुणी मन हरखीया ॥ सु० ॥ श्रीवसुदेव कुमार ॥ ला० ॥ पांचसें कन्यानुं करे ॥ सु० ॥ पाणिग्रहण ते सार ॥ १८ ॥ ला० ॥ रात वसी ते गाममां ॥ सु० ॥ चाल्यो अचलपुर ठाम ॥ ला० ॥ तिहां एक सारथवाह छे ॥ सु० ॥ मित्रश्री पुत्री नाम ॥ १९ ॥ ला० ॥ तेहने ज्ञानीए कह्यो ॥ सु० ॥ कन्यापति वसुदेव ॥ ला० ॥ तेह परणावे तस पिता ॥ सु० ॥ करतां बहु परे सेव ॥ २० ॥ ला० ॥ वेदसामपुरे तिहां थकी ॥ सु० ॥ जातां मली एक नार ॥ ला० ॥ वनमाला तेह नामथी ॥ सु० ॥ देवर कही वारंवार ॥ २१ ॥ ला० ॥ तेमी जाये निज घरे ॥ सु० ॥ देखाडे निज ताय ॥ ला० ॥ ए वसुदेव ते आवीयो ॥ सु० ॥ तव पूछे सुख साय ॥ २२ ॥ ला० ॥ कहे वसुदेवजी सांभलो ॥ सु० ॥ एह नगरनो राय ॥ ला० ॥ नामे कपिल ते जाणीये ॥ सु० ॥ कपिला कन्या थाय ॥ ॥ २३ ॥ ला० ॥ ज्ञानीए कह्यो एकदा ॥ सु० ॥ कन्यानो भरतार ॥ ला० ॥

नामे वसुदेव थायशे ॥ सु० ॥ ते गिरितटपुर गार ॥ २४ ॥ ला० ॥ फुलिंगवदन नामे जलो ॥ सु० ॥ घोमो दमशे जेह ॥ ला० ॥ ते अहिनाणे जाणजो ॥ सु० ॥ देजो कुंअरी नेह ॥ २५ ॥ ला० ॥ ते सांजली तुऊ तेमवा ॥ सु० ॥ मुऊ जमाइ नाम ॥ ला० ॥ इंद्रशर्मा इंद्रजालीउ ॥ सु० ॥ मूक्यो राये ताम ॥ २६ ॥ ला० ॥ तिणे आवीने इम कह्युं ॥ सु० ॥ नासी गयो वसुदेव ॥ ला० ॥ ते कारण तुम्हे वश करो ॥ सु० ॥ घोटकने थइ हेव ॥ २७ ॥ ॥ ला० ॥ तेह सुणीने वश कस्यो ॥ सु० ॥ परण्यो राजकुमारी ॥ ला० ॥ कपिल नामे सुत तिहां थयो ॥ सु० ॥ जोग जोगवतां सार ॥ २७ ॥ ला० ॥ त्रीजी बीजा खंममां ॥ सु० ॥ बीजे अधिकारे ढाल ॥ ला० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो ॥ सु० ॥ आगल वात रसाल ॥ २ए ॥ ला० ॥ सर्व गाथा ॥ ११७ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ हस्तिशालाए इक दिन्न, बेठो हस्ती उपरे ॥ उमी गयो गगन्न, मुठे हणे तस जली परे ॥ १ ॥ मूकी गयो सरतीर, नीलकंठ ते खेचरो ॥ आव्यो करवा पीर, नीलयशा विवाहमें ॥ २ ॥ हवे वसुदेव कुमार, शालिगुहापुरे आवीयो ॥ जाग्यसेन तिहां सार, राज्य करे महाराजीउ ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेह रायने शीखवे, धनुर्वेद अज्यास ॥ अग्रज ते राजा तणो, मेघसेन सुविलास ॥ १ ॥ अनुज साथे अग्रज तिहां, करवा युद्ध ते आय ॥ तिहां वसुदेवे जीतीयो, जाग्यसेन जय थाय ॥ २ ॥ पद्मावती तेहनी सुता, परणावी धरी प्रेम ॥ मेघसेन पण निज सुता, अश्वसेना दीये एम ॥ ३ ॥ पुण्यवंतने पाधरुं, वांछुं ते पण थाय ॥ रण करवाने नीकल्या, परण्या कुमरी जाय ॥ ४ ॥ बे नारी साथे जला, जोगवी जोग रसाल ॥ जहिलपुर नगरे गया, तिहां अपुत्र नृप काल ॥ ५ ॥ तेह पुंड्र राजा तणी, कन्या पुंड्रा नाम ॥ पण नररूपे पालती, राज्य अतिहि उद्दाम ॥ ६ ॥ श्रीवसुदेवे जाणीयो, रागी अइ ततकाल ॥ परण्या तेहने सुत थयो, शूद्र नाम सुकुमाल ॥ ७ ॥ ते सुत तिहां राजा थयो, हवे खेचर अंगार ॥ रूप करी कलहंसनुं, बल करतो तिण वार ॥ ७ ॥ हरी जाये वसुदेवने, नाखे गंगा मांहि ॥ प्रातःसमे ते आवीयो, इलावर्द्धनपुर ज्यांहि ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ माहारा वाल्हाजी हो,हवे नहीं जाउं मइ वेचवा रे लो ॥ ए देशी ॥ तिहां एक सारथवाहनी रे लो, आज्ञा मागे एम ॥ माहारा वाल्हाजी हो ॥ पुण्य तणां फल जोयजो रे लो ॥ पुण्य तणी गति केहनी रे लो, कली जाये कहो केम ॥ माहारा० ॥ १ ॥ पुण्य० ॥ तेहने हाटे उपविशे रे लो, हवे जुर्ज पुण्यप्रभाव ॥ मा० ॥ पु० ॥ हेम लक्लाने लह्यो रे लो, मनमां चिंते ताव ॥ मा० ॥ २ ॥ पु० ॥ एह पुरुष महिमा थकी रे लो, पाम्यो धन हुं आप ॥ मा० ॥ पु० ॥ बहु माने बोलावीयो रे लो, कनकरथे तसु थाप ॥ मा० ॥ ३ ॥ पु० ॥ घर तेमी परणावतो रे लो, रत्नवती सुता नाम ॥ मा० ॥ पु० ॥ इंद्र मोछव जोवा एकदा रे लो, श्वशुरा साथे जाम ॥ मा० ॥ ४ ॥ पु० ॥ रथमां वेसी जायतां रे लो, महापुर नगरनी बाहार ॥ मा० ॥ पु० ॥ देखे प्रासाद तिहां मोटिकां रे लो, नवीन कराव्यां सार ॥ मा० ॥ ५ ॥ पु० ॥ पूछे श्वशुरने तिहां कणे रे लो, एह किस्युं मंमाण ॥ मा० ॥ पु० ॥ सारथवाह कहे सांजलो रे लो, एह वात कल्याण ॥ मा० ॥ ६ ॥ पु० ॥ सोमदत्त इहां राजीयो रे लो, सोमश्री पुत्री तास ॥ मा० ॥ पु० ॥ तास स्वयंवर मांमीयो रे लो, करे प्रासाद विलास ॥ मा० ॥ ७ ॥ पु० ॥ तेड्या बहु इहां राजवी रे लो, पण मन मान्यो न कोय ॥ मा० ॥ पु० ॥ सहु निज निज थानक गया रे लो, जावी जाव ते जोय ॥ मा० ॥ ८ ॥ पु० ॥ इम सुणी आगल जायतां रे लो, हाहा रव थयो ताम ॥ मा० ॥ पु० ॥ त्रोमी आलान मूल हाथीयो रे लो, आव्यो तिणहीज ठाम ॥ मा० ॥ ९ ॥ पु० ॥ रथथी राजकुमारिका रे लो, पामी हेठी जाम ॥ मा० ॥ पु० ॥ दीन अशरण ते देखीने रे लो, आवे वसुदेव ताम ॥ मा० ॥ १० ॥ पु० ॥ ते गजने करी तर्जना रे लो, तव थयो सनमुख तास ॥ मा० ॥ पु० ॥ खेद पमामी बहु परे रे लो, कीधो तेहने निराश ॥ मा० ॥ ११ ॥ पु० ॥ आवे एकांते महाबली रे लो, लेइ ते राजकुमारी ॥ मा० ॥ पु० ॥ उत्तरीय पवनादिक थकी रे लो, करे आश्वास अपार ॥ मा० ॥ १२ ॥ पु० ॥ धात्र लेइ तेहने गइ रे लो, वसुदेव गया निज थान ॥ मा० ॥ पु० ॥ नाही जोजन करी जेटले रे लो, बेठा छे बहु मान ॥ मा० ॥ १३ ॥ पु० ॥ प्रतिहारी आवी तिहां रे लो, देइ

आशीष जयकार ॥ मा० ॥ पु० ॥ एणी परे कहे सुणो स्वामी जी रे लो, सोमदत्त सुता सार ॥ मा० ॥ १४ ॥ पु० ॥ स्वयंवरमंरूप मांमीयो रे लो, तिहां एक अचरिज थाय ॥ मा० ॥ पु० ॥ केवलज्ञान ते उपनुं रे लो, नाम सर्वाण रुषिराय ॥ मा० ॥ १५ ॥ पु० ॥ देव घणा तिहां आवीया रे लो, मोछव करवा काज ॥ मा० ॥ पु० ॥ ते देखी राजकन्यका रे लो, उछव अति रुषिराज ॥ मा० ॥ १६ ॥ पु० ॥ जातिसमरण उपनुं रे लो, मौन धखुं तिणे त्यांहि ॥ मा० ॥ पु० ॥ में एकांते पूठीयुं रे लो, तव कहे धरी उछाह ॥ मा० ॥ १७ ॥ पु० ॥ सातमे देवलोके हता रे लो, देवता मुऊ जरतार ॥ मा० ॥ पु० ॥ ते वल्लजशुं जोगव्या रे लो, जोग अनेक प्रकार ॥ मा० ॥ १८ ॥ पु० ॥ एक दिन मुऊ साथे जलो रे लो, नंदीश्वरादिक जात ॥ मा० ॥ पु० ॥ जन्ममोछव जिनवर तणो रे लो, करी निज थानक जात ॥ मा० ॥ १९ ॥ पु० ॥ ब्रह्मलोक जव आवीया रे लो, तव नवि दीसे देव ॥ मा० ॥ पु० ॥ पवनाहत जिम दीवमो रे लो, उलाइ जाय ततखेव ॥ मा० ॥ २० ॥ पु० ॥ परवशहृदय ते हुं थइ रे लो, करती गवेषणा तास ॥ मा० ॥ पु० ॥ कुरु देशे जव हुं गइ रे लो, मूकती मन निसास ॥ मा० ॥ २१ ॥ पु० ॥ दीठा दोय तिहां केवली रे लो, पूछ्युं में धरी राग ॥ मा० ॥ पु० ॥ मुऊ पति स्वामी किहां गयो रे लो, मुऊ कहे सुण महाजाग ॥ मा० ॥ २२ ॥ पु० ॥ हरिवंशे जइ उपनो रे लो, चवी तहारो जरतार ॥ मा० ॥ पु० ॥ तुं पण चवी राजकन्यका रे लो, थाइश गुणगण धार ॥ मा० ॥ २३ ॥ पु० ॥ इंद्र मोछवमां तुऊने रे लो, इजथी राखशे तेह ॥ मा० ॥ पु० ॥ तव तुऊ जर्त्ता ते थशे रे लो, धरशे अति ससनेह ॥ मा० ॥ २४ ॥ पु० ॥ करी केवलीने वंदना रे लो, गइ देवी निज थान ॥ मा० ॥ पु० ॥ तेह चवीने उपनी रे लो, सोमदत्त सुता जाण ॥ मा० ॥ २५ ॥ पु० ॥ केवल मोछवे देवता रे लो, देखी सांजख्युं तेह ॥ मा० ॥ पु० ॥ मौन करीने ते रही रे लो, कह्युं सवि मुऊ पुर एह ॥ मा० ॥ २६ ॥ पु० ॥ में जइ राय जणावीया रे लो, तव सहु विसर्ज्या राय ॥ मा० ॥ पु० ॥ जेह स्वयंवर आवीया रे लो, सन्मानी समवाय ॥ मा० ॥ ॥ २७ ॥ पु० ॥ तें मूकावी गज थकी रे लो, आवी प्रतीत ते ताम ॥ मा० ॥ पु० ॥ तुम्ह तेरूण मुऊ मोकली रे लो, पाउ धारो अम्ह धाम ॥ मा० ॥

वातो सुणजो, नमिवंशे थयो राजा ॥ नामे पुलस्त्यनो मेघनाद सुत, जस पख बिहु छे साजा ॥ २५ ॥ म्हें० ॥ सुभूम चक्री तास जमाइ, दिव्य शस्त्र दीयां तेहने ॥ तेह शस्त्रनां नाम सुणो तुम्हे, नामे अर्थ छे जेहने ॥ २६ ॥ ॥ म्हें० ॥ १ वंभसीर २ आग्नेय छे बीजुं, ३ दारुण ४ माहिंद जाणो ॥ ५ जमदंभ ६ ईशान ७ वायव नामे, ८ थंभोमोह मन आणो ॥ २७ ॥ म्हें० ॥ ए शल्युकरण ने १० व्रणरोहण वली, ११ भसंयण जस नाम ॥ १२ ॥ लोकहरण वली १३ छेदनजीवण, १४ सर्वछेद १५ गुणकाम ॥ २८ ॥ म्हें० ॥ बीजां पण बहु शस्त्र ते आपे, श्वशुरनो तेह जमाइ ॥ दोय श्रेणिनी लखमी आपी, पूरव पुण्य कमाइ ॥ २९ ॥ म्हें० ॥ तेहने वंशे रावण राजा, वलीअ विभीषण सारो ॥ तेह विभीषणवंशे उपनो, विद्युद्वेग पियु महारो ॥ ३० ॥ ॥ म्हें० ॥ कुलक्रमागत आव्यां एह ते, तुमने सफलां थाशे ॥ भाग्यरहित अम्हने सवि विफलां, छे अम्ह घरमां वासे ॥ ३१ ॥ म्हें० ॥ भाग्य होये तो सफलां थाये, नहीं तो आपने मारे ॥ जुओ प्रतिवासुदेवने मारे, जे पोते चक्रने धारे ॥ ३२ ॥ म्हें० ॥ एम कहीने शस्त्र ग्रहीने, विधिपूर्वक ते साधे ॥ पुण्ये सिद्धि थाये सहु जगमां, देव परे आराधे ॥ ३३ ॥ म्हें० ॥ पुण्य थकी श्रीशांति जिणंदे, एक भव पद दोय पाम्या ॥ तेम कुंथु अरनाथने जाणो, पुण्यप्रकर्ष ए जाम्या ॥ ३४ ॥ म्हें० ॥ जुओ मरीचि श्रीऋषभजनो पोत्रो, बाप ते चक्री जास ॥ वासुदेव चक्री जिनवरपद, ए सवि पुण्यप्रकाश ॥ ३५ ॥ ॥ म्हें० ॥ वासुदेवनी पदवी नांही, पण वासुदेव सरिखो ॥ त्रण खंमनो जे थयो भोक्ता, कोणिक नृप तुम्हे परखो ॥ ३६ ॥ म्हें० ॥ वली कुमारपाल संप्रति राजा, पुण्य अतुल जेणे कीधां ॥ चक्री वासुदेव ने बलदेवा, पुण्य थकी सहु सीधा ॥ ३७ ॥ म्हें० ॥ पुण्य होय तो सघलुं सीके, नहीं तो उलटुं खीजे ॥ गांगो तेली पुण्यप्रभावे, राजसभा जय लीजे ॥ ३८ ॥ म्हें० ॥ बीजे खंडे बीजे अधिकारे, पांचमी ढाल गणीजे ॥ पद्मविजय कहे श्रोताने घर, मंगल चार भणीजे ॥ ३९ ॥ म्हें० ॥ सर्व गाथा ॥ २०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चार मंगल घर घर हुवे, पुण्य होय जो आप ॥ नहीं तो फुलमाला तणो, करमां प्रगटे साप ॥ १ ॥ उंधुं ते सवलुं हुवे, पुण्य तणे परिमाण ॥ गांगो तेली पुण्यथी, पाम्यो जयत निशान ॥ २ ॥

॥ ढाल ७ही ॥

॥ देव तणी ऋद्धि जोगवी आव्यो ॥ ए देशी ॥ ब्राह्मण कोइक दक्षिण देशे, प्रतिष्ठानपुर जाय ॥ जणतां त्रीश वरस थयां तेहने, तव अहंकार जराय रे ॥ जविका पुण्य तणी गति पेखो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अंकुश ते निज हाथे राखे, उदरे पाटो बांधे ॥ निश्रेणी देइ सेवक खंधे, लेइ कुद्दाल ते साधे रे ॥ २ ॥ ज० ॥ पेट फाटणने पाटो बांध्यो, आवो आकाशे जेह ॥ निसरणी तिणे खोदी काढुं, पाताले गयो तेह रे ॥ ३ ॥ ज० ॥ जे हारे मुऊथी तस आपुं, तृणपूलो मुख मांहि ॥ ते कारण पूलो लेइ चाले, मनमां अति उच्छांहि रे ॥ ४ ॥ ज० ॥ दक्षिण गुर्जर मरुथल जीती, बहु बिरुदावली बोले ॥ जोज रायनी राजसजामां, आवे मन नवि मोले रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ जोज राय बहु आदरमाने, उतास्यो पुर मांहि ॥ वाद सजा मांहि करतां उद्भट, पंमित मलीया ज्यांहि रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ कालि-दास क्रीमाचंड नामे, जवजूति अजिधाने ॥ पांचसें पंडितने ने जोने, लोक करे बहु माने रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ राय विचारे मनमां एहवुं, जुर्ज ब्राह्म-ण परदेशी ॥ माहरा ब्राह्मण जीत्या सवळा, मान न रह्युं मुऊ लेशो रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ क्रीमा अर्थे वनमां जातां, गांगो नामे एक तेली ॥ एके आंखे तेह ठे काणो, वस्त्र मेलां एह शैली रे ॥ ए ॥ ज० ॥ घाणी मांहेथी तेल काढीने, कुंज मांहि ते नाखे ॥ ते देखी राजा मन चिंते, अहो ए पुण्य ते दाखे रे ॥ १० ॥ ज० ॥ काणा केरी बुद्धि ते देखो, शास्त्र मांहे कह्युं साचुं ॥ संख्या रहित कलानो आगर, पंमित जीते तो राचुं रे ॥ ११ ॥ ॥ ज० ॥ यतः ॥ पष्टिर्वामनके दोषा, अशीतिर्मधुपिंगले ॥ शतं चटूटमू-टेषु, काणे संख्या न विद्यते ॥ १ ॥ तेमीने तव राजा पूठे, वाद करीश तुं जाइ ॥ तेली कहे अम्हे वाद करीशुं, एहमां मुऊ जाय कांइ रे ॥ १२ ॥ ॥ ज० ॥ अटपट न्याय जय पण होवे, सूर्यवार जव आव्यो ॥ तव जट्टा-चारय तेमीने, इणी परे कहे मन जाव्यो रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ तें अम्ह पंमित सघला जीत्या, पण पाठक नवि आव्या ॥ वाद करो ते साथे समजी, तिणे तुम्हने तेमाव्या रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ तव ते कहे रुडुं राजा जी, राय सिंहासन आपे ॥ पांचसें सहित जट्टाचारयनुं, सिंहासन पण थापे रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ गांगो तेली जट्टाचारय, वेष पंचांग पहेरावे ॥

कनक आभरण प्रमुख विभूषा, स्थूल वपु मन भावे रे ॥ १६ ॥ भ० ॥ मदोन्मत्त जेम हाथी चाल्यो, राजसभामां आवे ॥ उठी ऊभो थाये राजा, ऊभी सभा पण थावे रे ॥ १७ ॥ भ० ॥ बहु सन्मानादिक करी थापे, सिंहासने नरराय ॥ तव भट्टाचारय मन चिंते, स्थूल वपु ए भाय रे ॥ १८ ॥ भ० ॥ एहने केम जीताशे सहेजे, वचनकलह नवि कीजे ॥ तरत पूछुं ए पंमित पासे, सीये पाक वदीजे रे ॥ १९ ॥ भ० ॥ एम चिंती एक आंगुली दाखी, तव तेली दाखे दोय ॥ मनमां करीय विचार देखाडे, पंचांगुलि करे सोय रे ॥ २० ॥ भ० ॥ तव मुठी तेली देखाडे, देखी पंमित राय ॥ अंकुश मूकी पाटो ठोमी, निश्रेणी मंगाय रे ॥ २१ ॥ भ० ॥ तृणपूलामां कुहाडो वाले, मूकी निज अहंकार ॥ पाय पमीने इणी परे भाखे, सांभल वात श्रीकार रे ॥ २२ ॥ भ० ॥ मुजने कोइ न जीत्यो पहेलां, ए पंमित मुज जीत्यो ॥ राय कहे इयो वाद तें कीधो, संभलावो सुविदित्तो रे ॥ २३ ॥ भ० ॥ कहे भट्टाचारय सुणो राजा, अंगुली एक देखामी ॥ में कह्युं जगतनो शिव एक कर्ता, बे आंगुली इणे तामी रे ॥ २४ ॥ भ० ॥ एक शिव तेम शक्ति दीसे, एम भाख्युं तुज भट्टे ॥ तव पंच अंगुलीए में जणाव्युं, पंच इंद्रिय पण वट्टे रे ॥ २५ ॥ भ० ॥ तव तुम्ह भट्टे भाख्युं इणी परे, ते पण दमीया रुमा ॥ तुज पंमित ए महा वैरागी, लक्षण नहीं कोइ भूंमां रे ॥ २६ ॥ भ० ॥ शां शां वखाण करुं तुम्ह पंमित, नवि दीठो कोइ देशे ॥ भट्टाचारय गयो निज थानक, जीत्यो पुण्य विशेषे रे ॥ २७ ॥ भ० ॥ इणी परे तेलीने नृप भाखे, तें इयो कीधो वाद ॥ तव तेली कहे सांभलो स्वामी,जेम पाम्यो जयवाद रे ॥ २८ ॥ भ० ॥ एक आंख जे ताहरी दीसे, ते पण काढीश आज ॥ जो इहां तुं मुज साथे बोलीश, तो नहीं रहे तुज लाज रे ॥ २९ ॥ भ० ॥ में कह्युं आंख बे काढीश ताहरी, जो मुज कहे तुंकारो ॥ तव मुजने कहे मारुं चपेटो, एम मुज क्रोध हकार्यो रे ॥ ३० ॥ भ० ॥ मुष्टि देखामी में जणाव्युं, आवशुं मारोमार ॥ धम्माधम्मी करतां तुजने, हुं मारीश इणी ठार रे ॥ ३१ ॥ भ० ॥ इम सांभली राजा ते हसतो, भाखे इणी परे वात ॥ पुण्य तणा दिन एहने दीसे, पुण्ये सहु सुखशात रे ॥ ३२ ॥ भ० ॥ पुण्यवंत घसुदेवे साधी, जे विधि कीधी सूधी ॥ श्वशुर मूकावण हेन जमाइ, केम

ते सवली लीधी रे ॥ ३३ ॥ ज० ॥ बीजे खंडे ने अधिकारे, बठी ढाल रसाल ॥ पंमित उत्तमविजयनो बालक, पद्मने मंगलमाल रे ॥ ३४ ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥ २४२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते त्रिशिखर राजा हवे, वात सुणी निज कान ॥ जूचरने दीधी इसी, क्रोध वल्यो तिणे थान ॥ १ ॥ आव्या रण करवा जणी, युद्ध करे महाघोर ॥ दधिमुख परिवृत कुमर जी, करता तेहशुं जोर ॥ २ ॥ इंद्र नाम शस्त्रे करी, बेदे मस्तक तास ॥ दिव्यतिलक नगरे जइ, श्वशुर मूकावे पाश ॥ ३ ॥ श्वशुरगृहे आव्या वही, विलसे जोगविलास ॥ अनाधृष्ट सुत उपनो, रूपवंत गुणवास ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेलणाजी ॥ ए देशी ॥ श्रीवसुदेवजी एक दिने जी, साथे मदनवेगा नार ॥ यात्र सिद्धायतने गया जी, तिहां मल्या खेचर वार ॥ १ ॥ श्री० ॥ सूर्यनखी नाम नारी अबे जी, त्रिशिखर रायनी ताम ॥ आवी ते नगर वाली गइ जी, द्वेष मन धरी तिण ठाम ॥ २ ॥ श्री० ॥ रूप करी मदनवेगा तणुं जी, श्रीवसुदेव हरी जाय ॥ राजगृही नयर उद्यानमां जी, नाखी दीधो तिणे ठाय ॥ ३ ॥ श्री० ॥ तृण तणा पुंज उपर पड्या जी, फुःख नवि उपनुं कांइ ॥ पुण्यवंता जिहां पद धरे जी, होय कल्याण सहु ठाय ॥ ४ ॥ श्री० ॥ यतः ॥ श्लोक ॥ वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये, महारणे पर्वतमस्तके वा ॥ सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा, रक्षंति पुण्यानि पुराकृतानि ॥ १ ॥ तिहां जरासंध गुण गावतां जी, देखीने चिंतवे तेह ॥ राजगृह नयर दीसे जलुं जी, नयर मांहि गया जेह ॥ ५ ॥ श्री० ॥ द्यूत रमीया तेह नयरमां जी, जीतीया कनकनी कोम ॥ दान दीधुं ते याचक प्रते जी, नहीं कोइ एहनी जोड ॥ ६ ॥ श्री० ॥ तिहां कोटवाल आवी करी जी, बांधीया श्रीवसुदेव ॥ राजद्वारे लेइ जायतां जी, सुजटने पूछे ते हेव ॥ ७ ॥ श्री० ॥ मुऊ अपराध ते दाखवो जी, विण अपराध केम बंध ॥ तेह कहे सांजलो वातमी, जेह कहुं एह संबंध ॥ ८ ॥ श्री० ॥ एक नैमित्तिए जाखीयुं जी, श्रीजरासंध राजान ॥ प्रातसमे कोमी जीती करी जी, आपशे याचक दान ॥ ए ॥ श्री० ॥ तेहनो पुत्र तमे जाणजो जी, ताहरो वध

करनार ॥ तेह तुजने अमे उलखी जी, आगविण हणुं निर्धार ॥ १० ॥ ॥ श्री० ॥ तेह अपवादथी बीहीता जी, पर्वत उपर जाय ॥ ढोली नाखे तस जेटले जी, वेगवती धाव तिहां आय ॥ ११ ॥ श्री० ॥ लेइ जातां मन चिंतवे जी, भारंम खग मव्यो काय ॥ लेइ जाये चारुदत्त परे जी, गगनमारग लेइ जाय ॥ १२ ॥ श्री० ॥ कोइ पर्वत जइ मूकीयो जी, निरखतो वेगवती त्यांहि ॥ पूठीयुं तुं केम मुज मली जी, रुदन करती कहे प्रांही ॥ १३ ॥ श्री० ॥ जागी उठी हुं शय्या थकी जी, में नवि देखीया तुम्म ॥ रुदन करती करुण स्वरे जी, रुवे परिवार सहु अम्म ॥ १४ ॥ श्री० ॥ तुम तणी वात मुजने कहे जी, विद्यापति अभिराम ॥ हरण ने पतन सहु दाखीयुं जी, तुज विरहो तिणे ठाम ॥ १५ ॥ श्री० ॥ खोलवा हुं तुज नीकली जी, सिद्धायतने तुज दीठ ॥ मदनवेगाने साथे ग्रही जी, हुं पण आवी तुज पीठ ॥ १६ ॥ श्री० ॥ में तिहां प्रछन्न रही सांजव्युं जी, तुमे कह्युं नारीने एम ॥ तुज स्नेहे विरहो तज्यो जी, काल बहुनो सुणी केम ॥ १७ ॥ श्री० ॥ तेह सुणी क्रोध मन उपनो जी, मदनवेगा गइ जाम ॥ चैत्यमां दीप करवा जणी जी, सूर्पनखी हरे तुज ताम ॥ १८ ॥ श्री० ॥ रूप धरी मदनवेगा तणुं जी, औषधिबल थकी तेह ॥ हुं पण केमे धाइ खरी जी, तोही ते ठल तणी गेह ॥ १९ ॥ श्री० ॥ मानसवेग मुज भ्रातनुं जी, रूप कीधुं तेणे सार ॥ तेह देखीने हुं नासती जी, जायती चैत्य दुवार ॥ २० ॥ श्री० ॥ में तिहां मुनिवर लंघीया जी, मुज विद्या गइ सर्व ॥ मुनि तणी एह आशातना जी, हुइ फलवंती मानुं गर्व ॥ २१ ॥ श्री० ॥ धाव माहरी मली अन्यदा जी, मोकली खोलवा तुज ॥ देखीयो नग थकी नाखतां जी, तिणे आणी दीयो मुज ॥ २२ ॥ श्री० ॥ धाव मुज लेइ तुज तिहां थकी जी, आवी हिरिमंत जिहां तिष्ठ ॥ जिहां नदी पंच भेली मिले जी, मूकीयो थानक इष्ट ॥ २३ ॥ श्री० ॥ एम सुणी वेगवतीशुं रह्या जी, तापस आश्रमे ज्यांहि ॥ एक दिन एक कन्या तिहां जी, पाशयंत्री अठे त्यांहि ॥ २४ ॥ श्री० ॥ वेगवती नारीना कहेणथी जी, आप पण ठे कृपावंत ॥ बंध देखी तस ठोमवे जी, तेह मूर्छा लहे तंत ॥ २५ ॥ श्री० ॥ वारि गांटी तस सज्ज करी जी, देइ प्रदक्षिणा ताम ॥ श्रीवसुदेवने इम कहे जी, सांजलो सद्गुणधाम ॥ २६ ॥ श्री० ॥ सिद्ध विद्या थइ माहरी जी, माग

तुं माहरी पास ॥ ताहरी आश पूरण करुं जी, पण एक वात सुण खास ॥ २७ ॥ श्री० ॥ खंरू वीजे अधिकारमां जी, सातमी ढाल रसाल ॥ पंमित उत्तमविजयनो जी, पद्मविजय कहे वाल ॥ २७ ॥ श्री० ॥ सर्व गाथा ॥ २७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गगनवल्लन नामे नगर, गिरि वैताढ्यमां सार ॥ नमिवंशे राजा थयो, विद्युदंष्ट्र तिणी वार ॥ १ ॥ पश्चिम महाविदेहमां, एक दिन एक मुनिराय ॥ दीग प्रतिमाए रह्या, कोपवशे नृप थाय ॥ २ ॥ ए उत्पात किस्यो अठे, इम कहेतो मुख वाण ॥ वरुणाचल ते लेइ गयो, करे तर्जना डुःखखाण ॥ ३ ॥ जेम जेम मुनिवरने करे, तामना तर्जना राय ॥ तेम तेम समतारस वधे, मुनिवरने सुखदाय ॥ ४ ॥ कृपकश्रेणि मांहि चढ्या, शुक्लध्यानमां लीन ॥ केवलज्ञान ते उपनुं, पूर्णानंदे पीन ॥ ५ ॥ केवल महोत्सव कारणे, आव्या तिहां धरणेंद्र ॥ प्रत्यनीकपणुं मुनि तणुं, देखी क्रोधे फंद ॥ ६ ॥ विद्याभ्रष्ट तेहने कस्या, दीन थइ रह्या तेह ॥ तव धरणेंद्र तेहने कहे, तुमे अधमना गेह ॥ ७ ॥ केवली महिमा आवीयो, तुमे अज्ञाने अंध ॥ पापी तुमने शुं करुं, पण सुण एक संवंध ॥ ७ ॥ सिद्ध थशे महा क्लेशथी, पण जो करशो एम ॥ अरिहंत ने मुनिवर तणो, देखतो मनमां तेम ॥ ए ॥ महाविद्या रोहणी प्रमुख, ते तो नवि होय सिद्ध ॥ विद्युदंष्ट्र संतानमां, नर नारीने निषिद्ध ॥ १० ॥ महापुरुष दर्शन थकी, अथवा थाशे सिद्ध ॥ इम कही धरण राजा गयो, निज थानक परसिद्ध ॥ ११ ॥ तेहने वंशे उपनी, केतुमती जस नाम ॥ तेहने विष्णु परणीया, हुं पण तेहने गाम ॥ १२ ॥ वालचंद्रा मुऊ नाम ठे, परणो मुऊने स्वाम ॥ मागो वर कांइक वली, ते शौरि कहे ताम ॥ १३ ॥ जो तुठी मुऊ उपरे, वेगवतीने आप ॥ विद्या एम ते सांजली, श्रीवसुदेव आलाप ॥ १४ ॥ वेगवतीने लेइ गइ, गगनवल्लनपुर तेह ॥ वसुदेव तिहां रह्या, तापस तणे ते गेह ॥ १५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ पत्नीसंयुत पोसह लीधो, सुव्रत शेठे अन्यदा जी ॥ ए देशी ॥ इणी अवसर तिहां नूपति आवे, दोय आतम निज निंदता जी ॥ तापसरूपे देखी तेहने, वसुदेव उद्वेग विंदता जी ॥ १ ॥ पूठे कारण उद्वेग केरुं, तव

ते एणी परे उच्चरे जी ॥ सावथ्थीमां नरपति वलीयो, एणीपुत्र अभिधा धरे जी ॥ २ ॥ प्रियंगुसुंदरी नामे पुत्री, तास स्वयंवरे तेडीया जी ॥ बहु राजा मली आव्या वरवा, पण कुंवरीए सहु फेडीया जी ॥ ३ ॥ क्रोध चढ्या सहु राजा भाखे, करीये संग्राम ते एहशुं जी ॥ इम कहीने तिहां संग्राम मांड्यो, पण नवि हारे केहशुं जी ॥ ४ ॥ सहुने जीत्या तेह एकलडे, तव सहुए नासी गया जी ॥ गिरिमां केइक पेठा नवला, केइक मुख तृणे पशु भया जी ॥ ५ ॥ तापसव्रत अमे बिहु जणे लीधुं, अम पुरुषारथ धिग् हुउं जी ॥ अमे नपुंसकनी परे जाणो, अम भुजपणो ते वृथा भयो जी ॥ ६ ॥ वसुदेव सांभली इणी परे तेहने, जैनधर्म भलो बूझव्यो जी ॥ व्रत अंगीकरे जिनवर केरां, तापसपणो तस उझव्यो जी ॥ ७ ॥ वसुदेव गया सावथ्थी नगरी, तास उद्यानमां देखीयो जी ॥ त्रण द्वारनुं चैत्य ते रुडुं, देखी आश्चर्य ते लेखीयो जी ॥ ८ ॥ हेमाचारजकृत नेमिचरित्रमां, विस्तारे एम भाखीयां जी ॥ भवभावनामां त्रणे चैत्य रुडां, मलधारी हेमसूरे दाखीयां जी ॥ ए ॥ अगला बत्रीश छे मूलद्वारे, दुःखे प्रवेश होये जिहां जी ॥ अन्य द्वारथी पेसतां देखे, एक गृहस्थप्रतिमा तिहां जी ॥ १० ॥ बीजुं मुनिनुं रूप ते देखे, त्रीजुं त्रिपद पाडा तणुं जी ॥ देखी अचरिज पामी पूछे, विप्र कहे अचरिज घणुं जी ॥ ११ ॥ इणहीज नयरमां जितशत्रु राजा, मृगध्वज सुत तस जाणीये जी ॥ शेठजी एक इहां कामदेव नामे, अग्रेश्वरी मन आणीये जी ॥ १२ ॥ दंडक नाम गोवालीयो तेहने, एक दिन इणी परे विनवे जी ॥ ए महिषीना पांच तनुज में, पूर्वे हणीया अभिनवे जी ॥ १३ ॥ छठो पुत्र में रुडो जाणी, जात मात्र मुझने नम्यो जी ॥ भयथी कंपतो देखी राख्यो, माहरा मन मांहे गम्यो जी ॥ १४ ॥ तुमे पण अभय देजो एहने, जातिसमरणवंत प्रांही छे जी ॥ एम सुणी रायने विनवी मागे, महिषने अभय देजो यांही ले जी ॥ १५ ॥ राय कहे सुण अभय में दीधुं, नयरी मांहि सुखे फरो जी ॥ कोइ न मारे एहने प्राणी, एम आणा पुरमां करो जी ॥ १६ ॥ मृगध्वज एक दिन एक पग छेदे, तेह महिषनो तिण समे जी ॥ वात सुणी राय कोप्यो तेहशुं, मन मांहि कांइ नवि गमे जी ॥ १७ ॥ पुत्र हतो पण काढी मूक्यो, राय ते कोपे कलकल्यो जी, ॥ जो सोनानी पाली पण ते, पेट मराये नवि मल्यो जी ॥ १८ ॥ दिवस अढारमे मरण ते

पाम्यो, लोहिताक्ष नामे असुर थयो जी ॥ मृगध्वज पण वैराग्य ते पामी, व्रत आदरी मुनिवर नयो जी ॥ १९ ॥ दिवस बावीशमे शुन्न परिणामे, मृगध्वज केवल पामीया जी ॥ देव असुर नृप पर्षद आवी, नगवंत इम शिर नामीया जी ॥ २० ॥ नूपति पूछे वैरनुं कारण, केवली तव इणी परे कहे जी ॥ पूरव नव सुणो सहु जन नावे, वैरथी फुःख नविजन लहे जी ॥ २१ ॥ प्रतिवासुदेव ते पहेलो जाणो, राजगृह नयरे नलो जी ॥ अश्वग्रीव नामे ते रुमो, आस्तिकमति अति गुणनिलो जी ॥ २२ ॥ हरिश्मश्रु नामे अमात्य ते, नास्तिकवादी आकरो जी ॥ राय प्रधानने वाद ते होवे, वाधे विरोध ते फुःखकरो जी ॥ २३ ॥ त्रिपृष्ठ प्रथम वासुदेव ने वली, अचल नामे बलदेव जी ॥ तस हाथे मरी सातमी नरके, फुःख सहे कहे देव जी ॥ ॥ २४ ॥ तिहांथी बहु नव नमतां अश्वग्रीव, मृगध्वज नामे जाणजो जी ॥ नास्तिकवादी महिष थयो ए, तेह वैर मन आणजो जी ॥ २५ ॥ महिषनो पग में ठेद्यो वैरे, सुर वेगे आ पर्षदा जी ॥ ए नवनाटक सुणीने नविया, वैर न करशो को कदा जी ॥ २६ ॥ एक वार कीधां कर्म ते उदये, दश वेला आवे जघन्यथी जी ॥ तीव्र परिणामे अधिकुं आवे, इम जिन नाखे वचनथी जी ॥ २७ ॥ एम सुणी लोहिताक्ष देवता प्रणमी, चैत्यने त्रण मूरति करे जी ॥ नेमचरित्रमां इणी परे नाख्युं, हेमाचार्य मुनिवरे जी ॥ २८ ॥ नवनावनामां इणी परे नाख्युं, कामदेवे त्रिक गृह कर्यां जी ॥ ते कामदेवने वंशे संप्रति, कामदत्त शेठ गुण नर्या जी ॥ २९ ॥ बंधुमती तस पुत्री जाणो, निमित्तिआने तस पिता जी ॥ पूछे पुत्री वर कुण थाशे, निमित्तिउं कहे सुण मित्ता जी ॥ ३० ॥ बत्रीश अर्गला द्वार उघाडे, ते वर जाणो तुऊ धुया जी ॥ श्रीवसुदेवजी सुणीय उघाडे, सांनले श्रेष्ठी तस सुया जी ॥ ३१ ॥ तिहां आवी परणावे कन्या, वात सुणे राय तिण समे जी ॥ कौतुके आवे नृप तस पुत्री, प्रियंगुसुंदरी मन गमे जी ॥ ३२ ॥ बीजे खंडे ने अधिकारे, आठमी ढाल सोहामणी जी ॥ पंकित उत्तमविजयनो नाखे, पद्मविजय शिष्य सुणो गुणी जी ॥ ३३ ॥ सर्व गाथा ॥ ३२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नाम प्रियंगुसुंदरी, देखी श्रीवसुदेव ॥ ततक्षण थइ वश कामने, चिंते शुं कामदेव ॥ १ ॥ आवी एक प्रतिहार तव, कहे वसुदेवने एम ॥ ए

नारी घर आवजे, प्रातसमे तुं नेम ॥ २ ॥ एणीपुत्र चरित्र तस, जाखे जोमी पाण ॥ निज थानक गयो पोलीयो, जूए नाटक तिण गण॥ ३॥ कोइ पुरुषना मुख थकी, सांजली एहवी वात ॥ नमिपुत्र वासव थयो, खेचर ते कहे वात ॥ ४॥ तस वंशे वासव घणा, एक थयो पुरुहूत॥ एक दिन वेठो गजवरे, रमवाने आकूत ॥५॥ गौतमनारी देखतो, नाम अहल्या तास ॥ ते साथे क्रीमा करे, राय अधिक उल्लास ॥ ६ ॥ तव गौतम आवी करी, असमंजस जोइ तेह ॥ लिंगछेद ते पुरुषनो, धरी ते मनमां खेह ॥ ७ ॥ वात सुणी वसुदेवजी, मनमां वीहीना जोर ॥ आव्या नहीं प्रियंगु घरे, रखे ते थाउं चोर ॥ ८ ॥ वंधुमती साथे तदा, सूता श्री वसुदेव ॥ जागे आगे तव खमी, देखे देवी देव ॥ ए ॥ मनमां चिंते कोण ए, देवी वोली ताम ॥ शुं मनमां चिंते अछे, सहु ए ताहरे नाम॥ १०॥ इम कहीने ते लइ गइ, अशोक वामी मांहि ॥ कहे सुण वात तुं माहरी, हुं कहुं धरी उछांहि ॥ ११ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ पंच सयां धण परहरी ॥ ए देशी ॥ श्रीचंदनपुर नयरमां, अमोघरेता ते राजा रे ॥ चारुमती तस जारया, जेहना वेहु पख ताजा रे ॥ १॥ कर्म तणी गति एहवी, चारुचंड सुत तास रे ॥ अनंगसेना गणिका सुता, कामपताका छे जास रे ॥ २ ॥ क०॥ यज्ञ करे ते जूपति, तापस वहु तिहां आवे रे ॥ कौशिक तापस तिहां वहु, साथे फल तेइ लावे रे ॥ ३ ॥ ॥ क०॥ फल आप्यां तेह रायने, तव राजा एम पूछे रे॥ एह तुमे फल किहां थकी, पाम्या ते कहो शुं छे रे ॥ ४ ॥ क० ॥ तेह कहे सुणो नरपति, हरिवंशनी उत्पत्ति रे॥ संजलावी तेह रायने, कल्पवृक्ष उपपत्ति रे॥ ५॥ ॥ क०॥ कामपताका तिण समे, नाटक करती दीठी रे॥ चंडकुमार कौशिक तणां, मन हरती ते उक्किठी रे ॥ ६ ॥ क० ॥ यज्ञ ते संपूरण थइ, ते गणिकाने कुमार रे ॥ आप आधीन करे वरा, कौशिक हवे तिणी वार रे॥ ॥ ७ ॥ क० ॥ रायने गणिका जाचतो, तव कहे इणी परे राय रे ॥ चंडकुमारे अंगीकरी, तिणे वीजे न अपाय रे ॥ ८ ॥ क० ॥ राय निषेध्यो इणी परे, कौशिक दीये शराप रे ॥ जे रमशे एह नारीशुं, मरण ते पामशे आप रे ॥ ए ॥ क० ॥ राज सोंपी चंडकुमरने, तापस हुउं वनवास रे ॥

राणी पण साथे गइ, गर्भ न जाएयो तास रे ॥ १० ॥ क० ॥ गर्भ वधे ते दिन थकी, कहे नरतारने आवी रे ॥ अनुक्रमे जनमी कन्यका, ऋषिदत्ता नामे नावी रे ॥ ११ ॥ क० ॥ चारण मुनि पासे थइ, श्राविका ते धर्म कामे रे ॥ यौवन पामी अनुक्रमे, माता मरण ते पामे रे ॥ १२ ॥ क० ॥ नाम शिलायुध राजीयो, आहेडे तिहां आवे रे ॥ ऋषिदत्ता जोइ मोहीयो, एकांते लेइ जावे रे ॥ १३ ॥ क० ॥ विविध प्रकार क्रीमा करी, ऋषिदत्ता तव नापे रे ॥ स्नान कर्युं ऋतु अवसरे, यदि गर्भ तो केम थाशे रे ॥ १४ ॥ क० ॥ तव राजा कहे इणी परे, इक्ष्वाकु कुले जायो रे ॥ सावत्थीपुरनो धणी, शतायुध मुफ तायो रे ॥ १५ ॥ क० ॥ जो तुफ पुत्र ते उपजे, तो आवजे मुफ पासे रे ॥ तेह पुत्रने थापशुं, राज्यपदे सुविलासे रे ॥ १६ ॥ क० ॥ सैन्य आवी मळ्युं रायने, राजा पूठीने जाय रे ॥ ऋषिदत्ता कहे तातने, अनुक्रमे पुत्र ते थाय रे ॥ १७ ॥ क० ॥ तेह प्रसवरोगे करी, मरण लहे ऋषिदत्ता रे ॥ अग्रमहिषी ज्वलनप्रज तणी, नागकुमारमां पत्ता रे ॥ १८ ॥ क० ॥ अमोघरेता तस तात जी, बालकने लेइ हाथे रे ॥ रुदन करे तापस तिहां, हाथ देइ तेह माथे रे ॥ १९ ॥ क० ॥ अवधिज्ञाने करी जाणीयो, पुत्र ते अति सुकुमालो रे ॥ मृगलीनुं रूप करी तिहां, धवरावे तेह बालो रे ॥ २० ॥ क० ॥ एणी ते हरणीनुं नाम छे, तिणे धवराव्या माटे रे ॥ एणीपुत्र नामे थयो, जगविख्यात ए वाटे रे ॥ २१ ॥ क० ॥ कौशिक तापस तिहां मरी, साप दृष्टिविष थाय रे ॥ अमोघरेताने आश्रमे, जाणी दंश ते दाय रे ॥ २२ ॥ क० ॥ देवांगना विष हरी लीये, ते अहिने प्रतिबोधे रे ॥ मरी बल नामे सुर थयो, देखो फल तुम्हे क्रोधे रे ॥ २३ ॥ क० ॥ रूप ऋषिदत्ता तणे, देवी सावत्थी जाय रे ॥ सुत सोंपे तेह नूपने, नूपने विसरी जाय रे ॥ २४ ॥ क० ॥ पुत्र मूकी देवी कहे, आकाशे जइ वाणी रे ॥ ऋषिदत्ता हुं कन्यका, वनमां नोगवी जाणी रे ॥ २५ ॥ क० ॥ तुफ थकी पुत्र ए उपनो, हुं तो पंचत्व पामी रे ॥ देवी थइ मृगीरूपथी, वृद्धि कर्यो सुखकामी रे ॥ २६ ॥ क० ॥ एणीपुत्र तुफ पुत्र ए, सुणी ते वात संजारी रे ॥ राज थापी तेह पुत्रने, लीये दीक्षा सुखकारी रे ॥ २७ ॥ क० ॥ देवलोके गयो नरपति, एणीपुत्र हवे राय रे ॥ अष्ठम तपस्या करे तिहां, देवी आराधी ते वाय रे ॥ २८ ॥ क० ॥ तुष्टमान देवी थइ, पुत्री दीधी एक रे ॥ नामे प्रियंगुसुं-

दरी, रूपवंत अतिरेक रे ॥ २ए ॥ क० ॥ तेह देवी हुं जाणजे, आगल सुण हवे वात रे ॥ स्वयंवरमंरूप मांडीयो, बहुला राय आयात रे ॥ ३० ॥ क० ॥ पुत्रीए न वस्यो को राजीयो, तव कोपे कलकलीया रे ॥ युद्ध करण- ने सामटा, राजा एकठा मलीया रे ॥ ३१ ॥ क० ॥ सान्निध में करी रायनी, तव सवि नृप गया हारी रे ॥ तुऊ देखी पीरूी घणुं, काम मांहे तेह धारी रे ॥ ३२ ॥ क० ॥ अठम करी आराधती, हुं पण थइ सुप्रसन्न रे ॥ में प्रतिहार साथे कह्युं, पण न लह्युं तुऊ मन्न रे ॥ ३३ ॥ क० ॥ तुं एहने रे अंगीकरे, तव कहे श्रीवसुदेव रे ॥ संजारुं तुऊने जदा, तव आवजे तत- खेव रे ॥ ३४ ॥ क० ॥ अंगीकार करी ते गइ, बंधुमती घर मूकी रे ॥ अदृश्य थइ हवे कुमर जी, रात गइ ते विसुकी रे ॥ ३५ ॥ क० ॥ प्रातसमे प्रतिहार- शुं, आयतने वसुदेव रे ॥ आवे ते प्रियंगुसुंदरी, पाणिग्रहणने हेव रे ॥ ३६॥ क० ॥ गंधर्व विवाहे परणीया, दिवस अढार ते थाय रे ॥ रायने वात सकल कही, देवीदत्त वर राय रे ॥ ३७ ॥ क० ॥ इणी परे प्रतिहारे कह्युं, तव जामातने लावे रे ॥ एणीपुत्र निज मंदिरे, सुखमां काल गमावे रे ॥ ३८ ॥ क० ॥ नवमी ढाल सोहामणी, खंरू बीजे अधिकार रे ॥ पद्मविजय कहे सांजलो, सुणतां जय जयकार रे ॥ ३ए ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ३७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर वैताढ्यमां, गंधसमृद्धपुर सार ॥ प्रजावती कन्यापिता, गंधारपिंगल धार ॥ १ ॥ तेह प्रजावती कन्यका, जमती जमती आय ॥ सुवर्णाज नयरे सुखे, क्रीमा करवा जाय ॥ २ ॥ देखे तिहां सोमश्री प्रते, सखीपणां करे दोय ॥ पतिविरहो जाणी करी, कहे प्रजावती सोय ॥ ३ ॥ मनमां चिंता मत करे, आणुं तुऊ जरतार ॥ तव निसासा नाखीने, सोमश्री कहे तिण वार ॥ ४ ॥ वेगवती जेम आणीयो, तेम तुं आणीश आज ॥ वांढो वधीए कस्यो, ते कहे हुं वरराज ॥ ५ ॥ प्रजावती कहे सांजले, वेगवती सम नाहीं ॥ दूध तक्र दोय उजलां, महा अंतर ए मांहि ॥ ६ ॥ सावत्थी नगरी जइ, आएयो श्री वसुदेव ॥ रूप परावर्त्तन करी, सुख जोगवे स्वयमेव ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ आज हुं तो अलजइ रे वहेनी ॥ ए देशी ॥ श्री वसुदेवजी रे स्वामी, सुख जोगवता इछाकामी ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ जाणे मानस रे वेग, तव

तिहां आव्यो अति अविवेग ॥ १ ॥ श्री० ॥ श्रीवसुदेवजीने बांधे, तव बहु कलकल शब्द ते वाधे ॥ श्री० ॥ गरुडा खेचर रे आवी, श्रीवसुदेवजीने मूकावी ॥ २ ॥ श्री० ॥ करे वसुदेवजीने साथे, वादविवाद ते वलीया हाथे ॥ श्री० ॥ गया वैजयंती रे नयरी, वलसिंह नृप जेणे जीत्या वयरी ॥ ३ ॥ श्री० ॥ मानसवेग तव रे बोले, सोमश्री आपी मुजने खोले ॥ श्री० ॥ परण्यो महारी रे बहेणी, ते कहो अमने कहेनी केहणी ॥ ४ ॥ श्री० ॥ कहे वसुदेवजी रे वात, मुजने आपे एहनो तात ॥ श्री० ॥ तेहने हरी गयो रे एह, सहु जंन जाणे वातनी तेह ॥ ५ ॥ श्री० ॥ न गम्यो नारीना मनमां, तो शुं फोकट रुवे रणमां ॥ श्री० ॥ वेगवतीए जे वरीयो, ते तो नारी गम्यो ते करीयो ॥ ६ ॥ श्री० ॥ धणी धणीयाणी जो राजी, तो क्या करतहे मीयां काजी ॥ श्री० ॥ इणी परे वादे ते जीत्यो, श्रीवसुदेवजी जगमां वदीतो ॥ ७ ॥ श्री० ॥ प्रज्ञप्ति विद्या रे आपे, ते प्रभावती मनमां थापे ॥ श्री० ॥ विद्याधर बहु रे वयरी, जीते लीलाए ते शौरि ॥ ८ ॥ श्री० ॥ मानसवेगने रे बांधी, सोमश्री आगल मूक्यो सांधी ॥ श्री० ॥ वेगवतीने रे वचने, मूके मानसवेगने जतने ॥ ९ ॥ श्री० ॥ बहु विद्याधर रे साथे, थयो मानसवेगादिक नाथे ॥ श्री० ॥ सोमश्री साथे रे लेइ, बेसी विमाने खेचर केइ ॥ १० ॥ श्री० ॥ महापुर नयरे रे आवे, जोग ते जोगवे मनने भावे ॥ श्री० ॥ सूर्पक खेचर रे आइ, घोटकरूपे हरी गयो माइ ॥ ११ ॥ श्री० ॥ वसुदेवजी तेह रे जाणी, मारे मुठी ते वज्र समाणी ॥ श्री० ॥ मूकी दीयो दुःख रे आणी, पडीया मंदाकिनीने पाणी ॥ १२ ॥ श्री० ॥ उतरी गंगानुं नीर, तापसआश्रमे पहोतो धीर ॥ श्री० ॥ तिहां एक नारीने देखे, हाडनी माला कंठे पेखे ॥ १३ ॥ श्री० ॥ तापसने तिहां रे पूछे, ए कन्यानी वात ते शुं छे ॥ श्री० ॥ तव तापस कहे रे स्वाम, नंदीषेणा एहनुं नाम ॥ १४ ॥ श्री० ॥ एह जरासंधनी धूआ, परिव्राजकने वश एक हुआ ॥ श्री० ॥ ते परिव्राजकने मार्यो, एह अन्याय राये नवि धार्यो ॥ १५ ॥ श्री० ॥ तेहनां हाड ए रे दीसे, कामण कीधुं विशवावीशे ॥ श्री० ॥ मंत्रे कीधुं ते दूरे, कामण वसुदेवे संपूरे ॥ १६ ॥ श्री० ॥ ते जितशत्रुनी भज्जा, केतुमती परणावी दिज्जा ॥ श्री० ॥ तिहां जरासंधने रे जाण्युं, द्वारपाले इणी परे जइ वार्युं ॥ १७ ॥ श्री० ॥ नंदीषेणानो रे भ्राता, स्वामी ए वसुदेव विख्याता ॥ श्री० ॥ रथ

वेसीने ते राय, श्रीवसुदेवनी पासे जाय ॥ १७ ॥ श्री० ॥ बांध्यो तिहां कोटवाले, तव कारण पूछे तिणे ताले ॥ श्री० ॥ तव कोटवाल ते भाषे, सांभलो वात अवल सुविलासे ॥ १८ ॥ श्री० ॥ श्रीजरासंधने रे एम, निमित्तिए भाख्युं धरी प्रेम ॥ श्री० ॥ तुक पुत्रीनो जे भ्राता, तस सुत हणशे तुम्हने ख्याता ॥ २० ॥ श्री० ॥ ते कारण तुक रे हणीये, इहां पाप पुण्य नवि गणीये ॥ श्री० ॥ वधथानक लेइ रे जावे, पशु परे वसुदेवजी आवे॥ २१ ॥ श्री० ॥ तव प्रभावती लेइ जाय, गंधसमृद्ध नयरे सुखदाय ॥ श्री० ॥ श्रीगंधारपिंगल जे तात, परणावे पुत्री सुविख्यात ॥२२॥ श्री०॥ सुख भोगवतां ते ठाम, बहु विद्याधरी परण्या ताम ॥ श्री० ॥ गया सुकोशला नयरी, परण्या सुकोशला ते कुमरी ॥ २३ ॥ श्री० ॥ अष्ट प्रकारे रे भोग, भोगवे पामी तेह संयोग ॥ श्री० ॥ दशमी ढाले रे पूरो, बीजो ए अधिकार सनूरो ॥ २४ ॥ श्री० ॥ यतः ॥ सुगंधो वनिता वस्त्रं, गीतं तांबूलभोजनं ॥ मंदिरं वाहनं चैव, अष्टौ भोगाः प्रकीर्त्तिताः ॥ १ ॥ दश ढाले करी रे भाख्यो, भविजन लोके श्रवणे चाख्यो ॥ श्री० ॥ पंमित उत्तमनो शिष्य, भाखे पद्मविजय सुजगीश ॥ २५ ॥ श्री० ॥ सर्व गाथा ॥ ४०४ ॥ इति श्रीमद्दसंविज्ञपक्षधरस्य चरणकरणगुणधरस्य वंदितनिखिलजनभ्रमरचरणारविंदस्य पंमितश्रीउत्तमविजयगणेः शिष्यपंमितपद्मविजयेन विरचिते श्रीमदमरनिकरवंदितनेमिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे द्वितीयखंमस्य वसुदेवाधिकारे मातंग्यादिसुकोशलांतखेचरीभूचरीपरिणयनो नामा द्वितीयोऽधिकारः समाप्तः ॥२॥

॥ अथ द्वितीयखंडस्य तृतीयोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शारद सार दयाकरु, जिनवर वर शिवदाय ॥ गुरु गुरु गुणदायक नमुं, तिम विद्यागुरु राय ॥ १ ॥ ए अधिकार पूरण कस्यो, कहुं त्रीजो अधिकार ॥ जेम जेम आगल सांभले, तेम तेम हर्ष अपार ॥ २ ॥ कनकवती विवाहनो, भाखुं ए अधिकार ॥ विस्तारे करी वर्णवुं, ते सुणजो सुखकार ॥ ३ ॥ सुणतां बोध होये भलो, बोधे समकित थाय ॥ समकितथी चारित्रगुण, व्रतथी मोक्ष जाय ॥ ४ ॥ एह परंपर कारणे, शिवपदनुं दातार ॥ सांभलवुं जिन आगमे, भाख्युं छे निर्धार ॥ ५ ॥ सांभली जाणे

पापने, सांजली जाणे श्रेय ॥ पाप श्रेय सुणी जाणतो, आदरे जे आदेय ॥ ६ ॥ ते माटे सज्ज थइ सुणो, सुणतां लाज अपार ॥ वक्ता पण ह्र्षित हुइ, श्रोता देखी सार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ माला किहां छे रे ॥ ए देशी ॥ इण जरते जिहां बहु गुण वरते, अलका उपम नयरी रे ॥ पेढालपुर ते सुखनो अंकुर, जागी जाय सवि वयरी रे ॥ १ ॥ जविजन सुणीये रे ॥ गुणिजन वात विनोद, नित नित जणीये रे ॥ ए आंकणी ॥ गजशालामां कलह ते दीसे, स्नेहनो क्षय छे दीवे रे ॥ मार शब्द सोगठीने माथे, जन सहु सुखमां जीवे रे ॥ २ ॥ ॥ ज० ॥ सहु जन हरखे करी तिहां बोले, घर घर ध्वज करी उंची रे ॥ मानुं रत्नाकर विषधर ए, छाया जे पके नीची रे ॥ ३ ॥ ज० ॥ ते नगरीनो सघलो जन ते, करतो धर्मनी वातो रे ॥ नील राग जेम धर्मराग वली, जिहां अधर्म खाय लातो रे ॥ ४ ॥ ज० ॥ ते नयरी मांहि जितवयरी, हरिचंद नामे राजा रे ॥ राजा परे राजे राजेश्वर, बिहु पखथी जे ताजा रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ मानुं रिद्धे हरिनो अनुज ए, चंद्र उज्ज्वल जिम सोहे रे ॥ तिणे हरिचंद्र युगत जस अजिधा, सहु जन मनडुं मोहे रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ दासीपणुं करे जूवेलीनुं, लखमी दिन दिन वाधे रे ॥ जश पण मानुं स्पर्द्धा करतो, त्रणे जुवनने साधे रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ जस जशराशि गाये वर खयरी, सुरदेवी मनोहारी रे ॥ लखमीपतिने लखमीनी परे, लखमीवती तस नारी रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ शील लज्जा वली प्रेम ने दाक्षिण, विनय प्रमुखे करी नारी रे ॥ पतिमनकुमुदानंदन चंद्रिका, रंजा रूपे हारी रे ॥ ९ ॥ ज० ॥ जास कला ते पल्लव जाणो, लज्जादिक गुफूणल रे ॥ पतिनी जक्ति ते फल जस उग्यां, जंगम वेली अमूल रे ॥ १० ॥ ज० ॥ वाचा ते होय अमृत सरिखी, लागे लोकने मीठी रे ॥ सुख जोगवतां पियु संयोगे, पुण्ये पुत्री दीठी रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ निज कांते करी दीपिका सरखी, सूतिकागृहमां राजे रे ॥ जात मात्र सहु लक्षण पूरां, लखमी परे गृह गाजे रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ पूर्व जन्मनो जर्ता आवी, धनद नामे लोकपाले रे ॥ आवी कनकनी वृष्टि करे तिहां, पूरव स्नेहने पाले रे ॥ ॥ १३ ॥ ज० ॥ कनकवृष्टि देखीनें हरख्यो, लक्ष्मीवती पति वारु रे ॥ ते

पुत्रीनुं नाम ते थापे, कनकवती मनोहारु रे ॥ १४ ॥ भ० ॥ एक अंकथी बीजे अंके, संचरती ते वाधे रे ॥ हलुए हलुए पगलां मांझे, मानुं कामी मन साधे रे ॥ १५ ॥ भ० ॥ ताली देइ बोलावे माता, ते पगथी चालंती रे ॥ नव नव उल्लापे करी गावे, कुमरी मुख भालंती रे ॥ १६ ॥ ॥ भ० ॥ हलवे हलवे बोलवुं शीखे, मुण मुण वाणी बोले रे ॥ सारिकानी परे वली बोलावे, धाव्यो लेइ निज खोले रे ॥ १७ ॥ भ० ॥ कुंतल जेहनो ऊकमी बांध्यो, कुंमल चपल ते सोहे रे ॥ रणऊणकार करे नेउर पगं, रतिपति लंपट मोहे रे ॥ १८ ॥ भ० ॥ रत्नकंडुकथी ते रमे नारी, मानुं रमा ए सारी रे ॥ कृत्रिम पुत्र करी नित्य रमती, वधती अति मनोहारी रे ॥ १९ ॥ भ० ॥ क्षीरकंठपणुं अनुक्रमे तजती, सा कला ग्रहणने योग्य रे ॥ जाणी गुणखाणी मन आणी, जोवरावे शुभ योग रे ॥ २० ॥ भ० ॥ शुभ दिवसे कला ग्रहेवा हेते, कलाआचारय पासे रे ॥ मूके भणवा कनकवतीने, करवा श्रुत अभ्यासे रे ॥ २१ ॥ भ० ॥ तेह अढार लिपी तिहां शीखे, वली शीखे नाममाला रे ॥ भणती ते निज नाम परे अति, अभ्यासे लघु वाला रे ॥ २२ ॥ भ० ॥ हंसलिपी वली भूतलिपी ने, जख्की रख्कसी नामे रे ॥ उड्डी जवणी तुरुकी कीरी, डविनी नवमे ठामे रे ॥ २३ ॥ भ० ॥ सिंधवी मालविणी नमी नागरी, लाडलीवी वली जाणो रे ॥ पारसी निमित्ति चाणकी, मूलदेवी मन आणो रे ॥ २४ ॥ भ० ॥ एह अढार लिपी भेद तेहना, अंकपल्लवी घरपल्लवी रे ॥ तिम करपल्लवी नेत्रपल्लवी वली, जाणे ठागापल्लवी रे ॥ २५ ॥ भ० ॥ तर्क अभ्यास वली छंद ज्योतिष, अलंकारनो पार रे ॥ पामे वली खट भाषा जाणे, काव्यकुशल थइ सार रे ॥ २६ ॥ भ० ॥ चित्र करे ते नव नव भाते, पुस्तक वांचे तेह रे ॥ क्रिया कारक गुप्त ते जाणे, अर्थ विकट करे जेह रे ॥ २७ ॥ भ० ॥ क्रियागुप्तत्वं चैवं ॥ यतः ॥ कुमारपालभूपाल, त्वमहो जीवरक्षणे ॥ सभासमक्षमादिष्टं गुरुणा हेमसूरिणा ॥ १ ॥ कारकगुप्तत्वं चैवं ॥ यतः ॥ गौरीपदं नखाकारं, शशिनं शिरसा दधौ ॥ इहैव गोपितः कर्त्ता, दत्तपाएमासिकोऽवधिः ॥ २ ॥ जाणे प्रहेलिका रुमी रीते, द्यूतकला मांहि डाही रे ॥ सारथीनी ते कला मांहे कुशला, रसवती कला अवगाही रे ॥ २८ ॥ भ० ॥ इंद्रजाल देखामवा माही, वाजित्रनी कला जाणे रे ॥ एहवी कोइ कला नहीं जगमां, एहना

चित्तमां न आवे रे ॥ २ए ॥ ज० ॥ इंदुकलाथी चउगुणी जेहमां, दीसे रूपी नारी रे ॥ यौवनवय आवी तेह बाला, रतिरूपे करी हारी रे ॥ ३० ॥ ज० ॥ त्रीजे अधिकारे ए पहेली, ढाल ते बीजे खंडे रे ॥ उत्तमविजयनो पद्मविजय कहे, पूरी रंग अखंडे रे ॥ ३१ ॥ सर्व गाथा ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ यौवन आवी नारी ते, पद जस अलतारंग ॥ सुरदंतिकर सम ऊरू, रोमराजी जस चंग ॥ १ ॥ सिंहलंकी अति सोहती, मदनशय्या मानुं नाजि ॥ हृदय ते शोजे रुयडुं, सूचवे ते श्रीलाज ॥२॥ गोल कठिन कुच सोहता, चुंचुक कृष्ण ठे जास ॥ काम नृपति मंको करण, मानुं नोवत विहुं पास ॥ ३ ॥ चंद्र परे मुख देखीये, ऊाल ऊबूके कान॥ जाल विशाल दीपे घणुं, शोजा तास अमान ॥ ४ ॥ नासा ते नाला समी, कर्ण ते पर्ण विशाल ॥ नेत्रकमल शोजा इसी, पामे अति सुकुमाल ॥ ५ ॥ जार धरी थाक्यो घणुं, कहीये जे शेषनाग ॥ आवी रह्यो वेणीमिषे, पामी एहवो लाग ॥ ६ ॥ सरिता लावण्यजल तणी, मध्यम वय लही तेह ॥ कला सफल करवा जणी, रूप कलानुं गेह ॥ ७ ॥ मात पिता देखी तिसे, चिंते इणी परे चित्त ॥ वरने योग्य थइ हवे, धरतां मनमां प्रीत ॥ ८ ॥ मांमे मंरूप स्वयंवरा, राय धरी आणंद ॥ बहु राजा तेमावीया, धरता हर्ष अमंद ॥ ए ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी चांदलीया ॥ एक दिन बेठी निज सदने, शशी जीत्यो जेणे वदने ॥ थानक कीधुं मानुं मदने रे॥ रंगीली ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ देखे एक हंस उदार, चंचू चरण ने लोचन सार॥ अशोकपल्लव रत धार रे ॥ रंगीली० ॥ २॥ उज्ज्वल जस पंख विराजे, सुरसरिता फेन ज्युं ठाजे ॥ जेम जंद्र मानुं दीवाजे रे॥ रंगी०॥ ३॥ सोनानी घूघरी रणके, पग मांडे वाजे रणऊणके॥ मन मोहे सहुनां सणके रे॥ रंगी० ॥ ४॥ जस नाद मधुर अति दीसे, देखीने मनडुं हीसे ॥ वाणीवाहन विशवावीशे रे ॥ रंगी० ॥ ५ ॥ तेह कनकवती मन चिंते, होशे कोइ घर पुण्यवंते ॥ ए तो तास विनोदने संते रे॥ रंगी० ॥ ६ ॥ कोइ स्वामी एहनो होशे, अन्यथा जूषण कोण खोशे ॥ एहने लोक बेठा जोशे रे ॥ रंगी० ॥ ७ ॥ जस होय तेहनुं हो एह,

पण ए गंभीर मन गेह ॥ गोंखे बेठो सोहे जेह रे ॥ रंगी० ॥ ७॥ ए तो मंगल चामर सोहे, करफरस करे मन मोहे ॥ हलुए हलुए ते दोहे रे ॥ रंगी० ॥ ए ॥ पुंमरीक कमल परे क्रीमा, करती नारी गतव्रीमा ॥ नवि करती तेहने पीमा रे ॥रंगी० ॥ १० ॥ फरसे कर मस्तके तास, सोहे पिछ भार उल्लास ॥ जेम डिंज तणो केशपाश रे॥ रंगी०॥ ११ ॥ कहे सखीने सांजल वात, दारुपंजर सुख शात ॥ लावी एहने मांहे घात रे ॥ रंगी० ॥ १२ ॥ खग नवि रहे एकण थाने, इम दीठुं सांजल्युं काने ॥ लेवा उठी ते जव शाने रे ॥ रंगी० ॥ १३ ॥ तव बोल्यो तेह मराल, लागे ते अतिहि रसाल ॥ मानुषजाषा सुविशाल रे ॥ रंगी० ॥ १४ ॥ रे राजसुता सुण वाच, तुं निपुण बे कहुं साच ॥ पंजरमां मूकी मत माच रे ॥ रंगी० ॥ १५ ॥ जो मुजने तुं नवि घात, पंजरमां तो विख्यात ॥ संजलावीश एक तुज वात रे ॥ रंगी० ॥ १६ ॥ तेह हंस तणी सुणी वाणी, विस्मित थइ ते सपराणी ॥ ते अमृत सम गुणखाणी रे ॥ रंगी० ॥ १७ ॥ जेम प्राहुणमो घर आवे, तिणी रीते तास बोलावे ॥ पूछे कुशल ते मनने जावे रे ॥ रंगी० ॥ १७ ॥ संजलाव तुं मुजने हंस, ताहरा रुडा दीसे अंस ॥ तुं राजहंस अवतंस रे ॥ रंगी०॥ १ए॥ हंस कहे सुणो कोशला नयरी, तस कोशल राय जितवयरी ॥ तस डुहिता सुकोशला खयरी रे॥ रंगी० ॥ २० ॥ तस जर्त्ता वसुदेव नाम, जस रूपे जीत्यो काम ॥ ते तो लोकोत्तर गुणधाम रे ॥ रंगी० ॥ २१ ॥ तस सरिखुं रूप ते दीसे, आदर्श मांहे मन हीसे ॥ जगमां बहु जास जगीशे रे ॥ रंगी० ॥ २२ ॥ जेम पुरुष मांहे ते दीठो, तुज नारीमां रूप उक्किठो ॥ तुम संग होवे तो मीठो रे ॥ रंगी० ॥ २३ ॥ तुज स्वयंवर जाणी हुं आयो, वसुदेव पण आवशे जायो ॥ तेहनो जश जगमां गवायो रे ॥ रंगी० ॥ २४ ॥ उमुपति जेम उमुमां राजे, सहु रायमां ते जेम ठाजे ॥ जस तेजे करी रवि जाजे रे ॥ रंगी० ॥ २५ ॥ ते कारण मूक तुं मुजने, कल्याण थाउ वाइ तुजने ॥ अपजश राख्या थशे बूजने रे ॥ रंगी० ॥ २६ ॥ इम बोली रह्यो ते पंखी, तेह कनकवती मन हरखी ॥ चिंते नहीं जोमए सरखी रे ॥ रंगी० ॥ २७ ॥ कोइ नहीं रे सामान्य पुंस, क्रीमाए कस्युं रूप हंस ॥ पण उत्तम होशे ए वंश रे ॥ रंगी० ॥ २७ ॥ इण वचने पति मुज थाशे, महारां डुःखमां सहु जाशे ॥ इम चिंती मूकी दीये तासे रे ॥ रंगी० ॥ २ए ॥

गयो ऊमी हंस आकाशे, चित्रपट्ट नाखी तस पासे ॥ इणी परे नाखे उल्ला-से रे ॥ रंगी० ॥ ३० ॥ त्रीजे रुडे अधिकारे, वीजी ढाल नली सुप्रकारे ॥ वीजे खंडे मन धारे रे ॥ रंगी० ॥ ३१ ॥ गुरु उत्तमविजयनो शिष्य, कहे पद्मविजय सुजगीश ॥ नवि सुणीये ए निशिदीस रे ॥ रंगी० ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती सुणी वातमी, श्रीवसुदेवनुं रूप ॥ दीठुं जिम आलेखीयुं, शक्ति तणे अनुरूप ॥ १ ॥ एह रूप देखी करी, जाणजे तुं निर्धार ॥ शीघ्र थइ-ने आवीयो, इम कहे हंस उदार ॥ २ ॥ कनकवती हर्षित थइ, सांनली हंसनी वाण ॥ अंजलिपुट करीने कहे, सांनल तुं गुणखाण ॥ ३ ॥ हंस अंस तुऊ रुयमा, लोक करे परशंस ॥ हंस मांहे अवतंस तुं, नाख पोता-नो वंश ॥ ४ ॥ रूप परावर्त्तन करी, कुंमल कांचन कान ॥ अंग चंग नेप-पथ्यरंग, उत्तर आपे आण ॥ ५ ॥ चंद्रातप खेचर अछे, सुण चंद्रानना नार ॥ नावी तुऊ नर्त्ता नलो, तस सेवक हुं सार ॥ ६ ॥ विद्याना महि-मा थकी, रूप कर्युं में फेर ॥ नावी नर्त्ता नाखवा, दूतपुत इण पेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ गेवसागररी पाल, उनी दोय नागरी ॥ माहारा लाल ॥ पेरण दक्-णीरो चीर, उंढण पीली पामरी ॥ माहारा लाल ॥ ए देशी ॥ देइ आशी सुख-वासी, खेचर विसर्जीयो ॥ माहारा लाल ॥ कनकवती मन चिंते, ए देव तें मर्जीयो ॥ मा० ॥ तेह चित्र देखी मन, तृप्ति नवि लहे ॥ मा० ॥ संनारे ते खेचर, ने मन गहगहे ॥ मा० ॥ १ ॥ दीये उघामे चित्र,-पट्ट ज्युं नयनने ॥ मा० ॥ क्षण मांहे मूके मस्तके, देखे वयनने ॥ मा० ॥ क्षण मांहे कंठ धरे वली, हृदये कामिनी ॥ मा० ॥ विरहतापार्त्ते संनारे, दिवस ने जामिनी ॥ मा० ॥ २ ॥ हवे चंद्रातप खेचर, ते पण कौतुकी ॥ मा० ॥ विद्याधरपुरे पहोतो, विद्यावल थकी ॥ मा० ॥ महोटी शक्ति विद्यानी, अनिल परे गयो ॥ मा० ॥ खलना रहितपणे, संचरतो जग जयो ॥ ॥ मा० ॥ ३ ॥ रात समे वासनुवनमां, पेठो खेचरो ॥ मा० ॥ श्रीवसुदेवजी कलत्र, सहित पेखे वरो ॥ मा० ॥ सुकुमाली शय्यामां, सूतो देखीयो ॥ मा० ॥ खेचरी नुजलता उंशीकुं, कर्युं पेखीयो ॥ मा० ॥ ४ ॥ जइ वसुदेवना पाद, उंलांसे शुन परे ॥ मा० ॥ सेवा करतो वास,-नुव-

नमां इणी परे ॥ मा०॥ रतिक्रीमाना श्रमथी, निद्रा जर जयो॥ मा० ॥ तोपण ते क्षण मांहे, जागी सङ्ग थयो ॥ मा० ॥ ५ ॥ उत्तम पुरुषने निद्रा, नवि होय आकरी ॥ मा० ॥ सुखबोधी निद्रा ते, जिणी परे कूकरी ॥ मा० ॥ देखीने ते सहसा, वामनी ने यादवो ॥ मा० ॥ नवि बोल्यो नवि कोप्यो, ते कुलपादवो ॥ मा० ॥ ६ ॥ नवि चिंते कोइ एह, पुरुष अति गुणनिलो ॥ मा० ॥ सेवा करतो दीसे, तिणे में अटकव्यो ॥ मा० ॥ सेवा करता जननी, उपेक्षा नवि घटे ॥ मा० ॥ ए वेळां मुऊ निद्रा, करवी किण सटे ॥ मा० ॥ ॥ ७ ॥ इम चिंती उठाके, नारी सुकोशला ॥ मा० ॥ ते पण शय्या मूकी, वेळां वेगळां ॥ मा० ॥ रत्नाजरणे जूपित, चंद्रातप जलो ॥ मा० ॥ जक्के प्रणमे पाय ते, वसुदेवने मल्यो ॥ मा० ॥ ८ ॥ वसुदेवे पण उंलख्यो, तेह विद्याधरो ॥ मा० ॥ पूछे कुशल ने क्षेम, ते गुणगण आगरो ॥ मा० ॥ चंद्रातप चंद्रातप, शीतल वाणीये ॥ मा० ॥ प्रज्ञावंत ते जाखे, इणी परे जाणीये ॥ मा० ॥ कनकवतीने जाखी, वात ते में जइ ॥ मा० ॥ तें जे.कह्युं ते सांजली, मन हर्षित थइ ॥ मा० ॥ ए ॥ विद्याबलथी ताहरुं, रूप आलेखीयुं ॥ मा० ॥ आकाशे जइ में तस, अंके क्षेपीयुं ॥ मा० ॥ ते पट्ट लेइ हृदय, विचे ते थापती ॥ मा० ॥ मानुं विरहमां जाग, करण छुःख कापती ॥ मा० ॥ १० ॥ मुऊने तेह बाला कहे, सांजलो माहरी ॥ मा० ॥ माहरो तुं ईश्वर, खरी वात ते ताहरी ॥ मा० ॥ ते माटे तुं जर्त्ता, माहरो लावजे ॥ मा० ॥ एहवी वात जली वली, मुऊने कहावजे ॥ मा० ॥ ११ ॥ वदि दशमी छे आज, वसुदेव सांजलो ॥ मा० ॥ सुदि पांचम पूर्वाह्णे, तास विवाहलो ॥ मा० ॥ ते माटे तुम्हे स्वामी, जावा जोग छो ॥ मा० ॥ करो उपगार स्वामी तुमे, नित गतशोक छो ॥ मा० ॥ १२ ॥ कहे वसुदेव सुणो पूठी, सवि सयणने ॥ मा० ॥ जोवा जाशुं ने सुख, देशुं नयनने ॥ मा० ॥ रहो तुमे महारी पास, जवाने कारणे ॥ मा० ॥ करवा सफल प्रयास, अलीक निवारणे ॥ मा० ॥ १३ ॥ एम कहेतां ते अदृश्य, विद्याधर थयो ॥ मा० ॥ सूतो श्री वसुदेव, निचिंतो मन जयो ॥ मा० ॥ वहाणुं वाये स्वजनने, पूठी चालीया ॥ मा० ॥ अनुक्रमे पेढालपुरने, उपवने आवीया ॥ मा० ॥ १४ ॥ लखमी वन नामे, आराम ते दीपतुं ॥ मा० ॥ तास शोजाए नंदन, वन मानुं जीपतुं ॥

॥ मा० ॥ पारूल मोघर अशोक, पल्लव ने मालती ॥ मा० ॥ सतपत्र नारिंग, नाग ने केतकी ॥ मा० ॥ १५ ॥ कृष्ण इक्षु मचकुंद, कुड्मल शोभावली ॥ मा० ॥ ते उपवनमां पंच, वरण राढा मली ॥ मा० ॥ तिहां बेठा वसुदेवजी, जोवे वेगशुं ॥ मा० ॥ इण अवसर हरिचंद, नृपति विवेकशुं ॥ ॥ मा० ॥ १६ ॥ कीधां महोटां प्रासाद ते, उछव कामथी ॥ मा० ॥ शब्द सुण्यो इम ते, तिणहीज ठामथी ॥ मा० ॥ श्री नमिनाथ जिनेश्वर, पाउ धास्या इहां ॥ मा० ॥ चउविह देव निकाय, सेवा करता जिहां ॥ मा० ॥ ॥ १७ ॥ ते श्री नमि जिनवरनी, आगल नाचती ॥ मा० ॥ गुण संभारी जिनवर, आगल राचती ॥ मा० ॥ बहु देवांगना साथे, घणे हरखे कखुं ॥ ॥ मा० ॥ लखमीरमण उद्यान, ते दिने अभिधा धखुं ॥ मा० ॥ १८ ॥ तेह सुणी वसुदेव, मने हरख्यो घणुं ॥ मा० ॥ परशंसे तिहां बेठा, निज आतमपणुं ॥ मा० ॥ पूजा जिनप्रतिमानी, त्यां हरखे करे ॥ मा० ॥ उंचुं चैत्य देखी, वसुदेवनुं दिल ठरे ॥ मा० ॥ १९ ॥ बीजे खंडे अधिकारे, त्रीजे ए कही ॥ मा० ॥ त्रीजी ढाल रसाल, सुजन मन वालही ॥ मा० ॥ पंडित उत्तमविजय, गुरुनी सान्निधे ॥ मा० ॥ पद्म कहे करो पूजा, भविजन इण विधे ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लखमीरमण उद्यानमां, बेठो वसुदेव सोय ॥ इण अवसर अचरिज थयुं, ते सुणजो सहु कोय ॥ १ ॥ उतरतुं आकाशथी, देखे एक विमान ॥ रत्नमयी अति दीपतुं, जंगम मेरु समान ॥ २ ॥ लहगमे ध्वज फुरकती, द्रुम फलीयो मानुं एह ॥ हय गय मकर चित्रित जिहां, भानुमंडल परे जेह ॥ ३ ॥ घनगर्जारवनी परे, गाजी रह्युं आकाश ॥ मंगल वाजां वाजतां, देखे अतिहि प्रकाश ॥ ४ ॥ विद्याधर ए उपाडीयुं, देखी तेह विमान ॥ कोइक विद्याधर प्रते, पूछे इम तिण थान ॥ ५ ॥ ते कहे धनद ए देवता, मर्त्य लोकमां आय ॥ अरिहंतनी पूजा करी, स्वयंवर जोवा जाय ॥ ६ ॥ चिंते तिहां वसुदेवजी, कनकवती धन्य एह ॥ महोछव जोवा आवता, सुर पण आणी नेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ सुरपति सेवित त्रिभुवन धणी ॥ ए देशी ॥ धनद उतरी जिनवर

तणी, करे पूजा भक्ति ते अति घणी ॥ जिनप्रतिमानी करी अर्चा, वली गीत नाटक करे चर्चा ॥ १ ॥ त्रूटक ॥ मन धरी पूजे, पाप धूजे, श्रीवसुदेवजी, इणी परे ॥ देखी पामे, हर्ष ठामे, वली वली, स्तवना करे ॥ पुण्यवंतो, ए हसंतो, भक्ति करे, जिनवर तणी ॥ करे प्रभावना, जैनशासन, हुं पण पुण्य, तणो धणी ॥ २ ॥ एहवुं अद्भुत में लह्युं, इणी परे श्रीवसुदेवे कह्युं ॥ पूजा संपूरण करी चाल्यो, तव वसुदेवने तिहां भाल्यो ॥ ३ ॥ त्रू० ॥ चिंते चित्तमां, कुण छे ए, रूप अनुप, सुहामणो ॥ अमर खेचर, असुर मांहे रूप नहीं, कहीं कामणो ॥ ४ ॥ हस्तसंज्ञाए तेमीयो, मन चिंते वसुदेव नेमीयो ॥ हुं मनुज ने एह ते देव, एहनी जइने करवी सेव ॥५॥ त्रू० ॥ सेव करवी, आण धरवी, एम चिंतवी, ते गयो ॥ धनदने एक, काम हुंतुं, तिणे आदर, बहु थयो ॥ ६ ॥ पूजा करी ते भली परे, तव बोले वसुदेव शुभ स्वरे ॥ एक विनीत ते सहजथी पोते, वली करी पूजा सहु जोते ॥ ७ ॥ त्रू० ॥ सहु जोते, हाथ जोमी, मान मोडी, ने कहे ॥ करो आणा, स्वामी मुज, करुं कारज, गहगहे ॥ ८ ॥ कहे वैश्रमण सुणो तुमे, एक वात कहुं तुमने अमे ॥ करो दूतपणुं अमारुं, कारय थाशे वली तुमारुं ॥ ए ॥ त्रू० ॥ तुमथी अमारुं, काम थाशे, जाउ हरिचंद, नृप घरे ॥ कनकवतीने, जइ भाखो, अमे कहीये, तिणी परे ॥ १० ॥ तव निज थानक जइ करी, मूके अलंकार ते मन धरी ॥ दूतनेज उचित जे होय, महेलां वस्त्र पहेरे सोय ॥ ११ ॥ त्रू० ॥ सोय महेलां, वस्त्र देखी, धनद भाखे, सांभलो ॥ आमंबरे सहु, लोक पूजे, तुं केम आव्यो, श्यामलो ॥ ॥ १२ ॥ यतः ॥ आमंबरो हि सर्वेषां, मान्यो जगति वर्त्तते ॥ आमंबरेण हीनानां कोऽपि नाख्यत्प्रियं वचः ॥ १ ॥ शौरि कहे सुणो स्वामी जी, नहीं महेलां वस्त्र काम जी ॥ दूतने तो वचन ते सार, ते तो मुजने छे आधार ॥ १३ ॥ त्रू० ॥ आधार छे एम, कहे भाखी, ढाल चोथी, ए भली ॥ गुरु उत्तम,-विजय साथे, पद्मविजये ए, कही वली ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ १२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्ति तुजने होयजो, धनद कहे जाउं त्यांहि ॥ तव चाल्या उतावला, हरिचंद गृह ज्यांहि ॥ १ ॥ हय गय रह भम बहु मल्या, रोक्युं रायनुं द्वार ॥ पेसीने को नवि शके, थइ अदृश्य तिणी वार ॥ २ ॥ चाल्यो

वायुनी परे, अप्रतिहत गति जास ॥ अंजनसिद्ध योगी परे, आव्यो अंत आवास ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ फूंबखडुं फूंबी रह्युं, फूंब ते माजिम राती ॥ संयमराय फूंबखडुं ॥ ए देशी ॥ पहेला घरमां देखतो, बहु परिकरे करी रुद्ध ॥ वसुदेव चमकतो ॥ चित्रामण जस हाथमां, इंद्रनील तल बद्ध ॥ १ ॥ व० ॥ कांति मनोहर जेहनी, निर्मल जल जिहां वाव ॥ वसु० ॥ भ्रम मनमां आवे घणो, देखी मनने चाव ॥ व० ॥ २ ॥ दिव्याभरण धरी करी, रंभानो ज्युं वृंद ॥ व० ॥ रूपवती सरिखी वये, देखे मुख ज्युं चंद ॥ व० ॥ ३ ॥ आगल चाल्यो अनुक्रमे, बीजा घरमां जाम ॥ व० ॥ मणिमय थंभे सोहती, पांचाली जुवे ताम ॥ व० ॥ ४ ॥ त्रीजुं घर जब देखीयुं, त्रिभुवनमां अद्भुत ॥ व० ॥ उज्ज्वल गोक्षीर सारिखुं, देखे धनदनो दूत ॥ व० ॥ ५ ॥ पेसे ऐरावत जिस्यो, क्षीरसमुद्रमां सार ॥ व० ॥ देखे तिहां नारी घणी, दिव्य आभरणनी धार ॥ व० ॥ ६ ॥ माये नहीं देवलोकमां, तिण आवी मानुं आंही ॥ व० ॥ चिंते मनमां ए किस्युं, इंद्रजाल के नांही ॥ व० ॥ ७ ॥ चोथे कक्षांतरे गयो, जलकुट्टिम तिहां जोय ॥ व० ॥ बहुल तरंग तिहां अछे, चक्रवाक युग होय ॥ व० ॥ ८ ॥ हंस प्रमुख क्रीडा करे, वदन जुवे बहु नार ॥ व० ॥ दर्पणनुं कारज नहीं, निर्मल एहवुं वार ॥ व० ॥ ए ॥ सारिका शुक मंगल कहे, बहु दासी जन जछ ॥ व० ॥ गीत नाटक होय अति घणां, देखे वसुदेव तछ ॥ व० ॥ १० ॥ पांचमा घर मांहे गयो, मरकतकुट्टिम खास ॥ व० ॥ देवलोकनुं विमान ज्युं, शोभे अति सुविलास ॥ व० ॥ ११ ॥ मोतीनी माला घणी, वली विद्रुमनी माल ॥ व० ॥ चामर ढलके चिहुं दिशे, ते पण अतिहि विशाल ॥ व० ॥ ॥ १२ ॥ मानुं मायाए कस्यो, ए सवि वात बनाव ॥ व० ॥ वेश अलंकृत थइ घणुं, दासी ते पुतली दाव ॥ व० ॥ १३ ॥ हवे छठा घरमां गयो, पद्मकुट्टिम तिहां होय ॥ व० ॥ पद्म सरोवरनी परे, पद्मसमूह सह जोय ॥ व० ॥ १४ ॥ मणिनां पात्र देखे तिहां, देव संबंधी तेह ॥ देव संबंधी वस्त्रने, देखे तिहां धरी नेह ॥ व० ॥ १५ ॥ करमजी राग अंशुक भलां, पहेर्यां छे तिहां नार ॥ व० ॥ संध्यामूर्त्ति धरी करी, मानुं आवी इण वार ॥ व० ॥ १६ ॥ चमकी चतुर ते चालीयो, सातमा घर मांहे मोद

॥ व० ॥ लोहिताक्षनुं नीपनुं, कुट्टिम देत प्रमोद ॥ व० ॥ १७ ॥ कर्केतन तिहां मणिमयी, थंज ते अतिहि उदार ॥ व० ॥ कल्पवृक्ष वली देखतो, वली आजरण ते सार ॥ व० ॥ १८ ॥ पूर्ण कलश करवा जणी, तिहां बहु दासी लोक ॥ व० ॥ तेह कला बहु जाणती, हर्षवंत गतशोक ॥ ॥ व० ॥ १९ ॥ जाणे देश अनेकनी, जाषा अतिहि विवेक ॥ व० ॥ काने कुंडल शोजतां, प्रतिहारी अतिरेक ॥ व० ॥२० ॥ चिंते तिहां वसुदेवजी, शुं करवुं इण ठार ॥ व० ॥ जइ शकीये हवे आगले, नहीं ते कोइ प्रकार ॥ व० ॥ २१ ॥ जब इणी परे ते चिंतवे, तव तिहां अचरिज थाय ॥ व० ॥ ते कहीये हवे आगले, सुणजो मन थिर ठाय ॥ व० ॥ २२ ॥ बीजे खंडे इणी परे, वली त्रीजे अधिकार ॥ व० ॥ पांचमी ढाल कही जली, पद्म-विजय जयकार ॥ व० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ १५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणी अवसर आवी तिहां, गगनपंथथी एक ॥ कनककमल जस हाथमां, दासी अति सुविवेक ॥१॥ ते दासीने पूछती, सघली इणी परे वाच ॥ कनकवती जे स्वामिनी, किहां छे कहे अम साच ॥ २ ॥ ते कहे प्रमदवने अछे, दिव्य वेष धर तेह ॥ सप्तजूमि प्रासादमां, छे एकाकी जेह ॥ ३ ॥ सुर सान्निध करे जेहनी, ते अतिरूप निधान ॥ तव वसुदेव ते चमकीयो, इणी परे सांजली कान ॥ ४ ॥ वसुदेव नीकलीयो वली, प्रमदवने ते जाय ॥ सप्तजूमि प्रासादने, तेह समीपे थाय ॥ ५ ॥ ऊंचो गढ देखे तिहां, चढी-या श्रीवसुदेव ॥ देखे कनकावती तिहां, कल्पलता परे हेव ॥ ६ ॥ सर्व ऋतु कुसुमे करी, दीपे तास शरीर ॥ मानुं ते वनदेवता, दिव्य धर्यां तिणे चीर ॥ ७ ॥ जद्रासने बेठी थकी, जूइ चित्रपट्ट सार ॥ प्रश्न करंती देखीये, चित्रपट्ट चित्त धार ॥ ८ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ अइ प्रीतमशुं एक वार, सलूणी बोलो हो ॥ ए देशी ॥ कनकवती वसुदेवने रे, देखी हर्षित थाय ॥ चित्ररूप सम निरखीने, जिम प्रात अं-बुज तिम थाय ॥ १ ॥ वसुदेव रूडो हो, अइ देखी नयन लोजाय ॥ ए आंकणी ॥ नेत्र इंदीवरथी करी रे, पूजे श्रीवसुदेव ॥ अंजलि करी ऊठी तिहां रे, आसनथी ततखेव ॥ व० ॥ अ० ॥ २ ॥ इणी परे कहे वसुदेवने

रे, महारा पुण्यथी आज ॥ आव्या स्वामी जी वेगथी, तुम दासी हुं महाराज ॥ व० ॥ अ० ॥ ३ ॥ तव वसुदेव कहे इस्युं रे, मुजने प्रणमो कांय ॥ ताहरो सेवक जाणजे, तुं स्वामिनी माहरी थाय ॥ व० ॥ अ० ॥ ४ ॥ जे तुज योग्य पति होय रे, तेहने कर परणाम ॥ कुल जाण्या विना मुज नणी, मत कर प्रणाम तुं आम ॥ व० ॥ अ० ॥ ५ ॥ कनकवती कहे सांजलो रे, माहरो तुं नरतार ॥ जे देवताए नाखीयो, वली चित्र तणे अनुहार ॥ ॥ व० ॥ अ० ॥ ६ ॥ कहे वसुदेव हुं नहीं पति रे, हुं तुज पतिनो दास ॥ उत्तर दिशिनो अधिपति, तुज नर्त्ता धनद ते खास ॥ व० ॥ अ० ॥ ॥ ७ ॥ तेहनो दूत हुं रुअमो रे, आव्यो ताहरी पास ॥ ते कहे तुजने इणी परे, सांजल तुं वचन विलास ॥ व० ॥ अ० ॥ ८ ॥ पट्टराणी तुं माहरी रे, थाजे स्वयंवर ठाम ॥ अमरी बहु सेवा करे, तव कनकवती कहे स्वाम ॥ व० ॥ अ० ॥ ए ॥ धनद किहां वली हुं किहां रे, ए तो महोटो देव ॥ हुं तो नारी मनुष्यणी, किटिकाने तोले हुं हेव ॥ व० ॥ अ० ॥ १० ॥ दूत करी तुज मोकल्यो रे, ते तो क्रीमा हेत ॥ कोइ दिवस नवि संनवे, मानुष्यणी देवने देत ॥ व० ॥ अ० ॥ ११ ॥ कहे वसुदेव ए नवि घटे रे, तुमने वात उवेख ॥ तुमे पण दमयंती परे, लहेशो डुःख आगल देख ॥ व० ॥ अ० ॥ १२ ॥ कनकवती कहे ए खरुं रे, कोइ पूरव संबंध ॥ सहज नावे सही नवि शके, देवता मानुषिणीनो गंध ॥ व० ॥ अ० ॥ १३ ॥ यतः ॥ चत्तारि पंच जोअण, सयाइ गंधोय मणुअ लोअस्स ॥ उढुं वच्चइ जेणे, नहु देवा तेण आवंति ॥ तथा चोक्तं हेमकृतनेमिचरित्रे ॥ डुर्गंधस्य शरीरस्यौ,-दारिकस्य सुधादनाः ॥ नेशते गंधमपि हि, सोढुमित्यार्हतं वचः ॥ ॥ १ ॥ दूतमिषे तुं माहरो रे, ठे नरतार ए नीम ॥ जइ कहो उत्तर दिशिपति, जिम हुं कहुं तिणहीज सीम ॥ व० ॥ अ० ॥ १४ ॥ दर्शनने पण ताहरा रे, योग्य नथी हुं स्वाम ॥ सप्तधातु प्रतिमा करी, तुं तो पूजणने ठाम ॥ व० ॥ ॥ अ० ॥ १५ ॥ अदृश्यमान थइ करी रे, जेम आव्या तेम जाय ॥ धनदने कहे सहु वातमी, तव धनद कहे तिण ठाय ॥ व० ॥ अ० ॥ १६ ॥ सहु सुर मांहे प्रशंसीयो रे, धनद देइ सन्मान ॥ दिव्यांशुक युग आपतो, गंधे वासित तिण थान ॥ व० ॥ अ० ॥ १७ ॥ सूरप्रन मुकुट सोहामणो रे, कुंमल दकगर्न नाम ॥ हार शशिमयूख वली, ललितप्रन केयूर काम ॥ व० ॥

॥ अ० ॥ १८ ॥ पोंचिका आपे रुअमी रे, ते तो अतिहि अमूल ॥ कटक सुदर्शन नामथी, मणिमंमित अनुकूल ॥ व० ॥ अ० ॥ १ए सरदारुण नामे दीये रे, कटिसूत्रक मनोहार ॥ कुसुममाल महमहकती, आत दिव्य विलेपन सार ॥ व० ॥ अ० ॥ २० ॥ इणी परे दश वसुदेवने रे, कीधो आप समान ॥ देखी साथे आवीया, शालादिक हरख्या अमान ॥ व० ॥ अ० ॥ ॥ २१ ॥ बीजे खंडे ए कही रे, उठी ढाल रसाल ॥ त्रीजे अधिकारे नली, सुणतां होय मंगलमाल ॥ व० ॥ अ० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिचंद्र राजा आवीयो, जोवा आश्चर्य काम ॥ करी प्रणाम करे विनति, सांजलो गुणना धाम ॥ १ ॥ नरतक्षेत्र पावन कर्युं, तुमे आव्या जिणे अत्र ॥ एम कही स्वयंवर सज्ज करे, नानाश्चर्य एकत्र ॥ २ ॥ मांचा महोटा मांमीया, विविध आसन मनोहार ॥ चाल्यो धनद जोवा नणी, जोवा तेह उदार ॥ ३ ॥ पृथिवी आपद टालतो, तेह विमाननी ठाय ॥ देव देवीशुं परवर्यो, बहु वंदी बोलाय ॥ ४ ॥ देखे स्वयंवर एहवो, जिहां बांध्या उल्लोच ॥ मानुं अंबर ढाइयो, नहीं मनाक् संकोच ॥ ५ ॥ तोरण बांध्यां बाहिरे, दीसे सज्ज कर्यां चाप ॥ मानुं काम नूपति तणुं, थंना बाण करे आप ॥ ६ ॥ रत्ने जमित प्रदेश ते, मानुं उग्या नाण ॥ द्वारनूमि अति शोनती, अष्ट मंगल तिण ठाण ॥ ७ ॥ उडे ध्वज आकाशमां, संभ्रम वगनो थाय ॥ पृथिवी शोने रत्नथी, मानुं सुधर्मा नाय ॥ ८ ॥ दृष्टिविनोदने कारणे, पूतली रची मनोहार ॥ तिहां उत्तर दिशिनो पति, आवे हर्ष अपार ॥ ए ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ सखी चैत्रज महीने चाल्या ॥ ए देशी ॥ हवे धनद ते बेठा आवी, बहु अप्सरा साथी सोहावी, वसुदेवनी आगल ठावी हो राज ॥ पुण्य तणां फल जोजो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ राज आगल जेम जुवराय, तेम वसुदेव आगल सोहाय, रूपे अनंग हराय हो राज ॥ पु० ॥ २ ॥ बीजा पण राजा बेठा, जे रिद्धे अतिहि उक्किठा, देवांशी पुरुष सम दीठा हो राज ॥ ॥ पु० ॥ ३ ॥ अर्जुन सोनानी रुमी, आपे एक वली मुदरमी, घमी शिल्पीए मानुं न कूमी हो राज ॥ पु० ॥ ४ ॥ कनिष्ठ अंगुलीए थापे, वसुदेव

लेइ सुख व्यापे, तव धनद सदृश थयो आपे हो राज ॥ पु० ॥ ५ ॥ तव लोकने विभ्रम आव्यो, कुबेर मूरति दोय लाव्यो, एम लोकवचने सोहाव्यो हो राज ॥ पु० ॥ ६ ॥ हवे कनकवती तिहां आवे, एक हाथमां हार सोहावे, कंदर्प हिंचोलाने दावे हो राज ॥ पु० ॥ ७ ॥ हवे स्वयंवर निरखी जोवे, मन मांहे हर्षित होवे, पण वसुदेव तिहां नवि जोवे हो राज ॥ पु० ॥ ८ ॥ ते चित्रमां रूप जे दीठुं, दूतरूपे वली उक्किठुं, ते तो जोतां लागे मीठुं हो राज ॥ पु० ॥ ९ ॥ तव म्लान वदन थयुं तास, जेम कमलिनी संध्या पास, थइ कनकवती निराश हो राज ॥ पु० ॥ १० ॥ जेम चित्रपूतली मनोहार, तेम थिर रही तेहज सार, नवि ठेपवे कंठे ते हार हो राज ॥ पु० ॥ ११ ॥ निज साहमुं सघला जोइ, शुं दूषण अम्ह होशे कोइ, केम वरती नथी ए मोइ हो राज ॥ पु० ॥ १२ ॥ सखी कनकवतीने नाखे, तुं शुं चित्तमां हजी राखे, केम माल न कंठे नाखे हो राज ॥ पु० ॥ १३ ॥ तव कनकवती एम बोले, जस रूप बे चित्रने तोले, ते तो जगमां दीसे अमोले हो राज ॥ पु० ॥ १४ ॥ पण नवि आव्यो हजी तेह, तिणे थाय विलंब ते एह, शी गति होशे मुज देह हो राज ॥ पु० ॥ १५ ॥ केम हृदय द्विधा नवि थाय, केम जीव हजी नवि जाय, मुज प्रीतम हजी नवि आय हो राज ॥ पु० ॥ १६ ॥ तव कहे वसुदेव एम वाणी, कनकवतीनी करुणा आणी, नाखे इम धनदने जाणी हो राज ॥ पु० ॥ १७ ॥ केम चिंतातुर ए नारी, तुमे चित्तथी केम उतारी, ए दीसे दुःखमां नारी हो राज ॥ पु० ॥ १८ ॥ तव धनद कहे सुणो वात, नामे मुद्रा कुबेरकांत, ते दूर करो सुखशात हो राज ॥ पु० ॥ १९ ॥ जव हाथथी तेह उतारे, तव मूल रूप निज धारे, कनकवतीने हर्ष वधारे हो राज ॥ पु० ॥ २० ॥ माला हवे तास पहेरावे, धनद दुंदुभि वजमावे, अप्सरा तिहां गीत ते गावे हो राज ॥ पु० ॥ ॥ २१ ॥ करे लोक ते एम प्रशंस, धन्य हरिचंद नृपनो वंश, जस जामाता देवांश हो राज ॥ पु० ॥ २२ ॥ कुवेरनी आणा पावे, देवता तिहां वसु वरसावे ॥ महामोछवे तस परणावे हो राज ॥ पु० ॥ २३ ॥ इम कनकवती ने वसुदेव, सुख नोगवतां नितमेव, बीजे खंडे ततखेव हो राज ॥ पु० ॥ २४ ॥ त्रीजे अधिकारे दाखी, ढाल उत्तमविजय

ठे साखी, सातमी पञ्चे चित्त राखी हो राज ॥ पु० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूठे श्री वसुदेवजी, धनद प्रते हवे एम ॥ शे कारण आव्या तुमे, एवडो तुम केम प्रेम ॥ १ ॥ तव वैश्रमण कहे हवे, सांजल थइ सावधान ॥ कारण मुऊ आव्या तणुं, कर्णामृत मानुं पान ॥ २ ॥ जंबुद्वीपना जरतमां, नयरी संगर नाम ॥ अष्टापदने ढुकडी, तिहां मम्मण नृप ठाम ॥ ३ ॥ वीरमती प्रिया तेहनी, अठे ते रूपनिधान ॥ एक दिन दंपती नीसस्यां, रमवाने उद्यान ॥ ४ ॥ साथ एक तिहां देखीयो, दीठो तिहां एक साध ॥ क्षमाश्रमण ते मुनिवरु, रजनो मेल अगाध ॥ ५ ॥ तव नृप मनमां चिंतवे, थयां अशुकन ए आज ॥ मृगटोलाथी मृग परे, लेइ गयो ते मुनिराज ॥ ६ ॥ राजकुले लावी करी, राख्या घटिका बार ॥ हवे आगल शुं नीपजे, ते सुणजो अधिकार ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ हांरे हांरे साहिवा रे, गोकुल गामने गोंदरे रे ॥ जनो कुसमोरारी रे लाल, बलिहारी तुऊ वेशनी ॥ ए देशी ॥ हांरे हांरे साहिवा रे, कांइक करुणा आणीने रे, जाखे एणी परे वाणी रे लाल ॥ बलिहारी तुऊ वेषनी रे ॥ ए आंकणी ॥ हांरे किहांथी आव्या ने किहां जायशो रे, तव कहे मुनि गुणखाण रे लाल ॥ ब० ॥ १ ॥ हांरे रोहितकपुरथी आवीया रे, जाशुं अष्टापद ठाण रे लाल ॥ ब० ॥ हां० ॥ करशुं जात्रा जिन तणी रे, जे आपे निर्वाण रे लाल ॥ ब० ॥ २ ॥ हां० ॥ मुऊ पकड्यो तुम्हे दंपती रे, कीधो साथ विजोग रे लाल ॥ ब० ॥ हां० ॥ अमे नवि जात्रा करी शक्या रे, धर्ममां विघननो जोग रे लाल ॥ ब० ॥ ३ ॥ हां० ॥ राग जेम वध्यो मुनि उपरे रे, वेर विसास्युं ताम रे लाल ॥ ब० ॥ हां० ॥ जेम कुस्वप्न ते विसरे रे, हृदय कोमल थयुं जाम रे लाल ॥ ब० ॥ ४ ॥ हां० ॥ मुनि पण परउपगारीया रे, जीवदया कह्यो धर्म रे लाल ॥ ब० ॥ हां० ॥ योग्य जीव जाणी करी रे, दया जिनशासन मर्म रे लाल ॥ ब० ॥ ५ ॥ हां० ॥ मुनिवर जाख्यो धर्मने रे, सांजली दंपती तेह रे लाल ॥ ब० ॥ हां० ॥ धर्म पाम्यां जिनवर तणो रे, पडिलाज्या मुनि नेह रे लाल ॥ ब० ॥ ६ ॥ हां० ॥ मुनिवर अष्टापद गया रे, आऊनां व्रत धरे बार रे लाल ॥ ब० ॥ हां० ॥ जेम करषी

धन साचवे रे, तेम व्रत साचवे सार रे.॥ व० ॥ ७ ॥ हां०॥ शासनदेवता एकदा रे, थिर करवाने हेत रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ अष्टापद ते लेइ गइ रे, धर्म तणे संकेत रे लाल ॥ व० ॥ ८ ॥ हां० ॥ तिहां सुर असुर पूजा करे रे, जिनप्रतिमानी सार रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ देखीने आनंद उपनो रे, प्रणमी आवी निज द्वार रे लाल ॥ व० ॥ ९ ॥ हां० ॥ रतन जडित सोना तणां रे, तिलक करे चोवीश रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ जिन एक एक निमित्तनां रे, आंबिल कीधां वीश रे लाल ॥ व० ॥ १० ॥ हां० ॥ एक दिन अष्टापद गइ रे, साथे लेइ परिवार रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ पूजा करी स्तवना करी रे, जिनवरनी मनोहार रे लाल ॥ व० ॥ ११ ॥ हां० ॥ चोवीश तिलक चढावीयां रे, चोवीश जिनने ललाट रे ॥ व० ॥ हां० ॥ तप तपती अति आकरां रे, धर्म करे तेह राट रे लाल ॥ व० ॥ १२ ॥ हां० ॥ कृतकृत्य आत्मने मानती रे, आवी नगरे तेह रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ भिन्न शरीर मन एक छे रे, इणी परे दंपती नेह रे लाल ॥ व० ॥ १३ ॥ हां० ॥ मरण समाधि तिहां करी रे, उपन्यां ते देवलोक रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ देव देवी सुख भोगवे रे, मन हरखे गतशोक रे लाल ॥ व० ॥ १४ ॥ हां० ॥ मम्मण जीव हवे चवी रे, उपनो बहुली देश रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ पोतनपुर नगरे इहां रे, आभीरपणे सुविशेष रे लाल ॥ व० ॥ १५ ॥ हां० ॥ धम्मिल्लनो पुत्रज थयो रे, रेणुका माता जाण रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ धन्य नामा पुण्यपात्र छे रे, भाग्यवंत गुणखाण रे लाल ॥ व० ॥ १६ ॥ हां० ॥ वीरमती चवी उपनी रे, धुसरी नामे नारी रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ वर्षा ऋतु आवी एकदा रे, करे दर्दुर पोकार रे लाल ॥ व० ॥ १७ ॥ हां० ॥ ज्युं अमावास्यानी यामिनी रे, तेम अंधारुं घोर रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ घर चूए चालणी परे रे, थाये गाजनो शोर रे लाल ॥ व० ॥ १८ ॥ हां० ॥ केशवती पृथिवी थइ रे, उग्यां हरियां ताम रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ मानुं नारीए पहेरीयां रे, सेवाल वस्त्रने ठाम रे लाल ॥ व० ॥ १९ ॥ हां० ॥ वीजली चिहुं दिशि चमकती रे, कर्दम जानु समान रे लाल ॥ व० ॥ ॥ हां० ॥ पंथिशत्रु प्रगट थयो रे, जीवाकुल थानो थान रे लाल ॥ व० ॥ २० ॥ हां० ॥ इणी परे वर्षा उम्मह्यो रे, वरसे अखंडित धार रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ महिषी चारवा नीकल्यो रे, आभीर धन्यकुमार रे

लाल ॥ व० ॥ २१॥ हां० ॥ मेघघटा महिषी बहु रे, प्रौढा शब्द करंत रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ वरण श्यामल ने पय झरे रे, भू गगने विचरंत रे लाल ॥ व० ॥ २२ ॥ हां० ॥ छत्र धर्खु निज मस्तके रे, पाणी करे ते दूर रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ महिषीनी पूठे भमे रे, वरसे जलनुं पूर रे लाल ॥ व० ॥ २३ ॥ हां० ॥ बीजे खंडे आठमी रे, ढाल त्रीजे अधिकार रे लाल ॥ व० ॥ हां० ॥ गुरु उत्तमनी साह्यथी रे, पदमविजय जयकार रे लाल ॥ व० ॥ २४ ॥ हां० ॥ सर्व गाथा ॥ २४८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वरसे महा वर्षा तिहां, शीत होये जन जोर ॥ व्यापारी व्यापारना, करे उद्यम निज ठोर ॥ १ ॥ भमतां भमतां देखीया, पुण्यप्रकृतिने जोर ॥ मेरु परे निश्चल मुनि, एक पगे एक ठोर ॥ २ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ जयो जयो जगचिंतामणि रे ॥ ए देशी ॥ दीठ मुनिवर एहवा रे, थया दुर्बल करी उपवास रे ॥ शीत पीडाए अति कंपता रे, जेम वृक्ष अनिले थिर नास रे ॥ १ ॥ जीरे जयो जयो मुनिवर गुणधरु रे ॥ ए आंकणी ॥ उग्र परीषहने सहे रे, ते मुनिपुंगव महाधीर रे ॥ देखी करुणा उपनी रे, धरे छत्र शिरे आभीर रे ॥ जी० ॥ २ ॥ तव मुनिने शाता थइ रे, मानुं वेठा वसति मांहि रे ॥ वृष्टि नवि विरमे किमे रे, मद्यपानीने घूम ज्युं ग्राही रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ मुनिवरने अभिग्रह अछे रे, जिहां लगे वरसे ए वारि रे ॥ तिहां लगे नवि हालुं किमे रे, पण वरसे अखंडित धार रे ॥ जी० ॥ ४ ॥ तेह घनाघन विरमीयो रे, प्रणमी ते महिषीपाल रे ॥ पगतलीयां उल्लासीने रे, करी अंजलि ते निज भाल रे ॥ जी० ॥ ५ ॥ स्वामी किहांथी आवीया रे, आ विषम काल दुःखदाय रे ॥ कहे मुनि पांडु देशथी रे, अमे आव्या आणे ठाय रे ॥ जी० ॥ ६ ॥ लंका नगरीए जायता रे, गुरुपाय वंदनने हेत रे ॥ वाट मांहि वर्षा थइ रे, धाराधर धाराखंड न देत रे ॥ जी० ॥ ७ ॥ एह जीमूतने वरसतां रे, ऋषिने नवि कल्पे विहार रे ॥ तिणे अभिग्रह करी इहां रह्या रे, वरसे जिहां लगे घनधार रे ॥ जी० ॥ ८ ॥ सात दिवस थया जेहने रे, विरम्यो ए जलद ते आज रे ॥ पूर्ण प्रतिज्ञा मादरे रे, थइ इणी परे कहे ऋषिराज रे ॥ जी० ॥ ९ ॥

रहेशुं थानक जोइने रे, तव बोले ते आजीर रे ॥ स्वामी महिषी उपर चढो रे, वाढे कर्दम ने बहु नीर रे ॥ जी० ॥ १० ॥ तव मुनिवर कहे इणी परे रे, जीव उपर चढे साध रे ॥ पर पीमा मुनि नवि करे रे, जीवदया प्रतिपाल अगाध रे ॥ जी० ॥ ११ ॥ पायचारी मुनिवर कह्या रे, तिणे नवि बेसुं कांइ रीति रे ॥ इम कही बिहुं जण चालीया रे, धन्य धरतो मुनिशुं प्रीति रे ॥ जी० ॥ १२ ॥ करे मुनिने इम विनति रे, तुमे उन्ना रहो इणी ठार रे ॥ हुं आवुं जेंष दोही करी रे, तिहां लगे मुज करी उपगार रे ॥ जी० ॥ ॥ १३ ॥ इम कहीने निज घर गयो रे, महिषी दोही जस्यो कुंज रे ॥ हर्षथी आव्यो मुनि कने रे, मन मांहि घणोज अदंज रे ॥ जी० ॥ १४ ॥ मुनिवरने पमिलाजीया रे, निज जीवने माने धन्य रे ॥ पारणुं तिहां मुनिवर करे रे, जस मन निर्मम अति पुण्य रे ॥ जी० ॥ १५ ॥ चोमासुं तिण पुर रही रे, मुनिवरजीए कीधो विहार रे ॥ श्रावकव्रत ते दंपती रे, पाले अति उदार रे ॥ जी० ॥ १६ ॥ धन्य ने घुसरी श्राविका रे, अंगीकरे महाव्रत जार रे ॥ सात वरस लगे पालीयुं रे, चारित्र समाधिमां सार रे ॥ जी० ॥ ॥ १७ ॥ काल करीने उपन्यां रे, हैमवंत क्षेत्रमां दोय रे ॥ युगलजावथी ते मरी रे, दोय देवपणे ते होय रे ॥ जी० ॥ १८ ॥ देव चवीने उपनो रे, इणहीज जरत मजार रे ॥ कोशल देशमां दीपती रे, नगरी कोशला सुखकार रे ॥ जी० ॥ १९ ॥ कुल इक्ष्वाकुमां उपनो रे, ठे नामे निषध महाराज रे ॥ सुंदरा उदरे उपनो रे, धन्य जीव नल नामे ते राज रे ॥ जी० ॥ २० ॥ सुत बीजो कुवेर जलो रे, बीजे खंडे त्रीजे अधिकार रे ॥ ढाल कही नवमी जली रे, मुनि पद्मविजये सुखकार रे ॥ जी० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ २७१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देश विदर्ज नामे अठे, कुंमिनपुर तिहां सार ॥ जीम पराक्रम जीमरथ, पुष्पदंती तस नार ॥ १ ॥ त्रण वर्ग नित्य साचवे, जोगवे जोग रसाल ॥ हवे आजीर देवी चवी, उपजे तिहां तिल ताल ॥ २ ॥ सूती राणी एकदा, देखे स्वपन उदार ॥ यामिनी अंते रुयडुं, कहे आवी जरतार ॥ ३ ॥ स्वामी आज में स्वप्नमां, दीठो हाथी एक ॥ दवअग्निथी नासतो, आव्यो तुम घर ठेक ॥ ४ ॥ ते प्रत्यक्षपणे करी, दीठो तव कहे राय ॥ गर्ज उपजशे अति जलो, सहु जनने सुखदाय ॥ ५ ॥ राय राणी इणी परे बिहु, करतां

वचन विलास ॥ अचरिज एक ते उपन्युं, ते सुणजो उल्लास ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥ इणी अवसर एक हाथीयो, उज्ज्वल वर्ण शरीर लाल रे ॥ आवी राय राणी प्रते, खंधे धरे शौंमीर लाल रे ॥ १ ॥ दान तणां फल देखजो ॥ ए आंकणी ॥ चोक फेर ते फेरवे, लहे अचरिज सवि लोक लाल रे ॥ पुष्प प्रमुखे पूजा करे, लोक तणा थोके थोक लाल रे ॥ दा० ॥ २ ॥ राजद्वारे आवी करी, उतारे ते दोय लाल रे ॥ जइ आलान मूले रह्यो, वृष्टि कुसुम रत्न होय लाल रे ॥ दा० ॥ ३ ॥ राय उतारे आरती, करी पूजा सत्कार लाल रे ॥ चंदन प्रमुख विलेपीयां, गजमुख आगल सार लाल रे ॥ दा० ॥ ४ ॥ मास पूरण थइ अन्यदा, शुज जोग ने शुज वार लाल रे ॥ मेघघटा विद्युत परे, प्रसवे पुत्री उदार लाल रे ॥ दा० ॥ ५ ॥ श्रीवछ ज्युं वक्षस्थले, महापुरुषने होय लाल रे ॥ तेम जाले शोजे घणुं, सहेजे तिलक ते जोय लाल रे ॥ दा० ॥ ६ ॥ तास जनमप्रजावथी, सहु राजा शिरदार लाल रे ॥ जीम निसीम ते विक्रमे, तेज प्रताप जंकार लाल रे ॥ दा० ॥ ७ ॥ स्वप्न संजारी राय ते, दवथी दंती आयात लाल रे ॥ दवदंती अजिधा ठवे, कुंडिन जूपति तास लाल रे ॥ दा० ॥ ८ ॥ कनकनी मुद्रिका उपरे, रत्न जडित जेम होय लाल रे ॥ तेम द्युति शोजे एहनी, करे प्रशंस सहु कोय लाल रे ॥ दा० ॥ ए ॥ दिन दिन वधती तेहवे, श्वास सुगंधित तास लाल रे ॥ मात शोक्य पण वाहली, पुण्य प्रबल छे जास लाल रे ॥ दा० ॥ १० ॥ पाय नेउर रणझण करे, पद चंक्रमणे तेह लाल रे ॥ लखमी परे क्रीडा करे, तिणे दीपावे गेह लाल रे ॥ दा० ॥ ११ ॥ आठ वरसनी सा थइ, जणवा मूके तास लाल रे ॥ साक्षी मात्र गुरुने करी, करती कला अज्यास लाल रे ॥ दा० ॥ १२ ॥ जेम आदर्शमां संक्रमे, प्रतिबिंब परे थाय लाल रे ॥ कर्मपयडी मुख शास्त्रनी, पारंगामी कहेवाय लाल रे ॥ दा० ॥ १३ ॥ स्याद्वाद शैली जली, जिनधर्मे मति होय लाल रे ॥ पंडित तेहवो जग नहीं, आवी जीते कोय लाल रे ॥ दा० ॥ १४ ॥ कलासायर ते कुंवरी, वाघेश्वरी परे जेह लाल रे ॥ तात पासे आवे हवे, कलाचारय सह तेह लाल रे ॥ ॥ दा० ॥ १५ ॥ निज कला कौशलपणुं, देखावे तेह तात लाल रे ॥ तात

घणुं हर्षित थयो, देखी एहवी वात लाल रे ॥ दा० ॥ १६ ॥ एक लख एक सहस्र दीये, पाठकने दीनार लाल रे ॥ शासनदेवता नारीने, जिनप्रतिमा दीये सार लाल रे ॥ दा० ॥ १७ ॥ कहे दवदंतीने एहवुं, सोलमा श्रीजिन शांति लाल रे ॥ नावी जिनप्रतिमा अछे, पूजो धरी मन खांत लाल रे ॥ दा० ॥ १८ ॥ इम कही अदृश्य ते थइ, प्रतिमा लेइ तेह लाल रे ॥ हर्षित वदने ते नमी, तुरत आवे निज गेह लाल रे ॥ दा० ॥ १९ ॥ सखीउंमां रमती थकी, यौवन पावन पामी लाल रे ॥ पर्वते लावण्यजल तणी, मदन खेलणनुं ठाम लाल रे ॥ दा० ॥ २० ॥ त्रीजे अधिकारे कहे, बीजे खंडे ढाल लाल रे ॥ दशमी उत्तम विजयनो, पद्मविजय सुविशाल लाल रे ॥ दा० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन दवदंती पिता, देखी यौवन बाल ॥ तस विवाहने कारणे, करे ते सघले चाल ॥ १ ॥ पण तस सरिखो नवि जड्यो, चिंतातुर ते राय ॥ वरस अढारनी सा थइ, पण तस वर नवि पाय ॥ २ ॥ कन्या महोटी घर थइ, तस स्वयंवर ते युत्त ॥ कोइ पुरुष एम सांजली, आवी रायने उत्त ॥ ३ ॥ स्वयंवरमंरूप मांमीयो, बहु राजा आवंत ॥ तरुणवयी बहु राजसुत, ऋद्धिवंत गुणवंत ॥ ४ ॥ निषध राय पण आवीयो, कौशल देश अधिप ॥ नल कुवेर सुत साथ लही, हर्ष लही अति खिप्प ॥ ५ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ देशी माखीना गीतनी ॥ जे जे आव्या राजवी, दीये सहुने सत्कार ॥ राजन जी ॥ पालक नाम विमान ज्युं, मंरूप कीध उदार ॥ राजन जी ॥ वात सुणो विवाहनी, वात कहां ठां, हर्ष धरां ठां, जाणो पुण्यनो खेल ॥ राजन जी ॥ वात० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मांचा मांड्या अति जला, मानुं देवविमान ॥ राजन जी ॥ शक्र सामानिकनी परे, दीपे तेह राजान ॥ रा० ॥ वा० ॥ २ ॥ केइक कमलक्रीमा करे, कुसुमकंडुक केइ सार ॥ ॥ रा० ॥ काम समान स्वरूपथी, दीपे तास देदार ॥ रा० ॥ वा० ॥ ३ ॥ दवदंती आवी तिहां, वर वरवाने हेत ॥ रा० ॥ प्रतिहारी बहु दाखवे, राय तणा संकेत ॥ रा० ॥ वा० ॥ ४ ॥ पण मनमां कोइ नवि रुच्यो, अनुक्रमे स्तवतां तास ॥ रा० ॥ ॥ कोशल देशनो नूपति, नामे निषध ते खास ॥ रा० ॥ वा० ॥ ५ ॥ एहनो सुत नल नामथी, महा बलवंतो जेह ॥ रा० ॥

कुबेर अनुज एहनो अछे, वर जाणी गुणगेह ॥ रा० ॥ वा० ॥ ६ ॥ वरमाला तव कुंवरी, नल महाबल गले थाप ॥ रा० ॥ वाणी थइ आकाशमां, वर.वस्यो रुडो आप ॥ रा० ॥ वा० ॥ ७ ॥ धूमकेतु परे उठीयो, कृष्ण राय कुमार ॥ रा० ॥ खड्ग लेइने इम कहे, मूक मूक एह नार ॥ रा० ॥ वा० ॥ ८ ॥ घाली फोकट माल ए, दवदंतीए तुज ॥ रा० ॥ केम तुं परणे सहजमां, वलीया बेठा मुज ॥ रा० ॥ वा० ॥ ए ॥ भीमसुता मूको हवे, नहींतर करो संग्राम ॥ रा० ॥ कृष्ण राय जीत्या विना, केम लेइ जाशो धाम ॥ रा० ॥ वा० ॥ १० ॥ तव नल मन हसतो कहे, खेद करे केम मूढ ॥ रा० ॥ दवदंतीए मुजने वस्यो, केम न विचारे मूढ ॥ रा० ॥ वा० ॥ ११ ॥ परनारीने इछतां, तुजने केम कल्याण ॥ रा० ॥ एम वास्यो पण नवि रह्यो, तव कस्युं खड्ग ते पाण ॥ रा० ॥ वा० ॥ १२ ॥ नल ते अनल परे थयो, दीसे अति विकराल ॥ रा० ॥ नल ने कृष्ण राजा तणां, अनीक ते थयां विसराल ॥ रा० ॥ वा० ॥ १३ ॥ दवदंती मन चिंतवे, धिग् धिग् मुजने आंही ॥ रा० ॥ क्षय थाये मुज कारणे, पुण्यहीन हुं प्राही ॥ रा० ॥ वा० ॥ १४ ॥ जो हुं दृढ जिनशासने, तो थाउं ए शांत ॥ रा० ॥ जय थाये नल कुमरनो, दोय कटक सुखशात ॥ रा० ॥ वा० ॥ १५ ॥ इम कही कलश पाणी तणुं, लेइ छांटे त्रण वार ॥ रा० ॥ कृष्ण राय तव तेम थयो, जेम निर्वात अंगार ॥ रा० ॥ वा० ॥ १६ ॥ शासनदेवी प्रभावथी, कृष्ण राय तरवार ॥ रा० ॥ पाकुं फल जेम डुम थकी, हेठी पडी तेणी वार ॥ रा० ॥ वा० ॥ १७ ॥ कृष्ण राय चिंते इस्युं, नहीं सामान्य ए कोय ॥ रा० ॥ ए तो योग्य छे वंदवा, देव सान्निध्य जस होय ॥ रा० ॥ वा० ॥ १८ ॥ करकज जोडी इम कहे, तुं मुज वंदवा योग्य ॥ रा० ॥ इणी परे कृष्ण ते बोलतो, धरी मनमां शुभ योग ॥ रा० ॥ वा० ॥ १९ ॥ करी विवाह मनोछव तिहां, सहुने विसर्जे राय ॥ रा० ॥ हय गय रह जन बहु दीये, करमोचनने ठाय ॥ रा० ॥ वा० ॥ २० ॥ गावे मंगल गोरडी, बांधे कंकण हाथ ॥ रा० ॥ अर्हद्देवनी पूजा करे, निषध भीम दोय साथ ॥ रा० ॥ वा० ॥ २१ ॥ महाउत्सव करीने तिहां, करमोचन करी खांत ॥ रा० ॥ भीम विसर्जे निषध, पुत्र सहित भली भांत ॥ रा० ॥ वा० ॥ २२ ॥ दवदंतीने शीखवे, मात धरी नेह ॥ रा० ॥ आपदे पण तजीये नहीं, छाया परे पतिदेह ॥

॥ रा० ॥ वा० ॥ २३ ॥ लेइ आणा माय तायनी, रथमां वेसे तेह ॥ रा० ॥ कोशला सन्मुख चालीयो, मनमां धरी निज गेह ॥ रा० ॥ वा० ॥ २४ ॥ जल आशय आवे जिहां, कर्दम शेष रहंत ॥ रा० ॥ धूले गगन ते ढाइयुं, बीजी धरा मानुं हुंत ॥ रा० ॥ वा० ॥ २५ ॥ बीजे खंडे अति नली, कही त्रीजे अधिकार ॥ रा० ॥ ढाल अग्यारमी सांजलो, पद्म कहे सुखकार ॥ रा० ॥ वा० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३२ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ मारग हवे इण अवसरे, अर्क अस्तंगत थाय ॥ तम व्याप्युं सहु लोकमां, तिहां नवि कांइ देखाय ॥ १ ॥ पण निज पुर जावा तणी, इच्छा अधिकी राय ॥ पण आलोक विना थया, परवश सघला नाय ॥ २ ॥ नवि स्थलनी मालिम पडे, जल पण नवि देखाय ॥ गर्त्ता वृक्ष अलक्ष सहु, मानुं चौरिंद्रिय थाय ॥ ३ ॥ नल दवदंतीने कहे, नालतिलकथी आज ॥ सहुने अजुवालुं करो, ए महोटुं अम काज ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ देशी रसीयानी ॥ दवदंती निज नाल प्रमार्जती, दूर थयो अंधकार ॥ राजेसर ॥ नालतिलक आदित्य परे तपे, हुर्ज प्रकाश तिवार ॥ राजेसर ॥ १ ॥ पुण्य तणां फल देखो इणी परे ॥ ए आंकणी ॥ सहु सुखमां हवे आगल चालीया, तव मुनिवर तिहां दीठ ॥ रा० ॥ मेरु परे काउस्सग्ग मांहे रह्या, सही उपसर्ग उक्किठ ॥ रा० ॥ पु० ॥ २ ॥ तव नल कुमार कहे निज तातने, करो दर्शन ऋषिराज ॥ रा० ॥ वाट मांहि प्रसंगे फल थयुं, सारो आतमकाज ॥ रा० ॥ पु० ॥ ३ ॥ मदमातो करिवर निज गातने, खणतो वृक्षनी त्रांत ॥ रा० ॥ तस मदगंधथी भ्रमर ते आवीया, पण मुनिवर अति शांत ॥ रा० ॥ पु० ॥ ४ ॥ पूरव पुएयथी ए मुनि पामीया, तब ते निषिध राजान ॥ रा० ॥ पुत्र परिछद सहित सेवा करे, जंगम तीरथ मान ॥ रा० ॥ पु० ॥ ५ ॥ नल कुबेर बेहु भ्रात नमी तिहां, करी उपसर्ग ते दूर ॥ रा० ॥ करे प्रशंसा हर्ष धरी घणो, जाग्या पुएयपडूर ॥ रा० ॥ पु० ॥ ६ ॥ अनुक्रमे कोशला नयरीने ढुकमा, पहोता नल कहे ताम ॥ रा० ॥ दवदंती सुणी कोशला शोजती, जिनवर चैत्य उद्दाम ॥ रा० ॥ पु० ॥ ७ ॥ दवदंती चिंते धन्य हुं थइ, नल

खाधो नरतार ॥ रा० ॥ जास प्रसादे चैत्यने वंदशुं, नित नित हर्ष अपार ॥ रा० ॥ पु० ॥ ८ ॥ शुन दिवसे पुरमां प्रवेश करी, दंपती करे हवे केल ॥ रा० ॥ कोइ दिन हिंचोले बिहुं हिंचतां, नव नव खेलतां खेल ॥ रा० ॥ पु० ॥ ए ॥ कोइ दिन धम्मिल गुंथे नारीनो, कुसुम सुगंध ते धार ॥ रा० ॥ कोइ दिन सोगठे ने पाशे रमे, तूर वजावे किवार ॥ ॥ रा० ॥ पु० ॥ १० ॥ अवसर लही एकांते कोइ दिने, नल दवदंतीनी पास ॥ रा० ॥ नाटक तेह करावे हर्षशुं, नव नव रीति विलास ॥ रा० ॥ ॥ पु० ॥ ११ ॥ एक दिन निषध राजा नल कुमरने, थापी राज्यनो नार ॥ रा० ॥ युवराजे थापे लघु पुत्रने, आप लीये व्रत सार ॥ रा० ॥ पु० ॥ ॥ १२ ॥ निज प्रजा पाले दिने दिने नृपति, लोक सुखे तस सुख ॥ रा० ॥ नल राजा पण तस जो डुःख होये, तो नलने होय डुःख ॥ रा० ॥ पु० ॥ ॥ १३ ॥ एक दिन राजा पूछे मंत्रीने, न्यून अछे मुऊ कांय ॥ रा० ॥ मंत्री कहे तव सांनलो स्वामी जी, जेह तुमारो रे ताय ॥ रा० ॥ पु० ॥ ॥ १४ ॥ नरतमां त्रीजा अंशनो अधिपति, ताहरो तात ते जाण ॥ रा० ॥ ॥ तुं तो सकल नरतने नोगवे, तात अधिक गुणखाण ॥ रा० ॥ पु० ॥ ॥ १५ ॥ योजन शत बे जाणो इहां थकी, तक्षशिलापुर ठाम ॥ रा० ॥ नाम कदंब अछे महाराजीयो, माने आण न स्वाम ॥ रा० ॥ पु० ॥ १६ ॥ इम सांनली ते दूतने मोकल्यो, पण नवि मानी रे आण ॥ रा० ॥ करवा रण ते साथे चालीयो, युद्ध करे निज पाण ॥ रा० ॥ पु० ॥ १७ ॥ तेह कदंब नृप मनमां चिंतवे, नवि जीतुं इण ठाम ॥ रा० ॥ जो जीवतो नासुं हवे इहां थकी, तो मुऊ व्रतशुं रे काम ॥ रा० ॥ पु० ॥ १८ ॥ इम चिंतीने नाठो तिहां थकी, लीधो संयमनार ॥ रा० ॥ हवे नल राय कदंब खमावतो, शिर धूणावे तिण वार ॥ रा० ॥ पु० ॥ १ए ॥ अनुक्रमे पहोतो नरपति तिहां थकी, कोशला नयरीए राय ॥ रा० ॥ अरध नरतनो अधिपति रुयमो, वासुदेव परे थाय ॥ रा० ॥ पु० ॥ २० ॥ त्रीजे अधिकारे ए धारमी, बीजे खंडे रे ढाल ॥ रा० ॥ उत्तमविजयनो पद्मविजय कहे, पुण्यथी मंगलमाल ॥ रा० ॥ पु० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ३५५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुसमां अंगारा समो, कुबेर अनुज ते जाण ॥ ठल खोले नल राय-

नां, व्यंतर परे तिण ठाम ॥ १ ॥ हवे एक दिन नल रायने, द्यूत रमणनी टेव ॥ न्यायवंत पण ऊपनी, दुःखदायी ततखेव ॥ २ ॥ लागे गुणवंता जणी, कलंक एकेकुं आय ॥ चंद कलंकी कमलने, कंटक लाग्या जाय ॥ ३ ॥ सागरमां खारापणुं, चंदन पादपे नाग ॥ होय जरा स्त्रीरत्नने, निर्धन पंमित लाग ॥ ४ ॥ कृपणपणुं धनवंतने, हिमगिरि लाग्यो ठार ॥ पालक पुत्र ते कृष्णने, ऊपनो कुल अंगार ॥ ५ ॥ श्रेणिकने कोणिक थयो, उग्रसेनने कंस ॥ मल्लिनाथ स्त्री ऊपना, उत्तम कुल जशवंत ॥ ६ ॥ ते माटे नल रायने, द्यूत रमणनी टेव ॥ नित पमी ते नवि मटे, सुर जस करता सेव ॥ ७ ॥ एकसो आठ ते बुद्धनी, हती रावणने जाल ॥ तब एके नवि संपडी, जब आव्यो फिटण काल ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ देशी मन वसीयानी ॥ कुबेर मनमां चिंतवे रे, जीतुं एहनुं राज्य रे ॥ सुणो जविया ॥ पण नवि जय पामे किमे रे, करत क्रिया जय काज रे ॥ १ ॥ दुःख पवियां ॥ एक दिन जावी जावथी रे, नल हार्यो दैवजोग रे ॥ सु० ॥ अनुकूल अक्ष पडे नहीं रे, लोक धरे मन शोग रे ॥ दुः० ॥ २ ॥ कुबेर मारे सोगठी रे, नलनी वारंवार रे ॥ सु० ॥ गाम खर्वट खेट हारीयो रे, लखमी हार्यो सार रे ॥ दुः० ॥ ३ ॥ सूके सरोवर जिणी परे रे, तेम सूकाणो तेह रे ॥ सु० ॥ लोक विषाद करे घणो रे, असमंजस जोइ एह रे ॥ दुः० ॥ ४ ॥ कुबेर मन हरखे घणुं रे, देखी आपनी जीत रे ॥ सु० ॥ लोक तो नलनो रागीयो रे, करे होकार ज्युं जीत रे ॥ दुः० ॥ ५ ॥ तेह सुणी आवी तिहां रे, दवदंती तिण वार रे ॥ सु० ॥ इणी परे कहे कर जोमीने रे, मूको ए व्यवहार रे ॥ दुः० ॥ ६ ॥ द्यूत न सेवो साहिबा रे, कहुं हुं वारोवार रे ॥ सु० ॥ अनुजने हाथे आपीये रे, स्वामी राज्य उदार रे ॥ दुः० ॥ ७ ॥ पण नवि इणी परे कीजीये रे, जेहथी अपजश थाय रे ॥ सु० ॥ अपलक्षण महोटुं कह्युं रे, लखमी एहथी जाय रे ॥ दुः० ॥ ८ ॥ युद्ध कर्यां तुमे शतगमे रे, पाम्या राज्य विशाल रे ॥ सु० ॥ ते तुम हाथथी साहिबा रे, द्यूते थाय विसराल रे ॥ दुः० ॥ ९ ॥ मदमाता गजनी परे रे, नवि माने ते वयण रे ॥ सु० ॥ दवदंती रुदती थकी रे, कहे सहुने सुणो सयण रे ॥ दुः० ॥ १० ॥ नलने वारो द्यूतथी रे, तब सहु वारे तास रे ॥ सु० ॥ पण नवि वार्यो

जाणो रे जाणो रे मन आणो ए जीतीया रे ॥ ८ ॥ भीमसुता हुंकारमात्र करे जेटले रे, तव नाठा सवि तेह ॥ जावे रे जावे रे धावे केडे विहुं जणा रे ॥ ए ॥ इम जातां ते रथ तो रही गयो वेगलो रे, आवी बीजा चोरे ॥ लीधो रे लीधो रे कीधो कारय निज तणो रे ॥ १० ॥ दवदंती थाकी तव सूती तरुतले रे, तव वायु करे राय ॥ पाणी रे पाणी रे राणीने आणी दीये रे ॥ ॥ ११ ॥ पूछे दवदंती हवे अटवी केटली रे, तव बोले नल राय ॥ प्रेमे रे प्रेमे रे इम अटवी शत जोयणा रे ॥ १२ ॥ पांच जोयन आव्या आपण तेहमां इहां रे, कहे दवदंती एम ॥ माहरुं रे माहरुं रे वारु हृदय ते कंपतुं रे ॥ १३ ॥ इम अटवीमां सूरय क्षेत्रांतरे गयो रे, मानुं जणवे एम ॥ होय रे होय रे जोय संपद ते अथिर छे रे ॥ १४ ॥ दवदंतीने काजे शय्या तिहां रची रे, कहे सूवो इण ठाम ॥ बोले रे बोले रे खोले चित्त नलशुं हवे रे ॥ १५ ॥ पश्चिम दिशि तापसआश्रम छे स्वामी जी रे, जइये तिहां एक रात ॥ गमीये रे गमीये रे रमीये विहाणे आगले रे ॥ १६ ॥ नल कहे तापस-आश्रम नवि जावुं घटे रे, हीणानो संसर्ग ॥ कीजे रे कीजे रे लीजे तो मिथ्या-पणुं रे ॥ १७ ॥ तापस संगे समकित भंगे वेगलुं रे, ते माटे रहो आंही ॥ वाणी रे वाणी रे जाणी इम निज नाथनी रे ॥ १८ ॥ पंच परमेष्ठी प्रणमीने सोवे तदा रे, निद्रा आवी ताम ॥ तास रे तास रे वासभुवन परे तेहने रे ॥ १९ ॥ ससरानुं शरणुं करणुं रुडुं नहीं रे, केम जाउं तस गेह ॥ नाहीं रे नाहीं रे क्यांहि वखाणुं रुयडुं रे ॥ २० ॥ वज्र परे करी हृदय ते मूकी नारीने रे, जाउं बीजे ठाम ॥ शीले रे शीले रे शील होशे एहनां सदा रे ॥ २१ ॥ कुलआभरण कह्युं ते उत्तम शील छे रे, शील ते जाणो रूप ॥ रुम्हे रे रुम्हे रे कूडुं जो होय बाह्यथी रे ॥ २२ ॥ पंडित पण ते जाणो जे शीले खरा रे, जे शीले करी हीन ॥ भणीयो रे भणीयो रे गणीयो नहीं ते कारणे रे ॥ २३ ॥ चोर चरड कर डाकिण शाकिण नवि छले रे, भूत व्यंतर ने प्रेत ॥ न छले रे न छले रे शीलवले प्राणी प्रते रे ॥ २४ ॥ अरि करि हरि नवि पासे आवे तेहने रे, ज्वलन जलोदर दूर ॥ जाये रे जाये रे थाये जलमां थल भलो रे ॥ २५ ॥ शीलवंत नर रणमां जयलछी वरे रे, गाढ बंध पण जाय ॥ दूरे रे दूरे रे पूरे आणंदे करी रे ॥ २६ ॥

बीजे खंडे त्रीजे अधिकारे कही रे, चौदमी ढाल रसाल ॥ एह रे एह रे सेह पद्म उत्तम तणे रे ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४२९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नल राजा एम चिंतवी, शोणित लेइ लिखंत ॥ वटशोभित दिशे आवशे, देश विदर्भ सोहंत ॥ १ ॥ तिहांथी वाम दिशे जतां, आवशे कोशल देश ॥ पीयर अथवा सासरे, जाजो करी उद्देश ॥ २ ॥ माहरे तो जावा तणो, एके ठाम न लाग ॥ रुदन करंतां इम लखी, चाल्यो ते महाभाग ॥ ३ ॥ पग पग स्खलना पामतो, जोतो पूठे नार ॥ अदृश्य थइ ते नारी तव, चिंते मनमां धार ॥ ४ ॥ अहो बाला वन एकली, सूती एह अनाथ ॥ वाघ सिंह भक्षण करे, तो कुण एहनो साथ ॥ ५ ॥ उत्तम कुलमां उपनी, दवदंती ए नार ॥ मुझ कारण आपद लही, शुं करीये इणी वार ॥ ६ ॥ जागी जीवित मूकशे, मूकी जाउं केम ॥ अथवा अक्षर वांचीने, रहेशे कुशले क्षेम ॥ ७ ॥ इम चिंती गयो आगले, सुपन लहे हवे नार ॥ फलीयो फूल्यो रुयडो, आंबो अति मनोहार ॥ ८ ॥ आरोही ते अंबने, खाउं हुं फल सार ॥ आवी वनवारण तिहां, पादप नाख्यो उपाड ॥ ९ ॥ दुःखणी तिहां हेठी पडी, ज्युं पंखीनुं अंड ॥ प्रातसमय जागी तिसे, देखे दुःख प्रचंड ॥ १० ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ रहो रहो रहो रथ फेरवो रे ॥ ए देशी ॥ जागी तव ते आरडे रे, करती कोडि विलाप रे ॥ यूथभ्रष्ट जेम हरणली रे, जोवे दशो दिश आप रे ॥ ॥ १ ॥ द्यो दरिसण मुझ स्वामी जी रे ॥ ए आंकणी ॥ रणमां मूकी एकली रे, किहां चाल्या मुझ नाथ रे ॥ जो इम मूकी चालवुं रे, तो शाने ग्रह्यो हाथ रे ॥ २ ॥ द्यो० ॥ नहीं आधार को तुम विना रे, आवो वेहेलां आंही रे ॥ हांसीनी वेला नहीं रे, नवि जाणुं गया क्यांहि रे ॥ ३ ॥ द्यो० ॥ लागी जोवा तिहां कणे रे, चिंते मन वली एम रे ॥ शुद्ध वदन करवा भणी रे, गया होशे के केम रे ॥ ४ ॥ द्यो० ॥ पाणी लेवाने गया रे, अथवा हाथ्या क्यांहि रे ॥ रुंधी राख्या तेहने रे, पण कांय कारण प्राही रे ॥ ५ ॥ द्यो० ॥ रूपे लोभाणी खेचरी रे, अथवा हरी गइ तेह रे ॥ केम हजी आव्या नहीं रे, स्वामी तुमे गुणगेह रे ॥ ६ ॥ द्यो० ॥ थानक तो सूनी

नथी रे, ते द्रुम नग रण एह रे॥ पण नवि नल देखुं किहां रे, प्राणवल्लभ मुज जेह रे ॥ ७ ॥ थो० ॥ नवि देखे नल रायने रे, सुपन संभारे ताम रे ॥ अंब समो नल राजीयो रे, राज्य फलादिक गाम रे ॥ ८ ॥ थो० ॥ राज्यनुं सुख फलस्वाद जे रे, परिजन जाणो ते भृंग रे ॥ वनहाथी मल्यो तेहने रे, उपाड्यो ते रंग रे ॥ ९ ॥ थो० ॥ वृक्ष थकी पडवुं थयुं रे, ते नल राय वियोग रे ॥ जाणुं ए सुपने करी रे, दुर्लभ पतिसंयोग रे ॥ १० ॥ ॥ थो० ॥ महोटे स्वर तिहां रोवती रे, कहे इणी परे मुख वाच रे ॥ आपद लहे नारी यदा रे, धीरज रहे किम साच रे ॥ ११ ॥ थो० ॥ स्वामी केम मुजने तजी रे, भार भणी थइ तुज रे ॥ थाउ प्रसन्न वनदेवता रे, स्वामी देखाडो मुज रे ॥ १२ ॥ थो० ॥ धरती मात विवर दीयो रे, पेसुं धरती मांहि रे ॥ नाथ विना नवि रही शकुं रे, नवि पामुं सुख क्यांहि रे ॥ १३ ॥ थो० ॥ आंसुधारा रेडती रे, सिंचे वननां रुंख रे ॥ जल थल आतप दांहिडे रे, नवि पामे कहीं सुख रे ॥ १४ ॥ थो० ॥ अटवीमां भमतां थका रे, अक्षर देखे ताम रे ॥ वस्त्र अंचले हरखे तदा रे, चिंते मनमां आम रे ॥ १५ ॥ थो० ॥ पियु मन सरोवर हंसली रे, निश्चय हुं हजी आज रे ॥ नहींतर केम लखे अक्षरा रे, मुज पति नल महाराज रे ॥ १६ ॥ थो० ॥ वांची चिंते एहवुं रे, जाउं तातने गेह रे ॥ नाथ वचन ए मानवुं रे, वेधे कह्युं मन जेह रे ॥ १७ ॥ थो० ॥ वटमारग चाली हवे रे, जोती अक्षर तेह रे ॥ जाणे नल पासे अछे रे, अक्षर तेह गुणगेह रे ॥ १८ ॥ थो० ॥ वाघ उठे खावा घणा रे, दीसे भयंकर रूप रे ॥ पासे नवि आवी शके रे, पासे शील अनूप रे ॥ १९ ॥ थो० ॥ फणिधर मणिधर मोटका रे, देखी उपजे त्रास रे ॥ पण नवि आवे ढुकडा रे, शील अचल जस पास रे ॥ २० ॥ थो० ॥ मद झरता मयंगल घणा रे, दीसे जे अतिक्रूर रे ॥ सिंह परे नावे ढुकडा रे, जेहने शील सनूर रे ॥ २१ ॥ थो० ॥ इत्यादिक उपद्रव घणा रे, मारग जातां थाय रे ॥ तेहने सहु विलये गयां रे, जेहने शील सखाय रे ॥ २२ ॥ थो० ॥ विंधाय कंथेरथी रे, तेम रुधिरे झरे पाय रे ॥ दव बीहीनी जिम हाथणी, शीघ्र थइ तेम जाय रे ॥ २३ ॥ थो० ॥ मारगे साथ मल्यो हवे रे, महारिद्धि भरपूर रे ॥ देखीने हर्षित थइ रे, जिम तरंग जलपूर रे ॥ २४ ॥ थो० ॥ पन्नरमी बीजा खंडमां रे, ढाल भीजे अधिकार रे ॥ पद्मविजय

कहे शीलथी रे, होवे जय जयकार रे ॥ २५ ॥ द्यो० ॥ सर्व गाथा ॥ ४६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ साथ मांहे भेली थइ, तव आव्या तिहां चोर ॥ रुंध्यो आवी साथने, करता ते अति सोर ॥ १ ॥ बीक होये धनवंतने, निर्धनने शी बीक ॥ बीक साचभाषक भणी, जिम भाखुं हुं अलीक ॥ २ ॥ चिंता व्रतवंता भणी, पासत्थो निरभीक ॥ शीलवंत बीये घणुं, नवि जाय नारी नजीक ॥ ३ ॥ जाय होय तेहनुं सदा, नवि होय तस शुं जाय ॥ देवपणुं हारी करी, जुर्ज एकेंद्रिय थाय ॥ ४ ॥ ते माटे ए लोकने, लागी महोटी बीक ॥ आमा अवला नासता, आव्या चोर नजीक ॥ ५ ॥ दवदंती कहे सांभलो, न करो बीक लगार ॥ कुलदेवी वाणी परे, सहु सांभले तिण वार ॥ ६ ॥

॥ दोहा सोलमी ॥

॥ उठ कलालण भर घडो हे, दारुमारो मूल सुणाय ॥ ए देशी ॥ मुज वेठां केम लूंटशो हे, इम कहे दवदंती नार ॥ पण नवि जाये तसकरा हे, तव कीधो हुंकार ॥ १ ॥ रायजादी बोले वचन रसाल ॥ ए टेक ॥ तव नाठा ते तसकरा हे, बधिर थयुं सवि वन्न ॥ तेह साथना सहु जना हे, चिंते इणी परे मन्न ॥ २ ॥ रा० ॥ आपणने पुण्ये करी हे, आवी कोइ वनदेवी ॥ चोर थकी राख्या इणे हे, हुंकारे ततखेव ॥ ३ ॥ रा० ॥ प्रणमी सार्थप विनवे हे, केम रणमां फरो मात ॥ कोण तमे छो ते कहो हे, तव कही सघली वात ॥ ४ ॥ रा० ॥ सार्थप कहे कर जोमीने हे, नलनारी अम माय ॥ तस्करथी राख्या वली हे, तिणे तुमे जीवित दाय ॥ ५ ॥ रा० ॥ करी आश्वास राखी घरे हे, देवी परे आराध ॥ वर्षा तिण टाणे थइ हे, वरसे वारि अगाध ॥ ६ ॥ रा० ॥ त्रण रात्रि वरस्यो तिहां हे, विरम्यो मेघ तिवार ॥ साथ मूकी आगल गइ हे, दवदंती मनोहार ॥ ७ ॥ रा० ॥ नल वियोगना दिवसथी हे, चौथ भक्त करे नित ॥ मंद मंद जातां थका हे, देखे एक ते भीत ॥ ८ ॥ रा० ॥ राक्षस एक दीठो तिहां हे, यम नृपति मानुं पुत ॥ श्याम अमावास्या परे हे, काजल परे जेम भूत ॥ ९ ॥ रा० ॥ खाउं खाउं करतो थको हे, शेषनाग परे तेह ॥ नारी धैर्य धरी कहे हे, आपुं मारी देह ॥ १० ॥ रा० ॥ पण एक माहरी वातमी हे, सांभल तुं थिर थाय ॥ जन्म्या ते मरवा भणी हे, तेहमां बीक न कांय ॥ ११ ॥ रा० ॥ कर्म कर्यां

ते नोगवे हे, प्राणी आपही एक ॥ तेहमां करत विषाद श्यो हे, इम कहे वचन विवेक ॥ १२ ॥ रा० ॥ बाह्य प्राण हरे माहरा हे, पण नहीं माहरी हाण ॥ रत्नत्रयी जे माहरी हे, ते तो थिर रहे जाण ॥ १३ ॥ रा० ॥ ते माटे तुऊने कहुं हे, हुं तुं पारकी नार ॥ मत ठेडो मुऊने इहां हे, इम तुऊ नहीं श्रीकार ॥ १४ ॥ रा० ॥ धैर्य वचन ते सांजली हे, हरख्यो तेह पलाद ॥ तूठो हुं तुऊ उपरे हे, कहे मत कर विषवाद ॥ १५ ॥ रा० ॥ दवदंती कहे सांजलो हे, जो त्रूठो महाजाग ॥ तो कहो माहरा स्वामीनो हे, कब संयोगनो लाग ॥ १६ ॥ रा० ॥ बारे वरसे ताहरो हे, मलशे नल जरतार ॥ पीयरमां रहेतां थका हे, यक्ष कहे एह प्रकार ॥ १७ ॥ रा० ॥ जो तुं कहे तो ताहरा हे, मूकुं तातने गेह ॥ तब ते दवदंती कहे हे, आणी अतिहि सनेह ॥ १८ ॥ रा० ॥ वात कही स्वामी तणी हे, तिणे कह्युं सघलुं काम ॥ पर नर साथे नवि घटे हे, जावुं मुऊने धाम ॥ १९ ॥ रा० ॥ ते कारण जाउं सुखे हे, तब निज परगट रूप ॥ देखामी दवदंतीने हे, थयो अदृश्य स्वरूप ॥ २० ॥ रा० ॥ निज जरतार वियोगडे हे, बार वरसने प्रमाण ॥ जाणी अजिग्रह इम करे हे, त्रिकरण शुद्ध सुजाण ॥ २१ ॥ रा० ॥ वस्त्र तांबूल जूषण वली हे, विगय विलेपन सार ॥ करे निषेध नल जिहां मले हे, सती शिरोमणि सार ॥ २२ ॥ रा० ॥ एक गिरिनी गुफा लही हे, करती तिहां निवास ॥ माटीमय जिन शांतिनी हे, मूरति करे ते उल्लास ॥ ॥ २३ ॥ रा० ॥ खूणे थापी तेहने हे, विरचे पूज उदार ॥ त्रण टंक जिनवर तणां हे, चोथजक्त तप सार ॥ २४ ॥ रा० ॥ शीले उपद्रव सवि मटे हे, शीले संग सुजाण ॥ अटवीमां सान्निध करे हे, शीले कोमि कल्याण ॥ ॥ २५ ॥ रा० ॥ बीजे खंडे सोलमी हे, ढाल त्रीजे अधिकार ॥ पंमित उत्तमविजयनो हे, पद्मविजय कहे सार ॥ २६ ॥ रा० ॥ सर्व गाथा ॥ ४एद ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे सार्थप निज साथमां, नवि देखे ते नार ॥ पगखांना अनुसारथी, आव्यो तिणहीज ठार ॥ १ ॥ तेह गुफामां आवीयो, दवदंतीनी पास ॥ दवदंती पूजा करे, आणी अंग उल्लास ॥ २ ॥ कुशल क्षेम जाणी करी, दवदंतीने ताम ॥ सार्थवाह हर्षित थयो, देखी पूजा गम ॥ ३ ॥ पूजा ते पूरी करी, पूछे कुशलनी वात ॥ तेहशुं मीठी वाणीए, नाखे निज अव-

दात ॥ ४ ॥ केइ तापस आव्या तिहां, पासे वसता जेह ॥ अंबुद वरसे आकरो, उठे शब्द अछेह ॥ ५ ॥ किहां जइये तापस कहे, नहीं आपण आधार ॥ श्वापदनी परे दोडता, देखे नारी तिवार ॥ ६ ॥ कहे मत बीहो वापडा, इम कीधो आश्वास ॥ दवदंती नारी करे, कुंडालुं चिहुं पास ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ राय कहे राणी प्रते ॥ सुणो कामिनी ॥ ए देशी ॥ सतीया मांहि शिरोमणि ॥ जयवंती जी ॥ दवदंती ते नार ॥ गुणवंती जी ॥ शीलवंती जो हुं अछुं ॥ ज० ॥ तो ए कुंडथी बार ॥ गु० ॥ १ ॥ वर्षों पण मांहे नहीं ॥ ज० ॥ इणी परे जाख्युं जाम ॥ गु० ॥ तव नवि बुंद पडे तिहां ॥ ज० ॥ वरसे बाहिर गाम ॥ २ ॥ गु० ॥ तव सहु तापस चिंतवे ॥ ज० ॥ ए वनदेवी कोय ॥ गु० ॥ सार्थप पूछे नारीने ॥ ज० ॥ कोण देव ए होय ॥ ३ ॥ गु० ॥ ते कहे परमेश्वर तणी ॥ ज० ॥ मूरति अति मनोहार ॥ गु० ॥ क्षुद्र जीव नवि उपद्रवे ॥ ज० ॥ एह प्रसादे ए वार ॥ ४ ॥ गु० ॥ धर्म सुणी तस मुख थकी ॥ ज० ॥ अंगीकरे धरी प्रेम ॥ गु० ॥ कामधेनु तुं धर्मनी ॥ ज० ॥ सार्थप जाखे एम ॥ ५ ॥ गु० ॥ तापस पण तस वचनथी ॥ ज० ॥ करता अंगीकार ॥ गु० ॥ मूकी तापसधर्मने ॥ ज० ॥ जैनधर्म जग सार ॥ ६ ॥ गु० ॥ खीर पान लीधा पछी ॥ ज० ॥ कांजी कुण करे पान ॥ गु० ॥ जैनधर्म लीधा पछी ॥ ज० ॥ अन्य धर्म कुण मान ॥ ७ ॥ गु० ॥ सार्थवाह ते थानके ॥ ॥ ज० ॥ नगरी वासे त्यांहि ॥ गु० ॥ तापस बोधने कारणे ॥ ज० ॥ तापसपुर उत्साह ॥ ८ ॥ गु० ॥ शांतिनाथ जिनवर तणुं ॥ ज० ॥ चैत्य करावे शेठ ॥ गु० ॥ शेठ तापस सहु इम कहे ॥ ज० ॥ जैन थकी सहु हेठ ॥ ९ ॥ ॥ गु० ॥ एक दिन रात समे हवे ॥ ज० ॥ गिरिशिर उपर जोय ॥ गु० ॥ सुर आवता जावता ॥ ज० ॥ अजुआलुं तिहां होय ॥ १० ॥ गु० ॥ जय जय शब्द ते सांजले ॥ ज० ॥ दवदंती तिण वार ॥ गु० ॥ जोवा गइ गिरि उपरे ॥ ज० ॥ तापस शेठ परिवार ॥ ११ ॥ गु० ॥ ते थानक सिंहकेशरी ॥ ज० ॥ पाम्यो केवलज्ञान ॥ गु० ॥ करवा महोत्सव तेहनो ॥ ज० ॥ आव्या सहु तिण थान ॥ १२ ॥ गु० ॥ पाय प्रणमी मुनिवर तणा ॥ ज० ॥ वेगा निज निज ठाम ॥ गु० ॥ देशना दीधी तिण समे ॥ ज० ॥ जवि उपगारने काम ॥ १३ ॥ गु० ॥ दुर्लभ नरजव पामीने ॥ ज० ॥ न करो को

परमाद ॥ गु० ॥ दवदंती मुखने कहे ॥ ज० ॥ करी रुमो संवाद ॥ १४ ॥ गु० ॥ कुलपतिने केवली कहे ॥ ज० ॥ दवदंती ए नार ॥ गु० ॥ धर्म कह्यो तिम जाणजो ॥ ज० ॥ एह सती निर्धार ॥ १५ ॥ गु० ॥ महोटो महिमा एहनो ॥ ज० ॥ तिणे वार्यो घन घोर ॥ गु० ॥ हुंकारे करी त्रासव्या ॥ ज० ॥ दुर्जय ते महा चोर ॥ १६ ॥ गु० ॥ देव एक आव्यो तिहां ॥ ज० ॥ वंदे केवली पाय ॥ गु० ॥ दवदंतीने एम कहे ॥ ज० ॥ सांभल तुं सुखदाय ॥ १७ ॥ ॥ गु० ॥ शिष्य हतो तापस तणो ॥ ज० ॥ आ वनमां हुं सार ॥ गु० ॥ कूर्पर नाम सोहामणुं ॥ ज० ॥ दुर्धर तपनो कार ॥ १८ ॥ गु० ॥ पंचाग्निने साधतो ॥ ज० ॥ पण तापस हुं एह ॥ गु० ॥ पूजा स्तवना नवि करे ॥ ज० ॥ क्रोध आव्यो मुज तेह ॥ १ए ॥ गु० ॥ तेह थानक मूकी गयो ॥ ज० ॥ दुःख देहेतो तिण वार ॥ गु० ॥ क्रोधे काल करी थयो ॥ ज० ॥ महा विषधर दुःखकार ॥ २० ॥ गु० ॥ एक दिन श्रीअरिहंतने ॥ ज० ॥ रुसवा दोड्यो ताम ॥ गु० ॥ तें नवकार सुणावीयो ॥ ज० ॥ मुज श्रवणे गुणकाम ॥ २१ ॥ गु० ॥ दरमां पेठो हुं वली ॥ ज० ॥ एक दिन सुणीया कान ॥ गु० ॥ तापस आगल भाखती ॥ ज० ॥ जीवाजीवनां थान ॥ २२ ॥ गु० ॥ जीवहिंसाथी दुःख लहे ॥ ज० ॥ इम सांभली तुज वाण ॥ गु० ॥ में मन मांहि चिंतव्युं ॥ ज० ॥ हिंसावंत हुं जाण ॥ २३ ॥ गु० ॥ महापापी हुं सरजीयो ॥ ज० ॥ नाग तणो अवतार ॥ गु० ॥ शी गति थाशे माहरी ॥ ज० ॥ इहापोह तिण वार ॥ २४ ॥ गु० ॥ जातिसमरण उपनुं ॥ ज० ॥ तापस देखी मुज ॥ गु० ॥ वैराग्ये अणसण ग्रह्युं ॥ ज० ॥ वाणी लही में तुज ॥ २५ ॥ गु० ॥ सौधर्मे सुर हुं थयो ॥ ज० ॥ तपनुं फल नवि जाय ॥ गु० ॥ कुसुमसमृद्ध विमानमां ॥ ज० ॥ नाम कुसुमप्रभ थाय ॥ २६ ॥ गु० ॥ सहु ताहरो महिमा अछे ॥ ज० ॥ अवधिज्ञानथी जाण ॥ गु० ॥ धर्मपुत्र हुं ताहरो ॥ ज० ॥ उपगारी तुज वाण ॥ २७ ॥ ॥ गु० ॥ स्वामी सहु तापस प्रते ॥ ज० ॥ कहे तापसने एम ॥ गु० ॥ श्रावक-
...भ तुमे ॥ ज० ॥ मनमां धारी प्रेम ॥ २८ ॥ गु० ॥ पूरव भव जे
॥ ज० ॥ सांभुं लेइ शरीर ॥ गु० ॥ वृक्ष उपर जइ टांगीयुं ॥
॥ इणी परे कहे महाधीर ॥ २ए ॥ गु० ॥ कोप करे जे मानवी ॥
॥ ज० ॥ लहे एहवा अवतार ॥ गु० ॥ जेम कूर्पर पूरव भवे ॥ ज० ॥

लह्यो हीणो जमवार ॥ ३० ॥ गु० ॥ बीजा खंम मांहे कही ॥ ज० ॥ ढाल त्रीजे अधिकार ॥ गु० ॥ सत्तरमी सोहामणी ॥ ज० ॥ पद्मविजय सुखकार ॥ ३१ ॥ गु० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुलपति समकितधर पुरा, वली पाम्यो वैराग ॥ केवलीने प्रणमी करी, इम जाखे महाजाग ॥ १ ॥ स्वामी महाव्रत दीजीये, कहे केवली जगवान ॥ महारा गुरुजी आपशे, तुम्ह दीक्षानुं दान ॥ २ ॥ जशोजद्र नामे रुयमा, सूरीश्वर गुणगेह ॥ ममत्व नहीं जस देहनुं, व्रत आपे तुम तेह ॥ ३ ॥ तव कुलपति महामति कहे, विस्मय पामी एम ॥ दीक्षा लीधी स्वामी जी, तस कारण कहो केम ॥ ४ ॥ केवली कहे तुमे सांजलो, जे कहुं हुं अवदात ॥ आयु अथिरपणुं वली, संसारे दुःखवात ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ कमवां रे फल वे क्रोधनां ॥ ए देशी ॥ कोशला नयरीए राजीयो, कुबेर इणे नामे ॥ तेहनो पुत्र हुं उपन्यो, आव्यो यौवन ठामे रे ॥ १ ॥ आयु अथिर जवि प्राणीया ॥ ए आंकणी ॥ परणी कन्या एकदा, वलीयो घर साहमो ॥ सूरि जशोजद्र देखीया, शोजन जस नामो रे ॥ २ ॥ आ० ॥ पद-कज प्रणम्यो तेहनां, दीधो मुज उपदेश ॥ में पूछ्युं अवसर लही, कहो आयु मुज शेष रे ॥ ३ ॥ आ० ॥ देइ उपयोग गुरु कहे, पांच दिवस तुज शेष ॥ सुणी विलखो थइ फूरतो, तव गुरु कहे उपदेश रे ॥ ४ ॥ आ० ॥ मत कर आरत तुं हवे, सांजल माहरी वाण ॥ चरण दिवस एक अनुज-वे, तोपण होय शिवठाण रे ॥ ५ ॥ आ० ॥ पांच दिवस हजी ताहरे, ले तुं संयमजार ॥ तव में चारित्र आदर्युं, शिवसुखनुं दातार रे ॥ ६ ॥ आ० ॥ गुरु उपदेशथी आवीयो, विचरंतो इण ठाणे ॥ शुक्लध्यानथी क्षय कर्यां, घातीकर्म ए टाणे रे ॥ ७ ॥ आ० ॥ आवरण सहु दूरे थयां, प्रगट केवलज्ञाने ॥ लोकालोकने देखतो, विचरुं हुं इण थाने रे ॥ ८ ॥ आ० ॥ एम कही योगने रुंधीया, जव उपग्राही कर्म ॥ खांत करी शिवमां गया, जिहां शाश्वत हुआं शर्म रे ॥ ए ॥ आ० ॥ देव दहन करे तस वपु, हवे कुलपति लीये दीक्षा ॥ दवदंती पण एम कहे, मुजने दीयो गुरु शिक्षा रे ॥ ॥ १० ॥ आ० ॥ तव जशोजद्र गुरु कहे, नल साथे तुज जोग ॥ जोगववा

बहु दिन लगे, तेणे नहीं व्रतयोग रे ॥ ११ ॥ आ० ॥ सूरीसर हवे उतरी, तापसपुर मांहि आवे ॥ चैत्य तणी प्रतिष्ठा करे, समकित बीजने वावे रे ॥ १२ ॥ आ० ॥ सात वरस एम वही गयां, तेह गुफा मांहि रहेतां ॥ एक दिन श्रवणे सुणे इस्युं, नल दीठो हतो कहेतां रे ॥ १३ ॥ आ० ॥ दवदंती तिहां नीकली, सांभली एहवी वाण ॥ चोकफेर जोयुं फरी, दीठो नहीं किण ठाण रे ॥ १४ ॥ आ० ॥ तेह गुफा दूरे रही, शब्दकथक नवि मलीयो रे ॥ उभय भ्रष्ट नारी हवे, अटवीमां दुःख वलीयो रे ॥ १५ ॥ आ० ॥ रुदन करे ते महासती, किहां जाउं शुं करीये ॥ ते गुफा सन्मुख थइ, पण दैवे दुःख करीये रे ॥ १६ ॥ आ० ॥ राक्षसी एक आवी तिहां, खाइश तुजने हुं आज ॥ भूखी कूख माहरी अछे, माहरे मांसशुं काज रे ॥ ॥ १७ ॥ आ० ॥ भैमी कहे नल पति विना, जो उर चित्त न होवे रे ॥ हत आशा राक्षसी तणी, थाउं सहु सिद्ध जोवे रे ॥ १८ ॥ आ० ॥ देव गुरु जे जैनना, जैन तणो वली धर्म रे ॥ ते विनु मन नवि मानीउं, जे आपे शिवशर्म रे ॥ १९ ॥ आ० ॥ तो उपद्रव थाउं वेगला, सांभली ते सती वाणी ॥ राक्षसी अदृश्य थइ गइ, सुपन परे तिण ठाण रे ॥ २० ॥ आ० ॥ शील अचल होय जेहनां, तेहने विघन न होवे रे ॥ दवदंती परे जाणजो, ते नवनिधि घर जोवे रे ॥ २१ ॥ आ० ॥ बीजे खंडे अढारमी, ढाल त्रीजे अधिकार रे ॥ पंमित उत्तमविजयनो, पद्म कहे जय जयकार रे ॥ २२ ॥ आ० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पर्वत पासे एक नदी, दीठी पाणी शून्य ॥ तरसी दवदंती हवे, जेहनुं पुण्य अगण्य ॥ १ ॥ सम्यक्दर्शन माहरे, जो चित्तमां थिर होय ॥ तो गंगा परे निर्मलुं, जल प्रगटावो कोय ॥ २ ॥ पाहु प्रहार करे तिहां, इम भाखी ते नारी ॥ क्षीरसमुद्रनी सारिखुं, प्रगट थयुं तिहां वारि ॥ ३ ॥ पाणी पीधुं तिहां कणे, आगल चाली जाय ॥ शील तणा महिमा थकी, सघले मंगल थाय ॥ ४ ॥ शीले संकट सवि टले, शीले रण पुर थाय ॥ शील विना जे मानवी, नाम न को लेवाय ॥ ५ ॥ साप कुसुममाला हुवे, विष ते अमृत थाय ॥ सुरवर नित सेवा करे, शीलवंतनी न्याय ॥ ६ ॥ ते दवदंती महासती, गुणवंती पथ मांहि ॥ शीलवंती वट पामती, वेसंती उत्साह ॥ ७ ॥

॥ ढाल ठंगणीशमी ॥

॥ ज्ञोलीका हंसा रे विषय न राचीये॥ ए देशी ॥ पंथीलोक आव्या इण अवसरे, पूठे नारीने तामो जी ॥ वनमां एकली तुं केम इहां वसें, दवदंती कहे आमो जी ॥ १ ॥ सांजलो माहरी वात सोहामणी ॥ ए टेक ॥ साथथी चूकी हुं रणमां वसुं, तापसपुर मुज जावो जी ॥ पंथी कहे पश्चिम दिशि जायजे, तुज पुर आवशे ठावो जी ॥ २ ॥ सां० ॥ साथ अमारो जातो रहे तिणे, आवी न शकुं साथो जी ॥ अमे अमारा साथमां जायशुं, वारि लेइ निज हाथो जी ॥ ३ ॥ सां० ॥ जो अम साथे आवो मात जी, तो चालो जली जांते जी ॥ इम कही साथे तेमी नारीने, पहोता साथमां खांते जी ॥ ४ ॥ सां० ॥ नामथी ते धनदेव सारथपति, पूठ्या पठी कहे वातो जी ॥ थानक मूको मुजने स्वामी जी, था मुजने सुखशातो जी ॥ ५ ॥ सां० ॥ अचलपुरे अमे जाशुं सांजलो, तुमे पण आवो साथो जी ॥ पुत्री परे वेसारी यानमां, सार्थप ग्रही तस हाथो जी ॥ ६ ॥ सां० ॥ एक दिन साथ पमाव कस्यो तिहां, राते सुएयो नवकारो जी ॥ सारथवाह सहित ते देखवा, जोवा चाली उदारो जी ॥ ७ ॥ ॥ सां० ॥ चैत्यवंदना करतो जावशुं, दीठो श्रावक तामो जी ॥ दवदंती तेहने अनुमोदती, निज गुण परगट कामो जी ॥ ८ ॥ सां० ॥ पट उपर जिनबिंब आलेखीयुं, श्याम वरणथी तेह जी ॥ देखी पूठे दवदंती इस्युं, पूजो कारण केह जी ॥ ए ॥ सां० ॥ केहनुं बिंब अठे ए मुज कहो, तव कहे श्रावक सारो जी ॥ मल्लिनाथ ठंगणीशमा जिनवरु, जावी जस अवतारो जी ॥ १० ॥ सां० ॥ कारणथी पूजा करुं एहनी, तेह सुणो हवे वातो जी ॥ कांचीपुरमां वास ते माहरो, ज्ञात वणिक मुज तातो जी ॥ सां० ॥ ॥ ११ ॥ धर्मगुप्त ज्ञानी गुरु एकदा, विचरंता उद्यानो जी ॥ समवसस्या वंदी में पूठीयुं, कुण तीर्थे शिवथानो जी ॥ सां० ॥ १२ ॥ तव ज्ञानी गुरु मुजने इम कहे, मल्लिनाथने वारे जी ॥ प्रसन्नचंद्र राजा थइ सिजशो, इम मुजने कहे त्यारे जी ॥ सां० ॥ १३ ॥ ते दिनथी पूजुं हुं सुण सती, बिंब करी जिनराजो जी ॥ मुजने वात कहे हवे ताहरी, तव कही नलमुख राजो जी ॥ सां० ॥ १४ ॥ अश्रुपात करी श्रावक कहे, म करो वहेन विषादो जी ॥ तात समो सारथपति एह ठे, इम कही वचन

विवादो जी ॥ सां० ॥ १५ ॥ अचलपुरे पहोतो ते अनुक्रमे, हवे मूकीने जाय जी ॥ तृषावंत गइ एक वाविमां, जलदेवी मानुं आय जी ॥ सां० ॥ ॥ १६ ॥ दवदंतीनो पग पकड्यो हवे, गोधाए जल मांहि जी ॥ जब नवकार संभारे तिहां कणे, मूक्यो पग तव त्यांहि जी ॥ सां० ॥ १७ ॥ पग ने वदन पखाली महासती, आवी वाविने वहार जी ॥ चेटी चंद्रजशा राणी तणी, आवी भरवा वारि जी ॥ सां० ॥ १८ ॥ दवदंतीनुं रूप देखी करी, राणीने कही वातो जी ॥ चंद्रजशा कहे तेमो अम घरे, सांभलीये अवदातो जी ॥ सां० ॥ १९ ॥ पुत्रीनी परे तेहने राखशुं, दासी तेरूवा जाय जी ॥ वात कहे ऋतुपर्ण राजा तणी, राणी तेडे जेम माय जी ॥ सां० ॥ २० ॥ एकाकी रहेतां तुऊ दुःख थशे, आवो रायने गेह जी ॥ आवी दवदंती तव उंलखे, मासी मारी एह जी ॥ सां० ॥ २१ ॥ चंद्रजशा नवि उंलखे तेहने, दीठी पहेलां वालो जी ॥ पण देखीने स्नेह ते उपनो, मोहवशे तिणे तालो जी ॥ सां० ॥ २२ ॥ अश्रुपात मानुं करती तिण समे, श्रम उतारण नीरो जी ॥ किहांथी आवी वत्स मुऊने कहे, तव कहे वात जे पीरो जी ॥ सां० ॥ २३ ॥ मुऊ पति मूकी चाल्यो रातमां, नवि मलीयो मुऊ तेह जी ॥ तव कहे पुत्री परे मुऊ घर रहे, दुःख मत दे हवे देह जी ॥ सां० ॥ २४ ॥ बीजे खंडे त्रीजा अधिकारमां, ओगणीशमी ढालो जी ॥ दवदंती रही राणीने घरे, पद्म कहे सुरसालो जी ॥ सां० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ५८३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंद्रयशाने एक धुआ, चंद्रवती इण नाम ॥ कहे एक दिन सुण दीकरी, वात भली एक आम ॥ १ ॥ दवदंती ए दीसती, बहेन सुता अनुहार ॥ पण तस इम आगमननो, संभव नहीं किंवार ॥ २ ॥ ते तो नल राजा तणी, पत्नी छे मनोहार ॥ शत चोआलीश जोयणां, दूर इहांथी धार ॥ ३ ॥ चंद्रयशा पुर बाहिरे, देवे नित इम दान ॥ दीन अनाथ जणी तदा, बांधे पुण्य अमान ॥ ४ ॥ दवदंती कहे एकदा, कहो तो आपुं दान ॥ याचक मुख वेषे करी, स्वामी लहुं कहीं शान ॥ ५ ॥ पूछे सहु ने प्रते, नर दीठो कोइ जाय ॥ एहवा रूप ने वरणथी, इम दीये दान

सुणाय ॥ ६ ॥ पण को नल राजा तणी, शुद्धि न लाधी क्यांहि ॥ इण अवसर एक वातमी, सांजलजो उत्साही ॥ ७ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ पिउमा जिन चरणारी सेवा प्यारी मुने लागे ॥ ए देशी ॥ नाइउं जीवितदान देइने, मुज कोय राखो करुणा दाखो ॥ एक दिन चोर दीठो तिहां वेठां, लोक मब्या तस लाखो ॥ १ ॥ ना० ॥ हणो हणो इम वाणी उच्चरतां, माथे सुपडुं धारी ॥ निंब कणेर प्रमुखनी माला, कंठे तेहने मारी ॥ २ ॥ ना० ॥ मुंमित शिर करी चोपमी चूनो, वाजंते अति वाजे ॥ कंठे लोह धरी सहु लोका, इणी परे मुखथी गाजे ॥ ३ ॥ ना० ॥ नो नो लोका सघला सुणजो, चोरी करे नर जेह ॥ तेहनो एह हवाल ते करशे, राजा न्यायी एह ॥ ४ ॥ ना० ॥ यष्टि मुष्टि प्रहार करे सहु, केइ करे तस हांसी ॥ केइक कर्मविपाक विचारे, कर्मविपाक अन्यासी ॥ ५ ॥ ना० ॥ कोइ कहे जे एहवा कीधा, तेहवा पाम्यो न्याय ॥ कोइ कहे नहीं फरी कोइ करशे, एहवो महा अन्याय ॥ ६ ॥ ना० ॥ इम वधमंमन देखी पूछे, दवदंती कोटवाल ॥ श्यो अपराध कस्यो ए पुरुषे, नाखे ते तिण ताल ॥ ७ ॥ ॥ ना० ॥ रत्नकरंमक लीधो एणे, चंड्रवतीनो सारो ॥ चोर कहे सुण तुजने वेठां, हुं केम पामुं मारो ॥ ८ ॥ ना० ॥ कहे दवदंती बीक म कर तुं, इम कही शीलप्रनावे ॥ वंधन तेहनां त्रूटां सघलां, पाणीने छटकावे ॥ ए ॥ ॥ ना० ॥ वात ते पसरी सघले गामे, आवे ऋतुपर्ण राय ॥ दवदंतीने इम मुख नाखे, किम अन्याय ए थाय ॥ १० ॥ ना० ॥ दुष्टनिग्रह वली शिष्टने पाले, राजधरम ए दीसे ॥ चोर चोरने पापे मरतां, दोष कहो अम कीसे ॥ ११ ॥ ना० ॥ जो एहनो नवि निग्रह कीजे, तो सहु चोर ते थाय ॥ कहे दवदंती मुज देखतां, तोपण केम मराय ॥ १२ ॥ ना० ॥ आव्यो मारे शरणे स्वामी, खमो सघलो अपराध ॥ तव राजा तस्करने नाखे, तुजने नहींय वाध ॥ १३ ॥ ना० ॥ धर्मधुया ए महारी वाली, तेहने वचने मूक्यो ॥ चोर कहे नहीं एहवुं कीजे, जे चूक्यो ते चूक्यो ॥ १४ ॥ ना० ॥ दवदंतीने नित्य संनारे, चोर ते प्राणनी दाता ॥ एक दिन पूछे चोरने एहवुं, तुजने छे सुखशाता ॥ १५ ॥ ना० ॥ कहांथी आव्यो ने तुं कोण छे, तव इम चोर ते नाखे ॥ तापसपुरमां सार्थपति छे, रुडो वसंत ते आखे

॥ २० ॥ श्रीफल रत्नकरंमक आपी, जाखे इणी परे देव रे ॥ रूप स्वजाव-नुं इहे तिवारे, श्रीफल फोमजे हेव ॥ कहे० ॥ २१ ॥ देवडूष्य नीकलशे रुडां, फोमजे रत्नकरंम रे ॥ हार प्रमुख आजरण ते देखीश, जेहनुं तेज प्रचंड ॥ कहे० ॥ २२ ॥ डूष्य तथा जूपण ते पहेरे, याहश देव स्वरूप रे ॥ पूड्या पठी कह्युं सघलुं देवे, ते दवदंती स्वरूप ॥ कहे० ॥ २३ ॥ देव कहे कां खेद लहे ठे, मूकुं इछित गाम रे ॥ नल कहे सुसमारपुर मूको, तेम करी गयो निज धाम ॥ कहे० ॥ २४ ॥ बीजे खंडे त्रीजे अधिकारे, ढाल बावी-शमी सारी रे ॥ पद्मविजय कहे इछित होवे, पुण्य होवे जस जारी ॥ कहे० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ६८ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीनमि जिन एकवीशमा, वंदे ते उद्यान ॥ जेह चैत्य अति शोजतुं, जाणे स्वर्ग विमान ॥ १ ॥ जाये नयर मांहि हवे, तिहां बूटो गजराज ॥ हाटश्रेणिने जांजतो, करतो गुलगुल गाज ॥ २ ॥ दधिपर्ण राजा तिहां, चढे वप्र शिर तेह ॥ जाखे इणी परे शोर करी, सांजलजो सहु एह ॥ ३ ॥ गज वश आणे माहरो, तो देउं वांठित तास ॥ तेह सुणीने कूवमो, जाखे धरी उल्लास ॥ ४ ॥ ए गजने हुं वश करुं, इम कही वश करे तास ॥ जय जयरव पुरमां थयो, जूपति तेमे पास ॥ ५ ॥ एह कला जेम ताहरी, तिम वली बीजी होय ॥ तो मुऊ जाखी वसुंधरा, बहु रत्ने जरी जोय ॥ ६ ॥ सूर्यपाक रसवती करुं, बीजुं जाणुं एह ॥ राजा चमक्यो चित्तमां, आण्यो मन संदेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ आव्य धूतारा नंदना रे, तें तो धूत्युं गोकुल गाम ॥ साजन धूत्युं गोकु-ल गाम ॥ ए देशी ॥ रसवती नीपनी तेटले जी, राजा जमीयो त्यांहि ॥ साजन राजा जमीयो त्यांहि ॥ राजा कहे हवे इणी परे जी, ए तो जाणे रे, ए तो जाणे नल नृप प्राहीं ॥ १ ॥ वात तो ए अचरिज तणी जी, जुउ अचरिज सहु कोय ॥ साजन जुउ अचरिज सहु कोय ॥ ए आंकणी ॥ रूप परावर्तन कर्युं जी, नल दीसे महाराज ॥ सा० ॥ न० ॥ बे शत ... जन इहां थकी जी, ते तो दूरे रे ते तो दूरे ठे अति ... पण एकाकी इहां जी, जरत अरधनो स्वाम ॥ २ ॥

रतिपति सारिखो जी, ते होवे रे ते होवे किम एक ठाम ॥ ३ ॥ वा० ॥ टका लाख देइ करी जी, वस्त्र आजरण अनेक ॥ सा० ॥ व० ॥ पांचसें गाम तेनवि लीये जी, ते तो जाणे रे ते तो जाणे सकल विवेक ॥ ४ ॥ वा० ॥ मगो राय कहे वली जी, जे तुम मनने जाव ॥ सा० ॥ जे० ॥ कूबरू कहे मृगया वली जी, मदपान रे मदपान ते पुरमां वराव ॥ ५ ॥ वा० ॥ नृपति पण तिणी परे करे जी, तस वात करे नहीं कोय ॥ सा० ॥ त० ॥ एक दिन एकांते रही जी, पूछे इम रे पूछे इम तेहने सोय ॥ ६ ॥ वा० ॥ तुं कुण किहांथी आवीयो जी, वली किहांनो वसनार ॥ सा० ॥ व० ॥ तव कहे हुं नल रायनो जी, कोशलामां रे कोशलामां हुं सूपकार ॥ ७ ॥ वा० ॥ नल राजा हारी करी जी, चाल्यो लेइ नार ॥ सा० ॥ चा० ॥ नल तो थमने घर गयो जी, नृप पासे रे नृप पासे शीख्यो ए सार ॥ ८ ॥ वा० ॥ मायावी वली पात्रने जी, नवि जाणे तस जात ॥ सा० ॥ न० ॥ ते माटे मूकी आवीयो जी, तुम्ह पासे रे तुम्ह पासे सुणो ए वात ॥ ९ ॥ वा० ॥ मृतकारज करे नल तणां जी, वज्राहत परे राय ॥ सा० ॥ व० ॥ आंसु आंख न खंचती जी, तिहां बोले रे तिहां बोले आक्रंद ते थाय ॥ १० ॥ वा० ॥ अचरिज देखे कूबडो जी, देखी मृत्युनां काज ॥ सा० ॥ दे० ॥ हवे एक दिन कांय कारणे जी, दूत मूके रे दूत मूके महाराज ॥ ११ ॥ वा० ॥ जीम नृपति पासे हवे जी, पहोतो अनुक्रमे दूत ॥ सा० ॥ प० ॥ एक दिन करतां वातडी जी, दूत जाखे रे दूत जाखे ते शुज उत्त ॥ १२ ॥ वा० ॥ आव्यो अम सामी कने जी, नल नृपनो सूपकार ॥ सा० ॥ न० ॥ नल राजानी सान्निधे जी, सूर्यपाक रे सूर्यपाक रसोइ करे सार ॥ १३ ॥ वा० ॥ सांजली दवदंती कहे जी, करो परीक्षा तास ॥ सा० ॥ क० ॥ नल विण को जाणे नहीं जी, विज्ञान रे विज्ञान तणो ते विलास ॥ १४ ॥ वा० ॥ आतम गोपी आवीयो जी, होशे मानुं तेह ॥ सा० ॥ हो० ॥ नाम कुशल द्विज मोकले जी, जोवाने रे जोवाने धरी नेह ॥ १५ ॥ वा० ॥ सुसमारपुर ते आवीयो जी, दीतुं कूबरू रूप ॥ सा० ॥ दी० ॥ चिंते ब्राह्मण चित्तमां जी, ए तो दीसे रे ए तो दीसे अतिहि अनूप ॥ १६ ॥ वा० ॥ सर्शव ने मेरु किहां जी, किहां कुंथु गजराज ॥ सा० ॥ कि० ॥ कूर वली किहां कूशका जी, मृगलो रे वली मृगलो ने मृगराज ॥ १७ ॥ वा० ॥ किहां

॥ २० ॥ श्रीफल रत्नकरंमक आपी, नाखे इणी परे देव रे ॥ रूप स्वनाव- तुं इहे. तिवारे, श्रीफल फोमजे हेव ॥ कहे० ॥ २१ ॥ देवडूष्य नीकलशे रुडां, फोमजे रत्नकरंम रे ॥ हार प्रमुख आनरण ते देखीश, जेहनुं तेज प्रचंड ॥ कहे० ॥ २२ ॥ डूष्य तथा नूपण ते पहेरे, थाइश देव स्वरूप रे ॥ पूठ्या पठी कह्युं सघलुं देवे, ते दवदंती स्वरूप ॥ कहे० ॥ २३ ॥ देव कहे कां खेद वहे ठे, मूकुं इछित ठाम रे ॥ नल कहे सुसमारपुर मूको, तेम करी गयो निज धाम ॥ कहे० ॥ २४ ॥ बीजे खंडे त्रीजे अधिकारे, ढाल बावी- शमी सारी रे ॥ पद्मविजय कहे इछित होवे, पुण्य होवे जस नारी ॥ कहे० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ६७ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीनमि जिन एकवीशमा, वंदे ते उद्यान ॥ जेह चैत्य अति शोनतुं, जाणे स्वर्ग विमान ॥ १ ॥ जाये नयर मांहि हवे, तिहां बूटो गजराज ॥ हाटश्रेणिने नांजतो, करतो गुलगुल गाज ॥ २ ॥ दधिपर्ण राजा तिहां, चढे वप्र शिर तेह ॥ नाखे इणी परे शोर करी, सांनलजो सहु एह ॥ ३ ॥ गज वश आणो माहरो, तो देउं वांछित तास ॥ तेह सुणीने कूबमो, नाखे धरी उल्लास ॥ ४ ॥ ए गजने हुं वश करुं, इम कही वश करे तास ॥ जय जयरव पुरमां थयो, नूपति तेमे पास ॥ ५ ॥ एह कला जेम ताहरी, तिम वली बीजी होय ॥ तो मुफ नाखी वसुंधरा, बहु रत्ने नरी जोय ॥ ६ ॥ सूर्यपाक रसवती करुं, बीजुं जाणुं एह ॥ राजा चमक्यो चित्तमां, आण्यो मन संदेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ आव्य धूतारा नंदना रे, तें तो धूत्युं गोकुल गाम ॥ साजन धूत्युं गोकु- ल गाम ॥ ए देशी ॥ रसवती नीपनी तेटले जी, राजा जमीयो त्यांहि ॥ साजन राजा जमीयो त्यांहि ॥ राजा कहे हवे इणी परे जी, ए तो जाणे रे, ए तो जाणे नल नृप प्राहि ॥ १ ॥ वात तो ए अचरिज तणी जी, जुउ अचरिज सहु कोय ॥ साजन जुउ अचरिज सहु कोय ॥ ए आंकणी ॥ रूप परावर्तन कर्युं जी, नल दीसे महाराज ॥ सा० ॥ न० ॥ बे शत जो- जन इहां थकी जी, ते तो दूरे रे ते तो दूरे ठे अति आज ॥ २ ॥ वा० ॥ ए पण एकाकी इहां जी, नरत अरधनो स्वाम ॥ सा० ॥ न० ॥ रूपे

रतिपति सारिखो जी, ते होवे रे ते होवे किम एक श्राम ॥ ३ ॥ वा० ॥
टका लाख देइ करी जी, वस्त्र आभरण अनेक ॥ सा० ॥ व० ॥ पांचसें
गाम ते नवि लीये जी, ते तो जाणे रे ते तो जाणे सकल विवेक ॥ ४ ॥ वा० ॥
मागो राय कहे वली जी, जे तुम मनने भाव ॥ सा० ॥ जे० ॥ कूबरु
कहे मृगया वली जी, मदपान रे मदपान ते पुरमां वराव ॥ ५ ॥ वा० ॥
भूपति पण तिणी परे करे जी, तस वात करे नहीं कोय ॥ सा० ॥ त० ॥
एक दिन एकांते रही जी, पूछे इम रे पूछे इम तेहने सोय ॥ ६ ॥ वा० ॥
तुं कुण किहांथी आवीयो जी, वली किहांनो वसनार ॥ सा० ॥ व० ॥
तव कहे हुं नल रायनो जी, कोशलामां रे कोशलामां हुं सूपकार ॥ ७ ॥
वा० ॥ नल राजा हारी करी जी, चाल्यो लेइ नार ॥ सा० ॥ चा० ॥ नल
तो यमने घर गयो जी, नृप पासे रे नृप पासे शीख्यो ए सार ॥ ८ ॥ वा० ॥
मायावी वली पात्रने जी, नवि जाणे तस भ्रात ॥ सा० ॥ न० ॥ ते माटे
मूकी आवीयो जी, तुम्ह पासे रे तुम्ह पासे सुणो ए वात ॥ ९ ॥ वा० ॥
मृतकारज करे नल तणां जी, वज्राहत परे राय ॥ सा० ॥ व० ॥ आंसु
आंख न खंचती जी, तिहां बोले रे तिहां बोले आक्रंद ते थाय ॥ १० ॥
वा० ॥ अचरिज देखे कूबडो जी, देखी मृत्युनां काज ॥ सा० ॥ दे० ॥
हवे एक दिन कांय कारणे जी, दूत मूके रे दूत मूके महाराज ॥ ११ ॥
वा० ॥ भीम भूपति पासे हवे जी, पहोतो अनुक्रमे दूत ॥ सा० ॥ प० ॥
एक दिन करतां वातडी जी, दूत भाखे रे दूत भाखे ते शुभ उक्त ॥ १२ ॥
वा० ॥ आव्यो अम स्वामी कने जी, नल नृपनो सूपकार ॥ सा० ॥
न० ॥ नल राजानी सान्निधे जी, सूर्यपाक रे सूर्यपाक रसोइ करे सार
॥ १३ ॥ वा० ॥ सांभली दवदंती कहे जी, करो परीक्षा तास ॥ सा० ॥
क० ॥ नल विण को जाणे नहीं जी, विज्ञान रे विज्ञान तणो ते विलास
॥ १४ ॥ वा० ॥ आतम गोपी आवीयो जी, होशे मानुं तेह ॥ सा० ॥ हो० ॥
नाम कुशल द्विज मोकले जी, जोवाने रे जोवाने धरी नेह ॥ १५ ॥ वा० ॥
सुसमारपुर ते आवीयो जी, दीठुं कूबरु रूप ॥ सा० ॥ दी० ॥ चिंते ब्राह्मण
चित्तमां जी, ए तो दीसे रे ए तो दीसे अतिहि अनूप ॥ १६ ॥ वा० ॥ सर्शव
ने मेरु किहां जी, किहां कुंथु गजराज ॥ सा० ॥ कि० ॥ कूर वली किहां
कूशका जी, मृगलो रे वली मृगलो ने मृगराज ॥ १७ ॥ वा० ॥ किहां नल

ने किहां कूबमो जी, ए तो अति विपरीत ॥ सा० ॥ ए० ॥ निश्चय करवा तेहनो जी, भाखे रे ते भाखे श्लोक ए रीत ॥ १८ ॥ वा० ॥ नल राजा जूंनो जिस्यो जी, तेहवो जग नहीं कोय ॥ सा० ॥ ते० ॥ निर्दयी ने लज्जा नहीं जी, पापी रे अति पापी जाणो सोय ॥ १९ ॥ वा० ॥ एकाकी मूकी गयो जी, अटवीमां ते नार ॥ सा० ॥ अ० ॥ चित्त किम चाल्युं एहनुं जी, ए तो हृदये रे ए तो हृदये निठुर धार ॥ २० ॥ वा० ॥ धरशे केम जीवितपणुं जी, एकली ते रण मांहि ॥ सा० ॥ ए० ॥ कोइ आधार थाये नहीं जी, कष्टे रे ते कष्टे विशेषे प्राही ॥ २१ ॥ वा० ॥ मूढ गमार इणी परे जी, नल राजा थयो काय ॥ सा० ॥ न० ॥ एणी परे वली भाखतां जी, जुर्ज रे तुमे जुर्ज आगल शुं थाय ॥ २२ ॥ वा० ॥ बीजे खंडे एम कही जी, त्रेवीशमी ए ढाल ॥ सा० ॥ त्रे० ॥ अधिकारे त्रीजे भले जी, पद्म रे कहे पद्म अति सुरसाल ॥ २३ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ ७१९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेह सुणी कूबज हवे, रुदन करे असराल ॥ तव पूछे ते ब्राह्मणो, किम रोवे इण काल ॥ १ ॥ सूपकार हुंफिक कहे, करुणा रस ए गीत ॥ सांजली रुदन ते आवीयुं, कहे कूबज एणी रीत ॥ २ ॥ श्लोक अर्थ भाखो मने, तव द्विज कहे सहु वात ॥ भीम राजाए मोकल्यो, तुज पासे इण भात ॥ ३ ॥ नल जाणे ए रसवती, पण नवि जाणे कोय ॥ मोकलीयो अचरिज धरी, दीठो में वली तोय ॥ ४ ॥ माठी आकृति ताहरी, नल तो देवस्वरूप ॥ किहां खजुर्ज किहां दिनपति, किहां सायर किहां कूप ॥ ५ ॥ किहां दर्पण किहां चंद्रमा, किहां वाघ ने ठाग ॥ रतन किहां वली कांकरो, हंस किहां वली काग ॥ ६ ॥ पण आवंतां माहरे, थयां शकुन अति सार ॥ ते पण सहु निष्फल गयां, दीठो तुझ जिवार ॥ ७ ॥ रोवे कूबज अति घणुं, दवदंतीने ध्याय ॥ अशन करीने कुशल द्विज, निज नगरीए जाय ॥ ८ ॥ रोयुं गजवश रसवती, लक्ष टंक मुख वात ॥ संजलावी जैमी प्रते, वली भीमने कहे वात ॥ ९ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ आवत उल्लासी सुंदरी सुविलासी ॥ ठाजे बेठी साद करुं घर आवोने लो, पीउमा वारुजी रे लो ॥ ए देशी ॥ हवे बोले जैमी, शील ठे नेमी, रुकी जेहने रे लो ॥ स्वामी सारुं जी रे लो ॥ कोइ आहारने दोषे, कर्म

विशेषे, थयुं तेहने रे लो ॥ स्वा० ॥ १ ॥ रुडुं रूप ते फरीयुं, अथवा करीयुं, एहने जाणी रे लो ॥ स्वा० ॥ नवि वीजो जाणे, ए परमाणे, कहुं एम आणी रे लो ॥ स्वा० ॥ २ ॥ ते कारण तेमो, करुं नीवेडो, कूवज देखी रे लो ॥ स्वा० ॥ तव वोले राजा, विहुं पाखे साजा, सर्व उवेखी रे लो ॥ ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ करीये वली फेरी, स्वयंवर केरी, ताहरी वातो रे लो ॥ स्वा० ॥ दधिपर्ण ते आवे, साथे लावे, कूवज गातो रे लो ॥ स्वा० ॥ ॥ ४ ॥ जो नल ते होशे, तो नवि सहेशे, वीजो वरतां रे लो ॥ स्वा० ॥ प्राकृत पण होवे, सुखे न सोवे, नारी हरतां रे लो ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ नल तो महा वलीयो, कुणे न ठलीयो, प्राणी जाय रे लो ॥ स्वा० ॥ दिन पंचमी कावे, दूत सिधावे, तेहनी पाय रे लो ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ थोडे जल मीनो, टलवले दीनो, तेम नृप हुउं रे लो ॥ स्वा० ॥ ते नयरी दूरे, पुएय अधूरे, जावुं ते जूउं रे लो ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ तव कूब्ज विचारे, ए इणी वारे, अचरिज दीसे रे लो ॥ स्वा० ॥ भैमी नवि परणे, वीजा नरने, सती आशीषे रे लो ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ याने आरोपी, जाउं गोपी, आतम माहरो रे लो ॥ पीयुमा वारुजी रे लो ॥ ए आंकणी ॥ कहे कूवज चालो, मुझने आलो, रथ एक ताहरो रे लो ॥ पी० ॥ ए ॥ मुहूरतनी पहेलां, जइये वहेला, परणो स्वामी रे लो ॥ पी० ॥ वेसाडे रथमां, मन मन्मथमां, रायनुं पामी रे लो ॥ पी० ॥ १० ॥ तव एक पछेडी, दूरे उडी, जाये वाटे रे लो ॥ पी० ॥ राखो रथ तुम्हे, लेउं वस्त्र अम्हे, तिणे माटे रे लो ॥ पी० ॥ ११ ॥ जोजन पणवीश, चाल्या ईश, वात करंतां रे लो ॥ पी० ॥ ए धोरी मध्यम, नाहीं उत्तम, जाणे इम चरता रे लो ॥ पी० ॥ १२ ॥ जाइ पचास, वात विलास, योजन धोरी रे लो ॥ पी० ॥ उत्तम जो होवे, तो सहु जोवे, वात ते मोरी रे लो ॥ पी० ॥ १३ ॥ इम जातां आगे, दीठो मागे, पादप अक्ष रे लो ॥ पी० ॥ भाखे इम राय, वार ते थाय, सांजल दक्ष रे लो ॥ पी० ॥ १४ ॥ कौतुक एक महोटुं, नहीं कांइ खोटुं, तुझने भाखुं रे लो ॥ पी० ॥ पाठा ते वलतां, फल अणगणतां, तुमने दाखुं रे लो ॥ पी० ॥ १५ ॥ कहे कूवज ताम, इणहीज ठाम, राखो एह रे लो ॥ पी० ॥ नहीं थाय असुर, जाशुं तूर, वीहो केहे रे लो ॥ पी० ॥ १६ ॥ तव कूवज पाडे, मुष्टि-प्रहारे, वृक्ष ते वाधो रे लो ॥ पी० ॥ कहे सहस अढार, फलनो भार,

पमह वजावण मांड्यो रे, परगट परे इणे रे ॥ सहु विचमां बेसीने एम, ते सांभलजो धरीने प्रेम ॥ पु० ॥ ११ ॥ मृगलोचना मुफ पासे रे, आवी उतावली रे ॥ मृगलोचन परे जोवे रे, तुं श्यांने वली रे ॥ तुज सरिखो हुं भर्त्ता जाण, ताहरो संग उत्सुक मन आण ॥ पु० ॥ १२ ॥ तेह वचन सांभलीने रे, रोहिणी हरखती रे ॥ पुलकांगित थइने रे, श्रीवसुदेवने निरखती रे ॥ थापे स्वयंवरमाला कंठ, तव रूठा राजा बहु लंठ ॥ पु० ॥ १३ ॥ पुण्य तणुं बल जेहने रे, ते जग पूजीये रे ॥ पुण्य विना धनवंत होय, पण भूजीये रे ॥ पुण्ये पहेरे वसुदेव माल, बीजा राय रह्या सहु भाल ॥ ॥ पु० ॥ १४ ॥ बीजे खंडे चोथे रे, अधिकारे कही रे ॥ पहेली ढाल रसाल रे, भविजने सद्दही रे ॥ पंमित उत्तमविजयनो बाल, पद्म कहे सुणो मंगलमाल ॥ पु० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वन रण शत्रु आगले, पर्वत उपर जेह ॥ सूता ने वली जागतां, राखे पुण्य अमेह ॥ १ ॥ मंत्र तंत्र ने यंत्र वली, दान दीये लख कोम ॥ पण पुण्यवंत प्राणी तणी, कोइ न आवे होम ॥ २ ॥ मंत्र तंत्र पण तो फले, जो होय पुण्य सहाय ॥ पुण्य सखाइ नवि होये, तो साहमां खावा धाय ॥ ३ ॥ पुण्यहीन जे मानवी, देवे दाननी कोम ॥ पण अपजश होय तेहनो, पामे सघले खोम ॥ ४ ॥ भर्त्ता पांच शिरे धरे, सती मांहि शिरदार ॥ जश पामे जग द्रौपदी, पुण्य तणे अनुसार ॥ ५ ॥ पश्चिम साहमो चालतो, अंबर तजी विशाल ॥ सूर कहावे लोकमां, ए पण पुण्य संभाल ॥ ६ ॥ वरमाला वसुदेवजी, पहेरी सहु जन शाख ॥ ते सहु नृप रीपे बल्या, बोले एहवी भाख ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ केशरीयो केशर घस्यो रे, वालिम केशरीयो ॥ कांइ केशर तिलक लवाट, हो वालम केशरीयो ॥ ए देशी ॥ नृपति उठ्या धमहमी रे, घणुं ...॥ कहे कोपे एहवी वाणी रे, मदना मतवाला ॥ जो एहने परणा- .. रे ॥ घ० ॥ शें तेड्या अम इणी ठाण हो, परणवा वाला ॥ १ ॥ तौर्यिक नर इणे वस्यो रे ॥ घ० ॥ किम जाउं अमे घर वारी हो, खेड मुख पहनो तात आवी करी रे ॥ घ० ॥ केम ठीक न करे निर्धार हो ॥

सुणो जूपाला ॥ २ ॥ तात कहे कुमरी तणो रे ॥ सुणो जूपाला ॥ मनमां धरी एहवो न्यायजो ॥ घणुं मछराला ॥ कन्याने मन नवि जावीया रे ॥ वर लटकाला ॥ तुम मन केम खेद ते थाय हो ॥ सुणो जूपाला ॥ ३ ॥ स्वयंवर नाम यथार्थ छे रे ॥ सुणो० ॥ मनगमतो वरे जरतार हो ॥ वर लटकाला ॥ वांक नहीं इमां माहरो रे ॥ सुणो० ॥ योग मेलवे सवि किरतार हो ॥ न थाउं लाला ॥ ४ ॥ तव बोले सवि जूपति रे ॥ क्रोधे काला ॥ तुमे वात कही ते साच हो ॥ सुण जूपाला ॥ तोपण कुल पूछ्युं घटे रे ॥ सुण० ॥ अम्हे कहुं तुम्ह साची वाच हो ॥ सुण० ॥ ५ ॥ कहे वसुदेवजी इणी परे रे ॥ खाशो गाला ॥ केम लेशो हठथी एह हो ॥ गुणवंती बाला ॥ कुल जाख्यानुं काम शुं रे ॥ म करो चाला ॥ वरमाला पहेरी वर तेह हो ॥ सुणो जूपाला ॥ ६ ॥ परस्त्री अजिलाषे करी रे ॥ थया पापाला ॥ थाउं शुद्ध तुमे हवे आज हो ॥ लही करवाला ॥ कुल जुजबल देखाडशुं रे ॥ उठो नरपाला ॥ चिंते जरासिंध राज हो ॥ घणुं मछराला ॥ ७ ॥ उद्धत वचन ते नीचनां रे ॥ जुवो जूपाला ॥ केम सहे ते उत्तम जात हो ॥ मदे मतवाला ॥ समुद्रविजयादिक प्रते रे ॥ कहे वचमाला ॥ सज्ज थाउं सवि तुम्हे ज्रात हो ॥ द्यो कर जालां ॥ ८ ॥ शूरधीर राय तौर्यिक वली रे ॥ हणो डुःखजाला ॥ थया जूपति सज्ज तिण वार हो ॥ अति विकराला ॥ समुद्रविजय मुख उठीया रे, लेइ करवाला ॥ जरासंध आणा शिर धार हो ॥ घणुं मछराला ॥ ए ॥ दधिमुख खेचर राजीयो रे ॥ तिहां ततकाला ॥ थयो सारथि मन धरी राग हो ॥ घूघरमाला ॥ घमघमते रथे थापीयो रे ॥ अति रूपाला ॥ वसुदेव लहो महाजाग हो ॥ मदे मतवाला ॥ १० ॥ वेगवती माता दीयां रे ॥ अति विकरालां ॥ करवा रण शस्त्र अपार हो ॥ अति धारालां ॥ जीत्या सहु राजेसरु रे ॥ बहु बलवाला ॥ जेम सिंहनादे गजवार हो ॥ अति शुंढाला ॥ ११ ॥ जरासिंध चिंते इस्युं रे ॥ नावी बाला ॥ वली जीत्या अमने एण हो ॥ कस्या जांखाला ॥ समुद्रविजयने इम कहे रे ॥ उठो मूछाला ॥ तुमे हारो एहथी केण हो ॥ अति जुजाला ॥ १२ ॥ तव बिहु जाइ झूझता रे ॥ तिणहीज ताला ॥ तव श्रीवसुदेव विचारी हो ॥ व्यंजन माला ॥ बाण उपर लखी नाखीयो रे ॥ लीये जूपाला ॥ वांचे ते मन धार हो ॥ मन हरखाला ॥ १३ ॥ प्रणमे श्रीवसुदेव रे ॥ सुणो जूपाला ॥ इम वांची वारे जुऊ हो ॥ मन हरखाला ॥ वत्स वत्स

कही भेटीयो रे ॥ सहु भूपाला ॥ अति हर्षे लही ते गुऊ हो ॥ हवे दीये वाला ॥ १४ ॥ बीजी बीजा खंममां रे ॥ सुणजो ढाला ॥ चोथे अधिकारे एह हो ॥ सुणो शरधाला ॥ उत्तमविजय गुरु तणी रे ॥ किरपा माला ॥ कहे पद्मविजय होय देह हो ॥ मंगलमाला ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

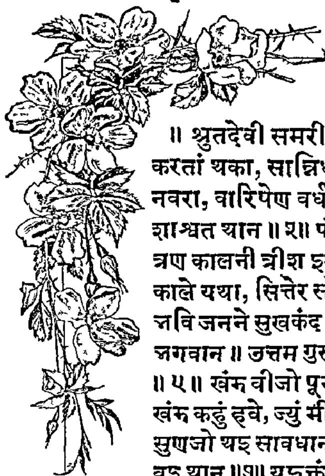
॥ आवी श्रीवसुदेवजी, प्रणमे ततक्षण पाय ॥ समुद्रविजय राजा हवे जाखे सुण हे जाय ॥ १ ॥ शत वरसां लगे किहां रह्यो, तव कहे श्रीवसुदेव ॥ धुरथी मांमी ते सुणी, ते हरखे ततखेव ॥ २ ॥ शूरधीर राय हर्षित सुणी, वसुदेव अधिकार ॥ कोप जरासिंधज तणो, शमीयो तिणहीज वार ॥ ३ ॥ सहु राजा मली तेहने, परणावे धरी प्रेम ॥ देइ सन्मान विसर्जीया, सहु राजा सुखक्षेम ॥ ४ ॥ यादव संवछर लगी, रहे ते साथे कंस ॥ श्री वसुदेव तणी करे, सघला जन परशंस ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ मदनेश्वर मुख बोले ऊटकी ॥ ए देशी ॥ पूछे श्रीवसुदेव एकांते, मनमां आणी ज्रांते हे ॥ मनमोहन वाणी, जाखे इणी परे हर्षशुं ॥ ए आंकणी ॥ सांजल तुं नार सनूरी, तुं रूपे न अधूरी हे ॥ मन० ॥ १ ॥ बीजा रायने तुं नवि परणी, केम थइ माहरी घरणी हे ॥ म० ॥ तव ते बोली रोहिणी नारी, वात सुणो तुमे सारी हे ॥ मन० ॥ २ ॥ प्रज्ञप्ति विद्या मुऊ पासे, करती नित्य विलासे हे ॥ म० ॥ मुऊने ते विद्या कहे एम, वसुदेव तुऊ पति नेम हे ॥ म० ॥ ३ ॥ पमह वजावण वेशे जाणे, आवशे ते मन आणे हे ॥ म० ॥ ते कारण में तुऊने वरीयो, बीजो पति नवि करीयो हे ॥ म० ॥ ४ ॥ समुद्रविजयजी निज घर आव्या, साथे परिजन लाव्या हे ॥ म० ॥ एक दिन जोमी सजा मांहि बेठा, मंत्री अमात्य बहु शेठा हे ॥ म० ॥ ५ ॥ अर्द्ध जरती नारी कोइ आवी, देखे सहु जन चावी हे म० ॥ गगन थकी ऊतरी इम जाखे, वसुदेवने सहु साखे हे ॥ म० ॥ ६ ॥ धनवती माहरुं नाम ते जाणो, हुं आवी इण टाणे हे ॥ म० ॥ हुं तुं बालचंद्रा नारीनी जननी, ते तो हरणी मननी हे ॥ म० ॥ ७ ॥ बालचंद्रा ने वली वेगवती ते, तुऊ वियोग जोगवती हे ॥ म० ॥ तुम्हने तेमवा

आवी स्वामी, चालो कहुं शिर नामी हे ॥ म० ॥ ७ ॥ समुद्रविजय सनमुख निरखे, तव राय चितडुं परखे हे ॥ म० ॥ जाउं सुखे पण वहेला आवो, वार घणी मत लावो हे ॥ म० ॥ ए ॥ गगनवल्लजपुर पहोतो वेगे, वसुदेव अतिहि विवेगे हे ॥ म० ॥ समुद्रविजयजी जोवे नित, वाट ते घणुंज विनीत हे ॥ म० ॥ १० ॥ बालचंद्रा परणी तिहां जाइ, कन्या सहु एम गाइ हे ॥ म० ॥ जूचर खेचरशुं परवरीयो, मानुं अपार ए दरियो हे ॥ म० ॥ ११ ॥ शौरीपुर मांहि आव्या हरखे, मलीया सज्जन सहु निरखे हे ॥ म० सहु नारी तिहां विजोग ते जागा, पहेरे सखरा वाघा हे ॥ म० ॥ १२ ॥ बीजे खंडे इणी परे जाखी, ढाल त्रीजी चित्त राखी हे ॥ म० ॥ संपूरण चोथो अधिकारो, हुउं हर्ष अपारो हे ॥ म० ॥ १३ ॥ खंम बीजो संपूरण हुउं, चौद ढाल पूरी जुउं हे ॥ म० ॥ बीजे अधिकारे दश रुमी, त्रीजे पणवीशनी हुंमी हे ॥ म० ॥ १४ ॥ चोथे अधिकारे त्रण ढाल, सवि बावन सरवाल हे ॥ म० ॥ एकसो एक थइ दोय खंडे, जाखी रंग अखंडे हे ॥ म० ॥ १५ ॥ सत्यविजय पंमित वैरागी, कपूरविजय वमजागी हे ॥ म० ॥ क्षमाविजय तस शिष्य सोजागी, शुज मति जेहनी जागी हे ॥ म० ॥ १६ ॥ तास शिष्य जिनविजय ते त्यागी, जिनधर्मे मति लागी हे ॥ म० ॥ तास शिष्य गुरु उत्तमविजयो, जगत मांहि जे विजयो हे ॥ म० ॥ १७ ॥ रत्नविजय गुरु ज्रात हमारा, तस कहेणथी प्यारा हे ॥ म० ॥ पद्मविजय गणि उद्यम कीधो, जग जसवाद प्रसिद्धो हे ॥ म० ॥ १८ ॥ चोपाई ॥ खंम खंम रस अधिको घणो, श्रीजिन नेमिचरित्रे जणयो ॥ गुरु श्रीउत्तमविजयथी लह्यो, बीजो खंम इम पद्मे कह्यो ॥ १ ॥ इति रोहिणीपरिणयनो नाम चतुर्थोऽधिकारः समाप्तः ॥ ४ ॥ सर्व गाथा ॥ ६ए ॥ प्रथमाधिकारे ॥ ४७४ ॥ द्वितीयाधिकारे ॥ ४०४ ॥ तृतीयाधिकारे ॥ ७७१ ॥ चतुर्थाधिकारे ॥ ६ए ॥ सर्वस्मिन् जूत्वा ॥ १७३७ ॥ द्वितीयखंडे ॥ प्रथमखंमे ॥ १६४७ ॥ उजयोर्खंमयोर्मिलित्वा ॥ ३३७५ ॥ इति श्रीविजितानेकदुर्वादिवृंदपंमितोत्तमोत्तमविजयशिष्यपंमितपद्मविजयविरचिते प्राकृतप्रबंधे श्रीमन्नेमिजिनचरित्रे समाप्तोऽयं द्वितीयः खंडः ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयखंडस्य प्रथमोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥



॥ दोहा ॥

॥ श्रुतदेवी समरी करी, ज्ञान तणी दातार ॥ ज्ञानगोष्ठि करतां थका, सान्निध करो संभार ॥१॥ रुषभ चंद्रानन जिनवरा, वारिषेण वर्धमान ॥ शाश्वत नामे जिनवरु, नमतां शाश्वत थान ॥ २॥ पंच भरत ऐरावते, चोवीशी दश जोय ॥ त्रण कालनी त्रीश इम, नमतां पातक खोय ॥ ३ ॥ उत्कृष्टे काले यथा, सित्तेर सो जिनचंद ॥ पदकज प्रणमुं तेहनां, भवि जनने सुखकंद ॥ ४ ॥ सीमंधर प्रमुखा नमुं, विहरमान भगवान ॥ उत्तम गुरु पदकज नमुं, भवोदधि जहाज समान ॥ ५ ॥ खंम बीजो पूरण कस्यो, करी उद्यम परचंम ॥ त्रीजो खंम कहुं हवे, ज्युं मीश्रीना खंम ॥६॥ निद्रा प्रचला परहरी, सुणजो थइ सावधान ॥ बांधे कर्म सत अड प्रते, बोले भगवइ थान ॥७॥ यडुक्तं भगवत्यंगे ॥ जीवेणं भंते निद्दायमाणे, पयलायमाणेवा ॥ किति कम्म पगडिर्ज्ञ वंधइ, गोयमा सत्तविह वंधएवा अठविह वंधएवा ॥ १ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ द्वेष न धरीये लालन, द्वेष न धरीये ॥ ए देशी ॥ हस्तिनागपुर नयरी अति सोहे, जे देखी सुरवर मन मोहे ॥ लालन वर मन मोहे ॥ कोइक शेठ वसे तिण गामे, तेहने सुत थयो ललित नामे ॥ ला० ॥ ल० ॥ १ ॥ माताने घणुं वल्लभ तेह, वली एक गर्भ ते तेहने देह ॥ ला० ॥ ते० ॥ दुःखदायक घणुं पीमाकारी, विविध उपाय करे पामवा नारी ॥ ला० ॥ पा० ॥ २ ॥ तोपण गर्भ पमे नहीं तास, अनुक्रमे जनम थयो सुविलास ॥ ला० ॥ थ० ॥ नाखी देवा दासीने आपे, देखी शेठ ते पूछत आपे ॥ ला० ॥ पू० ॥ ३ ॥ जेहवी वात हती तेम भाखी, छानो ते पुत्रने शेठ जी राखी ॥ ला० ॥ शे० ॥ गंगदत्त तस नाम ते दीधुं, ललित ने शेठ चे जाणे जे कीधुं ॥ ला० ॥जा० ॥ ४ ॥ ललित कहे निज तातने एम, भाइनी

भेला जमीये ते प्रेम ॥ ला० ॥ ज० ॥ शेठ कहे माता तुऊ देखे, ललित कहे करुं जेम नवि पेखे ॥ ला० ॥ जे० ॥ ५ ॥ आगल वेहु जण वेसी आपे, जोजन तेहने जाजने थापे ॥ ला० ॥ जा० ॥ इम करतां तस माता जाणे, मनमां द्वेष ते अधिकेरो आणे ॥ ला० ॥ अ० ॥ ६ ॥ काली केश ने कूटी काढे, ललित ने शेठ डुहवाणा गाढे ॥ ला० ॥ डु० ॥ इण अवसर मुनि दोय गोचरीए, आव्या देखी हर्ष ते जरीये ॥ ला० ॥ ह० ॥ ७ ॥ पूछे तेहने प्रणमी पाय, ललित ने शेठने मोद न माय ॥ ला० ॥ मो० ॥ वैरनुं कारण तव मुनि एक, जाखे सांजलो धरीय विवेक ॥ ला० ॥ ध० ॥ ८ ॥ वे जाइ एक गामे वसता, काष्ठ लेवा एक दिन नीकसता ॥ ला० ॥ दि० ॥ गामी जरीने महोटो जाइ, सापण देखे आगल आइ ॥ ला० ॥ आ० ॥ ए ॥ खेडुने कहे गंत्री राखो, सापण उगारी सुख चाखो ॥ ला० ॥ री० ॥ तव सापणने करी विश्वास, अनुज तिहां आव्यो अनु तास ॥ ला० ॥ आ० ॥ १० ॥ अग्रजे तो एहने उगारी, हुं तो जाउं एहने मारी ॥ ला० ॥ ए० ॥ सापण चिंते मारो ए वैरी, मरण लही इम करतां फेरी ॥ ला० ॥ क० ॥ ११ ॥ तेह सापण ए ताहरी नार, ज्येष्ठ जाइ थयो ललित कुमार ॥ ला० ॥ ल० ॥ गंगदत्त लघु जाइ जाणो, पूरव कर्म ते एम वखाणो ॥ ला० ॥ ए० ॥ १२ ॥ पामी वैराग्य ने दीक्षा लेवे, शेठ ललित महा शुक्रे सुर होवे ॥ ला० ॥ शु० ॥ तातजीव नरजव लही सीधो, गंगदत्त मात अनिष्ट प्रसिद्धो ॥ ला० ॥ अ० ॥ १३ ॥ करी नियाणुं ने चरण विराधे, थाजो सहुने हुं इष्ट ए साधे ॥ ला० ॥ हुं० ॥ गंगदत्त पण तिहां उप्पन्न, रोहिणी उदरे ललित निष्पन्न ॥ ला० ॥ ल० ॥ १४ ॥ चार सुपन देखे तिहां राणी, गज शशी सिंह समुद्रनुं पाणी ॥ ला० ॥ स० ॥ हलधर जनमने सूचवे तेह, मुख मांहि पेसतां देखे जेह ॥ ला० ॥ दे० ॥ १५ ॥ रोहिणी रोहणीपति सम वदना, पुत्रने प्रसवे दाडिमकली रदना ॥ ला ॥ दा० ॥ अजिराम राम नाम तस थाप्युं, तास शरीर कलाए माप्युं ॥ ला० ॥ क० ॥ १६ ॥ कंस समुद्रविजय वसुदेव, वेठा करे सहु अग्रज सेव ॥ ला० ॥ अ० ॥ नारद ऋषीश्वर तेहवे आया, उजा थइ आदर वहु दाया ॥ ला० ॥ आ० ॥ १७ ॥ क्षण रहीने उत्पतिया आकाशे, कंस राजा तव इणी परे जाषे ॥ ला० ॥ इ० ॥ कोण अछे स्वामी कहो एह, समुद्रविजय कहे सांजलो तेह ॥ ला० ॥ सां० ॥ १८ ॥ पुर वाहिर जज्ञजश अजिधाने, जज्ञदत्ता नारी

शुभ वाने ॥ ला० ॥ ना० ॥ सुमित्र नाम नंदन थयो तास, सोमजशा नारी सुविलास ॥ ला० ॥ ना० ॥ १ए ॥ तेहनी कूखे ए नारद आयो, बहु तापस मलीने हुलरायो ॥ ला० ॥ म० ॥ जृंभक देव मांहिथी तेह, बालक उपनो वधते सनेह ॥ ला० ॥ व० ॥ २० ॥ सहु तापस गया एक दिन बार, बालक एकलो मूकी ते गर ॥ ला० ॥ मू० ॥ जृंभक देवता देखे तास, अवधिज्ञाने जाएयो मित्र ते खास ॥ ला० ॥ मि० ॥ २१ ॥ लेइ चाल्या बालकने तेह, मूक्यो वैताढ्ये धरी नेह ॥ ला० ॥ वै० ॥ यंभावी गया ते अशोक, हेठल थाप्यो जुं रह्यो ठेक ॥ ला० ॥ जुं० ॥ २२ ॥ जृंभक देवता तेहने पाले, वैताढ्य गिरिकंदरा अजुआले ॥ ला० ॥ द० ॥ आठ वरसनो ते थयो जेते, विद्या शिख्यो अतिशय तेते ॥ ला० ॥ अ० ॥ २३ ॥ प्रज्ञप्ति मुख विद्याए ए वलीयो, नवमा नारदमां एह भलीयो ॥ ला० ॥ ए० ॥ चरमशरीरी भाख्यो एह, कंसने समुद्रविजय कहे नेह ॥ ला० ॥ वि० ॥ २४ ॥ मुनि सुप्रतिष्ठे मुजने भाख्युं, ते में तुज आगल इम दाख्युं ॥ ला० ॥ आ० ॥ होय कलेश अति प्रिय एहने, नवि रहे एकण थानक केहने ॥ ला० ॥ था० ॥ २५ ॥ त्रीजे खंडे प्रथम अधिकारे, पहेली ढाल भाखी जयकारे ॥ ला० ॥ भा० ॥ पंडित उत्तमविजयनो शिष्य, पद्मविजय कहे विशवावीश ॥ ला० ॥ वि० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कंस कहे वसुदेवने, मुज पुर आवो स्वामी ॥ आणा मागी रायनी, चाल्या मथुरा ठाम ॥ १ ॥ वली वसुदेवने इम कहे, मृत्तिकावती पुर सार ॥ देवक नामे राजीयो, मुज पीतरीयो धार ॥ २ ॥ देवकी नामे तेहने, कन्या रूपनिधान ॥ परणो स्वामी तेहने, हुं तुम्ह अनुचर थान ॥ ३ ॥ कंस साथे लेइ गया, श्रीवसुदेवजी जाम ॥ मारग नारद ऋषि मल्या, पूछे इम ऋषि ताम ॥ ४ ॥ किणी कारण किहां जाउ छो, नारदने कहे एम ॥ देवक राय तणी धुया, देवकी परणवा प्रेम ॥ ५ ॥ वसुदेवने परणावशुं, इणी परे भाखे कंस ॥ नारद कहे आगल जइ, करुं वसुदेव प्रशंस ॥ ६ ॥ इम कही जइ देवकी कने, करतो तास प्रशंस ॥ उचित योग वसुदेवनो, भाखुं तुमने अंश ॥ ७ ॥ पूछे तव इम देवकी, कुण ते श्रीवसुदेव ॥ तव नारद कहे देवता, जेहनी करता सेव ॥ ८ ॥ यादववंशे उपनो, वय युवान गुणवंत ॥ सुरमां पण ए सारिखुं, ...२ कोइ कंत ॥ ए ॥ इम कही नारद ऋषि गया, आव्या शोरि कंस ॥

आपे आसन आदरे, देवक राय शुन्न वंश ॥ १० ॥ आगम कारण पूठीयुं, कंस कहे इम ताम ॥ श्रीवसुदेवने देवकी, परणावो इण गाम ॥ ११ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ तुमे पीतांवर पहेरो जी, मुखने मरकलमे ॥ ए देशी ॥ हवे नाखे देवक राय जी, नहीं परणावीये ॥ कन्याने अरथे साहमो जी, वर केम लावीये ॥ इम सांजलीने विलखाणा जी, पहोता निज देरे ॥ जाय अंतेउरमां राजा जी, देवक एणी परे ॥ १ ॥ राणीने नाखे इम जी, कंस ते आवीयो ॥ वसुदेव ते देवकी काजे जी, साथे लावीयो ॥ में तो कह्यो तास निषेध जी, तव उठी गया ॥ ते सांजली करय विषाद जी, दिलमां धरी मया ॥ २ ॥ तव देवक राये जाएयो जी, नाव धुया तणो ॥ कहे राय विषाद न कीजे जी, वसुदेवने परणो ॥ वसुदेव कंसने तेमी जी, आदर आपीया ॥ पुएय दिवसे परएयां तेह जी, मंगल थापीयां ॥ ३ ॥ दश गोकुल नंद गोवाल जी, आपे एहने ॥ वहु स्वर्णादिकनुं दान जी, आपे एहने ॥ मथुरा नगरीए आव्या जी, कंस वसुदेव ॥ करे नयरीमां उंछव कंस जी, प्रेम थकी हेव ॥ ४ ॥ अयमंतो रुषि एक दिन जी, कंस घरे आयो ॥ पारण दिन गोचरी काजे जी, तपथी सोहायो ॥ तव जीवजशा मदवंती जी, वलगी उठली ॥ देवर नवे आव्या आज जी, एम कहे वली वली ॥ ५ ॥ आज उंछव दिवस ठे सारो जी, रमीये हेवशुं ॥ इम वहु उपजाव्यो त्रास जी, खेद उदवेगशुं ॥ तव वोल्या ज्ञानी ध्यानी जी, उंछव जेहनो ॥ तुफ तात पति हणनारो जी, गर्न जे तेहनो ॥ ६ ॥ सातमा गर्नथी होशे जी, एम काने सुणी ॥ नयथी मदिरा तस नाठी जी, मूके तेह मुणी ॥ जइ कंसने तेह सुणावे जी, ते पण सांजली ॥ थाये वज्र मोघ मुनि वाणी जी, नवि होवे वली ॥ ७ ॥ जइ मागुं साते गर्न जी, कोइ जएया पहेलां ॥ नहीं आपे तो वली करशुं जी, अन्य उपाय वहेला ॥ इम चिंती कंस ते जाये जी, वसुदेवनी पासे ॥ वसुदेव करे परणामो जी, उठी उल्लासे ॥ ८ ॥ कर जोडी कंस ते नाखे जी, सांजलो मुफ वाणी ॥ मुफ जीवजशा परणावी जी, करुणा वहु आणी ॥ तुम जातमात्र सात गर्न जी, आपो मुफने ॥ वसुदेव कहे इम वाणी जी, आपुं तुफने ॥ ए ॥ देवकी पण माने वातो जी, जे कंसे कही ॥ मुनि वात सुणी वसुदेवे जी, साची सरदही ॥ ठलीयो कंसे ए वाते

जी, मुजने भोलव्यो ॥ हवे करीये किश्यो उपाय जी, इम मन भोलव्यो ॥ १० ॥ इण अवसरे भद्दिल नयरे जी, नाग ते व्यवहारी ॥ सुलसा नामे तस नारी जी, श्रावक व्रतधार ॥ अयमंता ऋषिए भाख्युं जी, ए निंडु नारी ॥ हरिणगमेषी आराध्यो जी, तन्मय थइ प्यारी ॥ ११ ॥ जब तुष्टमान थयो तेह जी, तव सुलसा मागे ॥ मुज आपो पुत्र ते स्वामी जी, चित्तशुं धरी रागे ॥ तव बोले देवता तेह जी, सांजल रे बाइ ॥ देवकीना पुत्र ते देशुं जी, तुजने हुं लाइ ॥ १२ ॥ जे कंसे माग्यो तेह जी, मारणने काजे ॥ इम कही ऋतुवंती साथे जी, देव करे साजे ॥ बेहुए प्रसव्या पुत्र जी, साथे तेहमां ॥ मृतबालक सुलसा पामे जी, हवे जुर्ज एहमां ॥ १३ ॥ लेइ देवकी गर्ज ते आप्या जी, सुलसाने सारा ॥ सुलसा गर्ज ते मूक्या जी, देवकीने न्यारा ॥ ते आपे कंसने गर्ज जी, मृतबालक देखी ॥ शिला उपर पठाडे जी, तेहने उवेखी ॥ १४ ॥ सुलसाने घर ते वधता जी, पुत्र परे पाले ॥ तस नाम अनीकजश बीजा जी, अनंतसेन जाले ॥ वली अवजितसेन निहतारि जी, देवजशा नाम ॥ ठठा शत्रुसेन ते जाणो जी, रूप कला धाम ॥ १५ ॥ ऋतुस्नान कर्युं देवकीए जी, एक दिन सुविलासे ॥ एह सात सुपन ते देखे जी, मनने उल्लासे ॥ सिंह सूर्य अग्नि ध्वज जाणो जी, वली एक गज राजे ॥ वली पद्म सरोवर ठठे जी, देवविमान गाजे ॥ १६ ॥ देखे ते रजनी अंते जी, गंगदत्त रूमो ॥ चवी शुक्र थकी ते आयो जी, सूचत नहीं कूमो ॥ श्रावण वदि आठम जायो जी, देव सान्निध करे ॥ मूक्या हता जे रखवाला जी, तस निद्रा धरे ॥ १७ ॥ जेम विष खाइने सूता जी, तेम उंघी गया ॥ ए पुण्य प्रबलनो जोरो जी, देव पद्दो थया ॥ तेमी वसुदेवने जाखे जी, कंस ते पापीयो ॥ कूप मांहि आपण फांसी जी, दोर ते कापीयो ॥ १८ ॥ सहु पुत्रने एह तो मारे जी, शुं करीये हवे ॥ जइ नंदगोकुलमां मूको जी, पुत्र ए तो रहेवे ॥ रुडुं रुडुं एम जाखे जी, सुत निज कर लेइ ॥ देव ठत्र करे शिर तास जी, चामर करे केइ ॥ १९ ॥ करे मंगलदीवा आठ जी, मारग अजुआले ॥ देवता तिहां द्वार उघाडे जी, पण को नवि जाले ॥ देखे उग्रसेन ते राय जी, पूठे इणी परे ॥ शुं अचरिज एह उदारे जी, कहे रह्या पंजरे ॥ २० ॥ तुज वयरी हणशे जेह जी, ते एह जाय ठे ॥ मत कोइ आगल तुमे कहेजो

जी, तस महिमाय छे ॥ हवे नंद गोपाल घरे पोहतो जी, तस घर तिण समे ॥ पुत्री प्रसवे ते जशोदा जी, नारी अति प्रेमे ॥ २१ ॥ तस पुत्री लेइ आपे जी, पुत्र ते आपनो ॥ जस पुण्य प्रबल होय पोते जी, चारो न पापनो ॥ त्रीजे खंडे पहेले अधिकारे जी, ढाल बीजी कही ॥ मुनि पद्मविजय मनरंगे जी, नविजने सद्दही ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवकीने पुत्री दीये, श्रीवसुदेवजी आय ॥ पूछे रक्षक पुरुष ते, कहो आव्युं तुम कांय ॥ १ ॥ देखावे तव ते धुया, कंस धुणावे शीश ॥ एह गरज मुज मारशे, नारीमात्र ते कीश ॥ २ ॥ एहने मारे शुं होये, नाक कान करी छेद ॥ देवकीने पाछी दीये, देखीने स्त्रीवेद ॥ ३ ॥ अंग कृष्ण माटे हवे, कृष्ण बोलावे नाम ॥ देव घणा सान्निध करे, नंद गोवालने धाम ॥ ४ ॥ देवकी कहे वसुदेवने, जाउं जोवा पुत्त ॥ कहे वसुदेवजी सांभलो, एक अमारुं उत्त ॥ ५ ॥ सहसा जातां जाणशे, कंस तुमारी वात ॥ कोइ कारण उद्देशीने, जावुं जुगतुं थात ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ गो वाछरुआं चारती, आहिरनो अवतार ॥ ए देशी ॥ बहु नारीशुं परवरी, गोकुल पूजवा जाय ॥ मनना मोहनीया ॥ अनुक्रमे पहोती देवकी, जिहां जशोदा धाय ॥ मनना मोहनीया ॥ १ ॥ श्रीवच्छे उर सोहतुं, नील कमल सम काय ॥ मन० ॥ लक्षण लक्षित देहमी, देखी आणंद थाय ॥ ॥ मन० ॥ २ ॥ मन चिंते इम देवकी, हुं पापी शिरदार ॥ मन० ॥ एहवा पुत्र वियोगथी, हुं रहुं नित घर बार ॥ मन० ॥ ३ ॥ धवरावी पण नवि शकुं, आव्यां कीधां पाप ॥ मन० ॥ धन्य जशोदा एहने, एह रमाडे आंप ॥ मन० ॥ ४ ॥ इम गोकुल नित पूजवा, मिष करी जाये तेह ॥ म० ॥ पुत्र रमाडी मोदशुं, आवे ते निज गेह ॥ मन० ॥ ५ ॥ सूर्पक विद्याधर तणी, आवे पुत्री दोय ॥ मन० ॥ विषमिश्रित थण आपती, कृष्णमुखे ते पलोय ॥ मन० ॥ ६ ॥ शकट रच्युं जब मारवा, तब तिहां आवी देव ॥ मन० ॥ ते शकटे हणी तेहने, करतां कृष्णनी सेव ॥ मन० ॥ ७ ॥ नंद जशोदाने कहे, देखी अचरिज तेह ॥ मन० ॥ शूनो नवि मूको तुमे, पुत्र ते गुणतुं गेह ॥ मन० ॥ ८ ॥ ढलतो मूकी घृत घडो, पण नवि जाउं

क्यांहि ॥ मन० ॥ आलिंगे ते पुत्रने, मनमां धरी उछांहि ॥ मन० ॥ ॥ ए ॥ पण चपलाइ अति घणी, ठल करी नासी जाय ॥ मन० ॥ उदर दामे करी बांधती, उखला साथे माय ॥मन०॥ १०॥ दामोदर नामज थयुं, ते दिनथी परसिद्ध ॥ मन० ॥ सूर्पकसुत तिहां आवीयो, जस बहु विद्या सिद्ध ॥ मन० ॥ ११ ॥ अर्जुन वृक्ष विकुर्वीने, जमल परस्पर थाप ॥ ॥ मन० ॥ उखलथी तिहां लावीयो, हणवा मांडे आप ॥ मन० ॥ १२ ॥ तिणे समे आवी देवता, भांज्यो अर्जुन रुंख ॥ मन० ॥ जमलार्जुन उन्मूलीआ, दूर कर्यु ते दुःख ॥ मन० ॥ १३ ॥ आवे तिहां गोपांगना, उर अंके शिर धारी ॥ मन० ॥ रात दिवस नवि वेगली, रहे ते गोपनी नारी ॥ मन० ॥ १४ ॥ दूध दहीं लूंटी लीये, कृष्ण ते चपल अपार ॥ मन० ॥ महियारी पासे थकी, घृत लेइ जाय किंवार ॥ मन० ॥ १५ ॥ पण स्नेहे वारे नहीं, कौतुकथी ते नार ॥ मन० ॥ करे प्रहार ढोली दीये, तेह दधि दधिसार ॥ मन० ॥ १६ ॥ उलंभो दीये नंदने, आवी गोपनी नार ॥ ॥ मन० ॥ पण घरे राखी नवि शके, देखी सुत गुणधार ॥ मन० ॥ १७ ॥ दिन दिन वलथी वाधतो, वात सुणे वसुदेव ॥ मन० ॥ विद्याधरी खेचर तणी, तेह मुवां ततखेव ॥ मन० ॥ १८ ॥ मन चिंते वसुदेवजी, गोप्यो पण न गोपाय ॥ म० ॥ वल देखे जो एहनुं, कंस ते करशे अपाय ॥ मन० ॥ १९ ॥ तेडावी वलदेवने, शीखामण देइ तास ॥ मन० ॥ कृष्णरक्षाने कारणे, मूके तेहनी पास ॥ मन० ॥ २० ॥ दश धनु उंचा ते विहु, सुंदर जस आकार ॥ म० ॥ काम मूकी घरनां सहु, जुवे अनिमेष विकार ॥ मन० ॥ २१ ॥ वलदेवनी पासे भणे, कृष्ण कलाभंडार ॥ म० ॥ कला बहोंतेर पारंगमी, कृष्ण ते पुण्य अपार ॥ मन० ॥ २२ ॥ कोइ काले मित्रज होये, आचारय कोइ काल ॥ मन० ॥ न खमे ते एक एकनो, विरह ते क्षण संभाल ॥ मन० ॥ २३ ॥ पुष्ठ अहे वृषभज तणुं, वलवंतो महावीर ॥ म० ॥ देखी तस वलरामजी, थाये उदासीन धीर ॥ मन० ॥ २४ ॥ त्रीजी त्रीजा खंमनी, ढाल प्रथम अधिकार ॥ मन० ॥ गुरु उत्तम किरपा थकी, पद्मने जय जयकार ॥ मन० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केडे बहु गोपांगना, मन्मथ प्रेरी जाय ॥ ज्युं भ्रमरी कज उपरे, चोक फेर लपटाय ॥ १ ॥ गाय दुहे गोपांगना, मन श्रीकृष्णनी पास ॥

भाजन विनु देतुं डुहे, खवर ते न पमे तास ॥२॥ दधि मथतां करे वातमी, घृत तपावतां तास ॥ जमतां वेगं भणतां, कृष्ण तणे मन पास ॥३॥ गीत गाय नाटक करे, सिंडुवारादिक दाम ॥ गुंथी स्वयंवरनी परे, थापे कंठ उद्दाम ॥ ४ ॥ जेह तेह प्रकारथी, ध्यावे कृष्ण मन मांहि ॥ दूध दहीं घृत लूंटतो, तिहां पण कृष्ण उत्साहि ॥ ५ ॥ गोपी उलंनो दीये, देखी एहवी वात ॥ तुं तो आव्यो किहां थकी, जिणे अम लूंटी जात ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ तुं तो किहांनो रसीयो रे ॥ मारा नंदना वाला ॥ मारग आवी वसीयो रे ॥ मारा नंदना वाला ॥ ए देशी ॥ गोपी कहे इम वातो रे ॥ मारा नंदना वाल्हा अमने लूंटी जातो रे ॥मा०॥ मानुं ते किहांनो दाणी रे ॥मा०॥ दहींनी दोणी ताणी ॥ मा० ॥ १ ॥ तुं ते किहांनो ठाकर रे ॥ मा० ॥ बांधे अमशुं वाकर रे ॥ मा० ॥ तुं ते किहांनो शेठो रे ॥ मा० ॥ अम डुःख देवा बेठो रे ॥ मा० ॥ ॥ २ ॥ तुजने केणे मान्यो रे ॥ मा० ॥ अम दधि लूंटवा आएयो रे ॥ ॥ मा० ॥ तुं ते किहांनो स्वामी रे ॥ मा० ॥ अमची दोणी नामी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ जो तुज कंस ते जाणे रे ॥ मा० ॥ तो तुज शिक्षा दाणे रे ॥ मा० ॥ अमने मत तुमे ठेमो रे ॥ मा० ॥ केम पकडो अम केमो रे ॥ मा० ॥४॥ नंदने जइ जव कहेशे रे ॥ मा० ॥ नंद ते ठवको देशे रे ॥ मा० ॥ गोपी इणी परे जाषे रे ॥ मा० ॥ मनने गमे ते आसे रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ आवी रामने जाखे रे ॥ मा० ॥ अमे कहुं तुमची साखे रे ॥ मा० ॥ दीठां हरतो चित्तडुं रे ॥ मा० ॥ एहवुं अमने हितरुं रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ अणदीठां जाय प्राण रे ॥ मा० ॥ कृष्ण ते काले वाण रे ॥ मा० ॥ मोरली वजावे कान्ह जी रे ॥ ॥ मा० ॥ अमची हरतो शान जी रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ इम उलंनो रामने रे ॥ ॥ मा० ॥ फोडे अमचा ठामने रे ॥ मा० ॥ इम क्रीमा करतां गया रे ॥ मा० ॥ वहु दिन आणे सहु मया रे ॥ मा० ॥ ८ ॥ शौरीपुर हवे जाणो रे ॥ मा० ॥ ॥ समुद्रविजय तस राणो रे ॥ मा० ॥ घरमां सुख जोगवता रे ॥ मा० ॥ मणिदीवा जलजलता रे ॥ मा० ॥ ए ॥ रुमी मोतीमाला रे ॥ मा० ॥ लटके चोक विशाला रे ॥ मा० ॥ कृष्णागरु जिहां दाके रे ॥ मा० ॥ गंध ते आवे जाके रे ॥ मा० ॥ १० ॥ कुसुम तणा तिहां ढगला रे ॥ मा० ॥ रमणिक थानक सघलां रे ॥ मा० ॥ महोटी शय्या उमी रे ॥ मा० ॥

कोमल माखण रूमी रे ॥ मा० ॥ ११ ॥ सूती शय्या राते रे ॥ मा० ॥ शिवादेवी सुखशाते रे ॥ मा० ॥ पाछली राते देखे रे ॥ मा० ॥ चौद सुपन मन हरखे रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ चौदंतो गजराज रे ॥ मा० ॥ बीजे वृषभ समाज रे ॥ मा० ॥ सिंह लांगुल उछालतो रे ॥ मा० ॥ त्रीजे सुपन सोहावतो रे ॥ मा० ॥ १३ ॥ लखमी फूलमाला भली रे ॥ मा० ॥ चंद्रकला अति निर्मली रे ॥ मा० ॥ दिनकर ध्वज ते सोहतो रे ॥ मा० ॥ कनककलश मन मोहतो रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ पद्म सरोवर जाणीये रे ॥ ॥ मा० ॥ सागर मनमां आणीये रे ॥ मा० ॥ वली विमान ते बारमे रे ॥ मा० ॥ रत्नराशि कही तेरमे रे ॥ मा० ॥ १५ ॥ धूमरहित अग्नि कही रे ॥ मा० ॥ चौदमे सुपने राणी लही रे ॥ मा० ॥ जागी पीयु पासे जइ रे ॥ मा० ॥ भाखे सुपनां ते सइ रे ॥ मा० ॥ १६ ॥ चोथी त्रीजा खंडनी रे ॥ मा० ॥ ढाल ते रंग अखंमनी रे ॥ मा० ॥ पहेले अधिकारे कही रे ॥ मा० ॥ पद्मविजय भवि सद्दही रे ॥ मा० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ १२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ समुद्रविजय राजा कहे, सुपन तणुं फल रोक ॥ सुत होशे शुभ लक्षणो, कुलदीपक गतशोक ॥ १ ॥ तेह सुणी हर्षित थइ, तेह शिवादेवी नार ॥ राजा पण प्रमुदित थया, समुद्रविजय तिण वार ॥ २ ॥ मंत्री सामंते परवर्यो, बेठो सभा मकार ॥ पूछे कौतुक निमित्तिउं, भाव कहे इम सार ॥ ३ ॥ इण अवसर चारण मुनि, शमतावंत महंत ॥ तपतापित जस देहमी, आव्या ते गुणवंत ॥ ४ ॥ तव राजा उभो थइ, आपे आसन तास ॥ प्रणमी परिगल भावशुं, बेठा मुनिनी पास ॥ ५ ॥ राय निमित्तिउं विहु जणा, करकज जोमी जाम ॥ पूछे सुपन विचार ते, मुनिवर भाखे ताम ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ नारी ते पीयुजीने विनवे हो राज ॥ ए देशी ॥ मुनिवर भाखे इणी परे हो राज, आठ प्रकारे निमित्त ॥ वारी मोरा साहिबा ॥ अंग सुपन स्वर जाणीये हो राज, उत्पाद चोथुं चित्त ॥ वा० ॥ १ ॥ अंतरिक्ष भौम ने वली हो राज, व्यंजन लक्षण एह ॥ वा० ॥ तेहमां सुपन निमित्त कह्युं हो राज, सुख दुःख आपे देह ॥ वा० ॥ २ ॥ बहोंतेर सुपनां भाखीयां हो राज, हीणां तेहमां त्रीश ॥ वा० ॥ बहेंतालीश उत्तम कह्यां हो राज, तेहमां

महोटां त्रीश ॥ वा० ॥ ३ ॥ तेह त्रीश मांहे थकी हो राज, चक्री तीर्थंकर माय ॥ वा० ॥ चौद सुपन देखे जलां हो राज, जब ते गर्नें आय ॥ वा० ॥ ४ ॥ माता श्रीवासुदेवनी हो राज, देखे सुपनां सात ॥ वा० ॥ चार देखे बलदेवनी हो राज, उत्तम गर्ने मात ॥ वा० ॥ ५ ॥ मंडलिक माता लहे हो राज, तेम वली चरमज देह ॥ वा० ॥ एक देखे तस मातृका हो राज, देखे वे अथ ते ॥ वा० ॥ ६ ॥ दीठां चौद ए राणीए हो राज, तिणे जाणुं महाजाग ॥ वा० ॥ पूजित चोसठ इंद्रने हो राज, तीर्थंकर वरुजाग ॥ वा० ॥ ७ ॥ चोत्रीश अतिशय राजतो हो राज, वाणी गुण पांत्रीश ॥ वा० ॥ परम पुरुष परमातमा हो राज, होशे विशवावीश ॥ वा० ॥ ८ ॥ ते कारण धन्य नूपति हो राज, तहारे घर जिनराज ॥ वा० ॥ परम शरण प्राणी तणो हो राज, करशे महोटां काज ॥ वा० ॥ ए ॥ इम कही मुनिवर उतपत्या हो राज, राजा हर्षित अंग ॥ वा० ॥ संजलावे राणी प्रते हो राज, मुनिवच विमल ज्युं गंग ॥ वा० ॥ १० ॥ अपराजित विमानमां हो राज, तेत्रीश सागर आय ॥ वा० ॥ पालीने तिहां उपनो हो राज, शंखकुमर जीव आय ॥ वा० ॥ ११ ॥ कार्त्तिक वदि वारस दिने हो राज, चित्रा नखेतर जोग ॥ वा० ॥ त्रण ज्ञानशुं राजता हो राज, जोगवता शुन्न जोग ॥ वा० ॥ १२ ॥ इण अवसर आसन चल्युं हो राज, जाणी शक्रे वात ॥ वा० ॥ उठ्यो हर्ष अमंदशुं हो राज, सात आठ पय जात ॥ वा० ॥ १३ ॥ सन्मुख शक्र स्तव करे हो राज, आवे शिवादेवी पास ॥ वा० ॥ गंजीर स्वरे स्तवना करे हो राज, पामी अधिक उल्लास ॥ वा० ॥ १४ ॥ तुं धन्य तुं कृतपुण्य छे हो राज, पुरुषरतन धर्युं जेण ॥ ॥ वा० ॥ दीवो जगमां तें कर्यो हो राज, उद्धर्युं जुवन ते एण ॥ वा० ॥ १५ ॥ तीर्थंकर हरि तें धर्यो हो राज, उदर गुफा मांहि एह ॥ वा० ॥ जवसायर प्रवहण समो हो राज, धरीयो पुत्र ते देह ॥ वा० ॥ १६ ॥ उत्पत्ति इम जिननी कही हो राज, पूरे रत्ननिधान ॥ वा० ॥ शक्र निरंतर इम कहे हो राज, राय दीये घणां मान ॥ वा० ॥ १७ ॥ शुन्न दोहलां तस उपजे हो राज, ते सहु पूरे राय ॥ वा० ॥ श्रावण सुदि पांचम दिने हो राज, चित्रासंगे चंद्र आय ॥ वा० ॥ १८ ॥ अर्द्ध रात्रिने अवसरे हो राज, प्रसवे पुत्ररतन्न ॥ वा० ॥ पूरव दिशि सूरय परे हो राज, करती अतिशय यत्न

॥ वा० ॥ १९ ॥ मरकतमणि छवि जेहनी हो राज, पंकजदल सम नयण ॥ ॥ वा० ॥ प्राणी पण सहु सुख पामीया हो राज, ते वेला सुणो सयण ॥ वा० ॥ २० ॥ नारकी पण सुख पामीया हो राज, होय उद्योत तिवार ॥ वा० सुख वाया तिहां वायरा हो राज, थाय प्रसन्न दिशि च्यार ॥ वा० ॥ २१ ॥ पांचमी त्रीजा खंममां हो राज, ढाल प्रथम अधिकार ॥वा०॥ गुरु उत्तमनी सान्निधे हो राज, पद्मने जय जयकार ॥ वा० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १४० ॥

॥ दोहा ॥

॥ उप्पन्न दिशिकुमरी तणां, आसन चव्यां जिवार ॥ जाणी जनम जिणंदनो, दइ उपयोग तिवार ॥ १ ॥ रहेती जे अधलोकमां, आवे आठ कुमार ॥ ईशाने घर सूतिनुं, करती ते मनोहार ॥ २ ॥ संवर्त्तक वायु करी, जोजन तिहांथी एक ॥ शुद्ध करे ते जूमिका, धारी अतिहि विवेक ॥ ३ ॥ आठ आवे ऊरध तणी, वरसे पाणी फूल ॥ पूरव रुचकथी आवी अम, दर्पण धरे अमूल ॥ ४ ॥ आवे आठ दक्षिण थकी, पूर्ण कलश लेइ हाथ ॥ गीत गान करे तिहां रही, जिनवर श्री जगनाथ ॥ ५ ॥ आवी पश्चिम रुचकथी विंजणो लेइ पाण ॥ आठ तिहां उन्नी रहे, करती गीत मंमाण ॥ ६ ॥ आठ आवी उत्तर थकी, विंजे चामर सार ॥ दर्पण हस्त लेइ रहे, विदिश रुचकथी चार ॥ ७ ॥ रुचक द्वीपथी आवती, चार देवांगना ताम ॥ चउ अंगुलथी छेदवुं, नाल ते एहनुं काम ॥ ८ ॥ खोदी खाड तेहमां ठवे, वैडूर्ये ते पूर ॥ पीठ करे ते उपरे, लेइ रत्न ते जूर ॥ ९ ॥ पूरव दक्षिण उत्तरे, जन्मना घरथी तेह ॥ निपजावे त्रण जुवनने, केलि तणां ते गेह ॥१०॥ अन्यंगन दक्षिण घरे, स्नान अर्चा करे पूर्व ॥ उत्तर घरमां लेइने, आवे तेह अपूर्व ॥ ११ ॥ अरणीथी अग्नि करी, चंदननो करे होम ॥ बांधे रक्षा पोटली जिनमाता अनुमोद ॥ १२ ॥ अहो आयु पर्वत समुं, इम कही मूके गाम ॥ निज निज दिशि उन्नी रही, करती जिन गुणग्राम ॥ १३ ॥ देव सामानिक चउ सहस, चार महत्तरा देव ॥ सोल सहस अंगरक्षका, सात कटक तस देव ॥ १४ ॥ जोजन मान विमानमां, वेसी आवे अत्र ॥ एकेकी देवी तणो, ए परिवार सर्वत्र ॥ १५ ॥ सहु निज निज थानक गइ, हवे मोछव देव ॥ पुण्य तणुं बल जेहने, तस करे सुर नर सेव ॥ १६ ॥

॥ ढाल ७ही ॥

॥ विजा जी हो रत्नकूई मुख सांकडो हो विजा, केम करी करुं प्रवेश सयण रुमां, वयण वाला ॥ ए देशी ॥ सुरवर जी हो अचल ते सिंहासन चल्युं हो देवा, जाएयुं अवधे ताम ॥ धन्य मारे पुण्य पूरो ॥ ए आंकणी ॥ ॥ सु० ॥ नेमि जिनेसर जनमीया हो देवा, हर्ष घणो तिणे गम ॥ ध० ॥ ॥ १ ॥ सु० ॥ हरिणगमेषी हकारीयो हो देवा, वज्रनी घंटा तेह ॥ ध० ॥ ॥ सु० ॥ वज्र तणी वजमावता हो देवा, तव सहु वागी जेह ॥ ध० ॥ २ ॥ सु० ॥ सहुने इम संजलावतो हो देवा, सहु सुणी हर्षित थाय ॥ध०॥सु०॥ उद्यम करे तिहां जायवा हो देवा, आकाशे न समाय ॥ ध० ॥ ३ ॥ सु० ॥ पालक नाम करे तिहां हो देवा, योजन लाख विमान ॥ ध० ॥ सु० ॥ वेसे इन्द्र तिहां कणे हो देवा, अग्रमहिषी पुर थान ॥ ध० ॥ ४ ॥ सु० ॥ सहस चोराशी सामानिका हो देवा, सिंहासन तेम तास ॥ ध० ॥ सु० ॥ अभ्यंतर पर्षद तणा हो देवा, बार सहस दक्षिण पास ॥ ध० ॥ ५ ॥ सु० ॥ मध्यम पर्षदना कह्या हो देवा, चौद सहस सुर खास ॥ ध० ॥ सु० ॥ बाह्य पर्षदना जाणीये हो देवा, सोल सहस ठे जास ॥ ध० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सात अनीकना अधिपति हो देवा, आत्मरक्षक वली देव ॥ ध० ॥ सु० ॥ त्रण लाख ठत्रीश सहस ठे हो देवा, करता इन्द्रनी सेव ॥ ध० ॥ ७ ॥ सु० ॥ देव प्रमाण सिंहासनां हो देवा, वीजा पण बहु आय ॥ ध० ॥ सु० ॥ केइक इन्द्र आणा थकी हो देवा, केइक मित्र खंचाय ॥ ध० ॥ ८ ॥ सु० ॥ केइक नारी प्रेर्या थका हो देवा, केइक आपने चाव ॥ ध० ॥ सु० ॥ केइक कौतुक आवीया हो देवा, केइक नक्तिथी आव ॥ ध० ॥ ए ॥ सु० ॥ वाहने चेठा बहु परे हो देवा, वाजां वजावे तेह ॥ ध० ॥ सु० ॥ कोलाहल बहु उठले हो देवा, न पडे समऊण जेह ॥ ध० ॥ १० ॥ सु० ॥ गजपतिने सिंहपति कहे हो देवा, दूर करो गजराज ॥ ध० ॥ सु० ॥ दुर्द्धर ठे अमे केसरी हो देवा, हणशे गजने आज ॥ ध० ॥ ११ ॥ सु० ॥ नागपतिने गरुडपति कहे हो देवा, ठागपतिने चित्रस्वामी ॥ ध० ॥ सु० ॥ वलीयो कहे नवला प्रते हो देवा, दूर करो तुमे ठाम ॥ ध० ॥ १२ ॥ सु० ॥ पहोलुं ते सांकडुं थयुं हो देवा, देवथी ते आकाश ॥ ध० ॥ सु० ॥ मित्र मूकी जाइ आगले हो देवा, नक्ति थकी गुणवास ॥ ध० ॥ १३ ॥ सु० ॥ केइक

कहे ऊभा रहो हो देवा, इमणां म कहो ए वात ॥ ध० ॥ सु० ॥ परव दिवस होय सांकमा हो देवा, कोइक कहे सुखशात ॥ ध० ॥ १४ ॥ सु० ॥ मौन करो कोइक कहे हो देवा, इम सहु करत कल्लोल ॥ ध० ॥ सु० ॥ नंदीश्वरे आवी करी हो देवा, करत सहु रंगरोल ॥ ध० ॥ १५ ॥ सु० ॥ विमान संखेपी आवीया हो देवा, त्रण प्रदक्षिणा देय ॥ ध० ॥ सु० ॥ प्रणमीने इणी परे कहे हो देवा, सांभल माहरो भेय ॥ ध० ॥ १६ ॥ सु० ॥ माताजी हो जन्म मोछवने कारणे हो माता, आव्यो हुं देवेश ॥ ध० ॥ सु० ॥ बावीशमा जिनवर तणो हो माता, बीहीक न करशो लेश ॥ ध० ॥ १७ ॥ ॥ सु० ॥ इम कहीने अवस्वापिनी हो देवा, मूके करी प्रतिबिंब ॥ ध० ॥ ॥ सु० ॥ लेइ चाल्या करसंपुटे हो देवा, जाणे मरुमां अंबलुंब ॥ ध० ॥ ॥ १८ ॥ सु० ॥ पंच रूप करे सुरपति हो देवा, एक लीये जिनराज ॥ ध० ॥ ॥ सु० ॥ चामर बिहु जण विंजता हो देवा, एक छत्र शिर काज ॥ ध० ॥ ॥ १९ ॥ सु० ॥ आगल वज्रधर चालतो हो देवा, स्तवना करे मांहोमांह ॥ ध० ॥ सु० ॥ आगल जातो पाछुं जुवे हो देवा, जिनमुख जोवा उछाह ॥ ध० ॥ २० ॥ सु० ॥ मेरुशिखरे आवीया हो देवा, वैमानिक दश इंद्र ॥ ॥ ध० ॥ सु० ॥ बत्रीश व्यंतर अधिपति हो देवा, सूरय ने वली चंद ॥ ध० ॥ ॥ २१ ॥ सु० ॥ वीश भवनपति जाणीये हो देवा, इम चोसठ सुरराज ॥ ॥ ध० ॥ सु० ॥ सौधर्मपति अंके लीये हो देवा, जिनवर आतम काज ॥ ॥ ध० ॥ २२ ॥ सु० ॥ ऊंचा पणवीश जोयणां हो देवा, बार जोजन विस्तार ॥ ध० ॥ सु० ॥ जोजन कलशनुं नालवुं हो देवा, एक कोडी साठ लाख सार ॥ ध० ॥ २३ ॥ सु० ॥ रत्नकरंडक दर्पणा हो देवा, पुष्प चंगेरी चंग ॥ ध० ॥ सु० ॥ उपगरण पूजानां सहु हो देवा, अष्ट प्रकारना नंग ॥ ध० ॥ २४ ॥ सु० ॥ अष्ट उत्तर सहस भलां हो देवा, बहु तीरथनां नीर ॥ ध० ॥ सु० ॥ कुंभ हृदये घणुं शोभता हो देवा, मानुं करे भवजल तीर ॥ ध० ॥ २५ ॥ सु० ॥ सहु अभिषेक तिहां करे हो देवा, केइक करे शिर छत्त ॥ ध० ॥ सु० ॥ केइक चामर विंजता हो देवा, धूप कमछ केइ सत्त ॥ ध० ॥ २६ ॥ सु० ॥ केइक दर्पण कर लीये हो देवा, केइ करे गीत गान ॥ ध० ॥ सु० ॥ नाचे केइक देवता हो देवा, केइ करे बहु मान ॥ ध० ॥ २७ ॥ सु० ॥ वृष्टि करे केइ फूलनी हो देवा, केइ करे गज शब्द ॥

॥ ध० ॥ सु० ॥ इय हेषारव केइ करे हो देवा, केइ करे सिंहनद ॥ ध० ॥ ॥२८॥ सु० ॥ हर्ष उत्साह घणो तिहां हो देवा, कहेतां नावे पार ॥ ध० ॥ सु० ॥ दीठे तेह सहु वणे हो देवा, अच्युतथी धुर सार ॥ ध० ॥ २९ ॥ सु० ॥ परिपाटी अनुक्रमे करे हो देवा, ते अभिषेक विलास ॥ ध० ॥ सु० ॥ ग्रंथांतरथी जाणजो हो देवा, एह विस्तार ते खास ॥ ध० ॥ ३० ॥ सु० ॥ त्रीजे खंडे बठी कही हो देवा, ढाल अतिहि विशाल ॥ ध० ॥ सु० ॥ उत्तम गुरुनी सान्निधे हो देवा, पद्मने मंगलमाल ॥ ध० ॥ ३१ ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ ग्रंथांतरथी जाणजो, एह सहु विस्तार ॥ तिह्नोगाली प्रमुखमां, बे महोटा अधिकार ॥ १ ॥ ग्रंथ वध्याना जय थकी, नवि जाखुं हुं अत्र ॥ हवे सोहमपतिनो कहुं, जिम करे तेह सनात्र ॥ २ ॥ पंच रूप करी जक्तिथी, हवे ते इंद्र ईशान ॥ अंके जिनवर थापीने, बेसे अति बहु मान ॥ ३ ॥ चार रूप हवे वृषजनां, करे ते सोहम स्वामी ॥ आठ शिंगथी नीकले, सलिल धार तिण ठाम ॥ ४ ॥ नवरावी इम जक्तिथी, अंग लूहे जिनराय ॥ लींपे चंदन प्रमुखने, वस्त्र आजरण पहेराय ॥ ५ ॥ तास हर्ष तेहज लहे, नवि मुखथी कहेवाय ॥ वारे कोलाहल हवे, स्तवना करे सुरराय ॥ ६ ॥ हर्ष अधिक सोहमपति, थुणे ते गंजीर वाण ॥ सहु एकाग्र थइ सुणे, उजा रही तिण ठाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी फतमलनी ॥ जिनपति जवतरु जंग समीर, गुणमणि मकराकर जलो ॥ जि० ॥ जीम मोह करिकुंज, जेदवा सिंह ते गुणनिलो ॥ ॥ १ ॥ जि० ॥ जवदव उपशम मेघ, पापपंक दूरे करु ॥ जि० ॥ पदकज नमीये स्वामी, अमल कलानो आगरु ॥ २ ॥ जि० ॥ पापपकल हिमपूर, हरवा सूर्य परे तपे ॥ जि० ॥ बुद्धि सिद्धिनो गेह, तुजने सहु सुर नर जपे ॥ ३ ॥ जि० ॥ मायावेलिनो दाह, दारुण दावानल जया ॥ जि० ॥ सिद्धि कमल वर भृंग, उत्तम कुल मांहि थया ॥ ४ ॥ जि० ॥ जव तारण तुं देव, नरक वारक प्रजु जाणीये ॥ जि० ॥ रामासंग विरक्त, करुणा रस मन आणीये ॥ ५ ॥ जि० ॥ अचल असंग निरीह, निःकारण उपगारीयो ॥ जि० ॥ गरुड राग नाग स्वामी, लोज सायर चलु

॥ जि० ॥ सुर नर सेवित तेह, उपगारे विग्रह धर्युं ॥ १६ ॥ जि० ॥ जिम गिरिमां तरु छोरू, बीजनो चंद वधे यथा ॥ जि० ॥ रमता नेमि जिणंद, तेह मुणींद वधे तथा ॥ १७ ॥ जि० ॥ समुद्रविजय घर एम, जनम सुणे वसुदेवजी ॥ जि० ॥ मोछव मथुरा मांहि, करता ते ततखेव जी ॥ १८ ॥ जि० ॥ नरपति एक दिन कंस ते दुष्ट, पहोतो वसुदेवने घरे ॥ न० ॥ कन्या देखीने ते छिन्न, मनमां चिंते इणी परे ॥ १९ ॥ न० ॥ करतो अतिहि विकल्प, देह प्रकंप थयो तिहां ॥ न० ॥ पूछे घर जइ मित्त, वात कहे मुजने इहां ॥ २० ॥ न० ॥ देवकी सातमो गर्भ, मुनिए वध जणी मुज कह्यो ॥ न० ॥ मुनिवच थयुं अलीक, के छलथी ए रिपु लह्यो ॥ ॥ २१ ॥ न० ॥ अथवा थयो फेरफार, तव नैमित्तिउ बोलीयो ॥ न० ॥ अलीक न होय वचन्न, मुनिवच किणही न रोलीयो ॥ २२ ॥ न० ॥ तुज रिपु जीवतो आज, पण तुज खबर न किहां अछे ॥ न० ॥ एक उपाय सुण तुज, वली बीजो जाखीश पछे ॥ २३ ॥ न० ॥ अरिष्ट वृषन तुज दुष्ट, महाबल दर्प घणो धरे ॥ न० ॥ तीखां जेहनां शृंग, जीव घणानो वध करे ॥ २४ ॥ न० ॥ घोटक केशी नाम, वलीयो तुज घर बांधीयो ॥ न० ॥ गर्दन पुष्ट-शरीर, मेष दारुण पण सांधीयो ॥ २५ ॥ न० ॥ वृंदारक वन मांहि, छूटा मूको एहने ॥ न० ॥ वध करशे जे आवी, जाणजे वयरी तेहने ॥ २६ ॥ न० ॥ सुण हवे बीजो उपाय, सारंग धनुष ताहरे घरे ॥ न० ॥ पूजाये नित जेह, आरोपण जे तस करे ॥ २७ ॥ न० ॥ ज्ञानीए कह्युं एम, कोइ न आरोपी शके ॥ न० ॥ जरत अरधनो स्वामी, ते एहनी आगल टके ॥ २८ ॥ न० ॥ कालीय दमे नागीण, चाणूर मल्लनो वधकरु ॥ न० ॥ पद्मोत्तर ने चंपक, हणशे हाथी नरवरु ॥ २९ ॥ न० ॥ विसर्जे रे निमित्त, ते सांजली चित्त खलजल्यो ॥ न० ॥ निश्चय करवा तेह, कंस चिंते अहो किम छल्यो ॥ ३० ॥ न० ॥ न लहे हवे रति क्यांहि, निद्रा पण सुखे नवि करे ॥ न० ॥ सुख नवि वेदे तेह, कारण विनु कोपज धरे ॥ ३१ ॥ न० ॥ सातमी त्रीजे खंम, ढाल ते जाखी मनोहरु ॥ न० ॥ उत्तमविजयनो शिष्य, पद्मविजय कहे सुखकरु ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा ॥ २३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुखमां निद्रा नवि करे, करे ते कोप अपार ॥ अपमाने मंत्री प्रमुख,

नियुद्धनो, अवसर मल्लने थान ॥ ४ ॥ कृतउद्यम ए मल्ल छे, मुज तो उद्यम नांहीं ॥ पण अंतर सहु देखजो, नाखे कृष्ण उछांहि ॥ ५ ॥ कंस सुणीने शंकीयो, मुष्टिक मल्ल वली एक ॥ संज्ञा करी उठावीयो, बीहीक लही अतिरेक ॥ ६ ॥ ते देखी हलधर हवे, आवे कृष्णनी पास ॥ हली हरि एक दिशे रह्या, दोय मल्ल एक पास ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥फुलना चोसर प्रजुने शिर चढे ॥ ए देशी ॥ जुद्ध ते करवा रे लाग्या ते बिहुं, कृष्णजी ने चाणूर जी रे ॥ मुष्टिक ने बलदेवजी बिहुं मल्या, वधते अति घणे शूर जी रे ॥ १॥ पुण्यथी बलीयो रे को नवि पामीये ॥ ए आंकणी ॥ करे चपेटा रे विविध प्रकारना, करे प्रहार अनेको जी रे॥ नजतल गाजे चेतननी परे,बीहीक होये अतिरेको जी रे ॥ पु० ॥ २ ॥ हृदय ते त्रोडे मल्लनुं कृष्ण जी, मुष्टिनो करे वली घातो जी रे॥ तव करे मुष्टिप्रहार ते कृष्णने, करतो देतो लातो जी रे ॥पु०॥३॥ लीलां पीलां देखे कृष्णजी, पडीया धरणी तेह जी रे॥ कंस ते त्रुठो वली संज्ञा करे, वली मारो तुमे एह जी रे ॥ पु० ॥ ४॥ चाणूर मारवा आवे जेटले, तव आवी बलदेव जी रे ॥ मुष्टिक मल्ल मूकी तस आमीयो, जेम पमीयो ततखेव जी रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ मल्ल ने कृष्णजी वली उठ्या बिहुं, तव करे शिरमां घायो जी रे ॥ चाणूर बलीयो रे ते धरणी ढल्यो, चढी हृदये ते ठायो जी रे ॥ पु० ॥ ६ ॥ काढी आंख्यो रे ते चाणूरनी, चाल्या रुधिर प्रवाहो जी रे॥ नाक श्रवण ने मुखथी लोही वमे, मरण लह्यो लही दाहो जी रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ कंस ते बोल्यो रे देखी एहवुं, पकमो बांधो मारो जी रे॥ मारो नंद ते परिजन सह वली,द्रव्य हरो सहु सारो जी रे ॥ पु० ॥ ८ ॥ एहनो पद करे वली तेहने,मारो निःसंदेह जी रे॥ मुज अहितनो रे कर्त्ता एह छे, इम कहे कोपथी तेह जी रे ॥ पु० ॥ ए ॥ कोप जराणो रे कृष्ण ते सांजली, बोले एहवी वाण जी रे ॥ बालक हणीया रे पट्ट मुज बांधवा, तेहनां फल ए जाण जी रे॥पु०॥ १० ॥ इम जाखीने रे मांचा उपरे, चढीने पाड्यो कंस जी रे ॥मुकुट ते चकचूरण करी नाखीयो, कंस थयो हवे ध्वंश जी रे ॥ पु० ॥ ११ ॥ कृष्ण कहे सुण मरणनी बीहीकथी, बहोला कीध उपायो जी रे ॥ तेहज मरण जणी तुजने थया, आपनुं पाप ते आयो रे ॥पु०॥ १२॥ ते देखीने रे सहु विस्मय लह्या, देखी इम बलदेव

जी रे ॥ मुष्टिक मल्लने रे तिणी परे जीतीयो, जेम करे जसनी सेव जी रे ॥ पु० ॥ १३ ॥ इण अवसरे हवे सुभट ते कंसना, आवे मारण तामो जी रे ॥ कोप्यो यंत्र उपाडी संचरतो, आवे बलदेव आमो जी रे ॥ पु० ॥ १४ ॥ यम सम देखी सहु नाठा तिहां, कृष्ण मार्यो कंस जी रे ॥ रंगमंडपने रे बाहिर नाखीयो, लोक करे परशंस जी रे ॥ पु० ॥ १५ ॥ पहेलां कंसे रे सैन्य तेडावीयुं, मागी जरासंध पास जी रे ॥ रण करवाने रे ते सहु सज्ज थया, धरता अधिक उल्लास जी रे ॥ पु० ॥ १६ ॥ समुद्रविजय प्रमुख उठे एहवे, यादव बहु बलवंता जी रे ॥ जुद्ध करतां रे नाठा ते हवे, नायक विणु ते अकंता जी रे ॥ पु० ॥ १७ ॥ नाम अनाधृष्ट कुमर ते आवीयो, रथ वेसाडे तास जी रे ॥ यादव सहुने भेला मेलीया, श्रीवसुदेव आवासो जी रे ॥ पु० ॥ १८ ॥ हरखे देखी रे बलदेव कृष्णने, सामो जइ आलिंगे जी रे ॥ निज अंके वेसारे कृष्णने, बलदेवने निज संगे जी रे ॥ पु० ॥ ॥ १९ ॥ चुंबे शिर हवे श्रीवसुदेवजी, संभलावे सहु वात जी रे ॥ करे प्रशंसा रे समुद्रविजय सवे, देवकी प्रमुख ते मात जी रे ॥ पु० ॥ २० ॥ यादव सहुए रे कृष्णनी आणथी, मथुरा नयरी राय जी रे ॥ करे अभिषेक उग्र ते सेनने, जग जशवाद गवाय जी रे ॥ पु० ॥ २१ ॥ सत्यभामा परणावी कृष्णने, मोछव करीय अपारो जी रे ॥ यादव सहुए रे इम सुखमां रहे, पाम्या सहु जयकारो जी रे ॥ पु० ॥ २२ ॥ पहेले अधिकारे वरणवी कही, ढाल ते त्रीजे खंडे जी रे ॥ पंडित उत्तमविजयनो शिशु कहे, पद्म ते रंग अखंडे जी रे ॥ पु० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ३१९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीवजशा ते सांभली, करती बहु पोकार ॥ शिर कूटे पीटे हियुं, मरण सुणी भरतार ॥ १ ॥ जीवजशा ते कोपथी, जल अंजलि नवि थाय ॥ कहे इणी परे वाचा मुखे, सांभलजो सहु राय ॥ २ ॥ सहु जादवनो क्षय करी, एह कृष्ण बलदेव ॥ नंद कुटुंब सहित वली, क्षय करशुं हवे हेव ॥ ३ ॥ मृतकारज करशुं पछे, इणी परे कही ते नार ॥ राजगृही नगरे गइ, धरती दुःख अपार ॥ ४ ॥ छूटा केश रुदन करे, तात आगे पोकार ॥ भर्त्तावध संभलावीयो, पूछे व्यतिकर सार ॥ ५ ॥ अयमत्ता मुनि प्रमुखनो, भाखे सहु विरतंत ॥ जरासंध बोले तदा, शुं कहीये :

नियुऊनो, अवसर मल्लने थान ॥ ४ ॥ कृतउद्यम ए मल्ल छे, मुऊ तो उ-
द्यम नांहीं ॥ पण अंतर सहु देखजो, नाखे कृष्ण उछांहि ॥ ५ ॥ कंस
सुणीने शंकीयो, मुष्टिक मल्ल वली एक ॥ संज्ञा करी उठावीयो, बीहीक
लही अतिरेक ॥ ६ ॥ ते देखी हलधर हवे, आवे कृष्णनी पास ॥ हली
हरि एक दिशे रह्या, दोय मल्ल एक पास ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ फुलना चोसर प्रजुने शिर चढे ॥ ए देशी ॥ जुऊ ते करवा रे लाग्या
ते विहुं, कृष्णजी ने चाणूर जी रे ॥ मुष्टिक ने बलदेवजी विहुं मल्या, बधते
अति घणे शूर जी रे ॥ १ ॥ पुण्यथी बलीयो रे को नवि पामीये ॥ ए आंकणी ॥
करे चपेटा रे विविध प्रकारना, करे प्रहार अनेको जी रे ॥ नजतल गाजे चेत-
ननी परे, बीहीक होये अतिरेको जी रे ॥ पु० ॥ २ ॥ हृदय ते त्रोडे मल्लनुं कृष्ण
जी, मुष्टिनो करे वली घातो जी रे ॥ तव करे मुष्टिप्रहार ते कृष्णने, करतो
देतो लातो जी रे ॥ पु० ॥ ३ ॥ लीलां पीलां देखे कृष्णजी, पडीया धरणी तेह जी
रे ॥ कंस ते त्रुठो वली संज्ञा करे, वली मारो तुमे एह जी रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ चा-
णूर मारवा आवे जेटले, तव आवी बलदेव जी रे ॥ मुष्टिक मल्ल मूकी तस त्रा-
मीयो, जेम पमीयो ततखेव जी रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ मल्ल ने कृष्णजी वली उठ्या
विहुं, तव करे शिरमां घायो जी रे ॥ चाणूर बलीयो रे ते धरणी ढल्यो, चढी
हृदये ते ठायो जी रे ॥ पु० ॥ ६ ॥ काढी आंख्यो रे ते चाणूरनी, चाल्या रुधिर
प्रवाहो जी रे ॥ नाक श्रवण ने मुखथी लोही वमे, मरण लह्यो लही दाहो
जी रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ कंस ते बोल्यो रे देखी एहवुं, पकमो बांधो मारो जी रे ॥
मारो नंद ते परिजन सह वली, द्रव्य हरो सहु सारो जी रे ॥ पु० ॥ ८ ॥ एहनो
पक्ष करे वली तेहने, मारो निःसंदेह जी रे ॥ मुऊ अहितनो रे कर्त्ता एह छे,
इम कहे कोपथी तेह जी रे ॥ पु० ॥ ९ ॥ कोप नराणो रे कृष्ण ते सांज-
ली, बोले एहवी वाण जी रे ॥ बालक हणीया रे पट् मुऊ बांधवा,
तेहनां फल ए जाण जी रे ॥ पु० ॥ १० ॥ इम जाखीने रे मांचा उपरे,
चढीने पाड्यो कंस जी रे ॥ मुकुट ते चकचूरण करी नाखीयो, कंस थयो
हवे ज्रंश जी रे ॥ पु० ॥ ११ ॥ कृष्ण कहे सुण मरणनी बीहीकथी, वहोला
कीध उपायो जी रे ॥ तेहज मरण जणी तुऊने थया, आपनुं पाप ते आयो
जी रे ॥ पु० ॥ १२ ॥ ते देखीने रे सहु विसय लह्या, देखी इम बलदेव

जी रे ॥ मुष्टिक मल्लने रे तिणी परे चीरीयो, जेम करे जमनी सेव जी रे ॥ पु० ॥ १३ ॥ इण अवसरे हवे सुजट ते कंसना, आवे मारण तामो जी रे ॥ कोप्यो थंज उपाडी मंचनो, आवे वलदेव आमो जी रे ॥ पु० ॥ १४ ॥ यम सम देखी सहु नाठा तिहां, कृष्ण माख्यो कंस जी रे ॥ रंगमंडपने रे वाहिर नाखीयो, लोक करे परशंस जी रे ॥ पु० ॥ १५ ॥ पहेलां कंसे रे सैन्य तेडावीयुं, मागी जरासंध पास जी रे ॥ रण करवाने रे ते सहु सज्ज थया, धरता अधिक उल्लास जी रे ॥ पु० ॥ १६ ॥ समुद्रविजय प्रमुख उठे एहवे, यादव वहु वलवंता जी रे ॥ जुद्ध करतां रे नाठा ते हवे, नायक विणु ते अकंता जी रे ॥ पु० ॥ १७ ॥ नाम अनाधृष्टकुमर ते आवीयो, रथ वेसाडे तास जी रे ॥ यादव सहुने जेला मेलीया, श्रीवसुदेव आवासो जी रे ॥ पु० ॥ १८ ॥ हरखे देखी रे वलदेव कृष्णने, सामो जइ आलिंगे जी रे ॥ निज अंके वेसारे कृष्णने, वलदेवने निज संगे जी रे ॥ पु० ॥ ॥ १९ ॥ चुंवे शिर हवे श्रीवसुदेवजी, संजलावे सहु वात जी रे ॥ करे प्रशंसा रे समुद्रविजय सवे, देवकी प्रमुख ते मात जी रे ॥ पु० ॥ २० ॥ यादव सहुए रे कृष्णनी आणथी, मथुरा नयरी राय जी रे ॥ करे अजिषेक उग्र ते सेनने, जग जशवाद गवाय जी रे ॥ पु० ॥ २१ ॥ सत्यजामा परणावी कृष्णने, मोछव करीय अपारो जी रे ॥ यादव सहुए रे इम सुखमां रहे, पाम्या सहु जयकारो जी रे ॥ पु० ॥ २२ ॥ पहेले अधिकारे दशमी कही, ढाल ते त्रीजे खंडे जी रे ॥ पंमित उत्तमविजयनो शिशु कहे, पद्म ते रंग अखंडे जी रे ॥ पु० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ३१९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीवजशा ते सांजली, करती वहु पोकार ॥ शिर कूटे पीटे हियुं, मरण सुणी जरतार ॥ १ ॥ जीवजशा ते कोपथी, जल अंजलि नवि दाय ॥ कहे इणी परे वाचा मुखे, सांजलजो सहु राय ॥ २ ॥ सहु जादवनो क्षय करी, एह कृष्ण वलदेव ॥ नंद कुटुंव सहित वली, क्षय करशुं हवे हेव ॥ ३ ॥ मृतकारज करशुं पछे, इणी परे कही ते नार ॥ राजगृही नगरे गइ, धरती दुःख अपार ॥ ४ ॥ छूटा केश रुदन करे, तात आगे पोकार ॥ जर्त्तावध संजलावीयो, पूछे व्यतिकर त्यार ॥ ५ ॥ अयमत्ता मुनि प्रमुखनो, जाखे सहु विरतंत ॥ जरासंध वोले तदा, शुं कहीये तुज कंत

॥ ६ ॥ कह्युं होत मुज आगले, करत हुं देवकी नाश ॥ खेत्र विना कृषि किहां थकी, धर्म विना दयावास ॥ ७ ॥ सीम गाम विणु नवि होये, नारी विना सुत नांहि ॥ प्रज्ञा विणु विद्या नहीं, देवकी विना ए क्यांहि ॥ ८ ॥ दोष कुशील नारी वली, व्याधि शत्रु खल दुष्ट ॥ अग्नि वली ए सातने, दुःख दीये करतां पुष्ट ॥ ९ ॥ मत रोवे तुं बालिका, फेडुं एहनुं ठाम ॥ जामाता जेणे हण्यो, एह अनार्य कह्युं काम ॥ १० ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ देशी हांजानी ॥ जरासंध हवे मोकले, सोमक अन्निधाने, शीखवीयो माने, संजलावो काने, समुद्रविजयने, तुम्हे इणी परे रे ॥ १ ॥ ते पण जइ तस पास रे, जाखे इम वाणी, कंसनी जे राणी, तुम्हथी दुवाणी, इम मन जाणी, मुज मोकल्यो रे ॥ २ ॥ जामाता अमचो हण्यो, कृष्णे वली रामे, तुम्हे सेवक ठामे, सुखमां रहो धामे, मारण कामे, अम्ह बिहुं आपीये रे ॥ ३ ॥ जो निज वांछो रिद्धिने, तो वार म लावो, समुद्र राय चावो, बोले इम ठावो, वैर वधरावो, किण कारणे रे ॥ ४ ॥ बंधुवेरे मारीयो, जो कृष्णे कंस, न करो खेद अंश, न्याये होये शंस, वखाणे वंश, लोक आपणो रे ॥ ५ ॥ एहमां अनीति नथी कांय रे, दीधी तुम्हे बेटी, ते दुःखनी चेटी, विधिए तुम्ह जेटी, सुख मेटी, दुःख केम करो रे ॥ ६ ॥ ते माटे निज बंधुनां, सहेशो कुण वेर, इम कह्युं बहु पेर, म करो ए चेर, जाउ घेर, तुम्हे इम सुणी रे ॥ ७ ॥ प्राण समा मुज पुत्रने, जाचंतां एह, नवि लज्जा केह, वसुदेव कहे जेह, काम तेह, केम कीजीये रे ॥ ८ ॥ सोमक बोले ताम रे, न घटे तुम्ह एहवुं, जुत्ताजुत्त कहेवुं, जस आगे रहेवुं, वहेवुं, जेह कहे सवे रे ॥ ९ ॥ तेहनुं बल बहु देखीये, सायर डोजावे, तुमे गोपद दावे, महोटाश जणावे, मंगावे, गोवालीया रे ॥ १० ॥ तेह नहीं असमथ रे, लेवाने पोते, बलीयाशुं जोते, विरोध न होते, अणमोते, न मरी जीये रे ॥ ११ ॥ यतः ॥ अनुचितकर्मारंजः, स्वजनविरोधो बलीयसी स्पर्द्धा ॥ प्रमदाजनविश्वासो, मृत्युद्वाराणि चत्वारि ॥ १ ॥ कृष्ण बोले तव एम रे, शो गर्व वहो छो, अम्हे बहु इम कहो छो, नवि शोज लहो छो, काम दहो छो, तुम्हे निज तणो रे ॥ १२ ॥ बहु ताराए करी परवस्यो, देखो तुम्हे चंदो, राहु करे फंदो, इम कहे गोविंदो, अमचो इंदो, ए अम्हे

नवि गणुं रे ॥ १३॥ बहु पत्त परिगत रुंख रे, पण आवे वाय, सहु दूर उमा-
य, तेम बहु तुम्हे थाय, गर्व कांय, रे करो वापमा रे ॥ १४ ॥ स्नेह ते
पालवा कारणे, अमे बोलुं नांहीं, तिणे सेवक आंही, तुम्हे ठाकुर मांहि,
कहेतां उछांहि, लाजो केम नहीं रे ॥ १५ ॥ विक्रम नित आयत्त रे, जाणो
प्रजुताइ, तुमने केम आइ, नली बुद्धे पाइ, बुद्धि न आइ, नली तुम्ह
कने रे ॥ १६ ॥ आग्रह जे अकार्यमां, तो केम जय थाय, कुलनो क्षय
थाय, घन जेम हो वाय, खोटी थाय, जरासिंधजी रे ॥ १७ ॥ अम्हे
सेवक नहीं एहना, नहीं अमचो स्वाम, अम्ह कंसने ठाम, सोमक कहे
ताम, कहो ठो आम, श्ये कारणे रे॥ १८॥ कुल अंगारा सारिखो, ए कृष्ण
ते उठ्यो, स्वामी तुम्ह रूठ्यो, म करो मद जूठो, थाउ उठो, अदृश्य तेहथी
रे ॥ १९ ॥ समुद्रविजय कहे ताम रे, म करो ताणोताण, एहमां थाय हाण,
मागो इण ठाण, पुत्र मागण विण, ते दीयुं रे ॥ २० ॥ दूत कहे आपो
नहीं रे, तो जाउ दूरे, पाताले पूरे, नहीं तो ते चूरे, ठाम संपूरे, चक्री
राजीयो रे ॥ २१ ॥ अनाधृष्ट कुमार रे, कोपे कलकलीयो, बोले ते बली-
यो, जामाता गलीयो, तेहथी चलीयो, रे चित्त तुम्ह तणो रे॥ २२ ॥ अम्ह
नाइ मार्या एणे रे, तिणे अम्हने ठलीया, कुंअर मुख वलीया, जो अमे
सलसलीया, मलीया, रे जाणो अम्ह जम परे रे॥ २३॥ नहीं खमीये अम्हे
तुज रे, इहांथी जा वहेलो ॥ कहे ते जइ पहेलो, नीकलीयो घेलो, महे-
लो, रे अपजश पामीने रे॥ २४॥ त्रीजे खंडे अग्यारमी रे, पहेले अधिकार,
कही ढाल उदार, पदमे सुखकार, सुणो विस्तार, बोले एहवुं रे॥ २५॥ ३५४॥

॥ दोहा ॥

॥ दश दशार्ह नेला मली, बीजे दिन सहु राय ॥ नैमितिआने तेमीयो,
समुद्रविजय तिण ठाय॥ १॥ पूठे कहो करवुं किस्युं, जरासंध महाराय ॥
त्रणे खंमनो अधिपति, तास विरोध पड्यो आय॥ २॥ तेह कहे सुणो नृप-
ति, राम कृष्ण ए दोय॥ त्रणे खंमना अधिपति, थाशे सुणो सहु कोय ॥
॥३॥ पश्चिम दिश जाउ तुम्हे, सायरतीरे स्वाम॥ सुख समाधि मांहे रहो,
शत्रुक्षय तिण ठाम ॥ ४॥ सत्यनामा प्रसवे जिहां, पुत्रयुगल ते थान
॥ नगर निवेश करजो तिहां, इम सुणीये तस दान ॥ ५ ॥ मथुरा नगरी
मांहिथी, एकादश कुलकोम ॥ शौरीपुरथी नीकली, कुलकोमि सत जोम

॥ ६ ॥ यतः ॥ कुलकोमीमान ॥ एगा कोमाकोमी, सत्ताणवइं च सयसहस्साइं ॥ पणासं च सहस्सा, कुलकोमीणं मुणेयव्वा ॥ १ ॥ दोहो ॥ उग्रसेन मुख राजवी, समुद्रविजय नूपाल ॥ अष्टादश कुलकोमिशुं, चाल्या पुण्य विशाल ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ दक्षिण दोहिलो हो राज, दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥ सोमक दूते हो राज, वात सुणावी हो राज, जरासंधे पावी रे, कोपे ते अति कलकल्या ॥ कालकुमरने हो राज, मोकले राजा हो राज, साथे साजा रे, पांचसें कुमरने मोकल्या ॥ १ ॥ करत प्रतिज्ञा हो राज, कालकुमार हो राज, खावुं हार रे, पेठो जो होय अग्निमां ॥ बहु बल साथे हो राज, जातां तेहने हो राज, तेहवे बेहुने रे, अंतर नवि तेह रानमां ॥ २ ॥ अरध नरतनी हो राज, देवीए जाण्युं हो राज, मनमां आण्युं रे, परवत एक विकुर्वीयो ॥ उंचो पहोलो हो राज, एक दूवारी हो राज, आवी धारे रे, बहु चय बलती ज्वलतीउ ॥ ३ ॥ शिबिर ते देखे हो राज, हस्ति तुरंग हो राज, देखे चंग रे, शूना थांने बांधीया ॥ केइक बलतो हो राज, प्रहरण निरखे हो राज, पाखर परखे रे, ठाम ठाम ते सांधीया ॥ ४ ॥ एक चय पासे हो राज, वृद्ध ते नारी हो राज, वरवेश धारी रे, करुण स्वरे रोती थकी ॥ काल ते पूठे हो राज, रोवे शाने हो राज, तव ते काने रे, संजलावे इणी परे वकी ॥ ५ ॥ जरासंध जयथी हो राज, यादव नाठा हो राज, सांजली घाठा रे, बलथी काल ते आवतो ॥ नासी न शकीया हो राज, पेठा ए चयमां हो राज, क्षयकर घरमां रे, पुत्र कलत्र जन दाऊतो ॥ ६ ॥ कृष्ण ने राम हो राज, जादव बीजा हो राज, अछिमिजा रे, बलीया ए चयमां बली ॥ तिणे हुं रोवुं हो राज, हुं पण मरशुं हो राज, होम ते करशुं रे, देह तणो ते कलकली ॥ ७ ॥ इम कही पेठी हो राज, चयमां सहसा हो राज, देखी तहसा रे, कालादिक कुमर हवे ॥ चिंते एम हो राज, में तो प्रतिज्ञा हो राज, एहवी कन्या रे, लावुं जिहां होये सवे ॥ ८ ॥ इम कही पेठो हो राज, चयमां तेह हो राज, बाली देह रे, कीधी राख ते तिहां कणे ॥ गइ तिहां राति हो राज, विहाणुं विहायुं हो राज, कांय न पायुं रे, यादव राय प्रमुख जिणे ॥ ९ ॥ देवीविलास हो राज, ते सहु देखी हो राज, तेह उवेखी रे, मनमां इणी

परे चिंतवे ॥ देवता पक्षमां हो राज, एहने शुं कहीये हो राज, एहथी मरीये रे, करतां एहशुं कैतवे ॥ १० ॥ पुण्य ते खूटे हो राज, सहु पलटाय हो राज, बुद्धि पण जाये रे, होय प्रतिकूल सहु आपणा ॥ दैव जो थाय हो राज, तेहथी दूरे हो राज, होय अधूरे रे, पुण्ये नवि होय वापना ॥ ११ ॥ राम केशवनो हो राज, अभिनव पुण्यो हो राज, थाय छे शून्यो रे, अम्ह स्वामीनुं संप्रति ॥ माटे करवुं हो राज, जुऊ ते साथे हो राज लेवा वाथे रे, अंगार सुणो नृपति ॥ १२ ॥ जइने कहीये हो राज, चिंती वलीया हो राज, ते घणुं वलीया रे, पण गलीया थया सहु तिहां ॥ कही सहु वात हो राज, मगधनो स्वामी हो राज, मस्तक नामी रे, रोवे कहे शुं थयुं इहां ॥ १३ ॥ पमीयो धरणी हो राज, चेतन वलीयो हो राज, वहु टलवलीयो रे, परिजन सहित ते सांजली ॥ कंस ने काल हो राज, मूआ ते साले हो राज, वा जिम हाले रे, इछित वात ते नवि मली ॥ १४ ॥ सुखमां जातां हो राज, वात ते सुणतां हो राज, तेहज लहेता रे, प्रत्यय कोष्टक निमित्तिडं ॥ पूजी चाल्यो हो राज, मुनिवर मलीयो हो राज, ते तो वलीयो रे, चारण ते चारित्रीयो ॥ १५ ॥ कहे इम वाणी हो राज, समुद्रविजयने हो राज, नमि जिनवरने रे, हरिसेन चक्रीने इणी परे ॥ जिणवर भाखे हो राज, तुमचो पुत्त हो राज, इणी परे उत्त रे, नाम अरिष्टनेम तुम्ह घरे ॥ १६ ॥ राम ने कृष्ण हो राज, नवमा जाणो हो राज, मनमां आणो रे, बलदेव ने वासुदेव ए ॥ इम सुणी हरख्या हो राज, रैवत पासे हो राज, कीधा उल्लासे रे, सन्निवेश ततखेव ए ॥ १७ ॥ कोमी अढार हो राज, कुल तिहां रहेतां हो राज, श्रेयता सहेतां रे, शुज दिवसे एक दिन हवे ॥ प्रसवे पुत्त हो राज, सत्य ते जामा हो राज, जामरजामा रे, जातु नाम ठेरनुं ठवे ॥ १८ ॥ त्रीजे खंडे हो राज, प्रथम अधिकारे हो राज, मनमां धारे रे, बारमी ढाल सोहामणी ॥ गुरु उत्तमनो हो राज, पद्म ते जाखे हो राज, जोए चाखे रे, होंश ते होय तेहने घणी ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ उत्तम दिवस जोइ करी, नाही हवे गोविंद ॥ करी सायर पूजा वली, अठम करे सुखकंद ॥ १ ॥ लवणाधिप आराधीयो, त्रीजा दिननी रात ॥ आसन कंप्युं देवनुं, जाणी कृष्णनी वात ॥ २ ॥ आवी देव ते थानके, रतन

आभरण ते देय ॥ कुसुम मुख पूजा करी, कृष्ण भणी ते देय ॥ ३ ॥ पंच वदन आपे वली, नाम बीजुं पंचजन्य ॥ शंख वली ते रामने, आपे सुघोषह पुण्य ॥ ४ ॥ वस्त्र मणि प्रमुखे करी, पूजे कृष्ण ने राम ॥ केम समस्यो मुजने हवे, भाखो स्वामी काम ॥ ५ ॥ कृष्ण कहे तुम्हे आपीयुं, वासुदेव धुर चार ॥ त्रिपृष्ठ प्रमुख सायर तटे, थानक अति मनोहार ॥ ६ ॥ वासुदेव नवमो अहुं, ए नवमो बलदेव ॥ थानक हवे आपो तुम्हे, अम्हने इहां ततखेव ॥ ७ ॥ समुद्र उसास्यो तिहां थकी, धनद ते शक्रवचन्न ॥ एक अहोरात्रे करी, नगरी साव रतन्न ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ उलगडी आदिनाथनी जो जो ॥ ए देशी ॥ नव जोजन विस्तारथी जो, कांइ बार जोजन लंबाण जो ॥ द्वारिका नामे ते पुरी जो, कांइ अति उन्नत मंडाण जो ॥ पुण्य तणां फल पेखजो जो ॥ १ ॥ ए टेक ॥ भूमि मध्य नव हाथ जे जो, कांइ उंचो हाथ अढार जो ॥ पहोलो नव कर देखीये जो, कांइ दुर्ग ते अति मनोहार जो ॥ पु० ॥ २ ॥ रत्नमय ते निपनो जो, कांइ यंत्रशते सोहंत जो ॥ कोसीसां अति रम्य छे जो, बहु ध्वज महोटा फरकंत जो ॥ पु० ॥ ३ ॥ ॥ शिला संचय तिहां थापीयो जो, कांइ सिंह तणां प्रतिरूप जो ॥ गोख मालाए शोभतो जो, कांइ गोपुर दीसे अनूप जो ॥ पु० ॥ ४ ॥ चोक फेर तिहां खातिका जो, कांइ रतने करी जेह बद्ध जो ॥ विमल जले पूरी घणुं जो, कांइ जलचर बहु तेह मध्य जो ॥ पु० ॥ ५ ॥ कमले संकुल तेह छे जो, शत्रु मने

करे जो,कांइ नंदावर्त गिरिकूट जो ॥ तेहनी पासे शोजता जो,कांइ ते पण स-हेत ते कोट जो ॥ पु० ॥ १२ ॥ ईशान कूणे वसुदेवनो जो, कांइ कुवेरछं-द एहवुं नाम जो ॥ स्त्रीविहारक्रम नामथी जो, कांइ उग्रसेननुं धाम जो ॥ पु० ॥ १३ ॥ सागर धरण पूरण वली जो, कांइ अजिचंद्र नाम कुमार जो ॥ तेहनां नाम घणां अछे जो, पण ग्रंथ थाये विस्तार जो ॥ पु० ॥ १४ ॥ कल्पवृक्षे करी शोजता जो,हवे सहुने मध्ये एक जो ॥ पृथिविजय नामे जलो जो, वलदेव काजे अतिरेक जो ॥ पु० ॥ १५ ॥ सर्वतोजद्र नामे वली जो, अष्टादश जूमि विशाल जो ॥ वासुदेवनो दीपतो जो, करे महोत्त ते सुर ततकाल जो ॥ पु० ॥ १६ ॥ जेहवी सुधर्मा सन्ना अछे जो, ते नाम ते सर्व प्रवास जो ॥ राम कृष्ण गृहपुर जलुं जो, निपजावे देव ते खास जो ॥ ॥ पु० ॥ १७ ॥ एकसो आठ जिनबिंवथी जो, एक शोजित जिनवर चैत्य जो ॥ मेरुशृंग परे शोजतुं जो, कांइ रत्न हिरण्ये करी सहित जो ॥ पु० ॥ ॥ १८ ॥ वनवाडी फूली रही जो, कांइ सरोवर दीर्घिका वाव जो ॥ क्रीडा पर्वत घणुं शोजता जो, कांइ जुवन ते उपर ठाव जो ॥ पु० ॥ १९ ॥ अहो-रात्रे करीने गयो जो, ते नगरी द्वारामती नाम जो ॥ निपजावी कुवेरनी जो, ए तो दीठे बने शुज ठाम जो ॥ पु० ॥ २० ॥ कौस्तुज रतन आपे हवे जो, आवी लवणाधिप सुरराज जो ॥ कौमुदी गदा आपे वली जो, कांइ शक्ति शस्त्र अतिज्राज जो ॥ पु० ॥ २१ ॥ नंदक खड्गरतन जलुं जो, कांइ रुडी रतन वनमाल जो ॥ अक्षय तूण जुगल दीये जो, कांइ कृष्णने पुण्यविशाल जो ॥ पु० ॥ २२ ॥ वाण आशीविष जुत जलुं जो, कांइ शार्ङ्ग चाप वली अस्त्र जो ॥ गरुडध्वज संयुत दीये जो, घणुं रमणिक रथ वहु शस्त्र जो ॥ पु० ॥ २३ ॥ हय गय मुशल आपतो जो, कांइ तालध्वजे करी जुत्त जो ॥रथ आपे घणुं घणुं रुयडो जो, निज थानक जाय गुत्त जो ॥ पु० ॥ २४ ॥ पूर्णजद्र जक्ष आदि दे जो, वतलावे उचित गृह तास जो ॥ वास करे ते थानके जो, सहु जन करता सुविलास जो ॥ पु० ॥ २५ ॥ साडा त्रण दिवस लगे जो, कांइ वरसे आजरण राशि जो ॥ वस्त्र ने रतन कनक वली जो, धन धान्ये जरे आवास जो ॥ पु० ॥ २६ ॥ ऋद्धिवंता सहु मानवी जो, सकल संपूर्ण जे कोश जो ॥ शुं कहीये घणुं तेहनुं जो,थयो सुर नगरी सम जोश जो ॥ पु० ॥ २७ ॥ सुखमां इम जन सहु रहे जो, कांइ त्रीजे

खंडे सार जो ॥ तेरमी अति हर्षे करी जो, कांइ ढाल प्रथम अधिकार जो ॥ पु० ॥ २८ ॥ क्षमाविजय जिनराजनी जो, कांइ सान्निधे नाखी एह जो ॥ उत्तमविजय गुरु तणो जो, कहे पद्मविजय गुणगेह जो ॥ पु० ॥ ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१७ ॥ इति श्रीमदुत्तमविजयपदपद्मभृंगतुल्यपद्मविजयविरचिते श्रीमन्नेमिजिनचरित्रे प्राकृतप्रबंधे रामकृष्णअरिष्टनेमिजन्मकंसवधद्वारिकानिवेशकीर्त्तननामनि तृतीयखंडे प्रथमोऽधिकारः समाप्तः॥१॥

॥ अथ तृतीय खंमस्य द्वितीयोऽधिकारः प्रारज्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिन शारद गुरुपद नमी, नमी विद्यागुरु राय ॥ कहुं बीजो अधिकार हवे, अचरिज अधिक सोहाय ॥ १ ॥ अरिहा नेमकुमर हवे, बाल अबाल चरित्त ॥ सुर नर सेवित जगपति, सकल कलागम चित्त ॥ २ ॥ त्रण ज्ञानी जिनवर कहे, नावी वात समग्ग ॥ अद्भुत नाण जिणंदनुं, देखी यादववग्ग ॥ ३ ॥ राम कृष्ण सेवा करे, क्रीमा करे जिन साथ ॥ यौवन पाम्या जिनवरु, उंचा चालीश हाथ ॥ ४ ॥ सार सार पुजले करी, कर्युं जिणंद शरीर ॥ निज गुणथी जिनराज जी, अधकृत सायर नीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ समुद्रविजय सुत चंदलो ॥ साहेलमीयां ॥ ए देशी ॥ मरकत मणि ठाया सम ॥ सासलीया जी ॥ जस कांति दीपे मनोहार ॥ वलथी वलीया जी ॥ पदतल शोणित जेहवां ॥ सा० ॥ कछपने ते अनुहार ॥ व० ॥ १ ॥ मोक्ष नगरी पुर बारणे ॥ सा० ॥ तोरणने काजे थंज ॥ व० ॥ मरकत मणिमयी एह ठे ॥ सा० ॥ जंघानो मानुं विजूंज ॥ व० ॥ २ ॥ कुर्गति नयरी बारणे ॥ सा० ॥ मानुं अगला एह तैयार ॥ व० ॥ त्रणे जुवनने राखवा ॥ सा० ॥ मानुं बांहमी जेहनी सार ॥ व० ॥ ३ ॥ धर्मधुरा वहेवा जणी ॥ ॥ सा० ॥ वृषजोन्नत जेहना खंध ॥ व० ॥ नवजलधर गंजीर ठे ॥ सा० ॥ जस शब्द तणे परबंध ॥ व० ॥ ४ ॥ विद्रुम सम राजे जला ॥ सा० ॥ जस अधर अरुण सुरसाल ॥ व० ॥ दंत जिसा दामिमकली ॥ सा० ॥ शोजे जेहने तिणे ताल ॥ व० ॥ ५ ॥ नासिका सरल ते मन परे ॥ सा० ॥ जे नेत्र कमलनी नाल ॥ व० ॥ अर्द्धचंद्र सम जाल ठे ॥ सा० ॥ वदन ते चंद

रसाल ॥ व० ॥ ६ ॥ वर्णन कोण करी शके ॥ सा० ॥ जिन गुणनो अगम अपार ॥ व० ॥ जिन पण जिन गुण वर्णवे ॥ सा० ॥ पण कहे सामान्य विचार ॥ व० ॥ ७ ॥ सहु सुर जो नेला मली ॥ सा० ॥ करे रूप अंगुष्ट प्रमाण ॥ व० ॥ जिनवर अंगुष्ट आगले ॥ सा० ॥ शोने इंगालने ठाण ॥ व० ॥ ८ ॥ राम कृष्णना रूपथी ॥ सा० ॥ होय अनंत गुणुं सुररूप ॥ व० ॥ गणधर रूप अनंत गुणुं ॥ सा० ॥ जिन अनंत गुणुं ते अनूप ॥ व० ॥ ए ॥ रूप कथा पूरी थइ ॥ सा० ॥ एह उपर जगमां नांहि ॥ व० ॥ तो अम्ह शक्ति ते केटली ॥ सा० ॥ शिरोमणि मूरख मांहि ॥ व० ॥ १० ॥ जिहां जिहां प्रनुजी संचरे ॥ सा० ॥ तिहां सघली पुरनी नार ॥ व० ॥ हसतां रमतां वेसतां ॥ सा० ॥ सहु ध्यावे नेमकुमार ॥ व० ॥ ११ ॥ घर कारय पण नवि करे ॥ सा० ॥ नवि नोजन करे चित्त लाय ॥ व० ॥ वरते चित्तडुं ते नेममां ॥ सा० ॥ उंघमांथी नमकी धाय ॥ व० ॥ १२ ॥ नेमजी देखी दिल ठरे ॥ सा० ॥ थाय सहुए परवश काम ॥ व० ॥ तिलतुप मात्र चले नहीं ॥ सा० ॥ जिनवरनुं शील उद्दाम ॥ व० ॥ १३ ॥ ब्रह्मचारी जे वालथी ॥ सा० ॥ यौवनमां जीत्यो काम ॥ व० ॥ काम महावलीयो कह्यो ॥ सा० ॥ नवि राखे कोयनी माम ॥ व० ॥ १४ ॥ यतः ॥ यौवनेऽसौ स्मरजयो, विशेषादिह योगिनां ॥ डुस्तरोऽब्धिः स्वनावेन, किं पुनर्ग्रीष्मनीषणे ॥ १ ॥ काम महाग्रह वोलीयो ॥ सा० ॥ डुःखदायक विरही लोक ॥ व० ॥ मेलां रहेवुं सोहेलुं ॥ सा० ॥ तेहमां नवि उपजे शोक ॥ व० ॥ १५ ॥ सुकर ते डुःकर तप कस्यो ॥ सा० ॥ इंद्रिय जय सोहिलो थाय ॥ व० ॥ वनवासीपणुं सोहिलुं ॥ सा० ॥ उन्ना ते सहेल रहेवाय ॥ व० ॥ १६ ॥ क्रिया ते करवी सोहिली ॥ सा० ॥ उतरवो सहेल समुद्र ॥ व० ॥ सहेल कही आतापना ॥ सा० ॥ पुन्ये वंश इंद्र नरेंद्र ॥ व० ॥ १७ ॥ मौनपणुं वली सोहिलुं ॥ सा० ॥ सहेली गुरुसेवा जाण ॥ व० ॥ शास्त्र ते नणवां सोहिलां ॥ सा० ॥ जीते वहुला राजान ॥ व० ॥ ॥ १८ ॥ सहुथी डुःकर काम ठे ॥ सा० ॥ सहुने एह पाडे माम ॥ व० ॥ त्रणे खंमनो अधिपति ॥ सा० ॥ रावणने ठंमाव्युं ठाम ॥ व० ॥ १ए ॥ यतः ॥ मत्तेनकुंनदलने नुवि संति शूराः, केऽपि प्रचंमृगराजवधेऽपि शक्ताः ॥ किंतु ब्रवीमि वलिनां नवतां पुरस्ता,-त्कंदर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः

॥ २ ॥ नेमि जिनेश्वरे कामने ॥ सा० ॥ करी मूक्यो दासने ठाम ॥ व० ॥ यौवन अपजश विण रह्युं ॥ सा० ॥ हुं प्रणमुं तस शिर नाम ॥ व० ॥२०॥ यतः ॥ अतिवाहितमतिगहनं, विनापवादेन यौवनं येन ॥ दोषनिधाने जन्मनि, किं न प्राप्तं फलं तेन ॥ ३ ॥ बलिहारी प्रभु नेमनी ॥ सा० ॥ यौवनवय मांहि जेण ॥ व० ॥ अंगथी अनंगने जीतीयो ॥ सा० ॥ उपजे मुज अचरिज तेण ॥ व० ॥ २१ ॥ अग्नि मांहि पेसे घणा ॥ सा० ॥ दारे निज शस्त्रे अंग ॥ व० ॥ विधि चित्र प्राणी रचे ॥ सा० ॥ विरला जग जीत अनंग ॥ व० ॥२२॥ यतः ॥ अह्नाय वह्नौ वहवो विशंति, शस्त्रे स्वगात्राणि विदारयंति ॥ कष्टानि चित्राणि समाचरंति, माररिवीरं विरला जयंति ॥ ४ ॥ अक्रूरादिक बांधवा ॥ सा० ॥ सहु जिनवरना गुण गाय ॥ व० ॥ नवि रहे जिनथी वेगला ॥ सा० ॥ रमणी गुणी सुभट सहाय ॥ व० ॥ २३ ॥ प्रभु विक्रम सौभाग्यमां ॥ सा० ॥ सहु लोक तिहां आसक्त ॥ व० ॥ बहु कन्या वरवा भणी ॥ सा० ॥ राय आवी बहुल कहंत ॥ व० ॥ २४ ॥ जिनवर नेम माने नहीं ॥ सा० ॥ विवाहनाम मन मांह ॥ व० ॥ जाणे स्वरूप संसारनुं ॥ सा० ॥ हणीयो कंदर्प उछाह ॥ व० ॥ २५ ॥ त्रीजे खंडे ए कही ॥ सा० ॥ बीजे अधिकारे ढाल ॥ व० ॥ पहेली पभ्रे हर्षेशुं ॥ सा० ॥ जिनवरनुं चरित्र रसाल ॥ व० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन नारद आवीया, भमतां कृष्णने गेह ॥ गया अंतेउरमां हवे, पूज्या पछे सनेह ॥ १ ॥ आरीसो जोतां थका, न दीये आदरमान ॥ रूठा नारद ऋषि तदा, सत्यभामा भणी जाण ॥ २ ॥ मन चिंते ऋषि इणी परे, आणुं एहने शोक्य ॥ शोक्य शोक भाजन थशे, फल पामे ए रोक ॥ ३ ॥ कुंडिनपुर पहोतो वली, भीष्मक रायने गेह ॥ जसोमती नारी रुक्ष्मी, रुकमी सुत ससनेह ॥४॥ रुक्मिणी पुत्री तेहने, रूपकलानुं गेह ॥ राय-सभामां जइ कहे, कृष्णने योग्य छे एह ॥ ५ ॥ रुक्मिणी कृष्ण रागी थइ, ध्यान धरे नित तास ॥ रुक्मिणी रूप आलेखीने, आवे कृष्णनी पास ॥ ६ ॥ कृष्ण पूछे नारद प्रते, कुण ए देवीरूप ॥ तव हसतो नारद कहे, मानुष्यणी अनूप ॥ ७ ॥ वात सुणी रागी थयो, कृष्ण मोकले दूत ॥ तेह कहे [illegible] आपीये, एह तो गोपनो पुत ॥ ८ ॥ परणावुं शिशुपालने, दूत वल्यो

सुणी वात ॥ वात कही ते कृष्णने, ते पण कोप जरात ॥ ए ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ चंद्रबाहु जिनराज, थां परवारीहो ॥ ए देशी ॥ अपहरी ते रुक्मिणी मृगनयणी, केम्री करी शिशुपाले हो ॥ राम कृष्ण दोय पुण्यथी जारी हो ॥ ए आंकणी ॥ वहु आश्चर्य नारीने देखावी, जीत लीयो ततकाल हो ॥ राम० ॥ १ ॥ रुक्मिणी कहे सुणो स्वामी जी मोरा, वहोत अछे तुम्ह नारी हो ॥ राम० ॥ वहु रिद्धे परिवारे आवी, हुं तो एकाकिणी हारी हो ॥ राम० ॥ २ ॥ हसवा योग्य न थाउं तेहने, तेम करजो मुज स्वामी हो ॥ रा० ॥ कृष्ण कहे तेम करशुं सरवे, जेम तुजने सहु नामी हो ॥ रा० ॥ ॥ ३ ॥ करी गंधर्वविवाह ते साथे, जोगवे जोग ते राते हो ॥ राम० ॥ जामा पूछे प्रियाने देखावो, तव इणी परे कहे वाते हो ॥ राम० ॥ ४ ॥ उद्याने लखमी घरे वेठी, तुज देखावशुं देव हो ॥ रा० ॥ लखमीथानक रुक्मिणी थापी, करवा उल ततखेव हो ॥ राम० ॥ ५ ॥ चाली सपत्नी सहित ते जोवा, लखमी रूप वखाणे हो ॥ रा० ॥ कोइ शिल्पी एह रुमो दीसे, रूप एहवुं इण ठाणे हो ॥ रा० ॥ ६ ॥ इम कहेती लली लली पाय प्रणमे, मुख इणी परे कहे वाणी हो ॥ रा० ॥ लखमी देवी तेम करो मुजने, जेम नवि माने नवी राणी हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ जो मुज वंछित थाशे सघलां, पूजा करीश तुज आवी हो ॥ रा० ॥ इम करी कृष्ण पासे जइ जाखे, स्वामी प्रिया किहां ठावी हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ कृष्ण उठीने जोवा रे चाल्या, साथे जामा नारी हो ॥ रा० ॥ कृष्ण देखीने उन्नी थावे, रुक्मिणी नारी ते सारी हो ॥ रा० ॥ ए ॥ हरि हसीने कहे दोष न एहमां, इन्ना वंदन कारी हो ॥ रा० ॥ थइ विलखी घर आवी जामा, रुक्मिणी मानी ते वारी हो ॥ रा० ॥ १० ॥ रुक्मिणीने वहु ऋद्धि आपीने, प्रीति करी तिणे जारी हो ॥ रा० ॥ वास दीयो जामा घर पासे, जोग जोगवे सुखकारी हो ॥ रा० ॥ ॥ ११ ॥ नारद कहे एक दिन हवे आवी, वात ए मुज मन आय हो ॥ ॥ रा० ॥ वैताढ्ये जंबु नगरीए, जंबव नाम ते राय हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ शिवचंदा नामे तस नारी, जांबूवती नाम धूया हो ॥ रा० ॥ तस गुण सांजली कृष्ण ते चाल्या, ते अपहरीने आया हो ॥ रा० ॥ १३ ॥ युद्ध थयुं तस तात संगाथे, जीत्या ते ततकाल हो ॥ रा० ॥ परणी पुत्री जंबव रायनी,

लइ चाल्या ते चाल हो ॥ रा० ॥ १४ ॥ सिंहलद्वीप अधिपनी पुत्री, परएया लखमणा रुमी हो ॥ रा० ॥ राष्ट्रवर्द्धन राय पुत्री परणे, सुसीमा नाम न कूमी हो ॥ रा० ॥ १५ ॥ युद्ध करी जीत्या महाराया, लखमणा पासे आवास हो ॥ रा० ॥ वीतभय नयरना स्वामीनी पुत्री, गौरी नाम सुवास हो ॥ रा० ॥ ॥ १६ ॥ तेहने पण जइ कृष्ण ते परण्या, हवे हिरण्यनाभ राजा हो ॥ रा० ॥ पद्मावती तस पुत्री रुमी, मात पिता पख ताजा हो ॥ रा० ॥ १७ ॥ अपहरी रण करी तेहशुं जीती, परएया प्रेमथी नारी हो ॥ रा० ॥ गंधारस्वामीनी गंधारी पुत्री, परएया मनमां धारी हो ॥ रा० ॥ १८ ॥ अग्रमहिषी परणी आठे, करे आवास समीपे हो ॥ रा० ॥ सुख भोगवतां काल गमावे, सुरसुखने पण जीपे हो ॥ रा० ॥ १९ ॥ रुक्मिणीने घरे एक दिन आव्या, अयमत्ता ऋषिराय हो ॥ रा० ॥ भामा पण रुक्मिणी घर आवी, देखी ऋषि तिणे ठाय हो ॥ रा० ॥ २० ॥ त्रीजे खंडे बीजे अधिकारे, बीजी ढाल रसाली हो ॥ रा० ॥ उत्तमविजय गुरु सान्निधथी, पद्म कहे ग्रंथ भाली हो ॥ रा० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनिवरने पूछे इस्युं, मुनिने करी परणाम ॥ पुत्र थशे के मुझ नहीं, कहे मुनिवर गुणधाम ॥ १ ॥ पुत्र थशे कृष्णज समो, इम कही मुनिवर जाय ॥ रुक्मिणीने भामा कहे, पुत्र ते माहरे थाय ॥ २ ॥ मुनिवर मुझने कही गया, रुक्मिणी भाखे ताम ॥ ठलथी मुनिवच नवि फले, पुत्र महारो इण ठाम ॥ ३ ॥ इम विवाद करती थकी, गइ ते कृष्णनी पास ॥ डुर्योधन राजा तिहां, बेठो छे सुविलास ॥ ४ ॥ डुर्योधनने इम कहे, सत्यभामा सुणो स्वाम ॥ जामाता तुम्हचो थशे, अमचो सुत सुखकाम ॥ ५ ॥ रुक्मिणी पण इणी परे कहे, डुर्योधन कहे ताम ॥ देशुं पुत्री तेहने, पुत्र थशे जस जाम ॥ ६ ॥ भामा कहे सुत प्रथम जे, प्रसवे तास विवाह ॥ आपे केश मस्तक तणा, इम पण कहे उछाह ॥ ७ ॥ राम कृष्ण मुख राजवी, साखी राखी जाय ॥ भाखी इम उभक थकी, पहोती निज निज ठाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ हांरे दिल लगारे वादल वरणी, हांरे चित्त हरणी ॥ दिल० ॥ ए देशी ॥ हांरे सूती एक दिन कृष्णनी घरणी, हांरे जे बीजी परणी ॥ ए आंकणी ॥ बेठी

वृषन उज्ज्वल हुं उपर, देखे सुपनुं एहवुं ॥ सु० ॥ महा शुक्रथी कोइ देव चवीने, गर्न मांहि थयुं रहेवुं ॥ सु० ॥ १ ॥ हरिने तेह सुपन संजलावे, हरि कहे तुज सुत होशे ॥ सु० ॥ वात सुणी नामा मन खीजी, कोपी अति असंतोषे ॥ सु० ॥ २ ॥ एक दिन कपटे हरिने नाखे, सुपने गज में दीगे ॥ सु० ॥ कूट जाएयुं पण कहे सुत थाशे, रूपे अतिहि उक्तिठो ॥ सु० ॥ ३ ॥ दैवयोगे रह्यो गर्न नामाने, उदर वधे हवे निते ॥ सु० ॥ नामा उदर तो गागर सरखुं, होतां काल व्यतीते ॥ सु० ॥ ४ ॥ रुक्मिणी घणुं गर्न ते उत्तम, न जणाये तस उदरे ॥ सु० ॥ नामा नाखे हरिने इणी परे, जुउ अम्ह बेहुने उदरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ रुक्मिणीए मायाए नाख्युं, इम जव बोली नामा ॥ सु० ॥ आवी वधामणी पुत्र ते प्रसवे, तुम्ह रुक्मिणी जे वामा ॥ सु० ॥ ६ ॥ क्रोध विह्वल थइ नामा सुणीने, प्रसवे पुत्र ते एहवे ॥ सु० ॥ नानु नाम नामाना सुतनुं, दीधुं सुणो हवे तेहवे ॥ सु० ॥ ७ ॥ हरि एक दिन गया रुक्मिणी सदने, पुत्र लीये निज खोले ॥ सु० ॥ नाम प्रद्युमन ते नाम वे तेहनुं, सुण सुण शब्द ते बोले ॥ सु० ॥ ८ ॥ धूमकेतु सुर पूरव वैरे, रुक्मिणी रूपने धरतो ॥ सु० ॥ कृष्णनी पासे आवी मागी, तेह बालकने हरतो ॥ सु० ॥ ए ॥ नूतरमण उद्याने पहोतो, टंकशिलानी पासे ॥ सु० ॥ चिंते आस्फाली नवि मारुं, मरशे सहेजे ए आशे ॥ सु० ॥ ॥ १० ॥ इम चिंती ते मूकी चाल्यो, चरमशरीरी ते बाल ॥ सु० ॥ निरुपक्रम आयुने धरतो, सुखमां रहे तिणे काल ॥ सु० ॥ ११ ॥ अग्निज्वाल पुरथी निज नगरे, संवर खेचर जातो ॥ सु० ॥ तास विमान खल्युं तिणे थाने, बाल जुए शुन गातो ॥ सु० ॥ १२ ॥ कनकमाला निज नारीने आपे, निज नगरे ते जावे ॥ सु० ॥ गूढगर्जा प्रसवे मुज नारी, सुत एम लोक जणावे ॥ सु० ॥ १३ ॥ पुत्रउत्सव करी नाम ते थापे, प्रद्युम्न रुडुं जास ॥ सु० ॥ रुक्मिणी हवे हरि पासे मागे, पुत्र दीउ उल्लास ॥ सु० ॥ १४ ॥ रुक्मिणीने पूछे हरि एहवुं, ताहरो सुत कहे किहां छे ॥ सु० ॥ कहे स्वामी तुम्हे हमणां लीधो, ठगविद्या केम इहां छे ॥ सु० ॥ १५ ॥ विलखा थया हवे कृष्णजी मनमां, चिंते ठग्यो मुज कोइ ॥ सु० ॥ खोल करी पण नवि कहीं लीधो, सहु दिश चाली जोइ ॥ सु० ॥ १६ ॥ मूर्छा रुक्मिणी पामे चेतन, वलवले परिजन सघलो ॥ सु० ॥ यादव यादवपत्नी रोवे, दुःख मांहे थयो

काम रे ॥ १४ ॥ तुझ माता मरीने तेह, सोमभूति विप्र रे ॥ तस रुक्मिणी नामे नाम, हुइ ते क्षिप्र रे ॥ जितशत्रुए दीठी नार, निज घर लावे रे ॥ मरी त्रण पल्योपम आय, नारक थावे रे॥ १५ ॥ तिहांथी वली हरण थाय, घाय लहीने रे ॥ श्रेष्ठिसुत वली गज थाय,कर्म वहीने रे ॥ जातिसमरण वली पामी, तिहांथी चवीने रे ॥ वैमानिक सुर त्रण पल्य, आय भवीने रे ॥ १६ ॥ चवी तिहांथी थयो चंमाल, एह ते दीसे रे ॥ रुक्मिणी भव भमी शुनी एह, देखी हींसे रे ॥ ते तो पूरणभद्र,जाति संभारी रे॥ चंमाल शुनी प्रतिबोध, दीये तिण वारी रे॥ १७॥ वैराग्य लही चंमाल, अणसण मास रे ॥ पाली नंदीसर द्वीप, सुर थयो खास रे ॥ हवे शुनी अणसण पाली, शंखपुरीमां रे ॥ सुदर्शना राजनी धूय, रूप धूरीमां रे ॥ १८ ॥ मुनि महेंद्र आव्या फेर, पूछे तास रे ॥ पूर्णभद्र मणिभद्र वात, बोध्या जास रे ॥ पूर्णभद्र मणिभद्रे तास, वली कस्यो बोध रे ॥ लेइ दीक्षा गइ देवलोक, करती शोध रे ॥ १९ ॥ पूर्णभद्र मणिभद्र दोय, सोहमदेव रे ॥ श्रावकव्रत पूरे भाव, कीधी सेव रे ॥ हथिणाउर नगरे राय, विष्वक्सेन रे ॥ मधु कैटभ नामे दोय, शुभ धर्मेण रे॥ २० ॥ वटपुरमां थयो राजान, कनकप्रभ नामे रे ॥ बहु भव भमी नंदी देव, पुण्ये जामे रे ॥ बहु भव भमी नारी देव, हवे ते राणी रे ॥ थइ चंद्राभा इण नाम, जगमां जाणी रे ॥ २१ ॥ विष्वक्सेन थापे राज्य, मधु निज सुतने रे ॥ कैटभ युवराज्ये थापी, थइ गुणयुतने रे ॥ लेइ दीक्षा गयो देवलोक,हवे मधु राय रे ॥ त्रण भुवनमां जश ने कीर्त्ति, जास गवाय रे ॥ २२ ॥ एक भीम पल्लिपति तास, देशने लूसे रे ॥ मधु चढीयो हणवा तास, वढोले रोपे रे ॥ वटपुरे कनकप्रभ राय, मारग मलीयो रे॥ करी पूजा ने सत्कार, हेजे हलीयो रे॥ २३ ॥ त्रीजे खंडे ढाल, चोथी भाखी रे ॥ एह बीजे अधिकार, चित्तमां राखी रे ॥ गुरु उत्तमविजयनी सेव, मुझने लाधी रे ॥ कहे पद्मविजय भली भात, उद्यम साधी रे ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ १२३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ भोजन कनकप्रभने घरे, करे ते मधु राजान ॥ चंद्राभा नारी सहित, प्राभृतनुं करे दान ॥१॥ मधुने प्रणमी नारी ते, गइ अंतेउर मांहि ॥ कामातुर मधु नृप थयो, चाल्यो जीतण त्यांहि ॥ २ ॥ जीतीने पाछो वल्यो,

आव्यो वटपुर तेह ॥ मागे चंद्राजा प्रते, पण नवि आपे एह ॥ ३ ॥ जो ब्रह्मांम त्रूटी पडे, नारी दीधी केम जाय ॥ एक हाणि हांसुं वली, सहु जन मांहे थाय ॥ ४ ॥ नवि दीधी ते कारणे, वलथी ते लेइ जाय ॥ कनकप्रन्न मूर्छित थयो, श्वासोन्नास न माय ॥ ५ ॥ चेत लहीने आरडे, करे विलाप अनेक ॥ मदमाता घेला परे, थयो कनक अतिरेक ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ दीठी हो प्रन्नु, दीठी जगगुरु तुऊ ॥ ए देशी ॥ राजा हो हवे राजा चंद्राजा पास, जावे हो हवे जावे तव पूछे इस्युं रे ॥ आव्या हो हवे आव्या तुम्हे बहु काल, कारण हो प्रन्नु कारण नाखो तुम्हे किस्युं रे ॥ १ ॥ राजा हो हवे राजा बोले ताम, शिक्षा हो अमे शिक्षा देवाने रह्या रे ॥ परस्त्री हो वली परस्त्री वंछे तास, नाखे हो राणी नाखे ते, पूज्यज कह्या रे ॥ २ ॥ बोले हो तव बोले मधु नृप एम, नाख्या हो राणी नाख्या डुष्ट ते ग्रंथमां रे ॥ राणी हो तव राणी कहे तुं विचारी, न्याय हो प्रन्नु न्याय शिरोमणि पंथमां रे ॥ ३ ॥ सांनली हो राय सांनली लाज्यो तेह, देखे हो तिहां देखे इणी अवसर इस्यो रे ॥ गातो हो नृप गातो नाचतो राह, स्वामी हो तिहां स्वामी चंद्राना मति खस्यो रे ॥ ४ ॥ भिंन्ने हो तेह भिंन्ने परिवृत दीठ, चिंतवे हो तव चिंतवे चंद्रान्ना तिहां रे ॥ माहरे हो एह माहरे वियोगे एम, पामे हो जुठे पामे डुःख धिग् मुऊ इहां रे ॥५॥ मधुने हो तिहां मधुने देखावे तास, ते पण हो लह्यो ते पण पश्चात्तापने रे ॥ धुंधु हो सुत धुंधुने थापी राज, कैटन्न हो युत कैटन्न युत व्रत थापीने रे ॥ ६ ॥ विमल हो गुरु विमलवाहननी पास, तप तपी हो बिहु तप तपी द्वादश अंग नएया रे ॥ अनशन हो करी अनशन महा शुक्रे थाय, देव हो रुमा देव सामानिकपणे मुएया रे ॥ ७ ॥ कनक हो प्रन्न कनकप्रन्न सही डुःख, धूम हो केतु धूमकेतु ज्योतिष थयो रे ॥ सांनरूं हो तस सांनरूं पूरव वैर, गलीयो हो तेह गलीयो डुःख देइ नवि नयो रे ॥ ८ ॥ चवीने हो तेह चवीने तापस थाय, देवता हो वली देवता वैमानिक नलो रे ॥ तिहां पण हो तेह तिहां पण महा ऋद्धिवंत, देइ हो डुःख देइ नवि शक्यो एकलो रे ॥ ए ॥ चवीने हो वली चवीने नम्यो संसार, कर्मे हो थयो कर्मे धूमकेतु वली रे ॥ इण समे हो तेह इण समे मधुनो जीव, शुक्रथी हो हवे शुक्रथी रुक्मिणीउरे वली रे ॥ १० ॥ पूरव हो तेह पूरव वैर

संचारी, हरीयो हो तेणे हरीयो सीमंधर कहे रे ॥ सोले हो वली सोले वरसे तास, मलशे हो माय मलशे तव मन सुख लहे रे ॥ ११ ॥ नारद हो हवे नारद पूछे एम, प्रभुजी हो प्रभु प्रभुजी शे करमे करी रे ॥ रुक्मिणी हो प्रभु रुक्मिणी लहीय वियोग, भाखे हो प्रभु भाखे सीमंधर चरी रे ॥ १२ ॥ भरते हो सुणी भरत जंबुद्वीप मांहि, मगधे हो वसे मगधे लखमीपुर भलुं रे ॥ ब्राह्मण हो तिहां ब्राह्मण छे सोमदेव, लखमी हो वती लखमीवतीशुं मन मल्युं रे ॥ १३ ॥ वनमां हो हवे वनमां एक दिन जाय, मोरनुं हो तिहां मोरनुं इंडुं देखती रे ॥ फरसे हो करे फरसे जब ते अंड, अंडनी हो तिहां अंडनी मात ते पेखती रे ॥ १४ ॥ इंडुं हो तेह इंडुं वर्णांतर थाय, मात हो तस माता नवि उलखे यदा रे ॥ काले हो वली काले लही ते इंड, उलख्युं हो तव उलख्युं इंडुं निज तदा रे ॥ १५ ॥ एक दिन हो वली एक दिन जाये उद्यान, देखे हो तेह देखे अंड महोटुं थयुं रे ॥ लेइ हो तस लेइने जाये गेह, माता हो तस माता जाणे मुज सवि गयुं रे ॥ १६ ॥ रोती हो हवे रोती तेहनी मात, थानक हो तेह थानक नवि मूके किमे रे ॥ आवी हो तस आवी कहे इम लोक, मरशे हो एहनी माता तिणे मूको तुमे रे ॥ १७ ॥ मूके हो वली मूके केतेक काल, तेहथी हो तस तेहथी कर्म ते बांधीयो रे ॥ सोल मास हो तेह सोल मास राख्युं बाल, षोडश हो अब्द षोडश विरहनुं सांधीयो रे ॥ १८ ॥ नामे हो तिहां नामे समाधिगुप्त, मुनिवर हो भला मुनिवर भिक्षा आवीया रे ॥ तस पति हो कहे तस पति भिक्षा आप, इम कही हो गया इम कही गया कोइ तेडीया रे ॥ १९ ॥ थुथु हो करी थुथु काढ्यो तास, कर्म हो तस कर्म दुगंछानुं वली रे ॥ सातमे हो दिन सातमे गलित ते कुष्ट, तेहथी हो तेह तेहथी मरण ते लहे चली रे ॥ २० ॥ गर्दभी हो तेह गर्दभी रजकने गेह, तिहांथी हो वली तिहांथी वली सुकरी थइ रे ॥ कूतरी हो थइ कूतरी करी तिहां काल, धीवर हो घर धीवरनी पुत्री भइ रे ॥ २१ ॥ दुर्भगा हो वली दुर्भगा ने दुर्गंध, काणा हो नामे काणा भरुअछिने तटे रे ॥ यौवन हो तेह यौवने वाहे नाव; जीवे हो नित जीवे तस भामा सटे रे ॥ २२ ॥ मुनिवर हो तिहां मुनिवर समाधिगुप्त, राते हो मुनि राते काउस्सग्गे रह्या रे ॥ शीते हो तेह शीते पीड्या देखी, चिंते हो काणा चिंते दुःख केम

जाये सह्यां रे ॥२३॥ मुनिनी हो तव मुनिनी ढांके देह, विहाणे हो मुनि विहाणे धर्म कहे मुदा रे ॥ काणा हो तव काणा चिंते एम, दीठा हो मुनि दीठा में किसहीक कदा रे ॥२४॥ पूछे हो तेह पूछे मुनिने जाम, जाखे हो मुनि जाखे पूरव जव सवे रे ॥ कर्मे हो तुंहि कर्मे थइ डुर्गंध, बांध्यां हो सहु बांध्यां जोगवे पूरवे रे ॥ २५ ॥ सांजली हो ते सांजली श्राविका थाय, सोंपे हो मुनि सोंपे साधवीने तिहां रे ॥ साधवी हो तस साधवी श्रावक गेह, सोंपे हो तेह सोंपे धर्म करे जिहां रे ॥ २६ ॥ उपवास हो करे उपवास एक अंतर, वरस हो तिहां वरस बार गमावती रे ॥ अणसणे हो मरी अणसणे अच्युत इंद्र, महिषी हो थइ महिषी घणुं सोहावती रे ॥ २७ ॥ पच्चास हो पल्य पच्चास उपर पांच, तिहांथी हो चवी तिहांथी रुक्मिणी थइ रे ॥ अंगने हो कस्यो अंगने वली वियोग, तिणथी हो एह तिणथी विरहिणी ए जइ रे ॥२८॥ नारद हो नमी नारद गयो मेघकूप, नयर हो तेह नयर देखी मन हरख्यो घणुं रे ॥ आवी हो कहे आवी कृष्णने वात, पूरव हो जव पूरव लह्युं विरहपणुं रे ॥ २ए ॥ त्रीजे हो खंडे त्रीजे वीजे अधिकार, जाखी हो एह जाखी पांचमी ढाल ए रे ॥ पंमित हो गुरु पंमित उत्तम नाम; पद्म हो कहे पद्म ते मंगलमाल ए रे ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ १५ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुक्मिणी सुणी हर्षित थइ, जक्ते वे कर जोम ॥ सीमंधर जिनवर जणी, प्रणमे मनने कोम ॥ १ ॥ जिनवर लोकालोकने, देखो ज्युं आदर्श ॥ तुम्ह प्रजुजी विचरो, सदा, साथे ज्ञान ने दर्श ॥ २ ॥ स्वामी पर्षदमां रह्या, पण एकाकी जाव ॥ सिद्धकार्य स्वामी थया, न करो कांइ हावजाव ॥ ३ ॥ जवि उपगारने कारणे, करो ते नित उपदेश ॥ आतम रमण रमो सदा, नहीं पर परिणति लेश ॥ ४ ॥ जिहां विचरो तुमे स्वामी जी चोत्रीश अतिशय युत ॥ तुम्हने सिद्धपणे करी, कोइ नयांतरे उत्त ॥ ५ ॥ तुम्ह गुण कहीये केटला, गुणहे अनंताऽनंत ॥ बाह्य संपद पण नवि कही, शकीये तुम एकांत ॥ ६ ॥ अंतर गुणह अनंत जे, तेहनी केही वात ॥ तुम्ह विण स्वामी माहरो, कुण कहे ए अवदात ॥ ७ ॥ संशय कुण टाले वली, स्वामी तुम्ह विण एम ॥ एम स्तवना वली वली करे, रुक्मिणी जिनवर प्रेम ॥ ८ ॥

॥ ढाल ६ठी ॥

॥ चालो जोवा रे हेली ॥ ए देशी ॥ हथिणाउर पुर रे मांहि, धृतराष्ट्र राजा उछांहि ॥ डुर्योधन मुख पुत, जेहने शत वरुवीर ते उत्त ॥ १ ॥ धृतराष्ट्रनो पांडु भाइ, दोय नारी तस गेह सोहाइ ॥ कुंती पहेली ते जाणो, त्रण पुत्र हवे तास वखाणो ॥ २ ॥ नाम युधिष्ठिर ने भीम, त्रीजो अर्जुन नामे नीम ॥ माद्री बीजी रे नारी, दोय पुत्र तस गुणथी भारी ॥ ३ ॥ नकुल ने सहदेव ए नामे, पंचानन परे पांच सुठामे ॥ कांपिलपुरे महाराय, डुपदनी बेटी डोपदी थाय ॥ ४ ॥ तास स्वयंवर रे ताम, मांमी तेड्या बहु नृप काम ॥ पांमव पांचे ते जाय, पूजा रचे डोपदी तिण ठाय ॥ ५ ॥ ज्ञातासूत्र ए बोले, तोपण कुमति दिल नवि खोले ॥ ते कहे परणवा वेला, पूजा कीधी करतां केला ॥ ६ ॥ ते केम मानुं रे पूजा, जीवाहिंसाथी बहु अम्हे धूज्या ॥ पण नवि जाणे रे एम, वर माग्यो नवि भाखो रे केम ॥ ७ ॥ कोइ कहे जिन त्रिणिज्ञेय, अवधि मनः केवल गतखेय ॥ श्रीठाणांगे रे बोल्या, तिणे अमचां चित्तडां नवि मोल्यां ॥ ८ ॥ ते पण जूठुं रे जाणो, शक्रस्तव नवि अन्यने ठाणो ॥ शक्रस्तव कह्युं रे एणे, कहो अवधि मनःपुर कह्युं केणे ॥ ए ॥ जिणाणं जावयाणं, नवि माग्यो वर इणे ठाणं ॥ जिनवर कीधुं रे केणे, श्रावक विणु भाखो शुभ वयणे ॥ १० ॥ विघने आंबिल रे कीध, श्राविका विणु केम तेह प्रसिद्ध ॥ इत्यादिक बहु बात, ग्रंथे छे महोटा अवदात ॥ ११ ॥ तेह सुणीने रे भवीया, पूजा करतां कर्म ते खवीयां ॥ पूजा कीजे रे भावे, शिवसुख करतल मांहे आवे ॥ १२ ॥ डोपदी पूजा रे कीधी, वरमाला कर मांहि लीधी ॥ पांमव कंठे ते नाखी, ए तो अचरिज सहुने भाखी ॥ १३ ॥ मुनिवर वहोरण रे आव्या, पांच पतिनां कर्म संभलाव्यां ॥ त्रण भाइ बहु वित्त, सोम आगल देव भूति ने दत्त ॥ १४ ॥ नागश्री सोमदेवने नारी, अथ भूतश्री सोमभूतिने सारी ॥ यक्षश्री सोमदत्तने जाणो, ...ने स्नेह ते बहुल पिछाणो ॥ १५ ॥ वारे सहु एक गेह, जमतां अधिको धरीय सनेह ॥ सोमदेव घरे वारो, नागश्री जिमण कस्यो अति सारो ॥ १६ ॥ कडुवुं तुंबडुं लावी, व्यंजन ठामे तास पचावी ॥ चाख्याथी तिणे ..., थुंकी नाख्युं मुख मचकाणुं ॥ १७ ॥ ठानुं राख्युं ते शाक, कोइने नवि ... सराख ॥ इण अवसर तिहां आव्या, धर्मघोष मुनिवर गुण भाव्या

॥ १८ ॥ धर्मरुचि तस शिष्य, मासखमण पारणुं जगीश ॥ गोचरी फरता ते आव्या, नागसीरीने घर मन जाव्या ॥ १९ ॥ तुंबरु तास वहोरावे, मुनिवर लइ गुरु देखावे ॥ गुरु तस गंधे करीने जाणे, कहे परठवो ए एकण ठाणे ॥ २० ॥ मुनिवर परठववा चाल्या, स्थंमिल शुद्ध थानक जइ चाल्या ॥ बिंडु पडीयो ते एक, मरण लहे कीडीउं तिहां ठेक ॥ २१ ॥ मन चिंते ऋषिराय, बहु प्राणीनो वध इहां थाय ॥ एक बिंडुथी ए दीसे, बहु परठव्याथी बहु जीव हिंसे ॥ २२ ॥ एक महारो वध रुडो, पण ए जीवराशि वध कूडो ॥ आराधना मुनि रे करता, तेह आहारथी उदर ते भरता ॥ २३ ॥ सर्वारथसिद्ध मांहि, उपना काल मासे सुख प्राही ॥ आचारिज मन जाणे, वार घणी केम थइ इण ठाणे ॥ २४ ॥ जोवा मोकले रे साध, देखी अकारय तेह अगाध ॥ गुरु पासे जइ भाखे, खेद थकी ते करीय निसासे ॥ २५ ॥ सूरि अतिशय ज्ञानी, नागश्रीनुं कहे चरित्र वखाणी ॥ सोमदेवादिके जाणी, घरथी काढी ते धणीयाणी ॥ २६ ॥ त्रीजे खंडे रे जाणो, बीजे ए अधिकारे वखाणो ॥ भाखी छठी रे ढाल, पद्मविजय कहे मंगलमाल ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ १०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नागसीरी काढी तिहां, लोक निभ्रंछे तास ॥ कास श्वास ने ज्वर घणो, सोल रोग इम जास ॥ १ ॥ आ भवमां नारक तणां, दुःख पामी असराल ॥ भूख तृषा सहेती घणी, तम पुढवी गइ काल ॥ २ ॥ तिहांथी म्लेछ थइ करी, सातमी नरगे जाय ॥ मछ थइ वली सातमी, मछ मांहे वली आय ॥ ३ ॥ इम बे बे वारे करी, साते नरगे जाय ॥ पृथवी प्रमुख मांहि भमी, वार अनेक बहु ठाय ॥ ४ ॥ तिहां अकामनिर्जरा थकी, चंपानगरी मांहि ॥ सागरदत्त पुत्री थइ, सुभद्राउरे त्यांहि ॥ ५ ॥ सुकुमारिका ते नामथी, गृहजामाता कीध ॥ जिनदत्त शेठनो सुत भलो, सागरने ते दीध ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ लाल सुरंगा रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥ एक दिन सूतां ते सेजमां, फरसे सुत जिनदत्त रे ॥ अंगारा सम तेहने, लागो आपने गत्त रे, कथनमां आवे न वत्त रे, तास गली गयो सत्त रे, हवे नवि वांछे ते जत्त रे ॥ १ ॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया ॥ ए आंकणी ॥ निद्रा पामे नारी हवे, नाठो वेगे

ते जाय रे ॥ जागी देखे न निज पति, तव करे रुदन ते ठाय रे, आवी कहे माय ताय रे, जिनदत्तने कहे जाय रे, ते पण सुतने कहे आय रे ॥ क० ॥ २ ॥ पंचसां जेह अंगीकरी, ते केम मूके तुं नार रे ॥ जाउं नारी पासे हवे, सागर कहे तिणी वार रे, पेसुं अग्नि मकार रे, सुणीयो तेह विचार रे, प्रछन्न सागरदत्ते धार रे ॥ क० ॥ ३ ॥ थइ निराश पाछो वल्यो, कहे निज पुत्रीने तेह रे ॥ वीजो पति परणावशुं, खेद म कर मन एह रे, भिक्षुक दीठो दुःख रेह रे, माखीए वींटी ठे देह रे ॥ क० ॥ ४ ॥ खप्पर-हाथमां जालीयुं, अंवर जीर्ण ते खंम रे ॥ शेठे घर निज तेमीयो, मूकावे तस भंम रे, दीप्ति करे परचंम रे, दीये शुभ आहारनो पिंम रे, आपे वस्त्र अखंम रे ॥ क० ॥ ५ ॥ पुत्री आपी ते नेहथी, रात्रे शयन ते कीध रे ॥ अग्नि फरस लागे तेहने, उठी निज वेष लीध रे, नाठो जाइ दुःख गिरू रे, कर्मे दुःख तस सिरू रे, तव तस पितु कहे इरू रे ॥ क० ॥ ॥ ६ ॥ दान दीयो तुम्हे बालिका, रही म्हारे नित धाम रे ॥ तेमज करे सुकुमारिका, आर्या आवे एक ताम रे, पडिलाभे तस ठाम रे, धर्म सुणे निज काम रे, व्रत लेवे अभिराम रे ॥ क० ॥ ७ ॥ गुरुणी नाम गोपालिका, साथे विचरे ते नित्य रे ॥ छठ अठमादिक तप करे, एक दिन भाखे इणी रीत रे, आतापना करुं हित रे, गुरुणी कहे शुभ चित्त रे, आपणो नहीं एह जीत रे ॥ क० ॥ ८ ॥ नीकलवुं वसती बाहिरे, आगम मांहि निषिरू रे ॥ नवि मान्युं तेणे वयणडुं, जइ आतापना लीध रे, गणिका तिहां परसिरू रे, एक पुरुष कामे विरू रे, गणिका अंके ते कीध रे ॥ ॥ क० ॥ ए ॥ एके छत्र ते धारीशुं, वीजे चामर एक रे ॥ एक वहे तस पावमी, पय उलांसे अतिरेक रे, देखी गणिकानी टेक रे, करे नियाणुं ते ठेक रे, नाठो तास विवेक रे ॥ क० ॥ १० ॥ मुऊ पण ए गणिका परे, थाउं पंच पति सार रे ॥ ॥ ए तपना परभावथी, शौच करे अतिचार रे, वारे आर्या तिवार रे, चिंते चित्त विचार रे, मुऊ उपर करे खार रे ॥ क० ॥ ॥ ११ ॥ भिक्षा लेवा रे मुऊ घरे, गुरुणी आव्यां ते आज रे ॥ ताडना तर्जना मुऊ करे, एहशुं नहीं मुऊ काज रे, इण लोपी मुऊ लाज रे, रहे जूदी इम साज रे, इछाचारीनुं राज रे ॥ क० ॥ १२ ॥ व्रत पाल्युं बहु दिन लगे, संलेषना अर्ध मास रे ॥ अणआलोइ तिहांथी मरी, सौधर्मे करे

वांस रे, आयु नव पल्य जास रे, देवांगना सुविलास रे, तिहांथी द्रौपदी खास रे ॥ क० ॥ १३ ॥ पूर्वे नियाणाथी ए थइ, पांच भर्त्तारनी नार रे ॥ शुं अचरिज एहमां अछे, इम मुनि भाखे तिवार रे, वाणी आकाशे थइ सार रे, साधु साधु ए धार रे, परणावे सहु त्यार रे ॥ क० ॥ १४ ॥ निज थानक सहुए गया, हवे पांडु महाराय रे ॥ युधिष्ठिर निज पुत्रने, आपे राज्यने ठाय रे, परभव पांडु माद्री जाय रे, धृतराष्ट्र सुत आय रे, राज्यना लोभी ते थाय रे ॥ क० ॥ १५ ॥ नल परे हार्या ते पांडवा, हार्या द्रौपदी जेह रे ॥ क्रोधे आंख राती करी, पाछी नार ले तेह रे, काढी मूके गतनेह रे, वन तेहज कर्यां गेह रे, मांहोमांहि ससनेह रे ॥ क० ॥ ॥ १६ ॥ तेह दशार्ह आणा थकी, कुंती सुत निज पांच रे ॥ द्वारिका नगरीमां तेभती, करवा पुण्यनो संच रे, मलीयो कुटुंबनो पंच रे, चिंतवे बहु परपंच रे, करवा तेहने वंच रे ॥ क० ॥ १७ ॥ कृष्णनी पर्षदे आवीया, कृष्ण दीये बहु मान रे ॥ मांहोमांहि प्रणमे तिहां, कृष्ण कहे इण थान रे, भले आव्या शुभ वान रे, रहेवुं न घटे तुम्ह रान रे, करो भोजन वली पान रे ॥ क० ॥ १८ ॥ कहे युधिष्ठिर इणी परे, अम्ह माता कुल जाण रे, अजुवालुं तुमे स्वामी जी, इम करी शंसानी वाण रे, आपे रहेवाने ठाण रे, एक एक कन्यानुं दान रे, रूप तणी तेह खाण रे ॥ क० ॥ ॥ १९ ॥ कर्म तणी गति एहवी, न गणे रांक ने राय रे ॥ पांडव सरिखा ते हारीया, महाबलवंता कहाय रे, ताप न जास खमाय रे, करमे नल महाराय रे, दवदंती मूकी जाय रे ॥ क० ॥ २० ॥ त्रीजे खंडे ए रुयकी, बीजे अधिकारे ढाल रे ॥ सातमी भाखी ए हर्षेशुं, पद्मविजये सुविशाल रे, पुण्य करो वृद्ध बाल रे, पुण्ये पाप विसराल रे, पुण्ये मंगलमाल रे ॥ २१ ॥ क० ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ हवे प्रद्युम्न कुमार, यौवन पाम्यो जेटले ॥ देखी व्याप्यो मार, कनकमालाने तेटले ॥ १ ॥ एहवो नरसुर मांहि, न जडे पुरुष बीजे हवे ॥ मनमां धरी उछांहि, भोग करुं एहशुं भलो ॥ २ ॥ इम चिंती कहे तास, विद्या दोय माहरी कने ॥ आव तुं माहरी पास, आपुं तुजने शुभ मने ॥ ३ ॥ मुजने इछे बहोत, पण नवि इछुं तेहनें ॥ तुजने साहमुं कहेत, ते माटे आदर मने ॥ ४ ॥ कहे प्रद्युम्न हे मात, हुं तुं ताहरो सुत भलो ॥ केम

कहे एहवी वात, कनकमाला कहे सांभलो ॥ ५॥ नहीं तुं माहरो पुत, हुं ताहरी माता नहीं ॥ जाण तुं मुज आकूत, तव बोले कुंअर सही ॥ ६ ॥ विद्या आपो मुज, कहेशो तिम करशुं पछे ॥ आपुं विद्या तुज, तव कुंअर बोले अछे ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ पारिजातकनुं फूल स्वरगथी ॥ ए देशी ॥ प्रद्युम्न कहे सुण वात, तुं माहरी तें मुजने पहेलो पाल्यो ॥ वली प्रज्ञप्ति गौरी विद्या, आपी मुजने लाल्यो ॥ १ ॥ ना जो के नहीं जो के, जाणो मन आणो ॥ ना रे माता नहीं करुं भोग तुज साथे रे ॥ नहीं करुं नहीं करुं माहरी माता, हवे गुरुणी मुज हुइ रे ॥ ए आंकणी ॥ पुर बाहिर गयो कुमर ते जाम, तव तें अंग विदारी ॥ पूछे पति तव भाखे एहवुं, तुज पुत्रे इम कारी ॥ ना जो० ॥ २ ॥ करे प्रहार प्रद्युम्नने जइने, तव ते साहमो थाय ॥ मरण लह्या बहु पुत्र संवरना, क्रोधे देह भराय ॥ ना जो० ॥ ३ ॥ संवरने प्रद्युम्न ते भाखे, कनकमाला तणी जेह ॥ वात सुणी थिर थइ तिणे हरखी, आलिंगे तस देह ॥ ना जो० ॥ ४ ॥ पश्चात्ताप करे मन बहुलो, नारद रुषि तव आव्यो ॥ नारदने उलखावे प्रज्ञप्ति, तव तेहने मन भाव्यो ॥ ना जो० ॥ ५ ॥ पूछी कहे नारदने वात, कनकमाला तणी जाइ ॥ तव नारद बोले सुण माहरी, वात ते मनमां लाइ ॥ ना जो० ॥ ६ ॥ सीमंधरजीए भाख्युं तेह, सघलुं तस संभलावी ॥ कहे ताहरी माताने पण छे, ते सुण वात ते गावी ॥ ना जो० ॥ ७ ॥ पुत्रविवाहे केश ते आपे, आगल थाये जेहनो ॥ ते भामानो सुत भानु छे, थाये विवाह ते एहनो ॥ ना जो० ॥ ८ ॥ एक तो केशनुं दान ने बीजुं, वियोग पड्यो ताहरो जेह ॥ ते रोगे पीमित तुज माता, मरणने लहेशे तेह ॥ ना जो० ॥ ए ॥ प्रज्ञप्तिए विमान विकूर्व्युं, बेसी हवे तेह मांहि ॥ नारद ने प्रद्युम्न दोय चाल्या, द्वारिका भणी उछांहि ॥ ना जो ॥ १० ॥ नारद कहे ए द्वारिका ताहरी, धनदे रतने पूरी ॥ प्रद्युम्न कहे विमानने थावो, करुं आश्चर्य इण पूरी ॥ ना जो० ॥ ११ ॥ जोजो केइ जइये के, वहेला के थारु ॥ के वाल्हा माहरा आवो, शुभ दीदारु रे ॥ ए आंकणी ॥ भानुनी कन्या उपाडी, मूकी नारद पासे ॥ नारद कहे वाला मत बीजे, कृष्णनो सुत सुविलासे ॥ जो० ॥ १२ ॥ वानरनुं एक रूप करीने, एक वानर

रखवालो ॥ प्रद्युम्न कहे सुण वनपालकने, म्हारो कपि भूखालो ॥ जो० ॥ १३ ॥ फल आपो अमने तव बोले, जानु विवाहने काजे ॥ रक्षा करीये ते कारणथी, कृष्ण तणे एह राजे ॥ जो० ॥ १४ ॥ द्रव्य आपी तस अति लोभावी, मूक्यो वानर वनमां ॥ खाली कीधी वाभी सघली, थयो वणिग हवे खिनमां ॥ जो० ॥ १५ ॥ जातिवंतो वाजी करी हाथे, तृण हाटे हवे जावे ॥ द्रव्य देइ करे तरणां खाली, पाणी मीठां पी जावे ॥ जो० ॥ १६ ॥ घोटक दीठो जानुए एहवे, तव बोले ते जानो ॥ घोभो आपो अम्हने वहेलो, मो माग्युं देशुं दानो ॥ जो० ॥ १७ ॥ तव बोले घोटकनो रक्षक, परखी ल्यो तुमे घोडो ॥ परख्या विणु नवि आपुं कोइने, उपर वेसीने दोभो ॥ जो० ॥ १८ ॥ घोटक उपर जानु वेठो, नाचतां पाड्यो हेठो ॥ तव सहु लोक हसे तिण समये, जानुने दुःख दिल पेठो ॥ जो० ॥ १९ ॥ जानु वासुदेवनी पर्षदमां, आवे रोता रोता ॥ ते देखी पर्षदना जन सहु, हसता साहामुं जोता ॥ जो० ॥ २० ॥ त्रीजे खंडे बीजे अधिकारे, ढाल ते आठमी जाखी ॥ पद्मविजय कहे सुणो श्रोताजन, वसुदेव हींभी ठे साखी ॥ जो० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ २३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप करी ब्राह्मण तणुं, जणतो वेदना पाठ ॥ जमतो शेरी शेरीए, करतो अतिहि गाठ ॥ १ ॥ कुब्जा दासी तिण समे, सत्यजामानी तेह ॥ विद्याए ते रुजु करी, नेत्रलता परे देह ॥ २ ॥ पाय पडी पूछे इस्युं, स्वामी तुं किहां जाय ॥ कहे प्रद्युम्न जाउं अम्हे, जोजन मले जिणे ठाय ॥ ३ ॥ ते कहे मुक स्वामिनी घरे, विवाह अर्थे आज ॥ बहु मोदक निपजावीया, ते आपुं तुम्ह काज ॥ ४ ॥ ते साथे चाल्यो हवे, सत्यजामाने गेह ॥ उजो राखी वारणे, जामा ते गइ तेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ अमदावाद गामने गोंदरे रे ॥ ए देशी ॥ जामा कहे तुं कुण ठे रे, तव बोले तेह नारी ॥ वाल्हा ॥ दासी कुब्जा तुम्ह तणी रे, फरी बोले इम धारी ॥ वाल्हा ॥ १ ॥ सरल करी तुजने किणे रे, तव कहे ब्राह्मण वात ॥ वाल्हा ॥ ते ब्राह्मण कहे किहां अछे रे, ते कहे द्वारे आयात ॥ वाल्हा ॥ २ ॥ जामा कहे तेभो इहां रे, दासी लावी तास ॥ वाल्हा ॥

देइ आशिष ऊन्नो रह्यो रे, नामा कहे सुविलास ॥ वा० ॥ ३ ॥ रूप अधिक रुक्मिणी थकी रे, थाउं तिम करो स्वाम ॥ वा० ॥ विप्र कहे तुऊ सारिखी रे, नारी नहीं गुणधाम ॥ वा० ॥ ४ ॥ नामा कहे तोपण खरुं रे, कीजे अधिको रूप ॥ वा० ॥ विप्र कहे सुण वातमी रे, थाउं मूल विरूप ॥ वा० ॥ ५ ॥ रूप अनूप पढे थशे रे, तव नामा कहे नार ॥ वा० ॥ कहो तेम करीये स्वामीजी रे, द्विज बोले तिणी वार ॥ वा० ॥ ६ ॥ माथुं मुंमावो तुम्हे रे, कां लीपो मषी अंग ॥ वा० ॥ जीर्ण खंम पहेरो वस्त्रने रे, मुऊ आगल रहो रंग ॥ वा० ॥ ७ ॥ रूप लावण्य सौजाग्यने रे, आरोपुं तुऊ देह ॥ वा० ॥ अर्थिणी तेह अंगीकरे रे, द्विज बोले ससनेह ॥ वा० ॥ ८ ॥ जूख घणी मुऊ पेटमां रे, तिणे नवि सूऊे कांइ ॥ वा० ॥ नामा कहे सूपकारने रे, नोजन द्यो मन नाय ॥ वा० ॥ ए ॥ तव ते द्विज नामा नणी रे, नाखे इणी परे वात ॥ वा० ॥ जपी नोजन करुं तिहां लगे रे, कुलदेवी पुर मंत ॥ वा० ॥ १० ॥ रुरु बुरु रुडु बुरु मंत्रने रे, स्वाहापद संयुत ॥ वा० ॥ नामा मंत्र जपे हवे रे, नोजन करे द्विज रीत ॥ वा० ॥ ११ ॥ नामाथी बीहीती कहे रे, जाली हाथने एम ॥ वा० ॥ ऊठ ऊठ तव ते कहे रे, जूख्यो काढे केम ॥ वा० ॥ १२ ॥ तृप्त थयो नहीं हुं हजी रे, जाशुं तृप्ति ज्यांहि ॥ वा० ॥ इम कही गया मुनिवेषथी रे, रुक्मिणी घर उछाह ॥ वा० ॥ १३ ॥ आसन लेवा रुक्मिणी रे, जाये मंदिर मांहि ॥ वा० ॥ बेसे आसने कृष्णने रे, मुनि बालक देखे त्यांहि ॥ वा० ॥ १४ ॥ विस्मयथी कहे रुक्मिणी रे, मत बेसो इण ठार ॥ वा० ॥ गोविंद गोविंदसुत विना रे, नवि बेसे इम धार ॥ वा० ॥ १५ ॥ देव सहे नहीं अन्यने रे, तव साधु बोलंत ॥ वा० ॥ अमचा तपपरजावथी रे, देव न कोइ ठलंत ॥ वा० ॥ १६ ॥ रुक्मिणी कहे केम आवीया रे, तव कहे साधु बाल ॥ वा० ॥ तप कर्युं पोरुश वर्षनुं रे, आहार रहित विकराल ॥ वा० ॥ १७ ॥ धावण मातनुं धावीयो रे, जन्म थकी नहीं जेण ॥ वा० ॥ पारण अर्थे आवीयो रे, जूख टले मुऊ तेण ॥ वा० ॥ १८ ॥ रुक्मिणी कहे नवि सांजल्युं रे, सोल वरस तप क्यांहि ॥ वा० ॥ वरसी तप लगे नाखीशुं रे, मुनिने आगम मांहि ॥ वा० ॥ १ए ॥ मुनि कहे काम शुं ताहरे रे, आपवुं होय तो आप ॥ वा० ॥ नहीं आपे तो जायशुं रे,

सत्यभामा घर आप ॥ वा० ॥ २० ॥ नवमी त्रीजा खंडमां रे, ढाल वीजे अधिकार॥वा०॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी रे,प्रद्युम्न करे चमत्कार ॥वा० ॥२१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुक्मिणी कहे रांध्युं नथी, उद्वेगे करी आज ॥ मुनि कहे श्यो उद्वेग छे, ते कहे सुणो महाराज ॥ १ ॥ पुत्रवियोग पूजा करुं, कुलदेवी धरी प्रीत ॥ शिरनो बलि देवा भणी, थइ तत्पर ए रीत॥ २ ॥ तव बोली कुलदेवता, फलशे एमां कंद ॥ तव मलशे सुत ताहरो, म कर फोक आक्रंद ॥ ३ ॥ ते पण आंबो मोहरीयो, नवि आव्यो मुज पुत ॥ माटे तुम्हे होरा जुओ, ए माहरो आकूत ॥ ४ ॥ तव बोले मुनिवर हवे, न फले खाली हाथ ॥ होरा जोरावर अछे, दुःखीयाने दीये बाथ ॥ ५ ॥ यतः ॥ रिक्तपाणिर्न पश्येत,राजानं देवतं गुरुम् ॥ नैमित्तज्ञं विशेषेण,फलेन फलमादिशेत् ॥ १ ॥ रुक्मिणी कहे आपुं किस्युं, तव कहे मुनिवर वाण ॥ पेया रांधी मुज भण, आपो तपसी जाण ॥ ६ ॥ तेह पचावे जेटले, पण नवि लागे आग ॥ मुनि कहे भूख्यो बहु अछुं, ए मोदक द्यो राग ॥ ७ ॥ तुम्हने न पचे लाडुआ, एह जरे गोविंद ॥ पचशे तपपरभावथी, भाखे एम मुणींद ॥ ८ ॥ जेम आप्या तेम खाइ गयो, रुक्मिणी विसय पाम ॥ मनमां हसती हर्षशुं, अचरिज थयुं इण ठाम ॥ ए ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ जिनवचने वैरागीयो हो धन्ना ॥ ए देशी ॥ वनपालक आवी कहे हो भामा, फल कोइ खाइ जाय ॥ तृणरक्षक कहे तृण नहीं हो भामा, कोइक भोलव्या आय रे ॥ हो मोरी भामा ॥ १ ॥ अम्ह कोइ वगी आवे ॥ ए टेक ॥ परवमांथी जल पी गयो हो भामा, भानु पमीयो हेठ ॥ भामा कहे द्विज किहां गयो हो दासी,तेडी लावो भली पेठ रे॥ हो मोरी दासी ॥अम्ह० ॥२॥ दासी कहे सवि वातडी हो भामा, खाइ गयो सवि अन्न ॥ सत्यभामा ते सांभली हो दासी, विलखाणी घणुं मन्न रे ॥ हो मोरी दासी ॥ अम्ह० ॥ ३ ॥ भामा कहे तुम्हे सांभलो हो दासी, लावो रुक्मिणी केश ॥ दासी जइ रुक्मिणी कने हो मागे, केश दीयो सुविशेष रे॥ हो मोरी भामा ॥ अ० ॥ ४ ॥ तव माया मुनि तेहना हो भामा, कुंतल लीये ततकाल ॥ वस्त्र मांहि भरीने दीये हो भामा, दासी गइ तिणे ताल रे ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ चांदलीयो ते उग्यो रे हरणी आथमी रे ॥ ए देशी ॥ भामा जइ सूती रे जूनी खाटमां रे, आमण दूमणी तेह ॥ कृष्णजी पूछे रे नारी बोलो नहीं रे, कहो अम कारण जेह ॥ भामा० ॥ १ ॥ तुज किण डुहवी रे अपमानी किणे रे, सत्यभामा कहे ताम ॥ प्रद्युम्न सरिखो सुत माहरे नहीं रे, तिणे अमे मरशुं रे गाम ॥ भा० ॥ २ ॥ अठम करीने कृष्णे आराधीयो रे, हरिणगमेषी रे देव ॥ प्रगट थइ कहे केम समस्यो अछे रे, कृष्ण कहे ततखेव ॥ भा० ॥ ३ ॥ सुर कहे हार ए आपजो तेहने रे, होशे सुत मनोहार ॥ देव अदृश्य थयो भामा हरखती रे, पामी ते शुभ हार ॥ भा० ॥ ४ ॥ प्रज्ञप्ति विद्याथी जाणीयुं रे, हार प्रद्युम्न कुमार ॥ अपहरी निज माता आगल कहे रे, ल्यो ए माताजी हार ॥ भा० ॥ ५ ॥ मुज सरिखो तुम्ह बीजो सुत थशे रे, तव कहे रुक्मिणी नार ॥ दो सुत नारी उत्तम प्रसवे नहीं रे, बोले तेह कुमार ॥ भा० ॥ ५ ॥ कहो तेहने आपुं सुत कारणे रे, बोली तव तस माय ॥ तुज विरहे डुःखिणी मुज सारिखी रे, जांबुवती नित्य थाय ॥ भा० ॥ ७ ॥ ते कारण सुत आपो एहने रे, तव आपे तस हार ॥ भामा सरिखुं रूप करे वली रे, कृष्ण घरे गइ सार ॥ ॥ भा० ॥ ८ ॥ रतिक्रीमा करी तिण समे देवता रे, महाशुक्र कल्पथी आय ॥ कैटभ जांबुवतीनी कूखमां रे, उपना सिंह स्वप्न पाय ॥ भा० ॥ ए ॥ जांबुवती हवे निज थानक गइ रे, आवी भामा तिवार ॥ कृष्णजी चिंते रे भोगतृप्ति नहीं रे, अहो अहो नारी संसार ॥ भा० ॥ १० ॥ हमणां जइने वली आवी फरी रे, अथवा भामाने वेश ॥ छलीयो मुज इण टाणे किणहीके रे, इम करी रमे ते विशेष ॥ भा० ॥ ११ ॥ भेरी वजावे रमण समय तिहां रे, श्रीप्रद्युम्न कुमार ॥ ते सुणी कृष्ण विचारे ए सवे रे, काम प्रद्युम्न ए वार ॥ भा० ॥ १२ ॥ भावी होय ते निश्चे निपजे रे, प्रातसमय हवे थाय ॥ जांबुवती घरे कान गया हवे रे, देखी कहे इम राय ॥ भा० ॥ ॥ १३ ॥ पूछे हार ते पाम्यो किहां थकी रे, जांबुवती कहे ताम ॥ आप कह्युं केम जाउं विसरी रे, तुम्ह प्रसादे ए गाम ॥ भा० ॥ १४ ॥ सिंहस्वप्न सुणीने कहे कृष्णजी रे, प्रद्युम्न सम तुज पुत ॥ थाशे कहीने गया शांब नामथी रे, जांबुवती सुत प्रसूत ॥ भा० ॥ १५ ॥ बीजी पण पत्नीने सुत

थया रे, एक दिन प्रद्युम्न कुमार॥ भोजकट नगरे मोकले दूतने रे, रुक्मिण राय सुसार ॥ जा० ॥ १६ ॥ तेहनी वैदर्भी नामे सुता रे, ते प्रद्युम्नने काज ॥ ते पण जइ जाखे तव ते कहे रे, जइ कहेजे तुझ राज ॥ जा० ॥ १७ ॥ देउं चंमालने पण विष्णुकुले रे, नवि आपुं कोइ वार ॥ दूते पण आवीने ते कह्युं रे, तव ते रुक्मिणी नार॥ जा० ॥ १८ ॥ खेद लही तव पूछे सुत जलो रे, माता केम लहो खेद॥ जाखे कारण रुक्मिणी तेहने रे, कुमर कहे शुज वेद ॥ जा० ॥ १९ ॥ एहने उचित करी अमे परणशुं रे, एम कही शांवनी साथ ॥ जोजकटे चांमालरूपे गया रे, सहु जन मन करे हाथ ॥ जा० ॥ २० ॥ किन्नर स्वर गावे ते बिहु जणा रे, जाणे रुक्मिण राय॥ तेमावी गवरावे तेहने रे, पुत्री उत्संगमां ठाय ॥ जा० ॥ ॥ २१ ॥ दान देइ पूछे ते नरपति रे, आव्यां किहां थकी आज ॥ ते कहे स्वर्ग थकी आव्या अम्हे रे, कृष्ण महाराजने काज ॥ जा० ॥ २२ ॥ पूछे वैदर्भी तव तेहने रे, कृष्णने रुक्मिणी नार ॥ तेहनो सुत प्रद्युम्न ते सांजल्यो रे, जाणो छो तुमे सार ॥ जा० ॥ २३ ॥ शांव कहे तस कुण न उलखे रे, विश्व मांहे रे विख्यात॥ तेह सुणी उत्कंठित ते थइ रे, सुणो एहवे अवदात ॥ जा० ॥ २४ ॥ त्रीजे खंडे ने अधिकारमां रे, पहेली ढाल रसाल ॥ पंमित उत्तमविजय गुरु थकी रे, पद्मने मंगलमाल ॥ जा० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गज छूटो बंधन थकी, थयो ते हालकलोल ॥ तेहने वश करी नवि शके, बहु जननो करे रोल ॥ १ ॥ पटह वजावी इम कहे, वश करे जे गजराज ॥ वांछित आपुं तेहने, सारुं तेहनुं काज ॥ २ ॥ शांव प्रद्युम्ने ते धर्यो, कर्यो ते वश गजराज ॥ वर मागे राजा कने, पुत्री रंधण काज ॥ ३ ॥ जूपति कोप्यो ते सुणी, काढ्या नयरी बहार ॥ रात पडे प्रद्युम्न हवे, सूतां लोक तिवार ॥ ४ ॥ विद्यार्थी चाल्यो हवे, सप्तम जूमि आवास ॥ स्नेहपत्र आपे तदा, वैदर्भी कहे तास ॥ ५ ॥ माग तुं मागे ते दउं, तव कहे ताहरुं काम ॥ तुझ इछा प्रद्युम्ननी, ते हुं जाण ए ठाम ॥६ ॥ विद्याए अग्नि करी, परणया प्रद्युम्न नार ॥ क्रीमा करी कहे केहने, कहेशो न एह विचार ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥ प्रद्युम्न कुंवर गया हवे, क्रीमा करी संसार रे ॥ कन्या मन वाहाली ॥ रतिश्रमथी जागी नहीं, वहाणुं वाहे तिवार रे ॥ कन्या० ॥ १ ॥ राय प्रमुख सहु आवीया, देखे विवाहनां चिह्न रे ॥ क० ॥ विह्वल मन राजा थयो, कुल कीधुं मुज भिन्न रे ॥ क० ॥ ॥ २ ॥ में परणावी न केहने, इछाए करी क्रीम रे ॥ क० ॥ दीधी चंमालने रुख्मी, थइ ए अकार्यथी पीम रे ॥ क० ॥ ३ ॥ ते चांमालने आपतो, करतो अनेक विलाप रे ॥ क० ॥ कहे चंमाल ते इणी परे, वात सुणो एक आप रे ॥ क० ॥ ४ ॥ चर्म्मकाज करवुं पडे, थाय तो आवो आज रे ॥ क० ॥ कन्याने कहे राजा हवे, करावे छे ए अकाज रे ॥ क० ॥ ५ ॥ करशुं सहु अम्हे इम सुणी, तेह गया लेइ नार रे ॥ क० ॥ करे विलाप राजा हवे, मन चिंते ते वार रे ॥ क० ॥ ६ ॥ धिक्कार हो मुजने इहां, रुक्मिणी सुत नवि दीध रे ॥ क० ॥ क्रोधे करी चंमालने में, एह अकारय कीध रे ॥ क० ॥ तूर ध्वनि सुणी पूछतो, कोण वजावे ए तूर रे ॥ क० ॥ शांब प्रद्युम्न कुमर विहु, तूर वजमावे भूर रे ॥ क० ॥ ८ ॥ तव तेडे हर्षित थइ, सांभली सहु विरतंत रे ॥ क० ॥ पूछीने निज पुरे गयो, क्रीमा करे पुण्यवंत रे ॥ क० ॥ ॥ ए ॥ द्यूत तणी क्रीमा करे, शांब ने भीरु कुमार रे ॥ क० ॥ हारे भीरु धन बहु, भामाने कहे वारंवार रे ॥ क० ॥ १० ॥ भामा जइ कहे कृष्णने, जांबुवतीने कहे कहान रे ॥ क० ॥ जांबुवती पाछुं कहे, सांभलो कान्ह देइ कान रे ॥ क० ॥ ११ ॥ म्हारो सुत नवि एहवो, कोइ काले दुःखदाय रे ॥ क० ॥ समजे न कांइ मुज वालको, इम केम भाखो आय रे ॥ क० ॥ ॥ १२ ॥ कृष्ण कहे सुण सिंहणी, समजे नहीं तुज बाल रे ॥ क० ॥ पण तस जाणे वारता, नागघटा विकराल रे ॥ क० ॥ १३ ॥ वात कहो केम एहवी, कोइ दिन नवि सुणी स्वाम रे ॥ क० ॥ कृष्ण कहे भीरु प्रते, मारे तुज सुत आम रे ॥ क० ॥ १४ ॥ त्रीजे खंडे रुयडी, त्रीजे अधिकारे ढाल रे ॥ क० ॥ बीजी पद्मविजय कहे, सुणतां मंगलमाल रे ॥ क० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्ण कहे सुण नार तुं, जाणे मुज सुत बाल ॥ पण बालक चेष्टा हवे, देखाडुं ततकाल ॥ १ ॥ आभीररूप करी हवे, आभीरी करी नार ॥

द्वारिका मांहे पेसतां,माथे तक्रनो जार ॥ २ ॥ शांव कुमरे दीठां हवे, आजीरी आजीर ॥ स्वेछाचारी इम कहे, आजीरीने धीर ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सावरमतीए आवीलां जरपूर जो ॥ ए देशी ॥ सुण महियारी शांव कहे इम वाणी जो, गोरस लेशुं तुऊ पासे विक्रय करी रे ॥ इम कहीने देवकुलमां गयो जइ तास जो, वोलावे तुं आवे उरी आजीरी रे ॥ १ ॥ कहे आजीरी नहीं पेसुं एह मांहि जो, मूल्य आप मुऊने तुं आपुं गोरसुं रे ॥ तव कहे निश्चय आववुं पमशे अत्र जो, नहीं आवे तो गोरस ताहरुं फोमशुं रे ॥ २ ॥ इम कही जाली हाथ ते शांव कुमार जो, खेंचे रे देवकुलमां ताणे चुनमी रे॥ आजीरी कहे मत कर एहवुं काम जो, फाटे चुनमी म्हारी ते अति जूनमी रे ॥ ३ ॥ दोणी गोरस केरी जांगशे आज जो, करशुं रे फरीयादी कृष्ण नरिंदने रे ॥ देवकुलमां तेड्यानुं शुं तुऊ काम जो, इम करतां होइ निंद्य ते सुर नरिंदने रे॥ ४ ॥ वोले तव आजीर शांव कुमार जो, प्राणप्रिया केम म्हारी लेइ जाये अठे रे ॥ इम कहेतां तस शब्द तणे अनुसार जो, जांवुवती हरि जाणी लाज्यो तव पठे रे ॥ ५ ॥ मुख ढांकीने नाठो शांव कुमार जो, देखाड्युं सुतचरित्र ते जांवुवती प्रते रे॥ वीजे दिन हवे शांवने सजा मऊार जो, तेडे हरि मन हर्षे धरी वहुले मते रे ॥ ६ ॥ आवे खीली घमतो हरिने पास जो, पूठे तुं शुं एह करे ठे तव कहे रे॥ जे कहेशे गतकालनी वात ते मुऊ जो, तेहना रे मुख मांहि मारशुं गहगहे रे ॥७॥ ते माटे ए खीली घमीये स्वाम जो, आगामिक मुऊ बुद्धि ते स्वामी जली चकी रे ॥ इम सुणीने कहे कृष्ण ए स्वेछाचार जो, काम तणे परवश ए काढ्यो पूर थकी रे ॥८॥ स्नेही ने वली पूर्व जव जाइ जाणी जो, शांवने प्रज्ञप्ति दीये प्रद्युम्न एकलो रे ॥ जीरुक मर्दन करतो प्रद्युम्न नित्य जो, जामा कहे तुं शांव परे जा वेगलो रे ॥ ए ॥ जाउं पण हुं आवुं क्यारे मात जो,जामा कहे कर जाली आवुं तेडवा रे ॥ कुमर कहे ए आण करुं तुऊ मात जो, इम कहे शांव प्रद्युम्न तणो थयो जोमवा रे॥१०॥एके ऊणी सो कन्या विवाह जो,कीधो जीरु कुमर संघाते तेहनो रे ॥ प्रज्ञप्ति संजलावे जइने तास जो, जाणी वात प्रद्युम्ने शांव ठे जेहनो रे ॥ ११ ॥ जितशत्रु राजानुं सैन्य करंत जो, शांव कन्यानुं रूप करीने तिंहां रहे रे ॥ जामानी दासी आवी तिण थान जो, ते

देखीने जइने भामाने कहे रे ॥ १२ ॥ भामा कहे जितशत्रुने इम वाणी जो, तुम्ह पुत्री परणावो अम्ह सुतने भली रे ॥ जितशत्रु कहे परणावुं हुं ताम जो, हाथ झाली तुम्हे लेइ जावो अम्हे मोकली रे ॥ १३ ॥ इम सुणी भाषा तेरुण आवे तास जो, तव तिहां शांब कुमार विचारे एहवुं रे ॥ लोक सहु देखो मुफ शांबनुं रूप जो, भामा देखो रूप ते कन्या जेहवुं रे ॥ १४ ॥ हाथ झाली तेम्नी जाय शांबने नारी जो, नर नारी सहु विस्मय पामे तिणे समे रे ॥ कर झाले बीजी कन्यानो आप जो, आप तणो कर आपे भीरु हाथमें रे ॥ १५ ॥ परणी वासभुवनमां जावे जाम जो, तव भृकुटी करी शांब कहे जा वेगलो रे ॥ जइ संभलावे भामाने ते वात जो, ए तो आव्यो शांब ते मानुं मयगलो रे ॥ १६ ॥ भामा कहे कोणे तेड्यो तुजने ज जो, तव कहे तुम्हे तेड्यो ने परणाव्यो वली रे ॥ साखी सघला द्वारिकावासी लोक जो, लोके पण तस साखा भरी आवी मली रे ॥ १७ ॥ कृष्णे पण आवीने सघली नार जो, सहु साखे परणावी शांब कुमारने रे ॥ एक दिन श्रीवसुदेवनी पासे तेह जो, आवे रमता रमता नमसाकारने रे ॥ १८ ॥ शांब कहे बहु काल भम्या तुम्हे बाहार जो, बहु नारी परण्या तेहमां अचरिज किशुं रे ॥ ठाम बेठां कन्या शत परण्या स्वामी जो, अंतर जाणो तुम्हे ने अम विच्चे इस्युं रे ॥ १९ ॥ कहे वसुदेव तुं कूपमंडूकनी तुल्य जो, काढी मूक्यो ने ठलथी तुं आवीयो रे ॥ देश भ्रमण करतां मुजने बहु मान जो, समुद्रविजय करीने घर तेम्नी लावीयो रे ॥ २० ॥ पामी ते अपमान ने प्रणमे पाय जो, स्वामी में अज्ञानपणे इम भाखीयुं रे ॥ म्हारो ए अपराध ते खमजो स्वामी जो, फरी नहीं भाखुं जेह अम्हे तुम्ह दाखीयुं रे ॥ २१ ॥ त्रीजे खंडे ने त्रीजे अधिकार जो, त्रीजी ढाल ते भाखी एह मनोहरु रे ॥ पंडित उत्तमविजयनो शिष्य कहंत जो, पद्मविजय इम भविका सुणजो गुणधरु रे ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ७९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ यवनद्वीपथी इण समे, बहु व्यापारी लोक ॥ आव्या करियाणां भरी, दाम करे तस रोक ॥ १ ॥ वेची करियाणां सवे, राजगृहे ते जाय ॥ रत्नकंबलने वेचवा, लाभ अधिक इछाय ॥ २ ॥ शीत उष्ण हरता सदा, श्लक्ष्ण होय तास ॥ जीवजशा ते देखीने, मूल्य करे तस पास ॥ ३ ॥ व्या-

पारी रोवे घणुं, अमचुं महा अज्ञाग ॥ द्वारिका मूकी आवीया, वहुला लाजने राग ॥ ४ ॥ जीवजशा पूछे तदा, द्वारिका नयरी कोण ॥ राजा पण तिहां कोण छे, तव बोले ते वयण ॥ ५ ॥ देवे कीधी द्वारिका, तिहां कृष्ण महाराय ॥ तव रोती नारी कहे, जीवे यदुसमुदाय ॥ ६ ॥ तेह जरासंधे सुण्युं, काल कंसनुं वेर ॥ संजारी सेनापति, तेह्नी कहे इणी पेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ लाल पीयारीनो साहिबो रे ॥ ए देशी ॥ मंत्री मोरा रे ॥ अर्ध जरतना सहु राजवी रे, तेड्डो मूकीने दूत राज ॥ जइये यादव उपरे रे, हणीये वसुदेव पुत राज ॥ १ ॥ पुण्य प्रमाणे सहु निपजे रे ॥ ए आंकणी ॥ मं० ॥ वहु मंत्रीश्वर वारता रे, चलितगलित मति तेह राज ॥ दक्षिण जानु उपाड्तां रे, छीक करे जे संदेह राज रे ॥ पु० ॥ २ ॥ मं० ॥ श्याम विलाड्डी आड्डी फरी रे, चढतां गजवर खंध राज ॥ त्रूटो हार सोहामणो रे, पड्डीयो मुकुट शिरवंध राज ॥ पु० ॥ ३ ॥ मं० ॥ तूर शब्द विरसो हुवे रे, वाजे प्रचंड वाय राज ॥ जेहथी उद्वेग उपजे रे, कांकरी उडे ते छाय राज ॥ पु० ॥ ॥ ४ ॥ मं० ॥ छत्र ध्वजा दंड जांगीयां रे, हय गज रथ ने तुरंग राज ॥ वहु सैन्ये तेह परवस्यो रे, रथना होय तिहां जंग राज ॥ पु० ॥ ५ ॥ मं० ॥ मूत्र पुरीष अंतर नहीं रे ॥ रुधिर विरस पडे त्यांहि राज ॥ विरस शिवा तिहां बोलती रे, गर्दज जूंके ते राहि राज ॥ पु० ॥ ६ ॥ मं० ॥ वाम नयन फरक्युं तिसे रे, शकुन निमित्त इम वारे राज ॥ मति ज्यारे खसी जेहनी रे, अवलुं मन मांहि धारे राज ॥ पु० ॥ ७ ॥ मं० ॥ नारद आवीने कृष्णने रे, वात सवे संजलावे राज ॥ जेरी सुघोषा घंटा परे रे, कृष्णजी तिहां वजडावे राज ॥ पु० ॥ ८ ॥ मं० ॥ देव परे सहु राजवी रे, जेला यादव थाय राज ॥ उग्रसेनादि वलीया घणुं रे, दश दशार्ह वली राय राज ॥ ॥ पु० ॥ ए ॥ मं० ॥ समुद्रविजय तस सुत आवीया रे, महानेमि सत्यनेमि राज ॥ दृढनेमि रथनेमिजी रे, अरिहा अरिष्टनेमि राज ॥ पु० ॥ १० ॥ मं० ॥ जयसेन ने महाजय जला रे, तेजसेन जय मेघ राज ॥ चित्रक गौतम जाणीये रे, श्वफल्क गाजे ज्युं मेघ राज ॥ पु० ॥ ११ ॥ मं० ॥ अर्थ ने शिवनंदन रुयडा रे, महारथ विष्वकसेन राज ॥ अक्र सुत संयुत आवीया रे, अक्षोज नाम वहुसेन राज ॥ पु० ॥ १२ ॥ मं० ॥ पण सुत स्तिमित ते आवीया

रे, सागर पट्ट सुत होय राज ॥ हिमवान त्रण पुत्रथी रे, अचल ते सग एय राज ॥ पु० ॥ १३ ॥ मं० ॥ पांच पुत्रशुं आवीया रे, धरण नामे महाराय राज ॥ पूरण चउ सुत तेहीने रे, अभिचंद्र पट्ट सुत आय राज ॥ पु० ॥ १४ ॥ मं० ॥ श्रीवसुदेवजी आवीया रे, बहु सुतने परिवारे राज ॥ अक्रूर ने क्रूर नामथी रे, ज्वलन अशनिवेग धारे राज ॥ पु० ॥ ॥ १५ ॥ मं० ॥ वायुवेग अमितगतिजी रे, महेंद्रगति वली नाम राज ॥ सिद्धार्थ दारु रुयका रे, सुदारु वीर्यधाम राज ॥ पु० ॥ १६ ॥ मं० ॥ सिंह ने मतंगज सुत भला रे, नारद ने मरुदेव राज ॥ सुमित्र कपिल वलीया घणुं रे, पद्म कुमुद आदे होव राज ॥ पु० ॥ १७ ॥ मं० ॥ अश्वसेन पुंड्र नामथी रे, रत्नगर्भ अभिधान राज ॥ वज्रबाहु बाहुभृत वली रे, महाबलीया सहु जान राज ॥ पु० ॥ १८ ॥ मं० ॥ चंद्रकांत शशिप्रभ सुणो रे, वेगवान वायुवेग राज ॥ अनाधृष्ट दृढमुष्टिजी रे, हिममुष्टि अति तेग राज ॥ पु० ॥ ॥ १९ ॥ मं० ॥ बंधुषेण सिंहसेनजी रे, युधिधृष्ट ए नाम राज ॥ शिलायुध ने गंधार वली रे, पिंगल आवे रणकाम राज ॥ पु० ॥ २० ॥ मं० ॥ जराकुमर बाल्हिक कह्या रे, सुमुख ने दुर्मुख जाण राज ॥ राम ते रोहिणीकुखना रे, महाबलीया गुणखाण राज ॥ पु० ॥ २१ ॥ मं० ॥ वज्रदंष्ट्र अमितप्रभ रे, रामना बहु आवे पुत राज ॥ मुख्य तणां अभिधा सुणो रे, उल्मूक निषध ते उत्त राज ॥ पु० ॥ २२ ॥ मं० ॥ प्रकृतिद्युति चारुदत्त ध्रुव रे, शत्रुदमन ने वली पीठ राज ॥ श्रीध्वज नंदन चित्र रुयका रे, श्रीमान् दशरथ इठ राज ॥ पु० ॥ २३ ॥ मं० ॥ देवानंद ने नंदजी रे, विप्रथु शांत कुमार राज ॥ पृथु ने शतधनु नामथी रे, नरदेव महाधनु सार राज ॥ पु० ॥ ॥ २४ ॥ मं० ॥ दृढधनु आदि आवे घणा रे, ए बलदेव कुमार राज ॥ कृष्णना सुत हवे सांभलो रे, भानु ने भामर धार राज ॥ पु० ॥ २५ ॥ मं० ॥ महाभानु अनुभानुजी रे, बृहध्वज सुविदित्त राज ॥ अग्निशिख धृष्णु संजयो रे, अकंपित शुभवित्त राज ॥ पु० ॥ २६ ॥ मं० ॥ महासेन उदधि गौतम वली रे, सुधर्म ने वली धीर राज ॥ प्रसेनजित सूरय चंद्रजी रे, वर्मा ने वली गंभीर राज ॥ पु० ॥ २७ ॥ मं० ॥ चारुकृष्णक कृष्णना रे, सुचारु देवदत्त राज ॥ भरत ने शंख प्रद्युम्नजी रे, शांब प्रमुखजी आयात राज ॥ पु० ॥ २८ ॥ मं० ॥ विष्णुपुत्र सहसागमे रे, उग्रसेन राजान राज ॥

तेहना सुत पण आवीया रे, सांजलो तास अजिधान राज ॥ पु० ॥ २ए ॥
॥ मं० ॥ धर गुणधर शक्तिक डुर्धरा रे, चंड ने सागर आवे राज ॥ नामनो पार
न पामीये रे, यादव पार न पावे राज ॥ पु० ॥ ३० ॥ मं० ॥ शुज दिन कोष्टुके
आपीयुं रे, शुज शकुने ते प्रयाण राज ॥ तेह जनार्दन चालीया रे, करता
घहु नृप जाण राज ॥ पु० ॥ ३१ ॥ मं० ॥ एक एकथी वलीया घणुं रे, वियाए
महावलीया राज ॥ होकारे शत्रुसैन्यने रे, त्रासवे ते जलजलीया राज
॥ पु० ॥ ३२ ॥ मं० ॥ त्रीजे खंडे अधिकारमां रे, त्रीजे चोथी ए ढाल
राज ॥ पद्मविजय कही सोहामणी रे, सुणतां मंगलमाल राज ॥ पु० ॥
॥ ३३ ॥ मं० ॥ सर्व गाथा ॥ ११ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूर्वोत्तर दिशि चालीया, जोजन पिस्तालीश ॥ कृष्ण आवासे तिहां
कणे, करवा जयत जगीश ॥ १ ॥ अनाधृष्ट आवी कहे, चार जोजन ने
दूर ॥ जरासंध नृप तिहां थकी, पण अपशकुन ने क्रूर ॥ २ ॥ दीये अप-
मान वंधु प्रते, मित्रने करे उद्वेग ॥ वांक विना कोपे घणुं, स्वेछाए अवि-
वेग ॥ ३ ॥ सज्जनने संतापतो, साधु उपर द्वेष ॥ देव गुरु अपमानतो, रात्र
न निडा रेख ॥ ४ ॥ दिवसे नित निडा करे, प्रजालोक विरक्त ॥ अप-
निमित्त अपशकुन ते, दीसे सहु आसक्त ॥ ५ ॥ आणा मात्र पार्थिव सहु,
सघला वंछे तुम्ह ॥ जीत थशे ए थानके, ए आशिष ने अम्ह ॥ ६ ॥
जादव सहु हवे सज्ज होइ, जरासंध सुणी तेह ॥ कहे किम ए अणबूऊता,
आव्या थानक एह ॥ ७ ॥ नवि बूजे गोवालीया, समुडविजय केम आज
॥ आव्यो अणजाण्यो थइ, निश्चय मरवा काज ॥ ८ ॥ मारा सैन्य समु-
ड्मां, साथुचूर्ण समान ॥ इम कहेतां वोल्यो हवे, हंसक मंत्री ते थान ॥ ए ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ सुण मोरी सजनी रजनी न जावे रे ॥ ए देशी ॥ जादव वल पण
तुछ म जाणो रे, वल विष्णु जिनवर एणे गणो रे ॥ वीजा रायथी वहु
वल वलनुं रे, हवे कहुं सांजलो वल जे विहनुं रे ॥ १ ॥ हितनी स्वामी
कहीये वात रे, जादव वलीया आज विख्यात रे ॥ ए आंकणी ॥ सोल
सहस वल सहित राजानो रे, संकलवद्ध थइ तिणे थानो रे ॥ विष्णु
संकल लीये कर वाम रे, नवि खेंचाय सहु तिणे ठाम रे ॥ हित० ॥ २ ॥

कोटी शिला उपाडे जेह रे, ते वासुदेव सुणीये एह रे ॥ बमणा बलीया चक्री होय रे, अनंत गुणुं बल तेहथी जोय रे ॥ हि० ॥ ३ ॥ ते तीर्थंकर जेहनी पास रे, तेहशुं युद्धथी थइये निराश रे ॥ पृथिवी छत्र ने मेरुनो दंड रे, करवा जेह समर्थ अखंड रे ॥ हि० ॥ ४ ॥ लोक अलोकमां नाखे स्वामी रे, तेहने चालो प्रभु शिर नामी रे ॥ तेह अरिष्टनेमि भगवानो रे, जीते त्रण जगतने मानो रे ॥ हि० ॥ ५ ॥ चोसठ इंद्र ते किंकर जेहना रे, अम्ह सरिखा शी गणती एहना रे ॥ वात वली एक स्वामी सुणीये रे, चार रथी शास्त्र मांहे भुणीये रे ॥ हि० ॥ ६ ॥ अतिरथी ने महारथी कहेवाय रे, समरथी अर्द्धरथी चउ थाय रे ॥ तेहमां चार अतिरथी कहीये रे, आपण सैन्य तुमे एक लहीये रे ॥ हि० ॥ ७ ॥ तेहना सैन्यमां तो त्रण दीसे रे, ए पण वात छे विशवावीशे रे ॥ महारथी प्रमुख तो बिहुं दल मांहि रे, परमारथ पण तेहनो नांही रे ॥ हि० ॥ ८ ॥ हस्तिपदमां सहु पद पेसे रे, यद्यपि तुम्ह बल महोटुं दीसे रे ॥ पण अरिहा हरि बल ते साथे रे, बलीयो दीसे न एहने माथे रे ॥ हि० ॥ ९ ॥ दीठो स्वयंवर रोहिणी देव रे, जीत्यो किणी परे श्रीवसुदेव रे ॥ केम न संभारो स्वामी तेह रे, आज तो बहु दल मलीयो एह रे ॥ हि० ॥ १० ॥ चोसठ इंद्रने नमवा जोग रे, जेहथी जाय भवभय शोग रे ॥ तेहशुं विक्रम करवुं नांही रे, नमवुं जोग्य छे स्वामी आंही रे ॥ हि० ॥ ११ ॥ इम सुणी हंसक मंत्रीनी वाणी रे, मगधेश्वर तव क्रोध ते आणी रे ॥ ते कहे बलीया एहवा होता रे, तो केम भयथी पश्चिम पहोता रे ॥ हि० ॥ १२ ॥ शौरि मथुरा केम एणे छांडी रे, हंसक बोले वातडी मांडी रे ॥ भीरु एह न जाणो कोइ रे, कालादिक लही फल सहु होइ रे ॥ हि० ॥ १३ ॥ गजवर साथे ते दिन जायो रे, न करे रण पंचानन आयो रे ॥ व्यालो वालो न डंके चांप रे, ते कारण विचारो आप रे ॥ हि० ॥ १४ ॥ अथवा रिपु हणवा ए उपाय रे, लही संकोच ओसरवुं थाय रे ॥ इम सुणी कोपे नृप कलकलीयो रे, यादवे निश्चे एहने छलीयो रे ॥ हि० ॥ १५ ॥ तिण अवसर कहे डिंभक मंती रे, रायने गमती वातनी पंती रे ॥ जय पराजय तो पुण्यथी थाय रे, पण व्यवहार ते केम मूकाय रे ॥ हि० ॥ १६ ॥ चक्रव्यूह इम करी मंडावे रे, आवी कृष्णने घर संभलावे रे ॥ गरुडव्यूह ते करे विस्तारे रे, खेचर आवे बहुल ते

वारे रे॥ हि० ॥ १७ ॥ श्रीवसुदेवने पक्षे जेह रे, कृष्णनी पासे आवे तेह रे ॥ प्रतिपक्षी जाय जरासंध पासे रे, कायर प्राणी दूरे नासे रे ॥ हि० ॥ १८ ॥ कृष्ण सोंपे वली नेमने शौरि रे, वेयड्ढ खेचर जीतवा वयरी रे ॥ शस्त्र न लागे मूलिका तेहवी रे, मेरु शिखरे बांहे बांधी एहवी रे ॥ हि० ॥ १० ॥ वसुदेव दीये जिनवर नेम रे, वसुदेव चाल्या वेयड्ढगिरि एम रे ॥ इणी अवसर तिहां शक्र आदेशे रे, मातलि नामे सारथि वेशे रे॥ हि० ॥ २० ॥ दिव्य शस्त्र भरी रथ ते लावे रे, नेमि जिनेसर मांहे पधरावे रे ॥ हय हेषारवे गजवर गाजे रे, रथ रणके कायर बहु भाजे रे ॥ हि० ॥२१॥ जुद्ध ते लागां बिहुं अप्राणी रे, घांची तेल ज्युं पीले घाणी रे ॥ जादव नाठा कृष्णने शरणे रे, वली कहे मरवुं ए व्यूहने करणे रे ॥ हि० ॥ २२ ॥ त्रण भाग करो जीतवा काजे रे, दक्षिण दिशि नेमि जिन ठाजे रे ॥ नाम अनाधृष्ट मध्ये राजे रे, उत्तरे प्रस्थकुमार विराजे रे॥हि०॥२३॥ नेमि जिनेश्वर पक्षे राजा रे, जीते रिपुदल अंगे साजा रे॥पांडव ने वली कौरव लागा रे,कौरव मरता केइक भागा रे ॥ हि० ॥ २४ ॥ केर घणो ते हुई लमाइ रे, कहेतां नावे तास वमाइ रे ॥ शरण करे जइ जरासंध पासे रे, पुण्य विना सहु होइ निराशे रे ॥ हि० ॥ २५ ॥ नेमिचरित्र जोजो इण थाने रे, जुद्ध हुई ते न आवे माने रे॥ त्रीजे खंडे त्रीजे अधिकारे रे,पांचमी ढाल कही सुप्रकारे रे॥हि०॥२६॥ नेमि जिनेश्वरनो ए रास रे,सुणतां होवे लील विलास रे॥ पंडित उत्तमविजयनो शिष्य रे, पद्मविजय कहे विशवावीश रे॥ हि० ॥ २७॥ सर्व गाथा ॥ १५५॥

॥ दोहा ॥

॥ नाठो सेनानी हवे, गयो जरासंध पास ॥ हुंकारे खेचर बहु, लेहेतो मनमां त्रास ॥ १ ॥ दश हजार राजा तिहां, करवाने संग्राम ॥ मगधेसर उठावतो, अमरष धरतो ताम ॥२॥ काल कंस संभारतो, वली ते देखी हार ॥ जरासंध मन चिंतवे, पडे आपणने मार ॥ ३ ॥ ते कारण हवे हुं चढुं, इम चिंतवतां तास ॥ सज्ज सुभट सघला थया, करता महोटी आश॥ ४ ॥

॥ ढाल ६ठी ॥

॥ कमखानी देशी ॥ जुद्ध करे जुद्ध थइ, शुद्ध रणभूमिमां, रण करण त्रण, खंडेश उठे ॥कान्ह पण सान, मन मान आणी हवे, चरमुखे सुणीय, उठे ते रूठे ॥ जु० ॥ १ ॥ दोय दल सकल तिहां, सबल झूझे रणे, आग

धरी लाग लही, मागधेश ॥ जवण नामे जलो, खवण जडुसैन्यने, उठीयो समर वर, करण वेश ॥ जु० ॥ २ ॥ सारण कारण, दय मगधेशनो, जवणने जमगृहे,तवण कीधो ॥ तीर जिम नीर,वरसी करे पीर तस,एह जशवाद सुत, कृष्ण लीधो ॥ जु० ॥ ३ ॥ सांजली तिहां बली, देहली रायनी, दल हकारे निज, रीश आणी ॥ सैन्य जादव तणुं, दैन्य तिण समे थयुं, नेम विणु इम, थरहरे प्राणी ॥ जु० ॥ ४ ॥ यतः ॥ तदवसरे यादवसैन्यं कीदृशमनूत्तदु-च्यते ॥ चाल ॥ विमुक्क पवर जाणयं, समुज्झियाजिमाणयं ॥ गलंतखग्ग हत्थयं, निवम्मंत सुहम्मजत्थयं ॥ १ ॥ विमुक्क धीर धीरयं, विमग्गमाण नीरयं, लुलंत यत्त चिंधयं, नचंत बहु कवंधयं ॥ २ ॥ ससामिणो विरत्तयं, पला-यणेक्कचित्तयं ॥ मतेज्ज संपणोल्लियं, तुरंग थट्ट पेल्लयं ॥ ३ ॥ जयाउ लुचिय ज्झयं, रहोह रुद्ध पत्थयं ॥ अनोन्न पेलणुग्धयं, पलाण तीरुवग्गयं ॥ ४ ॥ मयहेस वाण ताम्मियं, संगाम जूमि पाम्मियं ॥ संजायसावसेसयं, विमुक्क जीवियासयं ॥ ५ ॥ नेमिजिनसह, लेइ इह वेला रथे, सैन्य तिहां दैन्य, देखीने पूरे ॥ शंख तिम धनुष्य, दुःखदाय शत्रु तणे, धनुपटंकारथी, बधिर क्रूरे ॥ जु० ॥ ५ ॥ सद्द तिहां शंखनो, रद्द लागे घणो, पामी मूर्छा पड्या, ठाम त्यांहि ॥ करे अनुग्रह तथा, निग्रह विश्वने, जिनवरा मगध, राजेश कांही ॥ जु० ॥ ६ ॥ सद्य सावद्य जिन, अद्य ते नवि करे, विष्णु प्रति-विष्णुने, हणत निश्चे ॥ तेह कारण जिने, निवारणो ए कर्यो, क्रोध ते जोध नहीं, जिनह चित्ते ॥ जु० ॥ ७ ॥ नकुल अर्जुन बली, जीम युधिष्ठिरो, समुद्र-विजय सारण, आदि देइ ॥ रुंधीयो चिहुं दिशे, दश दिशे नट गया,जुद्ध करे शूर थइ, क्रूर केइ ॥ जु० ॥ ८ ॥ नाम शिशुपाल, महाकाल परे आवीयो, त्रास यडुराशिने, तेह देतो ॥ समर शरजर तिहां, देखे सुरवर नजे, तेह जमरायने, ठाय पहोतो ॥ जु० ॥ ९ ॥ सहस दश सामटा, राय सम समय ते, उठीया निज निज, सैन्य लेइ ॥ सुर असुर चिंतवे, न हरि हवे नहीं इली, अन्य सहु राय पण, नहींय केइ ॥ जु० ॥ १० ॥ शंख पूरे प्रभु, धनुप आस्फालता, रथ चिहुं फेर, सहु मांहि घाली ॥ सिंह श्वापद परे, नाद सिंहनो करे, तिणे चिहुं दिशे, जूमि चाली ॥ जु० ॥ ११ ॥ गमगमी कूट, गिरिनां पडे नमम ले, त्रास लही नास चिहुं, पास करता ॥ हय गय रह निवह, केह तिहां करे, चूर्ण संपूर्ण थया, चित्त मरता ॥ जु० ॥ १२ ॥ मृग-

पति मृग परे, सहु तिहां नासता, भ्रमत चिहुं पास, जिनराज दीसे ॥ करत उंबामीयुं, शिशु जेम रामते, क्रोध अक्रोधपणे,करत रीसे ॥ जु० ॥ १३ ॥ सर तणो निकर, जिनवर तिहां मूकता, पतत चामर ध्वज, छिन्न थाये ॥ कवच पाखर प्रमुख, स्फाटित ततक्षणे, सहु तणा तेज परताप जाये ॥ जु० ॥ १४ ॥ अशरण मरण, आसन्न वीसन थया, एक एक मांहि, पेसे विशेषे ॥ हेति ने सत्ति,दीसंती नहीं तस कने,नवि जपे नवि चले,तेह लेशे॥जु०॥१५॥ रण अचल तरुण रवि,जिनवर नेमि जी,ग्रहगणतार, अंधार नासे ॥ केइ कहे कान्ह ए, आप आयो इहां, केइ कहे सत्ति नहीं, एह तासे ॥ जु० ॥ १६॥ चक्रधर चक्र परे,वक्र दश दिश फरे,कोइ कहे चरम,द्वादशम होशे ॥ ते ए एषे थशे, चक्री किहांथी हशे, शक्ति पण तास, एहवी न जोशे ॥ जु०॥ १७ ॥ शक्र आव्यो तिणे, जादव पक्षमां, केइ परमब्र, ज्ञाता विख्याता ॥ त्रण जग रूप, अनूप अनंत बल, एह जिन नेम सुख खेम दाता ॥ जु० ॥ १८ ॥ केइ कहे मूढ, नवि गूढ जाणे किस्युं, ए जरासंध, राजा न रुडो ॥ जास पख करत रख, एहवा जिनवरा, तास सम केम ए, करत जूंडो ॥ जु० ॥ १९ ॥ नइ तरी समुद्र वरी, तरण इछा करे, नाश पामे कहो, नहींय केम ॥ थाय प्रतिकूल मति, शकति पण नवि रहे, दैव रूठो जस, होय एम ॥ जु० ॥ २० ॥ जावी जावा, स्वजावा अवश्ये होये, तेणे तिहां मगधेश बोले ॥ आपो गोपाल, रखवाल करुं सहु तणी, समुद्रविजयो चित्त, केम न खोले ॥ जु० ॥ २१ ॥ सुणी असंबद्ध, संबद्ध थइ उठीया, पुत्त मागध तणा, इगुणसयरी ॥ कान्हने रानमां, विंटीयो सहु मली, पुत्त अम्वीस मली, राम वयरी ॥ जु० ॥ २२ ॥ शेष बल शेषशुं, युद्ध अवशेषपणे, काल ततकाल, रामे पमाड्या ॥ तव जरासंध, जूझे अति रोषशुं, रुधिर वमतो करे, केइ पाड्या ॥ जु० ॥ २३ ॥ पुत्त अगणोत्तर, तव हणे कृष्णजी, शोष मन आणी करी, रोष जापे ॥ रे रे गोवाल तुझ, काल आव्यो हवे, कहे रे गोविंद इम, वलीय तासे ॥ जु० ॥ २४ ॥ अंध संबंध लहे, जीतिनो तव फिरे, अंध अधिको लह्यो, तुझ नीको ॥ एह अनह, देखंत पण अधिक रस, मान मत कर इहां, तुं अलीको ॥ जु० ॥ २५ ॥ नहीं दोष ताहरो, जाव जावी वणे, गोवकुल हीण, देखो हुं दीण ॥ कंस ने काल, ततकाल जमघर ठव्या, ताहरुं पण शिर, थाशे क्षीण ॥ जु० ॥ २६ ॥ क्षत्रिकुलने कलामां

कुशल देखीये, इम सुणी बोध लह्यो, क्रोध तास ॥ कुंत ने शल्य करवाल दल बिहुं लडे, घोर महाशोर पकठंद जास ॥ जु० ॥ २७ ॥ जयकरा दुर्द्धरा, रणधरा ते थइ, धरणी नन्न बाणथी, तेह पूरे ॥ शंख मगधेशनो, सुणीय जादव तिहां, कृष्ण शरणे कहे, मुआ अधूरे ॥ जु० ॥ २८ ॥ कृष्ण ठेदे महा, ध्वज क्षुरप्रे करी, नीर जिम तीर, मगधेश वरसे ॥ तेह नेदी, अखेदी कहे कृष्ण इम, हास्य करतो कहे, दुःख फरसे ॥ जु० ॥ २९ ॥ कान्ह अभिधान, जुवान हुं जाणजे, वृद्धमति मूढ तुम्हे,असरि एह ॥ जाउ निज गेह. धरी, तेह में मूकीया, कोपथी ऊलहल्या, सुणीय तेह ॥ जु० ॥ ३० ॥ देव अधिष्ठ, ते इष्ट समरे तिहां, शस्त्र आव्यां निज, हाथ मांहि ॥ कृष्ण पण समरतो, इष्ट निज देवता, मंत्रनां शस्त्र, मूके ते त्यांहि ॥ जु० ॥ ३१ ॥ शस्त्र प्रतिपक्ष, मूके हरि तेहने, तेह कहेतां नवि, पार आवे ॥ रिक्तशस्त्रे करी, चित्त निराशय थइ, चिंतवे मुजह, धिक्कार थावे ॥ जु० ॥ ३२ ॥ समुद्र लही पार, गोपद परे गोप ए, तेहमां बूडतो, आज देखो ॥ सहस्र आरा तणुं, नानुमंकल सुणुं,चक्र संनारतो, तेह पेखो ॥ जु० ॥ ३३ ॥ सुरपरिकरित, सुर नीत देवे घणुं, चिंतवे कैतवे, हवे हणाणो ॥ मूकीयुं चक्र, महावक्र अरि नेदवा, वज्र परे सहस, जालानुं ठाणो ॥ जु० ॥ ३४ ॥ यक्ष ने सिद्ध, गांधर्व सुर नय लहे, ज्योतिषी खेचरा, सर्व नाठा ॥ सुर असुर नरवरा, शिव शिव बोलता, ईंटी नाखे केइ, केइ नाठा ॥ जु० ॥ ३५ ॥ वली नयण वारिनी, धार रेडे घणुं, शस्त्र मूके तिहां, दिव्य साहामां ॥ मुसल हल ठवे, हलहरो तिण समे, महागदा नाखतो, नीम तेहमां ॥ जु० ॥ ३६ ॥ सत्र सवत्र तिहां, पत्र नाखे वली, परिघ सेनानी, नाखे तिवारे ॥ नकुल नाखंत तिहां, कुंत ऊलसंत ते, खड्ग नाखे, सहदेव त्यारे ॥ जु० ॥ ३७ ॥ देत नाराच ते, समुद्रविजयो जयो, शल्य मोघर प्रवर, नद्य मांहि ॥ शेष नरेश निज, शस्त्र नाखे वली, पण न आक्रम करे, तास कांही ॥ जु० ॥ ३८ ॥ शुं थशे शुं थशे,सुर नरा बोलता, चक्र आव्युं तिहां, कृष्ण पासे ॥ तुंब वक्षस्थले, लगत नहु धार तस, कज परे करकजे, धरे विलासे ॥ जु० ॥ ३९ ॥ कृष्ण हस्ते अधिक, तेज वस्ते थके, देव पण देखी, मन मांहि चमक्या ॥ शांति सघले थइ, वाणी जय जय नइ, सुनट कारय जिको, तेह । ॥ जु० ॥ ४० ॥ कुसुम वुष्टि परि, तुष्ठ सुर तिहां करे, नवम

वासुदेव परगट्ट हुर्ज ॥ केवली महाऋषीश्वरे, अम्ह नाखीयो, अहो अहो पुएय, एहनां ते जुर्ज ॥ जु० ॥ ४१ ॥ वाजत डुंडुहि, सुरहि गंधोदके, फूल अमूल्यनी, वृष्टि करता ॥ कान्ह कहे वाणी हवे, मूक तुं मान निज, आण शिर ठाण मुऊ, जार्ज धरता ॥ जु० ॥ ४२ ॥ करुण उपन तिणे, नाखीये तुऊ वयण, जीवता देखता, जड प्राणी ॥ शूरनुं पूर ते, दाखीयुं क्रूरपणे, पण होय नावी, नावे पराणी ॥ जु० ॥ ४३ ॥ चक्र सुरपतिवती, नवि होय अन्यथा, मुऊ वासुदेव, देवे कहाव्यो ॥ मूक विषवाद, अपवाद नहीं ताहरो, कहे जरासंध, माने नरायो ॥ जु० ॥ ४४ ॥ वासुदेवो थशे, गोप ए देखजो, कल्पित गर्व मन, को निवारे ॥ नवम वासुदेव अह,-मेवपणे शीखवे, लोह कटके मन, मान धारे ॥ जु० ॥ ४५ ॥ श्वान लही अस्थि, मन हिठ थाये घणुं, जंबुक आमिष, खंम पामी ॥ तृण परे इंड, गणतो मने गोप तेम, गर्व उतारुं हुं, इणहि ठामे ॥ जु० ॥ ४६ ॥ सुणी कोपे हवे, खेपवे चक्रने, छेद शिर करत, आव्युं ते हछे ॥ सहस्र करे देव, तस सेव ततखेव हत, नरक चोथी गयो, पाप जछे ॥ जु० ॥ ४७ ॥ उक्तं च ॥ परमगुरु-जिरागमे ॥ आसग्गीवे तारय, मेरय महुकेतवे निसुंजे य ॥ वलि पहराए तह रा,-वणेय नवमे जरासिंधू ॥१॥ ए ए खलुपमिसत्तू,कित्ती पुरिसाण वासुदेवाणं ॥ जिणवर बलदेवा पुण,सव्वे विहयासचक्कवइ ॥२॥ अमर खेचर प्रमुख,कुसुम-वृष्टि करे,जयो जयो नवम,वासुदेव एह ॥ डुंडुहि वाय,बहु गाय तिणे हर्षथी, नणत कल्याण, आणंद देह ॥ जु० ॥ ४७ ॥ सत्यविजयो जयो, कपूरविजयो नयो, तास थयो शिष्य क्षमा, तेहि विजयो ॥ जिनविजय पंमितो,सुगुणथी मंमितो, तास उत्तमविजय, शिष्य हुर्ज ॥ जु० ॥ ४ए ॥ ढाल ठठी, अधिकार पूरो थयो, खंडे त्रीजे ए, त्रीजो वखाणो ॥ पद्मविजये नलो, नेमि जिन रासमां, सुणत मंगलिक, माला पिछाणो ॥ जु० ॥ ५० ॥ सर्व गाथा ॥ २०ए ॥ इति श्रीमडुत्तमोत्तमविजयस्य लब्धकुवादिवृंदजयस्य वाङ्मयपारप्राप्तस्य पद्मविजयशिष्येण विरचिते नेमिजिनचरित्रे प्राकृतप्रबंधे शांबप्रद्युम्नविवाहजरासंधवधकीर्त्तनो नाम तृतीयखंडे तृतीयोऽधिकारः समाप्तः ॥ ३ ॥

॥ अथ तृतीय खंमस्य चतुर्थोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥दोहा॥शारद जिन गुरुने नमी,कहुं चोथो अधिकार॥नावे त्रीजा खंममां,

सुणजो हर्ष अपार ॥ १ ॥ मूक्या नेमि जिनवरे, कृष्ण अरिना राय ॥ जरासंध सुत थापीयो, सहदेवने पितु ठाय ॥ २ ॥ शौर्यपुरे महानेमजी, समुद्रविजय सुत थाप ॥ हिरण्यनाभ कोशल ठवे, कृष्णजी हर्षे आप ॥ ३ ॥ धर नामे मथुरा ठवे, उग्रसेन सुत सार ॥ मातलि निज थानक गयो, प्रणमी नेमकुमार ॥ ४ ॥ खेचरी एक आवी कहे, जीत्या श्रीवसुदेव ॥ नारद मुखथी सांभली, नवमा तुम्हे वासुदेव ॥ ५ ॥ एम कहे आव्या तुरत, शांब प्रद्युम्नने ताम ॥ परणावी बहु कन्यका, कीधां उत्तम काम ॥ ६ ॥ जीवजशा अग्नि भखे, हय गय रह भरू कोश ॥ नितं वधे गोविंदने, वधते परम संतोष ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ श्रीधर्म जिणंद दयाल जी, धर्म तणो दाता ॥ ए देशी ॥ श्रीनेमि जिनेश्वर आगे जी ॥ हर्षथी अति माता ॥ सहु कूदे नाचवा लागे जी ॥ पामी जगत्राता ॥ सहु परमाणंद ते पामे जी ॥ ह० ॥ आणंदपुर वसे तिणे ठामे जी ॥ पा० ॥ १ ॥ त्रिभुवन मांहि मनोहार जी ॥ ह० ॥ तिहां तीर्थ प्रसिद्ध थयुं सार जी ॥ पा० ॥ हरि साधवा चाल्या देश जी ॥ ह० ॥ भरतार्धमां आणी निवेश जी ॥ पा० ॥ २ ॥ साथे सोल सहस राजान जी ॥ ह० ॥ बहु खेचरपतिशुं कान जी ॥ पा० ॥ जिहां कोटिशिला सन्निवेश जी ॥ ह० ॥ तिहां आवे भरतार्धेश जी ॥ पा० ॥ ३ ॥ तेह उंची ने विस्तार जी ॥ ह० ॥ योजनपरिमाण श्रीकार जी ॥ पा० ॥ सुरसमूह आश्रितशुं हाली जी ॥ ह० ॥ तस बल परीक्षा करे चाली जी ॥ पा० ॥ ४ ॥ तिहां पहेला वासुदेव आवी जी ॥ ह० ॥ धरे वाम भुजाग्रे ठावी जी ॥ पा० ॥ बीजा वासुदेव शिरे लावे जी ॥ ह० ॥ त्रीजा कंठ देशे ठावे जी ॥ पा० ॥ ५ ॥ वक्षस्थले चोथा जाणो जी ॥ ह० ॥ हृदये पंचम मन आणो जी ॥ पा० ॥ लावे छठा केडने देशे जी ॥ ह० ॥ सातमा ऊरु लगे सुविशेषे जी ॥ पा० ॥ ॥ ६ ॥ ढिंचण लगे आठमा सार जी ॥ ह० ॥ नवमा चउ अंगुल धार जी ॥ पा० ॥ अवसर्पिणीए बल प्रांही जी ॥ ह० ॥ सहु नरनां घटतां थांही जी ॥ पा० ॥ ७ ॥ जय जय तिहां शब्द प्रयुंजे जी ॥ ह० ॥ सुर असुर सहु हरि पूजे जी ॥ पा० ॥ खट्मासमां त्रण खंड साधी जी ॥ ह० ॥ पगली पुण्य पूरव लाधी जी ॥ पा० ॥ ८ ॥ द्वारिका नयरीमां आव्या जी ॥ ह० ॥ बहु

मोह्नव कौतुक न्नाव्या जी ॥ पा० ॥ सहु जादव निज निज ठामे जी ॥ ह० ॥ थापे हरि महागुण कामे जी ॥ पा०॥ए॥ शुन्न दिवसे शुन्न मुहूरते जी ॥ ह० ॥ सहु आवे निज निज सत्ते जी ॥ पा० ॥ सिंहासने थापी कान जी ॥ ह० ॥ वली वलदेवने वहु मान जी ॥ पा० ॥ १० ॥ अन्निषेक करे मन रंगे जी ॥ ह० ॥ सुर सान्निधे जादव संगे जी ॥ पा० ॥ सोल सहस मली राजान जी ॥ ह० ॥ मंगल जय जय तिणे थान जी ॥ पा० ॥ ११ ॥ गंगा मागधनां पाणी जी ॥ ह० ॥ देवता ते थानक आणी जी ॥ पा० ॥ मणि कनकना कलश ते न्नरीया जी ॥ ह० ॥ अन्निषेक करे परवरीया जी ॥ पा० ॥ १२ ॥ सोल सहस ते गोविंद परणे जी ॥ ह० ॥ आठ सहस करे वली शरणे जी ॥ पा० ॥ जादवना कुमरने आपे जी ॥ ह० ॥ शेष आठ सहस न्निन्न थापे जी ॥ पा० ॥ १३ ॥ करे विवाहमोह्नव न्नारे जी ॥ ह० ॥ हवे विसर्जे सहुने त्यारे जी ॥ पा० ॥ दशार्ह ते दश वलदेव जी ॥ ह० ॥ सोल सहस राजान वली हेव जी ॥ पा० ॥ १४ ॥ साढा त्रण कोडी कुमार जी ॥ ह० ॥ प्रद्युम्न प्रमुख वली सार जी ॥ पा० ॥ शांव प्रमुख ते साठ हजार जी ॥ ह० ॥ डुर्दांत महा जोधार जी ॥ पा० ॥ १५ ॥ वीरसेन प्रमुख वली जेह जी ॥ ह० ॥ एकवीश सहस कह्या तेह जी ॥ पा० ॥ बीजा पण केइ हजार जी ॥ ह० ॥ पाले कृष्णनी आणा सार जी ॥ पा० ॥ १६ ॥ करे क्रीडा नव नव रंगे जी ॥ ह० ॥ वहु कौतुके अति उह्नरंगे जी ॥ पा० ॥ कानन आराम उद्यान जी ॥ ह० ॥ सरिता सर वावि ने थान जी ॥ पा० ॥ १७ ॥ क्रीडापरवते विचरंता जी ॥ ह० ॥ निज नारी सहित सुखवंता जी ॥ पा० ॥ सुरलोकमां सुर परे जाणो जी ॥ ह० ॥ गयो काल न जाणे तिण ठाणो जी ॥ पा० ॥ १८ ॥ हवे समुद्रविजय शिवादेवी जी ॥ ह० ॥ सहुनी वात देखी एहवी जी ॥ पा० ॥ कहे नेमि कुंवरने वाणी जी ॥ ह० ॥ नारी परणो एक गुणखाणी जी ॥ पा० ॥ १९ ॥ अम पूरो मनोरथ पुत जी ॥ ह० ॥ सफलुं यौवन नारी जुत्त जी ॥ पा० ॥ त्रण ज्ञानी न्नव उदवेगी जी ॥ ह० ॥ कहे नेमि जिणंद वैरागी जी ॥ पा० ॥ २० ॥ कन्या जव योग्य ते लहीये जी ॥ ह० ॥ तव परणुं एम अमे कहीये जी ॥ पा० ॥ ए नारी नरगनी वारी जी ॥ ह० ॥ डुहफल न्नववननी क्यारी जी ॥ पा० ॥ २१ ॥ जे मूरख लोके सेवी जी ॥ ह० ॥ सुणो माता तुमे शिवादेवी जी ॥ पा० ॥ वोलवुं घटे

एहशुं नांही जी ॥ ह० ॥ कहे बालगोपाल एम आंही जी ॥ पा० ॥ २२ ॥ यतः ॥ ईयर महिला न रुच्चइ, सुंदर महिलाए नहि संपत्ति ॥ एमेव विरइ परिव,–जिएहिं दियहा गमिचंति ॥ १ ॥ इम विनये गंभीर कही वाणी जी ॥ ह० ॥ नारी प्रतिषेधे मन आणी जी ॥ पा० ॥ जितमार कुमार श्रीनेम जी ॥ ह० ॥ माय ताय समजावे एम जी ॥ पा० ॥ २३ ॥ त्रीजे खंडे अधिकारे जी ॥ ह० ॥ चोथे ढाल प्रथम उदार जी ॥ पा० ॥ गुरु उत्तमविजयने संगे जी ॥ ह० ॥ कहे पद्मविजय मन रंगे जी ॥ पा० ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अपराजितथी इण समे, चवी जसमतीनो जीव ॥ उग्रसेन घर धारिणी, कुखे आव्यो खीव ॥ १ ॥ रूप लक्षण गुणथी नरी, प्रसवे पुत्री जाम ॥ राजिमती अनिधा ठवे, उग्रसेन नृप ताम ॥ २ ॥ पांडव थानक मोकले, कृष्णजी करी बहु मान ॥ इण समे द्वारिकामां वसे, धनसेन अभिधान ॥ ३ ॥ कमलामेला नामथी, तेहने पुत्री एक ॥ नजसेनने आपे नली, रूपे रति अतिरेक ॥ ४ ॥ नारद नमता आवीया, ते नजसेनने गेह ॥ नजसेन विवाह व्यग्रथी, नवि पूज्यो धरी नेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ स्वामी सीमंधर विनति ॥ ए देशी ॥ कलिप्रिय नारद उतपत्या, करवाने अनर्थ रे ॥ शांब प्रिय मित्र घर आवीयो, सागरचंद्र ठे जह रे ॥ कलि० ॥ ॥ १ ॥ थइय उन्नो ने पूठे इस्युं, तुमो जाउ गमो ठाम रे ॥ कोइक कौतुक पेखीयुं, कहो अम तुमे स्वाम रे ॥ कलि० ॥ २ ॥ कहे रे नारद अमे पेखीयुं, अचरिज मनोहार रे ॥ कमलामेला धनसेननी, धुया रूपनंमार रे ॥ ॥ कलि० ॥ ३ ॥ सांप्रत दीधी नजसेनने, गया कहीने आकाश रे ॥ सागर कमलामेला तणो, थयो रागी अति खास रे ॥ कलि० ॥ ४ ॥ नारद कमलामेला घरे, गया तब इम पूठे रे ॥ आश्चर्य कहो तव ते कहे, दीठां अचरिज दू ठे रे ॥ कलि० ॥ ५ ॥ रूपमां सागरचंदजी, कुरूपी नजसेन रे ॥ सागर रागी ते पण थइ, चल्युं मोहनुं घेन रे ॥ कलि० ॥ ६ ॥ नारद सागरने कहे, ताहरी रागी ठे तेह रे ॥ सागर विरहसागर पड्यो, दीये ...हुं दुःख देह रे ॥ कलि० ॥ ७ ॥ पीत मदिरा हवे शांब जी, आवे सागर पास रे ॥ हाथ जाली रे सागर तणो, बहु कुमर सुविलास रे ॥ कलि० ॥ ८ ॥

सागर कहे कमलामेला तुमे, तव शांब कहे वाणी रे ॥ कमलामेलक मुज जाणजे, कहे सागर तिणे ठाणी रे ॥ कलि० ॥ ए ॥ मेलवो कमलामेला मने, तव शांव पण माने रे ॥ मद गयो जेटले शांवनो, चित्त आव्युं ते थाने रे ॥ कलि० ॥ १० ॥ दुःकर एह अंगी थयुं, अहो केम थशे एह रे ॥ तोही पण बुटवुं निर्वही, पोते अंगीकृत जेह रे ॥ कलि० ॥ ११ ॥ यतः ॥ प्रतिपन्नानि महतां, युगांतेऽपि चलंति न ॥ अगस्तिवचनैर्वद्धो, विंध्योऽद्यापि न वर्द्धते ॥ १ ॥ समरे प्रज्ञप्ति विद्या हवे, आवे शांव उद्यान रे ॥ वहु रे कुमारशुं परवस्यो, हवे जुर्ज तिणे थान रे ॥ कलि० ॥ १२ ॥ कमलामेला तेडावे तिहां, सागरचंद्र लावे रे ॥ ते विहुंने परणावीयां, हवे जुर्ज किस्युं थावे रे ॥ कलि० ॥ १३ ॥ कमलामेला घर नवि जडे, पिता श्वशुर सहु खोले रे ॥ तेह उद्यानमां आवीया, देखे कन्या तिहां टोले रे ॥ कलि० ॥ ॥ १४ ॥ तेह जइ कृष्णने विनवे, सुणी कृष्ण पण रूसे रे ॥ जुद्ध करवा जणी नीकले, महा चढत मन धूसे रे ॥ कलि० ॥ १५ ॥ शांब ने कमलामेला हवे, वली सागरचंद रे ॥ शीघ्र आवीने पाये पडे, देखी तेह गोविंद रे ॥ कलि० ॥ १६ ॥ थइ रे विलखा हवे कृष्णजी, कहे वंचीयो मुज रे ॥ शुं करीये कहो एहने, नवि पडे कांइ सुज रे ॥ कलि० ॥ १७ ॥ हवे नजसेन समजावीयो, मोकलीयो निज धाम रे ॥ कमलामेला ते सागर जणी, दीये कृष्ण गुणकाम रे ॥ कलि० ॥ १८ ॥ छिद्र खोले ते सागर तणां, नजसेन हवे नित्य रे ॥ तास अपहरीय तो नवि शके, एम धरत अप्रीत रे ॥ कलि० ॥ १ए ॥ एम चोथा अधिकारमां, त्रीजे खंडे विशाल रे ॥ ढाल बीजी ए सोहामणी, सुणतां मंगलमाल रे ॥ कलि० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसरे प्रद्युम्नने, अठे वैदर्भी नार ॥ पुत्र थयो एक तेहने, नाम अनिरुद्ध कुमार ॥ १ ॥ यौवनवये आव्यो जदा, शुजनिवासपुर ताम ॥ वाण नाम राजा जलो, उखा कन्या तस धाम ॥ २ ॥ रूपवंत निज सारिखो, वल्लज लहेवा काज ॥ आराधे विद्या प्रते, गौरी कहे शुज काज ॥ ३ ॥ कृष्ण तणो प्रद्युम्न सुत, तेहनो सुत अनिरुद्ध ॥ सुर उपम रूपे करी, थाशे तेह सुबुद्ध ॥ ४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ बापलमी रे जीजलमी, तुं कां नवि बोले मीठुं ॥ ए देशी ॥ गौरी प्रिय सुर बाण आराधे, शंकर नाम ते जास ॥ ते तुगे कहे संग्रामे तुऊ, जय थाशे सुविलास रे॥ १॥ सांजलजो ए कर्म तणी, जुवो वात बने बे केहवी ॥ ए आंकणी ॥ शंकर देवने गौरी जाखे, ए वर खोटो आप्यो ॥ एहनी धुआने वर में आप्यो, ते तें केम उथाप्यो रे ॥ सां० ॥ २ ॥ तव शंकर हवे बाणने जाखे, नारीनुं कारय टाली ॥ बीजे सघले जय तुऊ थाशे, ए में वात संजाली रे ॥ सां० ॥ ३ ॥ बहु खेचर जूचर तस जाचे, पण नवि बाण ते आपे ॥ हवे अनिरुद्ध कुमरने तेमी, निज पासे ते थापे रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ तिहां गंधर्वविवाहे परण्या, हवे ते उखा नारी ॥ लेइ आकाशे कहे इम वाणी, नारी लेइ जाउं हुं सारी रे ॥ सां० ॥ ५ ॥ तव ते बाण बाणावली बोले, कुण ए छुष्ट ते दीसे ॥ एम कही अनिरुद्ध कुमरने रुंधे, मनमां धरी अति रीशे रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ पाठसिद्ध विद्या दीये उषा, निज पतिने धरी राग ॥ जुद्ध करी बहु काल ते साथे, बाण थकी महाजाग रे ॥ सां० ॥ ७ ॥ नागपाशे करी कलज तणी परे, बांधे प्रद्युम्न पुत ॥ बाण महाबलीयो इम करतो, विद्याधर संजूत रे॥ सां० ॥ ८ ॥ प्रज्ञप्ति जइ कृष्णने जाखे, तव ते हरि हली आवे ॥ शांब प्रद्युम्न संयुत चतुरंगी, सेना साथ सोहावे रे ॥ सां० ॥ ए॥ गरुमध्वज देखीने त्रुटे, नागपाश ततकाल ॥ बाण कहे हरिने इम वाणी, हुं हुं महा विकराल रे ॥ सां० ॥ १० ॥ सहुनी कन्या तुमे हरी जावो, पण तुमे फल तस पेखो ॥ कृष्ण कहे इहां वचन तणी सुणी, युक्ति तणो शो लेखो ॥ सां० ॥११॥ कन्या देवी परने आखर, तस हरतां शो दोष ॥ इम सुणतां ते बाण जूपतिने, क्रोध तणो थयो पोष रे ॥सां०॥१२॥ बाण तणो वरसाद वरसावे, कृष्ण उपर ते जाम ॥ तेह जनार्दन आवत छेदे, बाणनो राशि ते ताम रे॥ सां० ॥ ॥ १३ ॥ खंम खंम तिहां बाणने कीधो, हवे अनिरुद्ध ने राम ॥ शांब प्रद्युम्न हरि-उषा सहु, आव्यां द्वारिका गाम रे ॥ सां० ॥ १४ ॥ जे उद्देश ते कृष्णे कीधा, ते ते सघला सीधा ॥ घर घर मंगलमाला जणो, जग जशवाद ते लीधा रे ॥ सां० ॥ १५ ॥ श्रीविजयदेव सूरीश पट्टोधर, श्रीविजयसिंह सवाया ॥ कृतकिरिया उद्धार ते जेणे, सत्यविजय गुरुराया रे ॥ सां० ॥ १६ ॥ शिष्य कपूरविजय तस शिष्यो, क्षमाविजय

तस जाणो ॥ तास शिष्य जिनविजय ते महोटा, महापंमित मन आणो रे ॥ सां० ॥ १७ ॥ उत्तमविजय ते शिष्य कहाया, त्रीजा खंडमां एह ॥ चोथे अधिकारे ए त्रीजी, ढाल अधिक गुणगेह रे ॥ सां० ॥ १८ ॥ रत्नविजय गणि कहेणथी जाख्यो, चोथो ए अधिकार ॥ त्रीजो खंड पण पूरण हुउं, सुणतां जय जयकार रे ॥ सां० ॥ १९ ॥ ढाल प्रथम अधिकारे तेरह, बीजे दश कही सारी ॥ खट्ट ढालो त्रीजे चोथे त्रण, सहु बत्रीश सुखकारी रे ॥ सां० ॥ २० ॥ ढाल उंगणपचास प्रथम खंडे, बीजे कही बावन ॥ त्रीजे बत्रीश सहु मली एकसो, जाणो त्रीश ने त्रण रे ॥ सां० ॥ २१ ॥ इम त्रण खंड अधिक उल्लासे, उत्तमविजयनो बाल ॥ पद्मविजय कहे सुणतां होवे, घर घर मंगलमाल रे ॥ सां० ॥ २२ ॥ चोपाई ॥ खंड खंडथी मीठो घणुं, श्री श्रीनेमिचरित्रे जणुं ॥ उत्तमविजय गुरुथी लह्यो, त्रीजो खंड एम पद्मे कह्यो ॥१॥ सर्व गाथा ॥ ८३ ॥ इति श्रीमद्गुरुचरणधरोत्तमविजयजयलब्धकुवादिवृंदस्य वाङ्मयापारपारप्राप्तस्य शिष्यपद्मविजयेन विरचिते श्रीमन्नेमिजिनचरित्रे प्राकृतप्रबंधे सागरचंद्रोपाख्यानउषाहरणबाणवधवर्णनो नाम तृतीयखंडे चतुर्थोऽधिकारः ॥ ४ ॥ इति तृतीयखंडः संपूर्णः ॥ प्रथमाधिकारे ॥ ४१७ ॥ द्वितीयाधिकारे ॥ ३९९ ॥ तृतीयाधिकारे ॥ २०९ ॥ तुर्याधिकारे ॥ ८३ ॥ सर्वस्मिन् भूत्वा ॥ १००८ ॥ एवं प्रथम खंडे ॥ १६४७ ॥ द्वितीयखंडे ॥ १७३८ ॥ तृतीयखंडे ॥ १००८ ॥ त्रण मलीने ॥ ४३९३ ॥

॥ अथ ॥

॥ चतुर्थखंडस्य प्रथमोऽधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शारदपदपंकज नमुं, नमुं ते जिन चोवीश ॥ शाश्वत जिनप्रतिमा नमुं, विहरमान जिन वीश ॥१॥ उत्कृष्टे काले नमुं, सित्तेर सो जिनराय ॥ जाल कल्याणके नरकमां, पण अजुआलुं थाय ॥ २ ॥ जंबु धातकी पुष्करा, दश क्षेत्रे त्रिहुं काल ॥ त्रीश चोवीशी ते नमुं, सातसें वीश विशाल ॥ ३ ॥ नमुं ते गुरु गुण आगला, समतावंत महांत ॥ जास प्रसाद लही करी, लहीये जवने सांत ॥ ४ ॥ नमुं ते विद्यागुरु वली, उग्र क्रियाधर जेह ॥ जास कृपाथी कीजीये, उद्यम रुडो एह ॥ ५ ॥ त्रीजो खंड पूरण करी, कहुं चोथो हवे खंड ॥

सुणतां बोध होये भलो, सुणजो एह अखंड ॥ ६ ॥ बोधथी श्रद्धा निर्मली, श्रद्धाथी चारित्त ॥ चारित्रथी शिवसंपदा, लहीये जिहां सुख नित ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ लूहारण जायो दीकरो ॥ लोहारी हे ॥ सोनारण जायो सुत के ॥ लाल सुरंगी हे ॥ ए देशी ॥ रमतां रमतां आवीया ॥ जिनवरजी हे ॥ कृष्ण आयुधशाला मांहि के ॥ लाल जिणंद हे ॥ चक्र शंख भीषण गदा ॥ जि० ॥ चाप शस्त्र वली त्यांहि के ॥ ला० ॥ १ ॥ कुंदधवल पंचमुख भलो ॥ जि० ॥ पंच वरण जे शंख के ॥ ला० ॥ लेवा जावे जेटले ॥ जि० ॥ बहु सित ज्युं हंसपंख के ॥ ला० ॥ २ ॥ आयुधशाला रक्षक तिहां ॥ जि० ॥ आवी प्रणमी पाय के ॥ ला० ॥ यद्यपि अतुलबली तुमो ॥ जि० ॥ तोपण ए न लेवाय के ॥ ला० ॥ ३ ॥ तो वजाववो वेगलो ॥ जि० ॥ मूकी एक गोविंद के ॥ ला० ॥ नेम लगारक हसी करी ॥ जि० ॥ तेह लीये जिनचंद के ॥ ला० ॥ ४ ॥ नेमजी वदने ठावीयो ॥ जि० ॥ तव राजे अति जेह के ॥ ला० ॥ फूंकी नेमजी पूरीयो ॥ जि० ॥ उठ्यो अपूर्व ध्वनि तेह के ॥ ला० ॥ ५ ॥ पृथिवीवलय ते कंपतुं ॥ जि० ॥ सायर तजता सीम के ॥ ला० ॥ भवण ने वनखंड कंपीयां ॥ जि० ॥ जन जाणे थयुं किम के ॥ ला० ॥ ६ ॥ त्रण भुवन खोभावीयां ॥ जि० ॥ मानुं गगन ते पेसे पाताल के ॥ ला० ॥ अथवा पाताल आकाशमां ॥ जि० ॥ पेसे इम सहु तिणे ताल के ॥ ला० ॥ ७ ॥ जुग पलटाणो मानता ॥ जि० ॥ सहु लोक करे आक्रंद के ॥ ला० ॥ देवनिर्मित नयरी तिणे ॥ जि० ॥ शतधा नवि थइ गुणवृंद के ॥ ला० ॥ ८ ॥ वर वाजी नासे तिहां ॥ जि० ॥ त्रोडी बंधन पाश के ॥ ला० ॥ करिवर सांकल त्रोडता ॥ जि० ॥ सहु देखी बीहीता तास के ॥ ला० ॥ ए ॥ मूर्छा आवी लोकने ॥ जि० ॥ मृत परे रक्षक सहु थाय के ॥ ला० ॥ सहु भट कृष्ण शरण करे ॥ जि० ॥ धरे भीति हरि हली भाय के ॥ ला० ॥ १० ॥ यतः ॥ चाल ॥ धरणी धरहडए, गिरि खडहडए, जलके सायर नीर ॥ सवि चंद दिवायर, कंपे कायर, मूके सत्त्व शरीर ॥ गज बंधन त्रोडे, खीला मोडे, त्रासे तरल तुरंग ॥ वन मांहि बीहे, शरणुं ईहे, सूअर सिंह कुरंग ॥ १ ॥ रमणी भय धरती, पति अणुसरती, दश दिशे जोये वाट ॥ ढलंती उभे, वाडनखडेभे, कड

नवि संचारे घाट ॥ कोलाहल कोके, जननी जोके, नवि संजलाये साद ॥ मन शंके यादव, दानव मानव, वादी ठंडे वाद ॥ २ ॥ ढाल ॥ कृष्ण चिंते चक्री उपनो ॥ जि० ॥ मुजथी पण शक्ति अतोल के ॥ ला० ॥ मुज पूरे जन क्षोजता ॥ जि० ॥ ए क्षोजावे समुद्रकल्लोल के ॥ ला० ॥ ११ ॥ आयुधरक्षक आवीयो ॥ जि० ॥ जाखे कृष्णने एम के ॥ ला० ॥ शंख पूस्यो ए स्वामी जी ॥ जि० ॥ आवी अरिहा नेम के ॥ ला० ॥ १२ ॥ तेह सुणी हरि हलफल्यो ॥ जि० ॥ आवी प्रशंसे जिणंद के ॥ ला० ॥ एकांते कहे रामने ॥ जि० ॥ लेशे ए राज्यनो वृंद के ॥ ला० ॥ १३ ॥ रण करतां पण महा-बली ॥ जि० ॥ दीठा ए नेमकुमार के ॥ ला० ॥ तव हसीने कहे रामजी ॥ जि० ॥ एह विकल्प म धार के ॥ ला० ॥ १४ ॥ स्त्रीसंसर्ग न इछतो ॥ जि० ॥ केम लेहशे ताहरुं राज्य के ॥ ला० ॥ महापाप मन मानतो ॥ जि० ॥ ए तो बावीशमो जिनराज के ॥ ला० ॥ १५ ॥ यतः ॥ जो होइ वक्कलस्को, अणंत सोस्कंमि तम्मि मोस्कंमि ॥ किह वच्चइ तस्स मणं, अणंत दुहए वि नरयम्मि ॥३॥ त्रिजुवन लखमी वरमाला ॥ जि० ॥ होवे जे नरनी पास के ॥ ला० ॥ ठूंठी मूंगी काणी कूवडी ॥ जि० ॥ केम इछे सुविलास के ॥ ला० ॥ १६ ॥ स्वप्न सूचित तीर्थंकरो ॥ जि० ॥ जाख्यो नेमि जिनराय के ॥ ला० ॥ इम कही कान्हने थिर कस्यो ॥ जि० ॥ वली केटला दिवस गमाय के ॥ ला० ॥ १७ ॥ बल परखीजे आपणां ॥ जि० ॥ एम कहे जिनने गोविंद के ॥ ला० ॥ जिनवर जाणे ज्ञानथी ॥ जि० ॥ जणे हाकारो जिनचंद के ॥ ला० ॥ १० ॥ व्यायामशालामां आवीया ॥ जि० ॥ बेठा सिंहासने दोय के ॥ ला० ॥ देव दाणव सिद्ध गुह्यका ॥ जि० ॥ जोवा अचरिज जेला होय के ॥ ला० ॥ १ए ॥ शे जुद्धे कहो जूजशुं ॥ जि० ॥ कहे नेमि जे तुम मन जाव के ॥ ला० ॥ कृष्ण कहे अमे पेखीशुं ॥ जि० ॥ शस्त्रजुद्ध रणदाव के ॥ ला० ॥ २० ॥ मल्लजुद्धथी जूजी-ये ॥ जि० ॥ ते जिनवरे मानी वात के ॥ ला० ॥ वलगे जमे उल्लसे वली ॥ जि० ॥ सिंहनाद मूके सुखशात के ॥ ला० ॥ २१ ॥ ते सिंहनादथी खलजले ॥ जि० ॥ हय गय नयरी जनलोक के ॥ ला० ॥ जादव सहु जयंकर थया ॥ जि० ॥ मनमां धरता शोक के ॥ ला० ॥ २२ ॥ नेमि जिनेश्वर तव कहे ॥ जि० ॥ अनुचित ए बालने योग के ॥ ला० ॥ बालो

लगारेक वांहमी ॥ जि० ॥ तो तुम जीतण जोग के ॥ ला० ॥ २३ ॥
केशव कहे जुर्ज केटलो ॥ जि० ॥ करे मनमां अहंकार के ॥ ला० ॥ कर
पण वाली नवि शके ॥ जि० ॥ इम कहे नेमकुमार के ॥ ला० ॥ २४ ॥
अमर्ष धरी हवे कृष्णजी ॥ जि० ॥ करे वाम बांह प्रसार के ॥ ला० ॥
कमलनाल परे वालता ॥ जि० ॥ लीलाए नेमकुमार के ॥ ला० ॥ २५ ॥
हवे नेमजी लांबी करे ॥ जि० ॥ निज बांह अति सुकुमाल के ॥ ला० ॥
वाली न वले बांहमी ॥ जि० ॥ तव वलगो थइ विकराल के ॥ ला० ॥ २६ ॥
तोपण न वली तेहथी ॥ जि० ॥ तव वलगे दोय कर लेय के ॥ ला० ॥
भाव लहे जिन विष्णुनो ॥ जि० ॥ हरि मन पाम्यो खेद के ॥ ला० ॥ २७ ॥
बांह प्रभु उंची करे ॥ जि० ॥ वृक्षशाखा परे जाम के ॥ ला० ॥ हरि परे
हींचे हरि तिहां ॥ जि० ॥ खरुं कीधुं निज हरि नाम के ॥ ला० ॥ २८ ॥
बल अनंत भगवंत जी ॥ जि० ॥ जाणीने मूके बांही के ॥ ला० ॥ बल
देखीने रंजीयो ॥ जि० ॥ आलिंगे हरि त्यांहि के ॥ ला० ॥ २ए ॥ हर्षना
भरथी एम कहे ॥ जि० ॥ पण मनमां अति विलखाय के ॥ जि० ॥ तुम
बल शक्ति अगाध छे ॥ जि० ॥ देखी हरख ते थाय के ॥ ला० ॥ ३० ॥
चोथा खंममां जाणीये ॥ जि० ॥ ढाल प्रथम अधिकार के ॥ ला० ॥ पहेली
उत्तमविजयनो ॥ जि० ॥ पद्मविजय कहे सार के ॥ ला० ॥ ३१ ॥ गा० ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्ण कहे धन्य हुं थयो, देखी तुम बल शक्ति ॥ पृथिवीने पावन करी, सुर नर करे तुम भक्ति ॥ १ ॥ देव ते दिवसे चमकीया, कहे परस्पर एम ॥ जुर्ज बालक जिन नेमजी, हरि अंदोल्यो केम ॥ २ ॥ हरि हवे आव्या थानके, धरता मनमां खेद ॥ तेमी कहे बलदेवने, राज्य तणो थयो भेद ॥ ३ ॥ बल कहे ते केम तव कहे, सघलो निज वृत्तांत ॥ तव हसी हरिने बल कहे, पूर्व परे करे शांत ॥ ४ ॥ हरि कहे जाणुं हुं खरो, जिनवर थाशे एह ॥ पण रिखभादिके भोगव्यां, राज्य नहीं संदेह ॥ ५ ॥ चिंते श्री बलदेवजी, नवि लागे उपदेश ॥ हरि हली निज निज थानके, पहोता प्रेम विशेष ॥ ६ ॥ आर्तवशे दिन निर्गमे, न लहे रति को ठाण ॥ कुलदेवी जाणी हरिने भाखे वाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ भाव श्रावकना भाखीये ॥ ए देशी ॥ कुलदेवी कहे वाणी ए, तुमे सांभलो शारंगपाणि ए, जाणीए, तुऊ संताप आवी इहां ए ॥ १ ॥ मनमां मत करो खेद ए, ए परमेश्वर गतस्वेद ए, वेद ए, भोग कस्या विणु व्रत लीये ए ॥२॥ शत्रु मित्र तृण मणि समो ए, एम भाखे जिन एकवीशमो, नमि नमो, महाऋषिए तेम भाखीयुं ए ॥ ३ ॥ राज्य हरणनी शी शंका ए, एहने सघला सम नृप रंका ए, वंका ए, कांही विकल्प मने करे ए ॥ ४ ॥ गत-संशय थयो कान्ह ए, आणी मनमां शान ए, मान ए, मूकी आतम निंदतो ए ॥ ५ ॥ अंतेउरमां बेसी ए, नेम बोलावे हेसी ए, शुभ लेशी ए, आवे जिन केशव कने ए ॥ ६ ॥ आलिंग्यो हरखे भारी ए, तव दीयर दीयर कहे नारी ए, प्यारी ए, हांसीमां बोलावती ए ॥ ७ ॥ जिनवर पण जिन साथे ए, पण भोजाइ दीए बाथे ए, हाथे ए, वलगी हसे रमे हर्षथी ए ॥ ८ ॥ रतन-आसन बेसामी ए, जिनअंग लूहे भली सामी ए, वलगामी ए, माल विलेपे देहमी ए ॥ ९ ॥ रसवती साथे भुंजी ए, कहे कृष्ण ते सहु प्रयुंजी ए, नेमजी ए, सघले प्रवेश करे सुखे ए ॥ १० ॥ वामी वन आरामे ए, वली क्रीमापर्वत ठामे ए, गोठीकामे ए, सहकारकेलि कमलवने ए ॥ ११ ॥ इम सुखमां सुविलास ए, आव्यो वसंत ते मास ए, उल्लास ए, काम नृपति पामे घणो ए ॥ १२ ॥ गोपीने कहे हरि आवो ए, नेमने विवाह मनावो ए, ठावो ए, मदनधाममां एहने ए ॥ १३ ॥ वसंत वर्णनं ॥ पुन्नाग नाग चंपयं, एला लवंग मंमियं ॥ खजूर केलि नालियं, असो-गसें अलंकियं ॥ १ ॥ वर नागवल्लि सुंदरं, फल पुष्फ पत्त निप्परं ॥ उजाणतव सिरिकरं, रेहंति दमण मणहरं ॥ २ ॥ मानुं जलपे लोकशुं, सरस शब्द जे थावे ए, मावे ए, हर्ष लोक मनमां नहीं ए ॥ १४ ॥ पल्लव विकसित मिष हसे, वात कंपित मानुं नाचे ए, साचे ए, शाखापल्लव करे स्तव करे ए ॥ १५ ॥ सरस कुसुम रस चूवे ए, मानुं एह ते रोवे ए, सोवे ए, विरही सुखे नहीं ते वती ए ॥ १६ ॥ फलभर नमीया ते वती, मानुं प्रणमे पाय ए, तिहां आय ए, प्रियजनने ते हर्षथी ए ॥ १७ ॥ शाखा चलित मानुं तेडे ए, लोकने क्रीमा देवे ए, चेते ए, लोक वसंत ते आवीयो ए ॥ १८ ॥ कामे उन्मत्त लोक ए, क्रीमा करे थोकाथोक ए, शोक ए, नहीं कोइना चित्तमां तदा ए

माती सोल सहसा, स्नान करावे नार ॥ मा० ॥ नेमचरित्र विमल तिहां गावे, देवरनो राग धार ॥ मा० ॥ अ० ॥ २० ॥ बाहु उंची करी नाचे सघली, रंजित जिन गुण वार ॥ मा० ॥ रुक्मिणी नामा प्रमुख एम नाखे, तुऊ दुःख लीयुं इण वार ॥ मा० ॥ अ० ॥ २१ ॥ आलिंगन प्रजु नेमने करती, नेमजी आलिंगे ते वार ॥ मा० ॥ पण अविकारी जाइ देखीने, नेमजीनो अवतार ॥ मा० ॥ अ० ॥ २२ ॥ कान चिंते विस्मय पामीने, भ्रात विमल शील एह ॥ मा० ॥ प्रेरणाथी पण चित्त न चलीयुं, जोइ मुऊ नारी सनेह ॥ मा० ॥ प्रजुजी गुणगण गेह ॥ ए आंकणी ॥ २३ ॥ रुक्मिणी प्रमुख एकेकी नारी, परणी युद्ध करेह ॥ मा० ॥ जे देखी सुर पण क्षोजाये, रूप गुणे ए अठेह ॥ मा० ॥ प्र० ॥ २४ ॥ ते कंठ वलगी पण न क्षोजाये, एहथी अधिक नरेह ॥ मा० ॥ अमने ए अज्ञान ते जाणो, जे करुं इहां संदेह ॥ मा० ॥ प्र० ॥ २५ ॥ इम कहेतो नेमजी आलिंगे, हर्ष ते माय न देह ॥ मा० चोथे खंमे प्रथम अधिकारे, ढाल त्रीजी कही एह ॥ मा० ॥ प्र० ॥ २६ ॥ क्षमाविजय जिनवर गुण गातां, उत्तम पदवी वरेह ॥ मा० ॥ पद्मविजय कहे मार जे जीते, धन धन जगमां तेह ॥ मा० ॥ का० ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ १०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्नान करी ते वावमां, रुक्मिणी प्रमुख सहु नार ॥ आवी वावमी बाहिरे, टोले थइ तिणी वार ॥ १ ॥ प्रजु पण आव्या बाहिरे, उठी सघली नार ॥ बोलावे देवर प्रते, आवो नेमकुमार ॥ २ ॥ बेसो रयणसिंहासने, इम कही जाली हाथ ॥ बेसारे सिंहासने, गोपीना मली साथ ॥ ३ ॥ अंग लूइ विलेपन करे, वस्त्राजरण पहेराय ॥ कुसुमे केश अलंकरे, विनय करी तिण ठाय ॥ ४ ॥ स्वामी तुम मुख आगले, बोली जाणे कुण ॥ नारी चपल स्वजावथी, बुद्धि थकी पण ऊण ॥ ५ ॥ स्वामी जुवनाधिक गुणे, रोष न करजो कोय ॥ साचुं कहेतां रीसमी, मूरखने पण न होय ६ ॥ तुम गुणगण न गणी शकुं, पण सहु सफला ताम ॥ घर नारी [illegible], देवर अम परे जाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ वाला वंसीवटने चोवटे, उजला नंदकिशोर ॥ गोरस ढलशे रे ॥ ए ॥ देवरजी तुमे सांजलो, वाला परणो नारी एक ॥ देवर सुणीये रे ॥

ए टेक ॥ शूनुं घर घरणी विना ॥ वा० ॥ चिंतवो धरीय विवेक ॥ दे० ॥ १ ॥ मात पिता जाइ जला ॥ वा० ॥ मागे फरी फरी एह ॥ दे० ॥ यौवन वय जातुं रहे ॥ वा० ॥ परणो धरी ससनेह ॥ दे० ॥ २ ॥ वृद्ध थइ व्रत पालजो ॥ वा० ॥ पण नवि शोजे आज ॥ दे० ॥ वनकुसुम परे निगमो ॥ वा० ॥ स्त्री विणु यौवन राज ॥ दे० ॥ ३ ॥ मौनपणुं मुनिपणे जलुं ॥ वा० ॥ किम करो नेमजी मौन ॥ दे० ॥ लोक रंमोल वांढो कहे ॥ वा० ॥ करे विश्वास ते कोण ॥ दे० ॥ ४ ॥ जमतो घर घर एह ठे ॥ वा० ॥ नारी विना कहे एम ॥ दे० ॥ रुक्मिणी कहे ते कारणे ॥ वा० ॥ मानो वचन धरी प्रेम ॥ दे० ॥ ५ ॥ कामिनी वहन कायर तुमे ॥ वा० ॥ न घटे एह विचार ॥ दे० ॥ बत्रीश सहस जाता जलो ॥ वा० ॥ वहे तुमचो जली नार ॥ दे० ॥ ६ ॥ एक अधिक वहेशे वली ॥ वा० ॥ शी चिंता तेह मांहि ॥ दे० ॥ एम कही पय प्रणमे जसे ॥ वा० ॥ सत्यजामा कहे त्यांहि ॥ दे० ॥ ७ ॥ रुषज प्रमुख जिनवर थया ॥ वा० ॥ ते परण्या निर्धार ॥ दे० ॥ राजेश्वर पण ते थया ॥ वा० ॥ नीति प्रमुख सुविचार ॥ दे० ॥ ८ ॥ विषय सुख जोगव्यां तिणे ॥ वा० ॥ सुत बहु उपन्या तास ॥ दे० ॥ तीरथ थापी शिव गया ॥ वा० ॥ शाश्वत सुख सुविलास ॥ दे० ॥ ए ॥ तेहथी केम नवा थया ॥ वा० ॥ मोक्षना जावणहार ॥ दे० ॥ चित्त विचार करी हवे ॥ वा० ॥ परणो रुमी नार ॥ दे० ॥ १० ॥ जांबुवती हवे जलपती ॥ वा० ॥ वेगली मूकी लाज ॥ दे० ॥ हरिवंशे विजूषण थया ॥ वा० ॥ मुनिसुव्रत जिनराज ॥ दे० ॥ ११ ॥ ते पण गृहवासे वस्या ॥ वा० ॥ सुत उपनो वली सार ॥ दे० ॥ सुख विलसे वली शाश्वतां ॥ वा० ॥ ए तुम वंश विचार ॥ दे० ॥ १२ ॥ पद्मावती कहे पदमिणी ॥ वा० ॥ नारी विना नहीं कांय ॥ दे० ॥ नर विश्वास न को करे ॥ वा० ॥ घरनी शोजा जाय ॥ दे० ॥ १३ ॥ गांधारी घणुं बोलती ॥ वा० ॥ सज्जनजात्रा काम ॥ दे० ॥ संघसाथ पर्वोछवे ॥ वा० ॥ वली विवाहने ठाम ॥ दे० ॥ १४ ॥ तेम उजाणी जायवुं ॥ वा० ॥ वली क्षण परषद होय ॥ दे० ॥ शोजे नहीं ए सर्वथा ॥ वा० ॥ नारी विना सहु कोय ॥ दे० ॥ १५ ॥ गौरी कहे गौरी समी ॥ वा० ॥ सुणो देवरजी वात ॥ दे० ॥ अज्ञानी घणुं पंखीया ॥ वा० ॥ पृथिवी जमवा जात ॥ दे० ॥ १६ ॥ निज नीडे आवी वसे ॥ वा०

॥ कांताकंठ विलग्ग ॥ दे० ॥ सोवे सांजे सुख थकी ॥ वा० ॥ तेह जाणे सहु जग्ग ॥ दे० ॥ १७ ॥ लक्ष्मणा लटकाली कहे ॥ वा० ॥ स्नानादिक संनाल ॥ दे० ॥ विश्रंनपात्र ते नारी ठे ॥ वा० ॥ ते विणु कोण ततकाल ॥ दे० ॥ १८ ॥ सुसीमा साहसुं बोलती ॥ वा० ॥ नारी विना कहो नेम ॥ दे० ॥ घर परहूणो आवीयो ॥ वा० ॥ तस जालवीये केम ॥ दे० ॥ १ए ॥ मुनिवर घर पाउ धारीया ॥ वा० ॥ कुण पमिलान्ने तास ॥ दे० ॥ दामोदर आवी कहे ॥ वा० ॥ बहु युक्ते सुविलास ॥ दे० ॥ २० ॥ तेम जादव प्रणमी कहे ॥ वा० ॥ प्रेम रसालां वयण ॥ दे० ॥ परणी प्रेयसी स्वामिजी ॥ वा० ॥ ठारो अमारां नयण ॥ दे० ॥ २१ ॥ चोथे खंडे चोपइशुं ॥ वा० ॥ ढाल प्रथम अधिकार ॥ दे० ॥ चोथी एह सोहामणी ॥ वा० ॥ पद्म कहे मनोहार ॥ दे० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नेमि जिनेसर चिंतवे, जुर्ड ए मोहविलास ॥ जिहां केवल डुःख उपजे, तिहां आग्रह करे खास ॥ १ ॥ बुधवर्जित गृहवास ए, मानुं केवल पाश ॥ आग्रह जुर्ड करे केटलो, युक्ते थापे तास ॥ २ ॥ जो नवि मानुं वचन ए, सहु कहे घेलो एह ॥ लोकनीति जाणे नहीं, ते कारण करुं केह ॥ ३ ॥ नवदव मांहि खेपवे, मात पितादि कुटुंब ॥ पण नवपार तो उतरुं, जो कर लेउं तुंब ॥ ४ ॥ मात पिताए प्रेरीयां, नवि बूजे कहुं तोय ॥ पण संजम परण्या विना, लेवुं निश्चय होय ॥ ५ ॥ रूपना- दिक दृष्टांत जे, ते रोगीने होय ॥ जास नीरोगी देहमी, उंषध न करे कोय ॥ ६ ॥ माने जिन विवाहने, एम कहे नेमिचरित्र ॥ नव नावनमां पण अठे, कल्पवृत्ति इण रीत ॥ ७ ॥ मौन करे जब नेमजी, तव सहु गोपीवृंद ॥ मान्युं मान्युं सहु कहे, हरख्यां सहु गोविंद ॥ ८ ॥ ग्रीषम गमावी तिहां कणे, पहोता द्वारिक मांहि ॥ रात गमावी चतुरनुज, प्रातसमे उछांहि ॥ ए ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ सोनागी गुरुजी महोल थो ॥ ए देशी ॥ सहु रे गोपांगनाने कहे ए, ·८ हर्ष न माय ॥ गोपांगना सांनलो ए ॥ ए टेक ॥ कोइ कन्या जग एहवी ए, जिनवर योग्य जे थाय ॥ गो० ॥ १ ॥ सत्यनामा ते साचुं कहे ए, ...मर्त मुज बहेन ॥ गो० ॥ तेह पुत्री उग्रसेननी ए, रूपथी जीत्यो ठे मयण

॥ गो० ॥ २ ॥ तेहने योग्य छे नेमजी ए, नहीं कोइ जगतमां अन्य ॥ गो० ॥ तास तोले तो अमरी नहीं ए, तो किहां मनुजनी कन्य ॥ गो० ॥ ३ ॥ कान कहे अमे जायशुं ए, राजीमती मागवा काज ॥ गो० ॥ में पण रूप सुणीयुं हतुं ए, वली कह्युं इणी परे आज ॥ गो० ॥ ४ ॥ चतुरबुद्धि ते अमात्यने ए, मोकले निरखवा रूप ॥ गो० ॥ तेह पण आवीने एम कहे ए, वचन चतुराइ अनूप ॥ गो० ॥ ५ ॥ रूप ए दोयनुं चिंतवी ए, प्रथम घडे नेम जिणंद ॥ गो० ॥ राजीमती घमी तव पछे ए, एह प्रजापति विंद ॥ गो० ॥ ६ ॥ पुजल शेष तिणे लह्या ए, शक्ति तणो रे अन्नाव ॥ गो० ॥ तिणे करी न्यून कांय निपनुं ए, एम मन मानुं हुं न्नाव ॥ गो० ॥ ७ ॥ रूप अतिशय वचचातुरी ए, सुणी कहे रामजी न्नाय ॥ गो० ॥ तुऊ परे कुण एम कही शके ए, याचना करो तुमे जाय ॥ गो० ॥ ७ ॥ ते पण जइ तिहां जाचतो ए, राजीमती नेमने काज ॥ गो० ॥ ते कहे अमे तो इछुं घणुं ए, न्नाग्य महोदुं अम आज ॥ गो० ॥ ए ॥ किहां थकी डुर्गतिने घरे ए, होय ऐरावत बद्ध ॥ गो० ॥ सुरतरु सग मरुन्नूमिका ए, पामीरी शक्र संबंध ॥ गो० ॥ १० ॥ किहां थकी नेमने मुऊ धुआ ए, एह बहु हर्षनो ठाय ॥ गो० ॥ ते सुणी थानके आवीया ए, वात कही कृष्ण राय ॥ गो० ॥ ११ ॥ ए न्नव न्नावनामां कह्युं ए, नेमचरित्रमां एम ॥ गो० ॥ कृष्णजी उग्रसेन घर गया ए, राजीमती मागे प्रेम ॥ गो० ॥ १२ ॥ समुद्रविजय न्नणी न्नाखीयुं ए, ते पण हर्षित थाय ॥ गो० ॥ कोष्ठुक निमित्तिउं पूछीयो ए, लगन समुद्रविजय राय ॥ गो० ॥ १३ ॥ कहे रे निमित्तिउं तिणे समे ए, एह विवाहनां काम ॥ गो० ॥ तेह वर्षासमे नवि होये ए, शास्त्र बोले घणे ठाम ॥ गो० ॥ १४ ॥ अन्य पण काज नवि कीजीये ए, तो किशी परणवा वात ॥ गो० ॥ समुद्र न्नाखे तव तेहने ए, काल बहु एम वही जात ॥ गो० ॥ १५ ॥ नेम मनावीयो महा बले ए, एह विवाहनुं काज ॥ गो० ॥ धीरति जो कदी कीजीये ए, नीकली जाय जिनराज ॥ गो० ॥ १६ ॥ तेह सुणी कहे रे नैमित्तिउं ए, श्रावण सुदि दिन छठ ॥ गो० ॥ देइ सत्कार विसर्जीयो ए, निमित्तिउं करी हठ ॥ गो० ॥ १७ ॥ उग्रसेनने तिहां कहावीयुं ए, लग्न दिन जेह आयात ॥ गो० ॥ बिहुं रे ठामे ते विवाहना ए, महोछव नित नित थात ॥ गो० ॥ १७ ॥ दशह दशार्ह न्नेला मिले ए, कृष्ण

ने तिम वलदेव ॥ गो० ॥ शेप पण जादव आवीया ए, सहु करे नेमनी सेव ॥ गो० ॥ १९ ॥ कनक ने रत्नना ढग करे ए, पंथ जिहां त्रण अ॰ च्यार ॥ गो० ॥ दान देवाय ते थानके ए, शोधता कार आगार ॥ गो० ॥ २० ॥ तोरण घर घर बांधीयां ए, धवल मंगल बहु थाय ॥ गो० ॥ जादव सहु तिहां नाचता ए, शिवादेवी हर्ष न माय ॥ गो० ॥ २१ ॥ खंम चोथे कही पांचमी ए, ढाल प्रथम अधिकार ॥ गो० ॥ नेमि जिनरासमां रुयमी ए, पद्म कहे सुणतां जयकार ॥ गो० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वेसारी पूरव दिशे, जिनवर नेमकुमार ॥ रत्नजमित वर आसने, सहु जादव परिवार ॥ १ ॥ रत्न कनक रूपा तणा, मणिमय ने मृडुरूप ॥ करी कलशा बहु आदरे, पद्म पिधान अनूप ॥ २ ॥ तीर्थोदकथी पूरीया, सुर नर जादव वग्ग ॥ वाजंते वर डुंडुहि, नवरावे ते समग्ग ॥ ३ ॥ अंग लुहे जिनवर तणुं, करे विलेपन सार ॥ कस्तूरी कृष्णागरु, मांहि कपूर उदार ॥ ४ ॥ मालती मोघर प्रमुखनी, कुसुममाल पहेराय ॥ कनक रतन मुक्ताफळे, जमित मुकुट शिर ठाय ॥ ५ ॥ मुक्ताफल रचना करी, अष्टादश सर हार ॥ वाजुबंध ने बहेरखा, कंठ बाहु निज ठार ॥ ६ ॥ सुर उपनित जली मुद्रिका, करती जाकजमाल ॥ क्षौमयुगल पहेरावता, स्वछ अने सुकुमाल ॥ ७ ॥ मोतीमाला मोटिकी, कमी वांधी मनोहार ॥ चरण पत्त सोहे घणुं, मुख तंबोल श्रीकार ॥ ८ ॥ कल्पवृक्ष परे सोहता, नेमि जिनेसर राय ॥ वरघोडे सहु संचरे, मनमां हर्ष न माय ॥ ९ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आज रह्यो रंग महोलमां ॥ केसरीया नेम ॥ ए देशी ॥ नेमजी वरघोडे चढ्या ॥ सामलीया लाल ॥ मातने हरख कल्लोल रे ॥ सा० ॥ मुखमां ते पाननुं बीमलुं ॥ सा० ॥ करता अति रंगरोल रे ॥ ॥ सा० ॥ ने० ॥ ॥ १ ॥ दशह दशार्हशुं परवर्या ॥ स० ॥ कृष्णजी ने वलदेव रे ॥ सा० ॥ जादवकुमर सहसागमे ॥ सा० ॥ सांवेलां होय हेव रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ २ ॥ मयगल चाले मलपता ॥ सा० ॥ मलयाचल परे तेह रे ॥ सा० ॥ हयवर हेषारव करे ॥ सा० ॥ पाखर्या खग परे जेह रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ३ ॥ मंगल शब्द घणा करे ॥ सा० ॥ सुरवरनो नहीं पार रे ॥ सा० ॥ कौतुक जोवा

आवीया ॥ सा० ॥ परणे नेमकुमार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ४ ॥ मात शिवा-देवी लीये ॥ सा० ॥ लामणदीवो हाथ रे ॥ सा० ॥ दशे दशार्हनी राणीउं ॥ सा० ॥ जानडीउं बहु साथ रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ५ ॥ श्रीवसुदेवनी राणीउं ॥ सा० ॥ देवकी रोहिणी आदि रे ॥ सा० ॥ बहोंतेर सहस रथमां रही ॥ सा० ॥ गाये मंगल महोटा नाद रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ६ ॥ अग्र-महिषी कृष्णनी ॥ सा० ॥ आठ ते मंगल सार रे ॥ सा० ॥ सत्यज्ञामा रुक्मिणी मुहा ॥ सा० ॥ तेम बत्रीश हजार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ७ ॥ मंगल गाये मोजमां ॥ सा० ॥ तेम बहु जादव नार रे ॥ सा० ॥ जय जय जय जय तिहां करे ॥ सा० ॥ सहुने मोद अपार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ८ ॥ बिहुं पासे मयगल घटा ॥ सा० ॥ आरूढ महोटा राय रे ॥ सा० ॥ दश दशार्ह चाले आगले ॥ सा० ॥ केइक रहवर ठाय रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ९ ॥ लाखो-गमे तिहां पालखी ॥ सा० ॥ लाखोगमे असवार रे ॥ सा० ॥ सुजट कोडिगमे आगले ॥ सा० ॥ पाछल चाले नार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १० ॥ लहेके ध्वज तिहां चिहुं दिशे ॥ सा० ॥ नेजा फुरे निशाण रे ॥ सा० ॥ वाजे देवनी डुंडुहि ॥ सा० ॥ इम महोटे मंडाण रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ ११ ॥ वंदिजन विरुदावली ॥ सा० ॥ किन्नरी गावे गीत रे ॥ सा० ॥ आवे चोक वाजारमां ॥ सा० ॥ त्रण जगतना मित्त रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १२ ॥ चोक चोक चहुटे मिल्यां ॥ सा० ॥ नर नारीनां वृंद रे ॥ सा० ॥ महोल गोंख मेडी चढी ॥ सा० ॥ जोवे हर्ष अमंद रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १३ ॥ एक तणे एक नारीने ॥ सा० ॥ राजीमती वर एह रे ॥ सा० ॥ ते कहे राजुल धन्य छे ॥ सा० ॥ एहशुं मांडशे गेह रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १४ ॥ एक कहे वली एकने ॥ सा० ॥ उसर इहांथी दूर रे ॥ सा० ॥ ते कहे जाउ दूरे तुमे ॥ सा० ॥ अमने हर्ष छे पूर रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १५ ॥ तव एक बोले एणी परे ॥ सा० ॥ दैव अटारो जोय रे ॥ सा० ॥ एहवी वस्तु न खमी शके ॥ सा० ॥ नवि जाणुं किणी परे होय रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १६ ॥ तव एक बोले हर्षशुं ॥ सा० ॥ धिग् धिग् हो तुज नार रे ॥ सा० ॥ अपमंगल किम उच्चरे ॥ सा० ॥ थाउ मंगल इण ठार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १७ ॥ एक कहे एम नारीने ॥ सा० ॥ एहवो लहुं भरतार रे ॥ सा० ॥ तो मुज मनवंछित फले ॥ सा० ॥ सफल थाये संसार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १८ ॥ एम कांइ

प्रभु स्तवना करे ॥ सा० ॥ कांइक वांछे काम रे ॥ सा० ॥ कांइक हर्षे नाचती ॥ सा० ॥ नेत्रकमल पूजा ठाम रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ १९ ॥ एम महोटे आडंबरे ॥ सा० ॥ उग्रसेन घर पास रे ॥ सा० ॥ नेम जिनेसर आवीया ॥ सा० ॥ करुणानिधि आवास रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ २० ॥ खंम चोथे ठही कही ॥ सा० ॥ ढाल प्रथम अधिकार रे ॥ सा० ॥ हवे आगल श्रोता सुणो ॥ सा० ॥ पद्म कहे विस्तार रे ॥ सा० ॥ ने० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ १९४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बहु कोलाहल सांभली, उज्ज्वल एक चोसाल ॥ देखी पूछे सारथि, जिनवर भाग्य विशाल ॥ १ ॥ कहो ए मंदिर केहनुं, दीसे अति उत्तंग ॥ धवल मंगल थाये घणां, सहु जन नव नव रंग ॥ २ ॥ तब ते बोले सारथि, उग्रसेननुं धाम ॥ धवल मंगल तुम सासरे, तुम विवाहने काम ॥ ३ ॥ सखीउं तुम भार्या तणी, बेठी दीसे दोय ॥ चंद्रानना मृगलोचना, वात करंती जोय ॥ ४ ॥ ते वातो किणविध करे, तेह कहुं परपंच ॥ नेम जिणंदने देखीने, कहे मूकी खलखंच ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ वीर माता प्रीतिकारणी ॥ ए देशी ॥ नेम देखीने चंद्रानना, कहे इणी परे वाणी ॥ सुण सखी स्त्री तणा वर्गमां, ए राजुल वखाणी ॥ १ ॥ वात सखीउं इणी परे करे, जेहने ए वर थाशे ॥ भोगक्रीमा रे करतां थका, नवि काल जणाशे ॥ वा० ॥ २ ॥ तव मृगलोचना इम कहे, सखी साचलुं एह ॥ धन्य राजीमती जगतमां, एहशुं मांमशे नेह ॥ वा० ॥ ३ ॥ रूप राजीमती बहेननुं, निपजावतो धाता ॥ एहवो योग नवि मेलवे, तो किमह विख्याता ॥ वा० ॥ ४ ॥ तूरना शब्द सुणती थकी, तिहां राजुल आवे ॥ दोय सखीउं बिच्चे पेसीने, इण परे संभलावे ॥ वा० ॥ ५ ॥ एकली केम जुवो हे सखी, भलो वर ए आवंतो ॥ बहुल आडंबरे परवस्यो, दीसे ए लटकंतो ॥ वा० ॥ ६ ॥ अमे पण जोशुं ए वर प्रते, कही बचमांहि पेसे ॥ नेम देखी इम चिंतवे, मन मोद विशेषे ॥ वा० ॥ ७ ॥ इंद्र के मकरध्वज चंद्रमा, हशे एह सुरेंदो ॥ अहव मुज पुण्य प्राग्भारनो, बन्यो मूर्त्त ए कंदो ॥ वा० ॥ ८ ॥ एह सौभाग्यसुख गुणनिधि, इम मनमां हरखे ॥ काम अनले बलतां थका, मानुं अमृत वरखे ॥ वा० ॥ ९ ॥ जाणी मृगलोचना हृदयनी, भली

वात ॥ हास्यथी कहे रे चंद्रानना, सुण वात विख्यात ॥ वा० ॥ १० ॥ एह वर गुणनिधि अति नलो, पण एक ठे दोष ॥ ते हमणां रे केहतां थका, चढे राजुल रोष ॥ वा० ॥ ११ ॥ तव कहे तास चंद्रानना, एह में पण जाण्युं ॥ सांप्रत काले कहेवुं नहीं, नलुं मौन वखाण्युं ॥ वा० ॥ १२ ॥ लाजती कहे रे राजीमती, जेहनो ए वर थाशे ॥ तेहनां नाग्य नलशे वली, त्रण लोक गवाशे ॥ वा० ॥ १३ ॥ पण सुणो गुणनिधि एहमां, काढे दूषण जेह ॥ दूधमांथी जोइ जोइने, पूरा काढवा तेह ॥ वा० ॥ १४ ॥ कृपणपणुं कल्पपादप तणुं, खीरसागरे क्षार ॥ चंदन मांहि दुर्गंधता, नानु मांहि अंधकार ॥ वा० ॥ १५ ॥ जेम सुराचल मांहे चलपणुं, वली कनकमां श्याम ॥ लक्ष्मीने जेम दरिद्रता, शारदा शठ ठाम ॥ वा० ॥ १६ ॥ तव हसी तेह सखीर्ड कहे, सुण राजुल वाण ॥ गौर वर जोइये प्रथमथी, ते तो काजल वान ॥ वा० ॥ १७ ॥ अपर गुण परिचये जाणीये, तव राजुल वोले ॥ चतुर तुमे विज्रम मुऊ हतो, तुम वचनथी खोले ॥ वा० ॥ १८ ॥ जेह नूषण अठे सर्वने, तेह दूषण दाखो ॥ पण सुणो वात त्रण माहरी, सुणी चित्तमां राखो ॥ वा० ॥ १९ ॥ केवल श्याममां गुण सुणो, नरा गौरमां दोष ॥ गौरमां श्याम आवे थके, होवे गुण तणो पोष ॥ वा० ॥ २० ॥ तथाहि ॥ केवलश्यामत्वे गुणाः ॥ श्याम अचला प्रशंसीये, वली चित्रावेलि ॥ अगरु कस्तूरिका तिम मेघ गुणगेलि ॥ वा० ॥ २१ ॥ कीकी ते सामली सोहीये; केश कसवटी तेम ॥ रात्री पण सामली सोहीये, होये काजल एम ॥ वा० ॥ २२ ॥ जेम जेम एह होय सामलां, तेम मूल्य बहु पामे ॥ हवे सुणो केवल गौरमां, कहुं दोष ठाम ठामे ॥ वा० ॥ २३ ॥ यतः ॥ नू चित्तवल्लि अगरु, कबूरी घण कणीणिगा केसा ॥ कसवट्टी मसी रयणी, कसिणा एए अणग्घफला ॥ इति कृष्णत्वे गुणाः ॥ अथ केवल गौरत्वे दोषाः ॥ लूण जो गौर तो क्षार ठे, हिम श्वेत तो बाले ॥ गौर अति कोढीयो नाखीये, चूनो परवश चाले ॥ यतः ॥ खारं लवणं दहणं, हिमं च अइगोरविग्गहो रोगी ॥ परवश गुणीअ चुन्नो, केवल गोरत्तणे दोसा ॥ १ ॥ इति गौरत्वे दोषाः ॥ अथ गौरस्य कृष्णवस्त्वाश्रयणे गुणाः ॥ श्वेत कर्पूर पण तो रहे, मांहे होय अंगारो ॥ आंख काजले करी सोहीये, वली कीकीए सारो ॥ वा० ॥ २४ ॥ नोजन स्वाद मिरचे करी, चित्रामणे रेहा